“અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્” ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૯૫

શીઘ્રબોધ ભાગ ૬ થી ૧૦

: દ્રવ્ય સહાયક :

શ્રી બુદ્ધિસાગરસૂરિજી સમુદાયના
પૂ. સા. શ્રી જ્યોતિપ્રભાશ્રીજી મ.ની પ્રેરણાથી
જય એપાર્ટમેન્ટ, રામનગર, સાબરમતી,
શ્રાવિકા ઉપાશ્રયના જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૭૧ ઈ. ૨૦૧૫

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्‌गीता-भगवद्‌गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	824
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	288
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	520
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	578
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	278
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	252
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	324
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	श्री साराभाई नवाब	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	श्री साराभाई नवाब	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	श्री विद्या साराभाई नवाब	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	श्री साराभाई नवाब	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	श्री मनसुखलाल भुदरमल	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	श्री जगन्नाथ अंबाराम	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	श्री जगन्नाथ अंबाराम	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	श्री जगन्नाथ अंबाराम	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	पू. कान्तिसागरजी	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री	910
085	**विश्वलोचन कोश**	सं./हिं	श्री नंदलाल शर्मा	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	पू. मेघविजयजीगणि	322
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। ***यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।***

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची।
यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
200	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com

शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं० ३२-३४-३८-३९-४२

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री—

शीघ्रबोध भाग

(६-७-८-९-१०)

लेखक—

श्रीमद् उपकेश (कमला) गच्छीय,
मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज.

प्रकाशक—
श्री वीर मण्डल.
मु. नागोर (मारवाड.)
प्रबन्ध कर्ता,
जोरावरमल वैद.
मेनेजर,
श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला—फलोदी.

(द्वितियावृत्ति प्रत १०००).

वीर सं. २४५१ विक्रम सं. १९८१

धन्यवाद के साथ स्वीकार.

इन शीघ्रबोध भाग ६-७-८-९-१० वा की छपाईमें जीन ज्ञानप्रेमियों ने द्रव्य सहायता दे अपनि चल लक्ष्मी का सद् उपयोग कीया है उसे सहर्ष स्वीकार कर धन्यबाद दीया जाता है अन्य सज्जनों को भी चाहियें की इस ' ज्ञानयुग ' के अन्दर सर्व दानोमें श्रेष्ट ज्ञान दान कर अपनि चल लक्ष्मी को अचल बनावे किमधिकम् द्रव्यसहायकों की शुभ नामावली।

२५१) शाहा रावतमलजी मुलतानमलजी बोथरा मु. नागोर
२५१) शाहा बादरमलजी सागरमलजी समदडीया मु. नागोर
२०१) शाहा लाभचन्दजी जवँरीमलजी खजांनची मु. नागोर
५१) शाहा शिबलालजी जेठमलजी बांठीया मु. नागोर
३४५) श्री सुपनोंकी आवांदानीके
१५१) श्री भगवतीसूत्रादि पूजाकी आवन्दके

१२५०)

भावनगर—धी 'आनंद' प्रीन्टींग प्रेसमें शा. गुलाबचंद लल्लुभाइने छापा.

प्रस्तावना.

प्यारे पाठक वृन्द !

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला ऑफीस फलोदी मारवाड से स्वल्प समयमें आज ७७ पुष्प प्रकाशित हो चुका है जिस्में शीघ्रबोध भाग पेहलेसे पचवीस वां तक प्रसिद्ध हुवे हैं जिस शीघ्रबोधके भागो में जैन सिद्धान्तों का तत्त्वज्ञान इतना तो सुगमता से लिखा गया है की सामान्य बुद्धिवाले मनुष्यों को भी सुखपूर्वक समजमें आ सके। इन शीघ्रबोधके भागों की अच्छे अच्छे विद्वानो ने भी अपने मुक्तकण्ठसे बहुत प्रशंसा कर अपने सुन्दर अभिप्राय को प्रकट कीया है की यह शीघ्रबोध जैन श्वेताम्बर दिगम्बर स्थानकवासी और तेरहा पन्थीयों से अतिरिक्त अन्य लोगों को भी बहुत उपयोगी है कारण इन भागों में तत्त्वज्ञान आत्मज्ञान अध्यात्मज्ञान के सिवाय कीसी मतमत्तान्तर-गच्छ गच्छान्तरादि कीसी प्रकार चर्चाओं या समुदायीक झघडों को बिलकूल स्थान नही दीया है.

इन शीघ्रबोध के भागों की महत्त्वता के बारे मे अधिक लिख हम हमारे पाठकोंका अधिक समय लेना ठीक नही समझते है कारण पाठक स्वयं विचार कर सक्ते है की इन भागों की प्रथमावृत्ति " जो सुगमता से सरल भाषाद्वारा आबाल से वृद्ध जीवों को परमोपकारी अपूर्वज्ञान " प्रकाशित होते ही हाथोहाथ खलास हो जाने पर द्वितीयावृत्ति छपाइ गइ वह भी देखते देखते खलास हो गइ। कीतनेक भाई

प्रमादवस हुवे दूसरी कीताबों की माफीक जब मगावें गे तब ही मील जावें गे इस विश्वास पर निरास हो बैठे थे. उन महाशयो के मांगणी के पत्रों से हमारे तागे के फेल तंग हो गये थे, पत्रपेटी भर गइ थी उन ज्ञानाभिलाषीयों के लिये शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ द्वितीय तृतीयावृति आप लोगों की सेवामें भेज दी गई है इस समय यह भाग ६–७–८–९–१० वा पहले की निष्पत् बहुत कुच्छ सुधारा के साथ तैयार करवा के आप साहिबों के कर कमलो मे उपस्थित कर हमारे जीवन को कृतार्थ समजते है। यह ही ईन कीताबों का महत्त्व हैं। विशेष आप इन सब भागों को आद्योपान्त पढ लिजीये. ताके आपको रोशन होगा की यह एक अपूर्व ज्ञानरत्न है।

पाठकों! ईन शीघ्रबोधके भागों में कथा काहानीयों नही है इन में है जैन सिद्धान्तों का खास तत्त्व जैनो के मूल अंगोपांग सूत्रों का हिन्दी भाषाद्वारा संक्षिप्त सार=तरुजमा रुपसे वतलाया गया है जैसे रत्नाभिलाषी मनुष्य समुद्र में प्रवेश करते समय नौका का सादर स्वीकार करता है इसी माफीक जैन सिद्धान्त रुपी समुद्रसें तत्त्वज्ञान रुपी रत्नाभिलाषीयों को शीघ्रबोध रुपी नौका का सादर स्वीकार करना चाहिये। कारण विगर नौका समुद्र से रत्न प्राप्त करना मुश्किल है इसी माफीक विगर शीघ्रबोध जैन सिद्धान्त रुपी समुद्र से तत्त्वज्ञान रुपी रत्न प्राप्त होना असंभव है।

सज्जनों! जीन सूत्रों का नाम मात्र श्रवण करना दुर्लभ था वह सूत्र आज साफ हिन्दी भाषा में आपके कर कमलों में उपस्थित

हो चुका है। अब भी आप इनके लाभ को न प्राप्त करे तो कमनसिबी के सिवाय क्या कहा जावे ! श्री भगवतीसूत्र, पन्नवणाजीसूत्र, नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार सूत्र, उपसकादशांग अन्तगडदशांग, अनुत्तरोववाइसूत्र पांच निरियावलीका सूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, दशाश्रुतस्कन्धसूत्र, व्यवहारसूत्र और निशिथसूत्र इनों का सार इन शीघ्रबोध के प्रत्येक भागोंमें बतलाया गया है।

श्री पन्नवणाजी सूत्र के ३६ पद है वह अन्य अन्य भागों में प्रकाशित हुवे हैं। जिसकी क्रमशः अनुक्रमणिका शीघ्रबोध भाग १२ के आदिमें दी गइ है की पढनेवालोंको सुविधा रहै इसी मार्फीक श्री भगवतीजी सूत्र की भी अनुक्रमणिका यहांपर पृष्ट ९ से दी गई है ताके जरुरत पर हरेक संबंध को पाठक देख सके।

संग्रहकर्ता मुनि श्री का खास उद्देश ज्ञान कण्ठस्थ करने का है इसी वास्ते आपश्री ने विशेष विस्तार न करके सुगमतापूर्वक लिखा है आशा है की आप ज्ञान प्रेमी इस कीताब से आवश्य लाभ उठावेंगे इत्यलम् ॥ शम् ॥

आपका

मेघराज मुनोत

मु. फलोदी (मारवाड.)

ज्ञान परिचय।

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय शान्त्यादि अनेक गुणालंकृत श्रीमान्मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब।

आपश्रीका जन्म मारवाड ओसवंस वैद मुत्ता ज्ञातीमें सं. १९३७ विजय दशमिकों हुवा था. बचपन से ही आपको ज्ञानपर बहुत प्रेम था स्वल्पावस्थामें ही आप संसार व्यवहार वाणिज्य व्यापारमें अच्छे कुशल थे सं. १९५४ मागशर वद १० को आपका विवाह हुवा था. देशाटन भी आपका बहुत हुवा था. विशाल कुटुम्ब मातापिता भाइ काका स्त्रि आदि को त्याग कर २६ वर्ष कि युवाक वयमें सं. १९६३ चेत वद ६ कों आपने स्थानकवासीयों में दीक्षा ली थी. दशागम और ३०० थोकडे प्रकरण कंठस्थ कर ३० सूत्रोंकी वाचना करी थीं तपश्चर्या एकान्तर छट छठ, मास क्षमण आदि करनेमें भी आप सूरवीर थे आपका व्याख्यान भी वडाही मधुर रोचक और असरकारी था. शास्त्र अवलोकन करने से ज्ञात हुवा कि यह मूर्ति उत्थापकों का पन्थ स्वकपोल कल्पीत समुत्सम पेदा हुवा है। तत्पश्चात् सर्प कंचवे कि माफीक ढुंढकों का त्याग कर आप श्रीमान् रत्नविजयजी महाराज साहिब के पास ओशीयों तीर्थ पर दीक्षा ले गुरु आदेशसे उपकेश गच्छ स्वीकार कर प्राचीन गच्छका उद्धार कीया। स्वल्प समय में ही आपने दीव्य पुरुषार्थ द्वारा जैन समाजपर बडा भारी उपकार कीया आपश्रीकों ज्ञानका तो आले दर्जेका प्रेम है जहां पधारते है वहां ही ज्ञानका उद्योत करते है.

ओशीयों तीर्थ पर पाठशाला बोर्डींग कक्क क्रन्ति लायब्रेरी, श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान प्रभाकर भंडार आदि में आपश्रीने मदद करी है फलोधी में श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला संस्था-इसकी दुसरी शाखा ओशीयोंमें स्थापन करी जिन संस्थावों द्वारा जैन आगमों का तत्त्व ज्ञानमय आज ७७ पुष्प नीकल चुके हैं जिस्की कीताबे १५५००० करीबन् हिन्दुस्तान के सब विभागमें जनता कि सेवा बजा रही है इनके सिवाय जैनपाठशाला जैन लायब्रेरी आदि भी स्थापन करवाइ गइ थी हम शासन देवतावोंसे यह प्रार्थना करते है कि एसे पुरुषार्थी महात्मा चीरकाल शासन कि सेवा करते हमारे मरुस्थल देशमें विहार कर हम लोगोंपर सदैव उपकार करे। शम्

लोहावटसे भी आपने २०००० पुस्तकें छपवाइ थी कूल १७५००० }

आपके चरणोपासक,
इन्द्रचंद पारख-जोइन्ट सेक्रेटरी.

श्री जैन युवक मित्रमण्डल, आफीस—लोहावट (मारवाड).

रत्न परिचय.

परम योगिराज प्रातःस्मरणीय अनेक सद्गुणालंकृत श्री श्री १००८ श्री श्री रत्नविजयजी महाराज साहिब !

आपश्रीका पवित्र जन्म कच्छदेश ओसवाल ज्ञाति म हुवा था. आप बालपणासे ही वियादेवीके परमोपासक थे. दश वर्षकि बाल्यावस्थामें ही आपने पिताश्रीके साथ संसार त्याग किया था, अठारा वर्ष स्थानकवासीमत में दीक्षा पाल सत्य मार्ग संशोधन कर-शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद्विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराजके पास जैन दीक्षा धारण कर संस्कृत प्राकृतका अभ्यास कर जैनागमोंका अवलोकन कर आपश्रीने एक अच्छे गीतार्थोंकि पंक्तिको प्राप्त करी थी. आपश्रीने कच्छ, काठीयावाड, गुजरात, मालवा, मेवाड और मारवाडादि देशोंमें विहार कर अपनि अमृतमय देशनाका जनताको पान करवाते हुए अनेक जीवोंका उद्धार कीया था इतना ही नही किन्तु आबु गिरनारादि निवृत्तिके स्थानों में योगाभ्यास कर जैनोंसे अनेक गइ हुइ चमत्कारी विद्यावों हांसल कर कइ आत्मावों पर उपकार कीया था ।

आपका निःस्पृह सरळ शान्त स्वभाव होनेसे जगत के गच्छगच्छान्तर-मत्तमत्तान्तरके झगडे तो आपसे हजार हाथ दूर ही रहते थे. जैसे आप ज्ञानमें उच्चकोटीके विद्वान थे वेसे ही कविता करनेमें भी उच्चकोटीके आप कवि भी थे आपने अनेक स्तवनों, सज्झायों, चैत्यवन्दनों, स्तुतियों, कल्प रत्नाकरी टीका और विनति शतकादि रचके जैन समाजपर परमोपकार कीया था.

आपको निवृत्तिस्थान अधिक प्रसन्न था । श्रीमदुपकेश गच्छाधिपति श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी महाराजने उपकेशपट्टन (ओशीयों) में ३८४००० राजपुतकों प्रतिबोध दे जैन बना कर प्रथम ही ओसवंस स्थापन कीया था. उस ओशीयों तीर्थपर आपश्रीने चतुर्मास कर अलभ्य लाभ प्राप्त कीया. जैसे मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजीकों ढुंढकफाल से बचाके संवेगी दीक्षा दे उपकेश गच्छका उद्धार करवाया था फीर दोनों मुनिवरोंने इस प्राचीन तीर्थके जीर्णोद्धारमें मदद कर वहांपर जैन पाठशाला, बोर्डीग, श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान भंडार, जैन लायब्रेरी स्थापन करी थी और भी आपकों ज्ञानका बडा ही प्रेम

था. आपश्रीके उपदेश द्वारा फलोधी में श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला नामकि संस्था स्थापित हुइ थी. आपश्रीने अपने पवित्र जीवनमें शासन सेवा बहुत ही करी थी. केइ जगह जीर्णोद्धार पाठशालावोंके लिये उपदेश दीया था जिनोंकि उज्वल कीर्त्ति आज दुनियों में उच्च पदको भोगव रही है. आपश्रीका जन्म सं. १९३२ में हुवा सं. १९४२ में स्थानकवासीयों में दीचा सं. १९६० में जैन दीक्षा और सं. १९७७ में आपका स्वर्गवास गुजरातके वापी ग्राममें हुवा है जहांपर आज भी जनताके स्मरणार्थ स्मारक मोजुद है. एसे निःस्पृही महात्मावोंकी समाजमें बहुत आवश्यक्ता है.

यह एक परम योगिराज महात्माका किंचित आपको परिचय कराके हम हमारी आत्माको अहोभाग्य समजते है. समय पा के आपश्रीका जीवन लिख आपलोगोंकि सेवा में भेजनेकि मेरी भावना है शासनदेव उसे शीघ्र पूर्ण करे.

I have the honour to be sir,
Your most obedient slave
M. Rakhchand Parekh. S. Collieries.
Member Jain nava yuvak mitra mandal
LOHAWAT.

यह बात किसीसे छीपी नहीं है कि आगम शिरोमणी परम प्रभाविक श्रीमत् भगवतीसूत्र जैन सिद्धान्तो मे एक महत्वका सूत्र है. चारों अनुयोग द्वारोंका महान् खजाना है. इसके पठन पाठन के अधिकारी भी बहुश्रुति गीतार्थ मुनि ही है, तथपि अल्पश्रुतवालोंको सुगमतापूर्वक बोध होने के लिये कितनेक द्रव्यानुयोग विषयोंका सुगम रीती से थोकडा रुप में लिखकर अन्य २ शीघ्रबोध भागो में प्रकाशित किये है. जिसकी सूचि यहां दी जाती है की कोइ भी विषयको देखना हो तो सुगमतापूर्वक देख सके.

नंबर	श्री भगवतीसूत्र.	थोकडो में विषय.	शीघ्रबोध के किस भाग में है.
१	श० १ उ० १	चलमाणे चलिय	भाग २५
२	श० १ उ० १	नरकादि ४५ द्वार	,, २५
३	श० १ उ० १	ज्ञानादिप्रश्न	,, २५
४	श० १ उ० २	देवोत्पातके १४ बोल	,, १
५	श० १ उ० ३	कांक्षामोहनीय	,, १६
६	श० १ उ० ३	,,	,, १६
७	श० १ उ० ४	अस्ति अधिकार	,, २५
८	श० १ उ० ४	वीर्याधिकार	,, २५
९	श० १ उ० ५	कषाय	,, ९
१०	श० १ उ० ६	सूर्योदय	,, २५
११	श० १ उ० ७	नरकादि	,, २५
१२	श० १ उ० ७	गमन	,, २५
१३	श० १ उ० ८	आयुष्यबन्ध	,, १६
१४	श० १ उ० ९	अगरूलघु	,, १६
१५	श० २ उ० १०	पंचास्तिकाय	,, १६
१६	श० ३ उ० ३	चौभंगी ४९	,, १६
१७	श० ५ उ० ८	परमाणु	,, ८
१८	श० ५ उ० ८	हियमान	,, ९

१९	शा० ५ उ० ८	सावचिया	,,	९
२०	शा० ५ उ० ८	सप्रदेशी	,,	९
२१	शा० ६ उ० ३	५० बोलकी बन्धी	,,	५
२२	शा० ७ उ० १	आहार	,,	२५
२३	शा० ७ उ० १	अकर्मगति	,,	२५
२४	शा० ७ उ० २	प्रत्याख्यान	,,	२५
२५	शा० ७ उ० ६	आयुष्यबन्ध	,,	२५
२६	शा० ७ उ० ७	कामाधिकार	,,	२५
२७	शा० ८ उ० १	पुद्गलके ९ दंडक	,,	८
२८	शा० ८ उ० २	आसीविष	,,	६
२९	शा० ८ उ० २	पांच ज्ञान लब्धि	,,	१६
३०	शा० ८ उ० ८	इरियावहि संपराय	,,	५
३१	शा० ८ उ० ९	बंन्ध	,,	८
३२	शा० ८ उ० ९	सर्वबन्ध देशबन्ध	,,	८
३३	शा० ८ उ० १०	पुद्गल	,,	८
३४	शा० ८ उ० १०	अराधना	,,	४
३५	शा० ८ उ० १०	कर्म	,,	५
३६	शा०१-५ ६-८-११-७	क्रियाधिकार	,,	२
३७	शा० १० उ० १	दशदिश	,,	८
३८	शा० ११ उ० १	उत्पल कमल द्वार ३६	,,	८
३९	शा० ११ उ० १०	लोकधिकार	,,	८
४०	शा० ११ उ० १०	,,	,,	८
४१	शा० १२ उ० ५	रुपी अरुपी	,,	१
४२	शा० १२ उ० ९	देवाधिकार	,,	९
४३	शा० १३ उ० १-२	उपयोग	,,	१
४४	शा० १६ उ० ८	लोक चरमान्त	,,	८
४५	शा० १८ उ० ४	कुड जुम्मा	,,	८
४६	शा० २० उ० १०	सोपकर्मी आयुष्य	,,	९
४७	शा० २० उ० १०	कत संचय	,,	९
४८	शा० २१ उ० ५०	वनस्पति	,,	२४
४९	शा० २२ उ० ६०	,,	,,	२४

५०	श० २३ उ० ८०	,,	,,	२४
५१	श० २४ उ० २४	गम्मा	,,	२३
५२	श० २४ उ० २४	,,	,,	२३
५३	श० २५ उ० १	योगाधिकार	,,	८
५४	श० २५ उ० १	,,	,,	८
५५	श० २५ उ० १	,, अल्पाबहुत्व	,,	८
५६	श० २५ उ० २	द्रव्य	,,	८
५७	श० २५ उ० २	स्थितास्थित	,,	८
५८	श० २५ उ० ३	संस्थान	,,	८
५९	श० २५ उ० ३	,,	,,	८
६०	श० २५ उ० ३	,,	,,	८
६१	श० २५ उ० ३	,, जुम्मा	,,	८
६२	श० २५ उ० ३	श्रेणी	,,	८
६३	श० २५ उ० ४	द्रव्य	,,	८
६४	श० २५ उ० ४	जीव परिणाम	,,	८
६५	श० २५ उ० ४	जीव कम्पा कम्प	,,	८
६६	श० २५ उ० ४	पुद्गल अल्पाबहुत्व	,,	८
६७	श० २५ उ० ४	पुद्गल जुम्मा	,,	८
६८	श० २५ उ० ४	परमाणु	,,	८
६९	श० २५ उ० ४	पुद्गलकी अल्पाबहुत्व	,,	२४
७०	श० २५ उ० ५	काल	,,	२४
७१	श० २५ उ० ४	परमाणु कम्पाकम्प	,,	८
७२	श० २५ उ० ६	निग्रन्थ	,,	४
७३	श० २५ उ० ७	संयति	,,	४
७४	श० २५ उ० ८	नरक	,,	२४
७५	श० २६ उ० १	४७ बोलकी बन्धी	,,	५
७६	श० २६ उ० २	अनन्तर उववन्नगा	,,	५
७७	श० २७ ११ ११	कर्माधिकार	,,	५
७८	श० २८ उ० ११	,,	,,	५
७९	श० २९ उ० ११	कर्मभंग	,,	५
८०	श० ३० उ० ११	समोवसरण	,,	५

८१	श० ३१	उ० २८	खुलक जुम्मा		
८२	श० ३२	उ० २८	,,	,,	२४
८३	श० ३३	उ० १२४	एकेन्द्रिय जुम्मा	,,	२४
८४	श० ३४	उ० १२४	श्रेणी सतक	,,	२४
८५	श० ३५	उ० १३२	एकेन्द्रिय महा जुम्मा	,,	२४
८६	श० ३६	उ० १३२	बेरिन्द्रिय ,,	,,	२४
८७	श० ३७	उ० १३२	तेरिन्द्रिय ,,	,,	२४
८८	श० ३८	उ० १३२	चौरिन्द्रिय ,,	,,	२४
८९	श० ३९	उ० १३२	असंज्ञीपंचेन्द्रिय ,,	,,	२४
९०	श० ४०	उ० २३१	संज्ञी ,, ,,	,,	२४
९१	श० ४१	उ० १९६	रासी जुम्मा	,,	२४
				,,	२४

अबी तक श्री भगवतीजी सूत्र का विषय लिखना बाकी रह गया है वह जैसे जैसे प्रकाशित होगा वैसे वैसे इस अनुक्रमणिका को साथमें मीला दीया जावेगा ताके सब साधारण को सुविधा रहै.

अन्तमें हम नम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहते है कि छद्मस्थों में त्रूटीये रहनेका स्वाभावीक नियम है तदानुसार अगर प्रेस कोपी करते या प्रुफ सुधारते समय दृष्टिदोष या मतिदोष रह गया हो तो आप सज्जन उसे सुधार के पढे और ऑफीस में सूचना करेंगे तो हम सहर्ष उपकार के साथ स्वीकार कर अन्या-वृत्ति में उसे सुधार देगें. इति अस्तु कल्याणमस्तु । शान्ति ३.

आपका,

मेघराज मुनोत.

फलोधी (मारवाड).

विषयानुक्रमणिका.

नं.	विषय	पृष्ट
	शीघ्रबोध भाग ६ ठो.	
१	ज्ञानाधिकार	१
२	प्रत्यक्ष ज्ञान "	२
३	अवधिज्ञान "	३
४	मनःपर्यव ज्ञान "	६
५	केवलज्ञान "	७
६	मतिज्ञान "	८
७	मतिज्ञान के ३३६ भेद	११
८	श्रुतिज्ञान	१३
९	चौरासी आगमों के नाम	१७
१०	इग्यारे अंगका यंत्र	२५
११	चौदह पूर्वका यंत्र	२६
१२	अवधिज्ञान पर आठ द्वार. भव. विषय. संस्थान. अभिन्तर. देश-सर्व. हियमान. अनुगामि. प्रतिपाति	२८
१३	पांच ज्ञान पर २१ द्वार. जीव. गति. जाति. काया. सूक्ष्म. पर्याप्ता. भव्य. भावी. संज्ञी. लब्धि. ज्ञान. योग. उपयोग. लेश्या. कषाय. वेद. आहार. नाण. काल. अन्तर अल्पाबहुत.	३०
	शीघ्रबोध भाग ७ वां.	
१४	ज्ञान शक्ति बढनेका साधन	३९
१५	जीवों के ५६३ भेदों के प्रश्नोत्तर क्रमशः एक. दो. तीन. चार. पांच. यावत् पांचसो त्रेसठ भेदों के प्रश्नोत्तर है	३९
१६	पांचसो त्रेसठ भेदों पर जीवों के द्वार २२. जीव, गति. इन्द्रिय. काय. योग. वेद. कषाय. लेश्या. दृष्टि. सम्यक्त्व. ज्ञान. दर्शन. संयम. आहार. भाषक. परत. पर्याप्ता. सूक्ष्म. संज्ञी. भव्य. चरम. भरतादि क्षेत्र.	७१
	शीघ्रबोध भाग ८ वां.	
१७	योग और अल्पाबहुत्व	७७
१८	योग आहारीकानाहारीक	७९
१९	योगों के ३० बोल	८०
२०	दो प्रकार के द्रव्य	८२
२१	स्थितास्थित द्रव्य	८३
२२	संस्थान ६	८५
२३	संस्थान के १०५०	८७
२४	संस्थान के २० भेद	८८
२५	जुम्मा के २४ दंडक	८९
२६	संस्थान जुम्मा	९०
२७	श्रेणि ७ प्रकार	९२

नं.	विषय	पृष्ठ
२८	षट् द्रव्य	६५
२९	जीवों के प्रमाण जुम्मा	९८
३०	जीव कम्पाकम्प	१०२
३१	पुद्गलोंकी अल्पा०	१०३
३२	परमाणुवादि	१०६
३३	परमाणु कम्पमान	११०
३४	परमाणु पुद्गल	११३
३५	पुद्गलों के ८८६२५ भांगा	११७
३६	बन्धाधिकार	१२०
३७	सर्व बन्ध देश०	१२३
३८	पुद्गलों के ९४ भांगा	१२९
३९	दश दिशाओं	१३०
४०	लोकमें जीवादि	१३३
४१	लोक में चरमादि	१३५
४२	लोक का परिमाण	१३८
४३	परमाणु पर १७ द्वार	१४१
४४	उत्पल कमल पर ३२ द्वार उत्पात. परिमाण. अपहरण. अवगाहना. कर्मबन्ध. कर्मवेदे. उदय. उदीर्णा. लेश्या. दृष्टि. ज्ञान. योग. उपयोग. वर्ण. उश्वास. आहार. व्रति. क्रिया. बन्ध. संज्ञा. कषाय. वेदबन्ध. संज्ञी. इन्द्रिय अनुबन्ध, संबह. आहार. स्थिति. समुद्घात. चवन. वेदना. मूलोत्पात.	१४४

शीघ्रबोध भाग ९ वां.

नं.	विषय	पृष्ठ
४४	चौदह गुणस्थान	१५१
४६	पचवीस प्रकारका मिथ्यात्व	१५२
४७	गुणस्थान के लक्षण	१५५
४८	चौदह गुणस्थान पर क्रियाद्वार बन्ध. उदय. उदीर्णा. सत्ता. निर्जरा. आत्मा. कारण. भाव. परिसह. अमर. पर्याप्ता. आहारीक. संज्ञा. शरीर. संहनन. वेद. कषाय. संज्ञी. समुद्घात. गति. जाति. काय. जीवों के भेद. योग. उपयोग. लेश्या. दृष्टि. ज्ञान. दर्शन. सम्यक्त्व. चारित्र. निग्रन्थ. समोसरण. ध्यान. हेतु. मार्गणा. जीवाजोनी. दंडक. नियमा. भजना. द्रव्यप्रमाण. क्षेत्रप्रसान्तर. निरान्तर. स्थिति. अन्तर. आगरेस. अवगाहना. स्पर्शना. अल्पाबहुत्व. एवं गुणस्थान पर बावन द्वार हैं	१६१
४९	काय स्थिति संकेत	१७२
५०	काय स्थिति के द्वार जीव. गति. इन्द्रिय. काया. योग. वेद. कषाय. लेश्या. सम्यक्त्व. ज्ञान. दर्शन. संयम. उपयोग.	

नं.	विषय	पृष्ट
	आहार. भाषक. परत. पर्याप्ता. सूक्ष्म. संज्ञी. भव. अस्तिकाय. चर्म.	१७३
५०	अल्पाबहुत्व के उपरवत् २२ द्वारों पर जीवों के भेद गुण-स्थान योग उपयोग लेश्या और अल्पाबहुत हैं	१८१
५१	अन्त क्रियाधिकार	१८६
५२	पद्वि २३ का अधिकार	१८९
५३	आवणद्वार	१९१
५४	जावणद्वार	१९१
५५	पावणद्वार	१९२
५६	गत्यागति ८५ बोल	१९३
५७	गत्यागति दूसरी	१९७
५८	पांच शरीरों पर नाम. अर्थ. अवगाहना. शरिर संयोग. द्रव्य प्रदेश. द्रव्य अल्पा बहुत्व. ३ स्वामिद्वार. संस्थान. संहनन. सूक्ष्म बादर. प्रयोजन. विषय. वैक्रिय. स्थिति अवगाहना. अल्पाबहुत्व	२०१
५९	चौमाली बोलोंकी अ०	२०३
६०	सप्रदेशाप्रदेश	२०५
६१	हीयमानं जीवादि	२०६
६२	सावचियादि	२०७
६३	कषायपद ५२०० भागा	२०८
६४	पांचेन्द्रिय पर १५ द्वार	२१५
६५	सिद्धाल्पाबहुत्व १०१ बोल	२१९
६६	कालकी अल्प० १०० बोल	२२२
६७	छैभाव उदयभाव	२२६
६८	उपशम भाव	२२७
६९	क्षयोपशम भाव	२२७
७०	क्षायक भाव	२२७
७१	परिणामिक भाव	२२८
७२	सन्निपातिक भाव	२२९
७३	सोपक्रमीनिरो०	२३०
७४	कृत संचीयादि	२३२
७५	पांच देवो के द्वार नाम. लक्षण. स्थिति. संचिठण. अन्तर. अवगाहना. गत्यागति. वैक्रिय. अल्पाबहुत्व.	२३३

शीघ्रबोध भाग १० वां.

नं.	विषय	पृष्ट
७६	चौवीस ठाणा	२३६
७७	गतिद्वार	२३७
७८	जातिद्वार	२३८
७९	कायद्वार	२३९
८०	योगद्वार	२४०
८१	वेदद्वार	२४२
८२	कषायद्वार	२४३
८३	ज्ञानद्वार	२४४
८४	संयमद्वार	२४५
८५	दर्शनद्वार	२४६

नं.	विषय	पृष्ठ	नं.	विषय	पृष्ठ
८६	लेश्याद्वार	२४७	९९	शरीरद्वार	२५६
८७	भव्यद्वार	२४८	१००	हेतुद्वार	२५७
८८	संज्ञीद्वार	२४८	१०१	बासटीया	२५८
८९	सम्यक्त्वद्वार	२४९	१०२	जीवों के भेदो के प्रश्न	२५९
९०	आहारद्वार	२५०	१०३	गुणस्थानो के प्रश्न	२६०
९१	गुणस्थानद्वार	२५१	१०४	योगो के प्रश्न	२६१
९२	जीवों के भेद द्वार	२५३	१०५	उपयोगो के प्रश्न	२६१
९३	पर्याप्तद्वार	२५५	१०६	लेश्यावो के प्रश्न	२६२
९४	प्राणद्वार	२५०	१०७	तीर्यंच के भेदो के प्रश्न	२६३
९५	संज्ञाद्वार	२५५	१०८	गुणस्थान के प्रश्न	२६५
९६	उपयोगद्वार	२५५	१०९		
९७	दृष्टिद्वार	२५६	११०		
९८	कर्मद्वार	२५६	१११	त्रिक संयोगादि गुणस्थानके प्रश्न	२७०

श्री सिद्धसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग ६ ठा.

थोकडा नम्बर ६४ वां

श्री नन्दीजी सूत्रसे पांच ज्ञानाधिकार।

ज्ञान—ज्ञान दो प्रकारके होते है (१) सम्यक्ज्ञान. (२) मिथ्याज्ञान. जिस्मे जीवादि पदार्थों कों यथार्थ सम्यक् प्रकारसे जानना उसे सम्यक् ज्ञान कहते है और जीवादि पदार्थों को विप्रीत जानना उसे मिथ्याज्ञान कहते है॥ ज्ञानवर्णियकर्म और मोहनियकर्म के क्षोपशम हानेसे सम्यक्ज्ञान कि प्राप्ती होतो है तथा ज्ञानवर्णिय कर्म का क्षोपशम और मोहनिय कर्म का उदय होने से मिथ्याज्ञान कि प्राप्ती होती है जैसे किसी दो कवियोंने कविता करी जिस्मे एक कविने ईश्वरभक्ति का काव्य रचा. दुसराने शृंगार रस में 'महिला मनोहर माला' रची. इस्मे पहले कविके ज्ञानावर्णिय और मोहनीय दोनों कर्मोंका क्षोपशम है और दुसरे कवि के ज्ञानावर्णिय कर्म का तो क्षोंपशम है परन्तु साथमे मोहनिय कर्म का उदय भी है वास्ते पहले कवि का सम्यक् ज्ञान है और दुसरे का मिथ्याज्ञान है। इन दोनों प्रकार के ज्ञानके अन्दर

में यहांपर सम्यक् ज्ञान का ही विवेचन करुंगा. इसके अन्तर्गत आत्मीक ज्ञान के साथ ओर व्यवहारीक ज्ञान का समावेस भी हो सक्ता है।

ज्ञान पञ्च प्रकार के है यथा मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. इन पांचो ज्ञान को संक्षिप्त से कहा जाय तों दो प्रकारके है. (१) प्रत्यक्षज्ञान (२) परोक्षज्ञान जिस्मे प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद है इन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान, नोइन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान. जिस्मे भी इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान का पांच भेद है (प्रत्येक इन्द्रियों द्वारा पदार्थ का ज्ञान होना) यथा-

(१) श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-शब्द श्रवणसे ज्ञान होना. कि यह अमुक शब्द है.

(२) चक्षुइन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-रूप देखनेसे ज्ञान होना कि यह अमुक रूप है.

(३) घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-गन्ध लेने से ज्ञान होना कि यह अमुक गन्ध है.

(४) रसेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-रस स्वादन करने से ज्ञान होना कि यह अमुक रस है.

(५) स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-स्पर्श करनासे ज्ञान होना कि यह अमुक स्पर्श है.

दुसरा जो नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान है वह भूत भविष्य काल कि वातें हस्तामल कि माफीक जान सके उनके तीन भेद है (१) अवधिज्ञान, (२) मनःपर्यवज्ञान (३) केवलज्ञान. जिस्मे अवधिज्ञान के दो भेद है (१) भवप्रत्य (अपेक्षा) (२) क्षोपशमप्रत्य, भवप्रत्यतो नरक और देवताओं को होते है जसे नरकमें या देवतों में जीव उत्पन्न होता है वह सम्यग्दृष्टि हो तो निश्चय अवधिज्ञानी होता है और मिथ्यादृष्टि हो तों विभंगज्ञानी होता है और दुसरा जोक्षोपशमप्रत्ययी मनुष्य और तीर्यंच पांचेन्द्रियको अच्छे अध्य व-

सायों के निमत्त कारण ज्ञानावर्णिय कर्म के क्षोपशमसे अवधिज्ञान होता है तथा गुणप्रतिपन्न अनगार को अनेक प्रकार कि तपश्चर्यादि करने से अवधिज्ञान उत्पन्न होता है जिस्के भेद असंख्याते है परन्तु यहांपर संक्षिप्तसे छे भेद कहते है.

(१) अनुगामिक–जहांपर जाते हो वहांपर ही ज्ञान साथमें चले।

(२) अनानुगामिक–जीस जगाहा ज्ञान हुवा हो उसी जगहा रहै।

(३) वृद्धमान–उत्पन्न होने के बाद सदैव बढता ही रहै।

(४) हीयमान–उत्पन्न होने के बाद कम होता जावे।

(५) प्रतिपाति–उत्पन्न होने के बाद पीच्छा चला जावे।

(६) अप्रतिपाति–उत्पन्न होने के बाद कभी नही जावे।

विस्तारार्थ–अनुगामिक अवधिज्ञान जैसे कीसी मुनि कों अवधिज्ञान उत्पन्न हुवा हो उस्के दो भेद है अंतगयं और मझगयं. इस्मे भी अंतगयं के तीन भेद है आगेके प्रदेशों से, पीच्छेके प्रदेशों से पासवाडे के प्रदेशों से. जैसे दृष्टान्त–कोइ पुरुष अपने हाथमें दीवा मणि चीराख लालटेनादि आगे के भागमें रख चलता हो तों उस्का प्रकाश आगे के भागमें पडेगा. इसी माफीक पीच्छाडी रखनेसे पीच्छाडी प्रकाश पडेगा और पसवाडे रखनेसे प्रकाश पसवाडे मे पडेगा. इसी माफीक जीस जीस प्रदेशों के कर्मदल दूरा हुवा है उस उस प्रदेशों से प्रकाश हो सर्व रूपी पदार्थों को अवधिज्ञान द्वारा ज्ञान सकेगा, और जो 'मझगयं' अवधिज्ञान है वह जैसे कोइ आदमि दीपक चीराख मणी आदि मस्तकपर रखे तों उस्का प्रकाश चौतर्फ होगा इसी माफीक मध्य ज्ञानोत्पन्न होनेसे वह चोतरफ के पदार्थों कों जान सकेगा. एवं अनुगामिक ज्ञान का स्वभाव है कि वह जहां जावे वहां साथमें चले।

अनानुगामिक अवधिज्ञान जेसे कोइ मनुष्य एक सीघडीमें

अग्नि लगाइ हो वह जहांपर सागडी रखी हो वहां पर उसका ताप प्रकाश होगा इसी माफीक अवधिज्ञानोत्पन्न हुवा है वहां बेठा हुवा अवधिज्ञान द्वारा संख्याते योजन असंख्याते योजन के क्षेत्र में संबन्धवाले असंबन्धवाले पदार्थों कों जान सकेगा परन्तु उस स्थानसे अन्य स्थानपर जाने के बाद् कीसी पदार्थ कों नही जानेगा. अनानुगामिक अवधिज्ञान का स्वभाव है कि वह दुसरी जगाहा साथमें न चाले उत्पन्न क्षेत्रमे ही रहै !

वृद्धमान अवधिज्ञान–प्रशस्ताध्यवसाय विशुद्धलेश्या. अच्छे परिणामवाले मुनि को अवधिज्ञान होने के बाद् चो तरफसे वृद्धि होती रहै जैसे जघन्य सूक्ष्म निलण फूलके जींवों के तीसरे समय के शरीर जीतना, उत्कृष्ट संपूर्ण लोकतथा लोक जैसे असंख्यात खंडवे अलोकमें भी जाने. इसपर काल और क्षेत्र कि तूलनाकर बतलाते है कि कीतने क्षेत्र देखनेपर वह ज्ञान कीतने काल रह सके। कालसे आवलिकाके असंख्यात भाग तकका ज्ञान हों तों क्षेत्र से आंगुलके असंख्यात में भागका क्षेत्र देखे एवं दोनोंके संख्यातमें भाग. आवलिकामें कुच्छ न्युन हो तो एक आंगुल. पुर्णावलिका हो तों प्रत्येकांगुल. महुर्त हो तो. एक हाथ. एक दिन हो तो एक गाउ. प्रत्येक दिन हो तो एक योजन. एक पक्ष हो तो पचवीस योजन एक मास होतो भरतक्षेत्र, प्रत्येक मास होतो जंबुद्विप, एक वर्ष होतो मनुष्यलोक, प्रत्येक वर्ष होतो रूचकद्विप, संख्यातो काल होतो संख्याताद्विप, असंख्यातो काल होतो, संख्याते असंख्याते द्विप तात्पर्य एक कालकि वृद्धि होनेसे क्षेत्र द्रव्य भावकि आवश्य वृद्धि होती है क्षेत्रकि वृद्धि होनेसे कालकि वृद्धि स्यात् हो या नभी हो, और द्रव्य भावकि आवश्य वृद्धि हो, द्रव्यकि वृद्धि होनेमे कालक्षेत्रकि भजना और भावकि अवश्य वृद्धि हो. भावकि वृद्धि होनेमे द्रव्य क्षेत्र कालकि अवश्य वृद्धि होती है. द्रव्य क्षेत्र काल भावमें सूक्षम बादरकि तरतमता, काल बादर है जिनसे सूक्षम

क्षेत्र है कारण सूची अग्रभागमें जो आकाश प्रदेश है उसे प्रत्येक समय एकेक प्रदेश निकाले तो असंख्यात सर्पिणी उत्सर्पिणी पुरी होजावे. क्षेत्रसे द्रव्य सूक्षम है कारण एक प्रदेशके क्षेत्रमें अनंते द्रव्य है द्रव्यसे भाव सूक्षम है कारण एक द्रव्यमे अनंत पर्याय है.

हयमान अवधिज्ञान-उत्पन्न होनेके बाद अविशुद्ध अध्यव-साय अप्रशस्त लेश्या खराब परिणाम होनेसे प्रतिदिन ज्ञान न्युनता होता जावे.

प्रतिपात्ति अवधिज्ञान होनेके बाद कीसी कारणोंसे वह पीच्छा भी चला जाता है वह ज्ञान कितने विस्तारवाला होता है वह बतलाते है यथा. आंगुलके असंख्यातमें भागका क्षेत्र को जाने. संख्यातमे भागके क्षेत्रको जाने. एवं बालाग्र, प्रत्येक बालाग्र, लीख, प्रत्येकलिख, जू प्र०जू जँव प्र०जँव, अंगुल प्र०आंगुल, पाद प्र० पाद, वेहाथ प्र०वेहाथ, कुत्सि प्र०कुत्सि, धनुष्य प्र०धनुष्य, गाउ-प्र० गाउ, योजन प्र०योजन, सोयोजन प्र०सोयोजन, सहस्रयोजन प्र० सहस्रयोजन, लक्षयोजन प्र०लक्षयोजन, कोडयोजन प्र०कोडयोजन, कोडाकोडयोजन प्र०कोडाकोडयोजन, संख्यातेयोजन, असं-ख्याते योजन उत्कृष्ट सम्पूर्ण लोकके पदार्थको जानके पीच्छ पडे अर्थात् वह ज्ञान पीच्छा चला जावे. उसे प्रतिपाति अवधिज्ञान कहा जाता है।

अप्रतिपाति अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके बाद कबी न जावे परंतु अन्तर महुर्त्त के अन्दर केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है इन छे भेदों के सिवाय प्रज्ञापना पद ३३ में और भी भेद लिखा हुवा है वह अलग थोकडा रूपमें प्रकाशित है।

अवधिज्ञानके संक्षिप्तसे च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव.

(१) द्रव्यसे अवधिज्ञान जघन्य अनंते रूपी द्रव्योंको जाने. उत्कृष्ट भी अनंते द्रव्य जाने. कारण अनंते के अनंते भेद है.

(२) क्षेत्रसे अवधिज्ञान. जघन्य आंगुलके असंख्यातमें भागका क्षेत्र ओर उ० सर्व लोक ओर लोक जैसे असंख्यात खंडवे अलोकमें भी जान सके वहां पर रूपी द्रव्य नही है।

(३) कालसे जघन्य आवलिकाके असंख्यात भाग और उत्कृष्ट असंख्याते सर्पिणि उत्सर्पिणि वातें को जाने.

(४) भावसे ज० अनंते भाव. उ० अनंते भाव जाने वह सर्व भावोंके अनंते भाग है इति.

(२) मनःपर्यव ज्ञान–अढाइ द्विपके संज्ञी पांचेन्द्रिय के मनोगत भावको जानसके इस ज्ञानके अधिकारी–मनुष्य–गर्भज–कर्मभूमि–संख्यातेवर्षोंकेआयुष्यवाले–पर्याप्ता–सम्यग्दृष्टि– संयति –अप्रमत–ऋद्धिवान् मुनिराज है जिस मन:पर्यव ज्ञानके दो भेद है (१) ऋजुमति (२) विपुलमति. जिस्के संक्षिप्तसे च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव।

(१) द्रव्यसे–रूजुमति मनःपर्यव ज्ञान–अनंते अनंत प्रदेशी द्रव्य मनपणे प्रणमे हुवे को जाने देखे और विपुलमति विशुद्धसे विस्तारसे जाने देखे।

(२) क्षेत्रसे ऋजुमति मन पर्यव ज्ञान उद्ध लोकमें ज्योतिषीयोंके उपरका तला तीर्यग्लोकमें अढाइद्विप दो समुद्रमें पदरा कर्मभूमी तीस अकर्म भूमी छपन अन्तरद्विपोके संज्ञी पांचेन्द्रिय के मनोगत भावोंको जाणे देखे. विपुलमति इससे अढाइ अंगुल क्षेत्र अधिक वह भी विशुद्ध और विस्तारसे जाने देखे।

(३) कालसे ऋजुमति मनःपर्यव ज्ञांन–ज० पल्योपम के असंख्यातमें भागका कालको उ० भी पल्यां० असं० मे भागके कालकों जाने देखे. विपुलमति विशुद्ध और विस्तार करके जाने देखे।

(४) भावसे ऋजुमति मन:पर्यव ज्ञान–ज० अनंते भाव उ०

अनंते भाव सर्व भावोंके अनंतमें भागके भावोको जाने देखे. विपुलमति-विस्तार और विशुद्ध जाने देखे। इति।

(३) केवलज्ञान सव आत्मा के प्रदेशोंसे ज्ञानावर्णिय दर्शनावर्णिय मोहनिय अन्तराय एवं च्यार घातिकर्म क्षय कर सर्व प्रदेशोंको निर्मल बनाके लोकालोकके भावों को समय समय हस्तामलकि माफीक जाने देखे. जिस केवल ज्ञानका दो भेद है एक भव प्रत्ययी-मनुष्य भवमे तेरहवे चौदवे गुणस्थानवाले जीवों को होते है दूसरा सिद्ध प्रत्ययी सकल कर्म मुक्त हो सिद्ध हो गये है उनोंके केवल ज्ञान है जिस्मे भव प्रत्यके दो भेद है संयोग केवली तेरहवे गुणस्थान दुसरा अयोग केवली चौदवे गुणस्थान दुसरा सिद्धोंकि केवलज्ञानके दो भेद है एक अनंतर सिद्ध जिस सिद्धोंके सिद्धपदको एक समय हुवा है दुसरा परम्पर सिद्ध जिस सिद्धाको छि समयसे यावत् अनंत समय हुवा हो अनन्तर परम्पर दोनो सिद्धोंके अर्थ सहित भेद शीघ्रबोध भाग दुसरेके अन्दर छप चूके है वहां देखो। पृष्ट ८० से।

संक्षिप्तकर केवलज्ञानके च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्रकाल भाव।

(१) द्रव्यसे केवलज्ञानी सर्व द्रव्यको जाने देखे।

(२) क्षेत्रसे केवलज्ञानी सर्व क्षेत्रको जाने देखे।

(३) कालसे केवलज्ञानी सर्व कालको जाने देखे।

(४) भावसे केवलज्ञानी सर्व भावको जाने देखे।

इति केवलज्ञान इति नोइन्द्रिय प्र० ज्ञान इति प्रत्यक्षज्ञान।

सेवं भंते सेवं भंते-तमेव सच्चम्

थोकडा नंबर ६५ वां.

(परोक्षज्ञान)

(२) परोक्ष ज्ञानके दो भेद है मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, जिस्मे मतिज्ञान मनविचारणा बुद्धिप्रज्ञा मनन करनेसे होता है और श्रुतिज्ञान श्रवण पठन पाठन करनेसे होता है जहां मतिज्ञान है वहां निश्चय श्रुतिज्ञान भी है जहां श्रुतिज्ञान है वहां निश्चय मतिज्ञान भी है कारण मति विगर श्रुति हो नही सकता है और श्रुति विगर मति भी नही होती है सम्यग्दृष्टि की मति निर्मल होनेसे मतिज्ञान कहा जाता है और मिथ्यादृष्टि को विषम मति होनेसे तथा मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनेसे मति अज्ञान कहा जाता है इसी माफीक श्रुतिज्ञान भी सम्यग्दृष्टियों के तत्व रमणता तत्व विचार में यथार्थ श्रवण पठन पाठन होनेसे श्रुतिज्ञान कहा जाता है और मिथ्यादृष्टियों के मिथ्यात्व पूर्वक मिथ्या श्रद्धना होनेसे श्रुति अज्ञान कहा जाता है सम्यग्दृष्टि के सम प्रवृति समविचार समतत्व होनेसे उसको मति श्रुतिज्ञानवन्त और मिथ्या दृष्टि कि मिथ्या प्रवृति मिथ्या विचार मिथ्या तत्व होनेसे मति अज्ञान श्रुति अज्ञान कहा जाता है

मतिज्ञान के दो भेद है एक श्रवण करने कि अपेक्षा याने श्रवण करके मतिसे विचार करनेसे. दुसरा अश्रवण याने बुद्धि बलसे विचार करनेसे मतिज्ञान होता है जिस्मे अश्रवण के च्यार भेद है.

(१) उत्पातिका बुद्धि-विगर सुनी विगर देखी बातों या प्रश्नोंको उत्तर देना.

(२) विनयसे बुद्धि—गुरवादिके विनय भक्ति करनेसे प्राप्त हुइ बुद्धि.

(३) कर्मसे बुद्धि—जैसे जैसे कार्य करे वैसी बुद्धि प्राप्त हो
(४) पारिणामिका—जैसी अवस्था होती जाती है या अवस्था बढती है वैसी बुद्धि हो जाती है.

इन च्यारो बुद्धियोंपर अच्छी बोधकारक कथावों नन्दी सूत्रकि टीकामें है वह खासकर श्रवण करनेसे बुद्धि प्राप्त होती है श्रवण करनेकि अपेक्षा मतिज्ञानके च्यार भेद है.

(१) उगृहा—शीघ्रताके साथ पदार्थोंका गृहन करना.
(२) ईहा—गृहन कीये हुवे पदार्थ का विचार करना.
(३) आपय—विचारे हुवे पदार्थ में निश्चय करना
(४) धारणा—निश्चय किये हुवे पदार्थों को धारण कर रखना।

उगृह मतिज्ञान के दो भेद है अर्थ ग्रहन, व्यञ्जन ग्रहन, जिस्में व्यञ्जन ग्रहनके च्यार भेद है (व्यञ्जन कहते है पुदुगलोंको) श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय. रसेन्द्रिय. स्पर्शेन्द्रिय. इन च्यारों इन्द्रियों को स्व स्व विषयके पुदुगल मिलनेसे मतिसे ज्ञान होता है कि यह पुदुगल इष्ट है या अनिष्ट है तथा चक्षु इन्द्रियको पुदुगल ग्रहनका अभाव है चक्षु इन्द्रिय अपनेसे दुर रहे हुवे पुदुगलों को देखके इष्ट अनिष्ट पदार्थका ज्ञान कर सक्ती है इस वास्ते इसे व्यञ्जन ग्रहनमें नही मानी है दुसरा जो अर्थग्रहन है उस्के छे भेद है.

(१) श्रोत्रेन्द्रिय अर्थ ग्रहन—शब्द श्रवणकर उस्के अर्थका ज्ञान करना.
(२) चक्षु इन्द्रिय अर्थ ग्रहन रूप देख उसके अर्थका ज्ञान करना.
(३) घ्राणेन्द्रिय अर्थग्रहन—गन्ध सुँघनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना.

(४) रसेन्द्रिय अर्थग्रहन—स्वादन करनेसे उस्के अर्थ को ग्रहन करना.

(५) स्पर्शेन्द्रिय अर्थ ग्रहन—स्पर्श करनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना.

(६) मन अर्थ ग्रहन--मन पणे पुद्गल प्रणमनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना.

इन छहो अर्थ ग्रहनका मतलब तो एक ही है परन्तु नाम उच्चारण भिन्न भिन्न है जिस्के पांच भेद है—अर्थको ग्रहन करना अर्थको स्थिर करना. अथको सावधानपणे संभालना. अर्थके अन्दर विचार करना. और अर्थका निश्चय करना। इसी माफीक ईहा नामके मतिज्ञानका भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस माफोक है विचारमे प्रवेश करे. बिचार करे, अर्थ गवेषना करे. अर्थ चिंतवण करे. भिन्न भिन्न अर्थमें विमासण करे। इसी माफीक आपाय. मतिज्ञान के भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस माफीक है अर्थका निश्चय करे. चिंतवनका निश्चय करे. विशेष निश्चय करे. बुद्धि पूर्वक निश्चय करे. विज्ञान पूर्वक निश्चय करे. इसी माफीक धारणा मतिज्ञान के भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस प्रकार है निश्चत किये हुवे अर्थ कों धारण करना. चीरकाल स्मृतिमे रखना. हृदय कमलमें धारण करना. विशेष विस्तारपूर्वक धारण करना, जैसे कोठारमें रखा हुवा अनाज कि माफीक जाबते के साथ धारण कर रखना. यह सब मतिज्ञान के विशेष भेद है उगृह मतिज्ञान कि स्थिति एक समयकी है ईहा ओर अपाय कि स्थिति अन्तरमुहुर्त कि है और धारण कि स्थिति संख्यातकाल (मनुष्यापेक्षा) असंख्याते काल (देवापेक्षा) की है एवं अश्रवणापेक्षा ४ ओर श्रवणापेक्षा २४ मीलाके मतिज्ञान के २८ भेद होते है.

तथा-कर्मग्रन्थमें इन अठावीस प्रकारके मतिज्ञानकों बारह

बारह प्रकारसे बतलाये है यथा-बहु अल्प, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, चीर, अनिश्रीत, निश्रित, सन्दिग्ध, असन्दिग्ध, ध्रूव, अध्रूव,- विवरण जैसे शंख, नगारा झालर आदि वाजंत्रके शब्दों में से क्षयोपशमकी विचित्रताके कारणसे कोइ जीव बहुतसे वार्जित्रोंके शब्दोंको अलग अलग सुनते है १ कोइ जीव स्वल्प हा सुनते है २ कोइ जीव उन वार्जीत्रोके स्वर तालादि बहुत प्रकारसे जानते है ३ ३ कोइ जीव मंदतासे सब शब्दोंको एक वार्जित्रही जानते है ४ कोइ जीव शीघ्र-जलदीसे सुनता है ५ कोइ जीव देरीसे सुनता है ६ कोइ जीव ध्वजाके चिन्हसे देवमन्दिरको जानता है ७ कोइ जीव विगर पत्ताका अर्थात् विगर चिन्हसे ही वस्तुको जान लेता है ८ कोइ जीव संशय सहित जानता है ९ कोइ जीव संशय रहित जानता है १० कोइ जीवको जसा पहला ज्ञान हुवा है वैसा ही पीछे तक रहता है उसे ध्रूवज्ञान कहते है ११ कोइ जीवको पहले ओर पीच्छे में न्यूनाधिकपणेका विशेषपणा रहता है एवं २८ को १२ गुणा करनेसे ३३६ तथा अश्रुत निश्रितके ४ भेद मीला देनेसे ३४० भेद मतिज्ञानके होते है इनके सिवाय जाति-स्मरणादि ज्ञान जो पूर्व भव संबन्धी ज्ञान होना यह भी मति ज्ञानका ही भेद है एसे विचित्र प्रकारका मतिज्ञान है जावोंको जैसा जैसा क्षयोपशम होता है वैसी वैसी मति होती है।

मतिज्ञानपर शास्त्रकारोंने दो दृष्टान्त भी फरमाया है यथा एक पुन्यशाली पुरुष अपनी सुखशय्याके अन्दर सुता हुवाथा उसे कीसी दुसरा पुरुषने पुकार करी उसके शब्दके पुद्गल सुते हुवे पुरुष के कानोंमें पडे वह पुद्गल न एक समयके स्थितिके थे यावत् न संख्याते समयेकि स्थितिके थे किन्तु असंख्याते समयकि स्थितिके पुद्गल थे अर्थात् बोलनेमे असंख्यात समय लगते है तदनन्तर वह पुद्गल कोनोंमें पडने को भी असंख्यात समय चाहिये। सुता हुवा पुरुष पुद्गलोंको ग्रहन किया उसे 'उग्गृहमतिज्ञान' कहते

है फीर विचार किया कि मुझे कोन पुकारता है उसे 'ईहामति ज्ञान' कहते है बाद में निश्चय कियाकि अमुक मनुष्य मुझे पुकारता है उसे 'आपायमतिज्ञान' कहते है उस पुकारकोस्वल्प या चीरकाल स्मरणमें रखना उसे 'धारणामति ज्ञान' कहते है जैसे वह अव्यक्त पणे शब्द श्रवण कर च्यारों भेदोंसे निश्चय किया. इसी माफीक अव्यक्तपणे रूप देखनेसे गन्ध सुँघनेसे स्वाद लेनेसे स्पर्श करनेसे और स्वप्न देखनेसे भी समझना ! दुसरा दृष्टान्त कीतने पुद्गल कांनोंमें जानेसे मनुष्य पुद्गलोंको जान सकते है ? जैसे कोइ मनुष्य कुंभारके वहांसे एक नया पासलीया (मट्टीका बरतन लाके उसमे एकेक जलबिन्दु प्रक्षेप करे तब वह पासलीया पुरण तोरसे परिपूर्ण भरजावे तब उस पासलीयोंसे जलबिन्दु बाहार गीरना शरू हो, इसी माफीक बोलनेवालेके भाषाद्वारा निकले हुवे पुद्गल श्रवण करनेवालेके कानोंमें भरते भराते श्रोत्रेन्द्रिय विषय पूर्ण पुद्गल आजावे तब उसे मालुम होती है कि मुझे कोइ पुकारता है इसी माफीक पांचो इन्द्रिय-स्व-स्व विषय के पूर्ण पुद्गल ग्रहन करनेसे अपनी अपनी विषयका ज्ञान होता है इसी माफीक स्वप्नेके भी समज लेना.

मतिज्ञानके संक्षिप्त च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव ।

(१) द्रव्यसे मतिज्ञान-संक्षिप्त सर्व द्रव्य जाने किन्तु देखे नहीं.

(२) क्षेत्रसे मतिज्ञान -संक्षिप्तसे सर्व क्षेत्र जाने पण देखे नहीं.

(३) कालसे मतिज्ञान—संक्षिप्तसे सर्व काल जाने परन्तु देखे नहीं.

(४) भावसे मतिज्ञान-संक्षिप्तसे सर्व भाव जाने परंतु देखे नहिं.।

कारण मतिज्ञान है सो देशज्ञान है मनन करनेसे सामान्य प्रकारसे सर्व द्रव्यादिको जान सके परन्तु अपासणीया उपयोग होनेसे देख नही सके इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम्

थोकडा नम्बर ६६

(परोक्ष श्रुतिज्ञान)

श्रुतिज्ञान—सामान्यापेक्षा पठन पाठन श्रवण करनेसे होते है या अक्षरादि है वह भी श्रुतिज्ञान है श्रुतिज्ञानके १४ भेद है

(१) अक्षर श्रुतिज्ञान जिस्का तीन भेद है (१) आकारादि अक्षर कि संज्ञा स्वोनोपयोगसंयुक्त उच्चारण करना (२) ह्रस्व दीर्घ उदात्त अनुदात्तादि शुद्ध उच्चारण (३) लब्धिअक्षर इन्द्रियजनित जैसे अनेक जातिके शब्द श्रवण कर उसमें भिन्न भिन्न शब्दोंपर ज्ञान करना. एवं अनेक रूप गन्ध रस स्पर्श तथा नोइन्द्रिय-मन से पदार्थ को जानना. इसे अक्षरश्रुति ज्ञान कहते है।

(२) अनाक्षर श्रुतिज्ञान कीसी प्रकार के चन्ह-चेष्टा करनेसे ज्ञान होता है जैसे मुंह मचकोडना नेत्रों से स्नेह या कोप दर्शाना, सिर हीलाना, अंगुली से तरजना करना, हाँसी खांसी छींक उबासी डकार अनेक प्रकार के वाजित्रादि यह सब अनाक्षर श्रुतिज्ञान है।

(३) संज्ञी श्रुतिज्ञान, संज्ञी पांचेन्द्रिय मनवाले जीवों को होते है जिस्के तीन भेद है (१) दीर्घकाल=स्वमत्त परमत्त के

श्रुति ज्ञान पर दीर्घकालका विचार करना तथा श्रुतिज्ञान द्वारा निश्चय करे (२) हेतुवाद=हितोपदेशादि श्रवण कर श्रुतिज्ञान प्राप्त करना (३) दृष्टिवाद=द्वादशांगी अन्तर्गत दृष्टिवाद अङ्ग को पठन पाठन कर श्रुतिज्ञान हांसल करे इस्को संज्ञी श्रुतिज्ञान कहते है ।

(४) असंज्ञी श्रुतिज्ञान-मन और संज्ञीपणे के अभाव एसे एकेन्द्रिसे असंज्ञी पांचेन्द्रिय के जीवों को होता है वह अव्यक्तपणे संज्ञा मात्र से ही प्रवृति करते है जिस्के तीन भेद है स्वल्प काल कि संज्ञा अहेतुवाद अदृष्टिवाद याने संज्ञीसे विप्रीत समझना ।

(५) सम्यक् श्रुतिज्ञान-श्री सर्वज्ञ वीतराग-जिन-केवली-अरिहन्त-भगवान प्रणित स्याद्वाद तत्त्व विचार-षट्द्रव्य नय निक्षेप प्रमाण द्रव्य गुण पर्याय परस्पर अविरूद्ध श्री तीर्थंकर भगवान् त्रिलोक्य पुजनीय भव्य जीवों के हितके लिये अर्थरूप फरमाइ हुइ वाणि जिस्को सुगमता के लिये गणधरोंने सूत्र रूपसे गुंथी और पूर्व महा रूषियोंने उसके विवरणरूप रची हुइ पांचांगी उसे सम्यक्सूत्र कहते है या चौदा पूर्वधरो के रचित तथा अभिन्न दश पूर्वधरों के रचित ग्रन्थों को भी सम्यक् श्रुतिज्ञान कहते है । उस्के नाम आगे लिखेंगे ।

(६) मिथ्याश्रुतिज्ञान-असर्वज्ञ सरागी छद्मस्त अपनि बुद्धि से स्वछंदे परस्पर विरूद्ध जिस्मे प्राणवधादि का उपदेश स्वार्थ पोषक हठकदाग्रह रूप जीवों के अहितकारी जो रचे हुवे अनेक प्रकार के कुरांणपुरांण ग्रन्थ है उसमें जीवादि का विप्रीत स्वरुप तथा यज्ञ होम पिंडदान रूतुदान प्राणवधादि लोक अहित कारक उपदेश हो उसे मिथ्याश्रुतिज्ञान कहते है ।

(क) सम्यग्दृष्टियों के सम्यक्सूत्र तथा मिथ्यासूत्र दोनों सम्यग् श्रुतिज्ञानपणे प्रणमते है कारण वह सम्यग्दृष्टि होनेसे जैसी वस्तु हो उसे वैसी ही श्रद्धता है और मिथ्यादृष्टियोंके सम्यग्सूत्र

तथा मिथ्यासूत्र दोनों मिथ्याश्रुति ज्ञानपणे प्रणमते है कारण उसकी मति मिथ्यात्वसे भ्रमित है वास्ते सम्यगूसूत्र भी मिथ्यात्व पणे प्रणमते है जैसे जमालि आदि निन्हवोंके वीतरागों कि वाणी मिथ्यारूप हो गइ थी और भगवान् गौतम स्वामिके च्यार वेद अठारे पुरांण भी सम्यकूपणे प्रणमिये थे कारण वह उनके भावों को यथार्थपणे समज गये थे इत्यादि.

(७) सादि (८) सान्त (९) अनादि (१०) अनान्त= श्रुतिज्ञान विरहकालापेक्षा भरतादि क्षेत्रमें सादि सान्त है और अविरह कालापेक्षा महाविदेह क्षेत्रमे अनादि अनान्त है जिस्के संक्षित से च्यार भेद है यथा द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव। जिस्मे द्रव्यापेक्षा एक पुरुषापेक्षा श्रुतिज्ञान सादि सान्त है और बहुत पुरुषापेक्षा अनादि अनान्त है क्षेत्रापेक्षा पांच भरत पांच एरव· रतापेक्षा सादि सान्त है महा विदेहापेक्षा अनादि अनान्त है। कालापेक्षा उत्सर्पिणि अवसर्पिणि अपेक्षा सादि सान्त है और नोअवसर्पिणि नोउत्सर्पिणि अपेक्षा अनादि अनान्त है। भावापेक्षा जिन प्रणित भाव द्वादशांगी सामान्यविशेष उपदेश निर्देश परू- पणा है वह तो सादि सान्त है और क्षोपशम भावसे जो श्रुति· ज्ञान प्राप्त होता है वह अनादि अनान्त है तथा भव्यसिद्धी जीवों कि अपेक्षा सादि सान्त है और अभव्य जीवों कि अपेक्षा अनादि अनान्त है।

श्रुतिज्ञान के अभिभाग पलिच्छेद (पर्याय) अनंत है जैसे कि एक अक्षर कि पर्याय कीतनी है कि सर्व आकाशप्रदेश तथा धर्मास्तिकायादि कि अगुरु लघुपर्याय जीतनी है। सूक्ष्म निगोद के जीवों से यावत् स्थुल जीवों के आत्मप्रदेश में अक्षर के अन- न्तमें भाग श्रुतिज्ञान सदैव निर्मल रहता है अगर उसपर कर्मदल आ जावे तो जीवका अजीव हो जावे परन्तु एसा न तो भूत काल में हुवा न भविष्य कालमें होगा इस वास्ते ही सिद्धान्त कारोंने

कहा है कि जीवों के आठ रूचक प्रदेश सदैव निर्मल रहते है वहां कर्मदल नहीं लगते है यह ही चैतन्यका चेतन्यपणा है जैसे आकाश में चन्द्र सूर्य कि प्रभा प्रकाश करती है कदाच् उस कों महामेघ-बादले उस प्रभा के प्रकाश को झांकासा बना देते है तथपि उस प्रकाश को मूलसे नष्ट नही कर सकते है बादल दूर होने से वह प्रभा अपना संपुरण प्रकाश कर सक्ती है इसी माफीक जीवके चेतन्यरूप प्रभा का प्रकाश कों कर्मरूप बदल झांकासा बना देते है तथपि चैतन्यता नष्ट नही होती है कर्म दल दुर होने से वह ही प्रभा अपना संपुरण प्रकाश कों प्रकाशित कर सक्ती है।

(११) गमिक श्रुतिज्ञान-दृष्टिवादादि अंगमें एकसे अलावे अर्थात् सदृश सदृश बातें आति हो उसे गमिक श्रुतिज्ञान कहते है।

(१२) अगमिक श्रुतिज्ञान-अंग उपांगादि में भिन्न भिन्न विषयोंपर अलग अलग प्रबन्ध हो उसे अगमिक श्रुतिज्ञान कहते है जैसे ज्ञातासूत्रमें पचवीस क्रोड कथावों थी जिस्मे साढा एकवीस क्रोड तों गमिक कथावों जो कि उस्मे ग्राम नाम कार्य संबन्ध एकासाही था ओर साढातीन क्रोड कथावो अगमिक थी इसी माफीक और आगमोमें भी तथा दृष्टिवादांगमें भी समजना.

(१३) अंग श्रुतिज्ञान-जिस्मे द्वादशांगसूत्र ज्ञान है

(१४) अनांग श्रुतिज्ञान-जिस्के दो भेद है (१) आवश्यक सूत्र (२) आवश्यकसूत्र वितिरिक्तसूत्र जिस्मे आवश्यकसूत्र के छे अध्ययन रूप छे विभाग है यथा. सामायिक, चउवीसत्थ, वन्दना, पडिक्कमण, काउसग्ग, पच्चखांण और आवश्यक वितिरिक्त सूत्रोंके दो भेद है एककालिकसूत्र जो लिखते समय पहले या चरम पेहर में समाप्त किये गये थे. दुसरे उत्कालिक जो दुसरी तीसरी पेहरमें समाप्त कीये गये थे.

कालिक सूत्रोंके नाम इस मुजब है

(१) श्री उतराध्ययनजी सूत्र
(२) श्री दशाश्रुतस्कन्धजी सूत्र
(३) श्री बृहत्कल्पजी सूत्र
(४) श्री व्यवहारजी सूत्र
(५) श्री निशिथजी सूत्र
(६) श्री महानिशिथजी सूत्र
(७) श्री ऋषिभाषित सूत्र
(८) श्री जम्बुद्विप प्रज्ञप्ति सूत्र
(९) श्री द्विपसागर प्रज्ञप्ति सूत्र
(१०) श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
(११) श्री क्षुलकवैमान प्रवृति "
(१२) श्री महा वैमान प्रवृति "
(१३) श्री अङ्गचूलिका सूत्र
(१४) श्री वङ्गचूलिका सूत्र
(१५) श्री विवाहाचूलिका सूत्र
(१६) श्री आरूणोत्पातिक सूत्र
(१७) श्री गारूडोत्पातिक सूत्र
(१८) श्री धरणोत्पातिक सूत्र
(१९) श्री वैश्रमणोत्पातिक सूत्र
(२०) श्री वेलंधरोत्पातिक सूत्र
(२१) श्री देवीन्द्रोत्पातिक सूत्र
(२२) श्री उस्थान सूत्र
(२३) श्री समुस्थान सूत्र
(२४) श्री नागपरिआवलिका
(२५) श्री निरयावलिका सूत्र
(२६) श्री कप्पयाजी सूत्र
(२७) श्री कप्पवडिंसिया सूत्र
(२८) श्री पुप्फीयाजी सूत्र
(२९) श्री पुप्फचूलाजी सूत्र
(३०) श्री वणियाजी सूत्र
(३१) श्री विन्हीदशा सूत्र
(३२) श्री आसीविष भावना "
(३३) श्री दृष्टिविष भावना "
(३४) श्री चरणसुमिण भावना "
(३५) श्री महासुमिण भावना "
(३६) श्री तेजस निसर्गसूत्र

प्रसंगोपात श्री

(३७) श्री वेदनीशतक (व्य०)
(३८) श्री बन्धदशा (स्था०)
(३९) श्री दोगिद्धिदशा (,,)
(४०) श्री दीहदशा (,,)
(४१) श्री संखेविसदशा ,,)
(४२) श्री आवश्यक सूत्र

उत्कालीक सूत्रोंके नाम.

(४३) श्री दशवैकालिक सूत्र
(४४) श्री कल्पाकल्प सूत्र
(४५) श्री चूलकल्प सूत्र
(४६) श्री महाकल्प सूत्र
(४७) श्री उत्पातिक सूत्र
(४८) श्री राजप्रश्नेनि सूत्र
(४९) श्री जीवाभिगम सूत्र

(५०) श्री प्रज्ञापना सूत्र
(५१) श्री महाप्रज्ञापना सूत्र
(५२) श्री प्रमादाप्रमाद सूत्र
(५३) श्री नन्दीसूत्र
(५४) श्री अनुयोगद्वार सूत्र
(५५) श्री देवीन्द्रस्तुति सूत्र
(५६) श्री तंदुलव्याली सूत्र
(५७) श्री चन्द्रविजय सूत्र
(५८) श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र
(५९) श्री पोरषी मंडल सूत्र
(६०) श्री मंडलप्रवेश सूत्र
(६१) श्री विद्याचारण सूत्र
(६२) श्री विगिच्छओ सूत्र
(६३) श्री गणिविजय सूत्र
(६४) श्री ध्यानविभूति सूत्र
(६५) श्री मरणविभूति सूत्र
(६६) श्री आत्मविशुद्धि सूत्र
(६७) श्री वीतराग सूत्र
(६८) श्री संलेखणा सूत्र
(६९) श्री व्यवहार कल्पसूत्र
(७०) श्री चरणविधि सूत्र
(७१) श्रीआउरप्रत्याख्यान सू
(७२) श्री महाप्रत्याख्यान सूत्र

साथमें बारहाअंगो के नाम

(७३) श्री आचारांग सूत्र
(७४) श्री सूत्र कृतांग सूत्र
(७५) श्री स्थानायांग सूत्र
(७६) श्री समवायांग सूत्र
(७७) श्री भगवतीजी सूत्र
(७८) श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र
(७९) श्रीउपासक दशांग सूत्र
(८०) श्री अन्तगड दशांग सूत्र
(८१) श्री अनुत्तरोपपातिक सू
(८२) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र
(८३) श्री विपाक सूत्र
(८४) श्री दृष्टिवाद सूत्र

एवं ८४ आगमोंके नाम

इन ८४ आगमोंके अन्दर जो बारहा अंग है उनोंके अन्दर कीसकीस वातोंका विवरण कीया गया है वह संक्षिप्तसे यहां बतला देते है। यथा:—

१ आचारंग सूत्रमें—साधुका आचार है सो श्रमण निग्रन्थोंका सुप्रशस्त आचार, गोचर भिक्षा लेनेकी विधि, विनय वैनयिक, कायोत्सर्गादि स्थान, विहार भूम्यादिकमें गमन, चंक्रमण (श्रम दूर करनेके लिये उपाश्रयमें जाना), वा आहारादिक पदार्थोंका माप, स्वाध्यायमें नियोग, भाषादि समिति, गुप्ति,

शय्या, उपधि, भक्त, पान, उदूगमादि (उदूगम, उत्पात और एषणा), दोषोकी विशुद्धि, शूद्धाशुद्ध ग्रहण. आलोचना, व्रत, नियम, तप और भगवान वीरप्रभुका उज्वल जीवन है। प्रथम श्री आचारांग सूत्रमें दो श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यंत्रमें.

२ सूत्रकृतांग (सूअगडांग) सूत्रमें—स्वसिद्धांत परसिद्धांत, स्वऔरपरसिद्धांत, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक, जीव, अजीव , पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष तकके पदार्थों, इतर दर्शनसे मोहित, संदिग्ध नव दीक्षितकी बुद्धिकी शुद्धिके लिये एकसोएंशी क्रियावादिका मत, चौरासी अक्रियावादिका मत, सडसठ अज्ञानवादिका मत, बतीस विनयवादिका मत ए कुल मीलकर ३६३ अन्य मतियों के मतको परिक्षेप करके स्वसमय स्थापन व्याख्यान है दुसरा अंगका दो श्रुतस्कन्ध इत्यादि शेष यंत्रमें.

३ स्थानांग सूत्रमें—स्वसमयको, परसमयको, और उभय समयको स्थापन, जीवको अजीवको, जीवाजीवको, लोकको, अलोकको, लोकालोकको स्थापन, पर्वत, शिखर, कुंट, ग्राण, कुड, गुफा, आगर, ग्रहें, नदी आदि एकएक बोलसे लगाके दशदश बोलका संग्रह कीया हुवा है. जीस्का श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष यंत्रमें.

४ समवायांग सूत्रमें—स्वसिद्धांत, परसिद्धांत, उभय सिद्धांत, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक और एकादिक कितनाक पदार्थोंको एकोतरिक परिवृद्धिपूर्वक प्रतिपादन अर्थात् प्रथम एक संख्यक पदार्थोंका निरुपण पीछे द्विसंख्यक यावत् क्रमसर ३-४ यावत् क्रोडाक्रोड पर्यंत अथवा द्वादशांग गणिपिटकका पर्यवोको प्रतिपादन और तिर्थंकरोंके पूर्वभव मातापिता वा दीक्षा, ज्ञान, शिष्य आदि व चक्रवर्त्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रति वासुदेवादिकका व्याख्यान हे जीस्का श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष यंत्रमें.

५ व्याख्यान प्रज्ञप्तिः—(भगवती) भगवतीसूत्रमें स्वसमय, परसमय, स्वपरसमय, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक, अलोक, लोकालोक अलग अलग प्रकारका देव, राजा राजर्षि और अनेक प्रकारके संदिग्ध पुरुषोंने पुछे हुवे प्रश्नोंका श्रीजिनभगवान विस्तार पूर्वक कह्या हुवा उत्तर, सो उत्तर, द्रव्य, गुण, क्षेत्रकाल, पर्याय, प्रदेश और परिणामका अनुगम निक्षेपण, नय, प्रमाण और विविध सुनिपुण उपक्रमपूर्वक यथास्ति भावना प्रतिपाद कहे. जिन्हसे लोक और अलोक प्रकाशित है, वह विशाल संसार समुद्र तारनेको समर्थ है, इंद्रपूजित है भव्य लोकोंके हृदयका अभिनंदक हे, अंधकाररूप मेलका नाशक हे, सुष्ठुदृष्ट है, दीपभूत है. इहा, मति और बुद्धिका वर्धक है, जीस प्रश्नोंकी संख्या ३६००० की है जीसमें श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यंत्रमें.

६ ज्ञाता धर्मकथासूत्र में—उदाहरण भूत पुरुषोंका नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता पिता, समवसरणो, धर्माचार्यों, धर्म कथाओ, यहलौकिक और परलौकिक ऋद्धि विशेषो भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो, तपो, उपधानो, पर्याओ संलेखणा, भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो, देवलोक-गमनो, सुकुलमां प्रत्यवतारो, बोधिलाभो और अंतक्रियाओ, इस अंगमें दो श्रुत स्कंध और ओगणीस अध्ययनो है। धर्म कथाका दश वर्ग है जीसमें एक एक धर्मकथामें पांचसो पांचसो आख्यायि-काओ है। एकेक आख्यायिकामें पांचसो पांचसो उपाख्यायिकाओ है। एक एक उपाख्यायिकाओमें पांचसो पांचसो आख्यायिकों-पाख्यायिकाओ है यह सर्व मिलके कथा वर्गमें गमिक (सादृश) और अगमिक सामिल है जीस्में गमिक कथाओ छोडके शेष साडा तीन क्रोड कथाओ इस अंगमें है शेष यंत्रमें देखो।

७ उपाशक—दशांग सूत्रमें उपासको (श्रावको) का नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता पिताओ, समवसरणो,

धर्माचार्यो, धर्मकथाओ यहलौकको और परलौककी ऋद्धी विशेष और श्रावकोंका शीलव्रतो, विरमणो, गुणव्रतो, प्रत्याख्यानो, पौषधोपवासो, श्रुत परिग्रहो, तपो उपधानो, प्रतिमाओ, उपसर्गो, संलेखना भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलमां जन्मो, बोधिलाभ और अंतक्रिया, इस अंगका श्रुतस्कंध १ है इत्यादि शेष यंत्रमें।

अंतकृद्दशांग सूत्रमें—अंतकृत (अन्तकेवल) प्राप्त पुरुषोंका नगरो उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता पिता, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्मकथाओ, यह लौक और परलौककी ऋद्धि, भोग परित्यागो, प्रव्रज्याओ, श्रुतपरिग्रहो; तपो उपधानो बहुविध प्रतिमाओ, क्षमा, आर्जव, मार्दव, सत्य सहित शौच, सत्तर प्रकारको संयम उत्तम ब्रह्मचर्य, अकिंचनता, तप क्रियाओ, समितिओ, गुप्तिओ, अप्रमादयोग उत्तम स्वाध्याय और ध्यानका स्वरूप, उत्तम संयमको प्राप्त और जित परिषह पुरुषोंको चार प्रकारका कर्मक्षय हुवा बाद उत्पन्न हुवो अंत समय केवल ज्ञानको लाभ, मुनिओंका पर्याय काल, पादपोपगमन पवित्र मुनिवर जीतना भक्तो (भक्तनो) कुं त्याग करके अंतकृत हुवा इत्यादि. इस अंगका श्रुतस्कंध एक है इत्यादि शेष यंत्रमें.

६ अनुत्तरोपपातिक सूत्रमें—अनुत्तरोपपातिको (मुनिओ)का नगरो, उद्यानो चैत्यो, वनखंडो राजाओ, माता पिताओ, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, यह लौकका और परलौकका ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो, श्रुतपरिग्रहो, तपो, उपधानो, पर्याय, प्रतिमा, संलेखना, भक्तपान प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो, सुकुलप्रत्यावतारो, बोधि लाभो, और अंतक्रियाओ नवमा अंगमें १ श्रुतस्कंध है इत्यादि शेष यंत्रमें.

१० प्रश्न व्याकरण सूत्रमें—एकसो आठ प्रश्नो, एकसो आठ अप्रश्नो, एकसो आठ प्रश्नाप्रश्नो, अंगुठा प्रश्नो, बाहु प्रश्नो, आदर्श

(काच) प्रश्नो और भी विद्याका अतिशयो तथा नागकुमार और सुवर्ण कुमारकी साथे हुआ दिव्य संवादो इस अंगमें श्रुत स्कंध १ हे इत्यादि शेष यंत्रमें वर्तमान इस अंगमें पांचाश्रव पांच संवरका सविस्तार वर्णन है ।

११ विपाक—सूत्रमें विपाक संक्षेपसे दो प्रकार दुःख विपाक (पापका फल) और सुख विपाक (पुण्यका फल) जीसमें दुःख विपाकमें दुःखविपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो वनखंडो, राजाओ, माता पिता, समवसरण, धर्माचार्यों, धर्म कथाओ, नरक गमनो संसार प्रबंध दुःख परंपरा, और सुख विपाकमें सुख बिपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता, पिताओ, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, अलौकिकी और परलौककी ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो तपो, उपधानो पर्यायो प्रतिमाओ, संलेखनाओ, भक्त प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलावतारा, बोधिलाभ और अंतक्रियाओ, इस अंगमें इत्यादि शेष यंत्रमें ।

१२ दृष्टिवाद सूत्रमें —सब पदार्थोंकी प्ररूपणा है जीस्का अंग पांच है । १ परिकर्म (गणित विशेष तथा छन्द, पद्, काव्यादिकी रचनाकी संकलना २ सूत्र (दृष्टिवाद संबंधी ८८ सूत्रका विचार) ३ पूर्व (१४ पूर्व) ४ अनुयोग (जिसमें तिर्थंकरोंका चवनादि पंचकल्याणक व परिवार तथा रुषभदेव और अजीतनाथके आंतरामें पाटोनपाट मोक्ष गये थे जीस्का अधिकार (५) चूलिका (पूर्वोके उपर चूलिका) दृष्टिवादमें श्रुतस्कंध एक है पूर्व चौदा वत्थू (अध्येन) संख्याता इत्यादि ।

इन द्वादशांगीमें प्रत्येक अंगकी, प्रत्येक वांचना है संख्याता व्याख्यानद्वार, संख्याता वेढा जातका छंद, संख्याता श्लोक, संख्याती निर्युक्ति, संख्याति संग्रहणी गाथा, संख्याति परिवृत्ति, संख्यातापद, संख्याता अक्षर, अनंता गमा, अनंतापर्यवा, परितात्रस और अनंता स्थावर इत्यादि सामान्य विशेष प्रकारे श्री

तिर्थंकर भगवानने परुपणा करी है और द्वादशांगीमें अनंता भाव, अनंता अभाव, अनंताहेतु, अनंता अहेतु, अनंताकारण, अनंता-अकारण, अनंता जीव, अनंताअजीव, अनंताभवसिद्धिया, अनंता अभव सिद्धिया अनंता सिद्धा, अनंता असिद्धा इत्यादि भाव है.

नोट—कालीक उत्कालीक सूत्रोंके सिवाय भगवान् ऋषभप्रभुके ८४००० मुनिओंने ८४००० पईन्नायावत् वीर प्रभुके १४००० मुनिओंने १४००० पईन्ना रचे थे अर्थात् जीस तीर्थंकरोके जीतने मुनि होते है वह उत्पातिकादि स्वयं बुद्धिसे एक एक पइन्ना बनाता था।

इनके सिवाय कर्मग्रन्थमें श्रुतिज्ञानके १४ भेदोंके सिवाय २० भेद बतलाये है यथा—

(१) पर्यायश्रुत—उत्पत्तिके प्रथम समयमें लब्धि अपर्याप्ता सूक्षम निगोदके जीवोंको जो कुश्रुतका अंश होता है उससे दुसरे समयमे ज्ञानका जीतना अंश बढ़ता है वह पर्याय-श्रुत है।

(२) पर्याय समासश्रुत—उक्त पर्यायश्रुतके समुदायको अर्थात् दो तीनादि संख्याओको पर्याय समासश्रुत कहते है।

(३) अक्षरश्रुत—अकारादि लब्धि अक्षरोंमेंसे कीसी एक अक्षरको अक्षरश्रुत कहते है।

(४) अक्षरसमासश्रुत—लब्ध्यक्षरोंके समुदायको अर्थात् दो तीनादि अक्षरोको अक्षरसमासश्रुत कहते है।

(५) पदश्रुत—जिस अक्षर समुदायसे पुरा अर्थ मालुम हो वह पद और उसके ज्ञानको पदश्रुत कहते है।

(६) पदसमासश्रुत—पदोंके समुदायके ज्ञानको पदसमासश्रुत कहते है।

(७) संघातश्रुत—गति आदि चौदा मार्गणाओंमेंसे किसी एक मार्गणाके एक देशके ज्ञानको संघातश्रुत कहते है।

(८) संघातसमासश्रुत - किसी एक मार्गणाके अनेक देशोंका ज्ञानको संघातसमासश्रुत कहते है जैसे गति मार्गणाके च्यार अवयव है नरकगति, तीर्यंचगति मनुष्यगति देवगति जिसमें एक अवयवका ज्ञान होना उसे संघातसमासश्रुत कहते है।

(९) प्रतिपातिश्रुत—गति इन्द्रिय आदि कीसी द्वारसे संसारके जीवोंका ज्ञान होना उसे प्रतिपातिश्रुत कहते है।

(१०) प्रतिपातिसमासश्रुति—गति इन्द्रिय आदि बहुतसे द्वारोसे संसारी जीवोंका ज्ञान होना।

(११) अनुयोगश्रुत—" संतपय परुपणा द्रव्व पमाणं च " इस पदमें कहा हुवा अनुयोगद्वारोमेंसे कीसी एक के द्वारा जीवादि पदार्थोंको जानना अनुयोगश्रुत है

(१२) अनुयोगसमासश्रुत-एकसे अधिक दो तीन अनुयोगद्वारा जीवादि पदार्थोंको जानना उसे अनुयोगसमासश्रुत कहते है।

(१३) प्राभृत-प्राभृतश्रुत—दृष्टिवादके अन्दर प्राभत-प्राभृत नामका अधिकार है उनोंसे कीसी एकका ज्ञान होना।

(१४) प्राभृत प्राभृत समासश्रुत - दो तीन च्यारादि प्राभृत प्राभृतोंसे ज्ञान होना उसे प्रा० प्रा० समास कहते है।

प्राभृतश्रुत—जैसे एक अध्ययनके अनेक उद्देसा होते है इसी माफीक प्राभृत प्राभृतके विभागरूप प्राभृत है जिस एकसे ज्ञान होना उसे प्राभृत ज्ञान कहते है

(१६) प्राभृतसमासश्रुत—उक्त दो तीन च्यारादिसे ज्ञान होना उसे प्राभृतसमासश्रुत कहते है।

(१७) वस्तुश्रुत—केइ प्राभृतके अवयवरूप वस्तु होते है जिनसे एक वस्तुसे ज्ञान होना उसे वस्तुश्रुत

(१८) वस्तुसमासश्रुत—उक्त दो तीन च्यारादि वस्तुवोंसे ज्ञान होना उसे वस्तुसमास कहते है।

(१९) पूर्वश्रुत—अनेक वस्तुवोंसे एक पूर्व होते है उन एक पूर्वका ज्ञान होना उसे पूर्वज्ञान कहते है।

(२०) पूर्वसमासश्रुत—दो तीन पूर्व-वस्तुवोंसे ज्ञान होना उसे पूर्वसमास ज्ञान कहा जाता है।

इस्के सिवाय श्रुतज्ञानवाला उपयोग संयुक्त सर्वार्थसिद्ध वैमान तककी बातकों प्रत्यक्षसे जान सकता है।

एकादशांगका यंत्र.

संख्या.	अंगनाम.	मूलपद संख्या.	वर्तमान पद संख्या.	कर्ता.	अध्ययन.	उदेशा.	टीका संख्या.	टीका कर्ता.	टीका संवत.
१	आचारांग	*१८०००	२५२५	पांचमा गणधर सुधर्मा स्वामिजी.	२५	८५	१२०००	शीलाङ्का-चार्य	९३३
२	सूयगडायांग	३६०००	२१००		२३	३३	१२८५०		९३३
३	स्थानायांग	७२०००	३६००		ठा० १०	२१	१४२५०	श्री अभयदेवसूरिजी	११२०
४	समवायांग	१४४०००	१६६७		१	१	३५७४		११२०
५	भगवतीजी	२८८०००	१५७५२		श. ४१ / १३८	१०००० / १९२५	१८६१६		११२०
६	ज्ञाताधर्म कथा	५७६०००	५४००		१९ / २०६	०	३८००		११२०
७	उपाशकदशांग	११५२०००	८५२		१०	०	८००		११२०
८	अन्तगडदशा०	२३०४०००	८९९		व. ८	९०	४००		११२०
९	अनुत्तरोववाइ	४६०८०००	१९२		व. ३	३३	१००		११२०
१०	प्रश्नव्याकरण	९२१६०००	१२५६		४५ / १०	०	४६००		११२०
११	विपाक	१८४३२०००	१२१६		२०	०	६००		११२०

* एक पदके अक्षर १६३४८३०७८८९ इतने होते है जिस्कों ३२ अक्षरके श्लोक गीणा जावेतों एक पदके ५१०८८४६२१॥ श्लोक होते है एसे १८००० पद श्री आचारांगजीसूत्रके थे इसी माफीक सर्व आगमोका समज लेना।

१४ पूर्वका यंत्र.

पूर्वोका नाम	पद संख्या	कर्ता	वत्थु	चूल वत्थु	साहीहस्ति	विषय
उत्पाद	क्रोड	सुधर्मास्वामी पांचमा गणधर	१०	४	१*	सर्व द्रव्यगुण पर्यायका उत्पन्न और नाश.
अग्रणीय	७० लाख		१४	१२	२	सर्व द्रव्यगुण पर्यायका जाणपणा.
वीर्य	६० ,,		८	८	४	जीवोंके वीर्यका व्याख्यान.
आस्तिनास्ति	१ क्रोड		१८	१०	८	आस्तिनास्तिका स्वरूप व स्याद्वाद
ज्ञानप्रमाद	२ ,,		१२	०	१६	पांच ज्ञानका व्याख्यान.
सत्य प्र०	२६ ,,		२	०	३२	सत्यसंजमका व्याख्यान.
आत्मा प्र०	१ क्रो. ८० ला		१६	०	६४	नय, प्रमाण, दर्शन सहित आत्माका स्वरूप.
कर्म प्र०	८४ लाख		३०	०	१२८	कर्मप्रकृति, स्थिति, अनुभाग, मूल उत्तर प्रकृति.
प्रत्याख्यानप्र०	१ क्रो. १० ह		२०	०	२५६	प्रत्याख्यानका प्रतिपादन.
विद्या प्र०	२६ क्रोड		१५	०	५१२	विद्याके अतिशयका व्याख्यान.
कल्याणक प्र०	१ क्रोड		१२	०	१०२४	भगवानका कल्याणकका व्याख्यान.
प्राणावाय	६ क्रोड		१३	०	२०४८	भेद सहित प्राणका विषयको व्याख्यान.
क्रिया विशाल	१२ क्रो ५० ला.		३०	०	४०९६	क्रियाका व्याख्यान.
लोकबिंदु सार	१६ लाख		२५	०	८१९२	बिंदुके अंदर लोकका स्वरूप सर्व अक्षर सन्निपात.

* एक हस्ति अंबाडी सहित हो इतना लिग साहीका करे उतनी साहीसे प्रथम पूर्व लीखा जाता है इसी माफिक क्रमशः २-४-८-१६-३२-६४-१२८-२५६-५१२-१०२४-२०४८-४०९६-८१९२ हस्तियोंकि साहिसे १४ पूर्व लिखे जाते है कूल १६३८३ हस्ती.

इन द्वादशांगीकों भूतकालमें अनंतेजीवों विराधना करके चतुर्गति संसारके अंदर परिभ्रमण कीया. वर्तमान कालमें संख्याते जीव परिभ्रमण करते है. और भविष्य कालमें अनंतेजीव परिभ्रमण करेगें.

इस द्वादशांगीकी भूतकालमें अनंतेजीवों आराधना करके संसाररूपी समुद्रकों पार पहोंचे (मोक्ष गये) और वर्तमान कालमें संख्याते जीव मोक्ष जाते है (महाविदेह अपेक्षा) और भविष्यमें द्वादशांगीकों आराधन करके अनंते जीव मोक्ष जावेगें.

यह द्वादशांगी भूतकालमें थी, वर्तमान कालमें है और भविष्य कालमें रहेगी. जैसे पंचास्तिकायकी माफिक निश्चल नित्य, शाश्वती. अक्षय, अव्याबाध, अवस्थित रहेगी.

श्रुतज्ञानका संक्षेपसे चारभेद हे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव.

(१) द्रव्यसे उपयोग युक्त श्रुतज्ञान सर्व द्रव्यकों जाने देखे.
(२) क्षेत्रसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व क्षेत्रकों जाने देखे.
(३) कालसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व कालकों जाने देखे.
(४) भावसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व भावकों जाने देखे.

चौदा प्रकारके श्रुतिज्ञानके अन्तमें सूत्रका व्याख्या करनेकी पद्धति बतलाइ है. व्याख्यानदाताओंको प्रथम मूल सूत्र कहना चाहिये. तदान्तर मूल सूत्रका शब्दार्थ. तदान्तर निर्युक्ति. तदान्तर विषय विस्तारसे प्रतिपादनार्थ, टीका, चूर्णी, भाष्य तथा हेतु दृष्टान्त युक्ति द्वारा स्पष्टिकरण करना यह व्याख्यानकी पद्धति है ।

इति श्रुतज्ञान. इति परोक्षज्ञान.

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम.

थोकडा नम्बर ६७

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ३३ अवधिज्ञानाधिकार

भव १ विषय २ संस्थान ३ अभ्यान्तरबाह्य ४ देशसर्व ५ हीयमान वृद्धमान अवस्थीत ६ अनुगमि अनानुगमि ७ प्रतिपाति अप्रतिपाति ८ ।

(१) भव-नारकि देवताओंको अवधिज्ञान भवप्रत्य होते है और मनुष्य तथा तीर्यंच पांचेन्द्रियकों क्षोपशमसे होते है ।

(२) विषय-अवधिज्ञान अपनी विषयसे कितने क्षेत्रको देख सकते है जान सकते है ।

(१)	रत्न प्रभा नारकि	जघन्य	३॥	गाउ	उत्कृष्ट	४	गाउ.
(२)	शार्करा प्रभा नारकि	,,	३	,,	,,	३॥	,,
(३)	वालुका प्रभा नारकि	,,	२॥	,,	,,	३	,,
(४)	पङ्क प्रभा नारकि	,,	२	,,	,,	२॥	,,
(५)	धूम प्रभा नारकि	,,	१॥	,,	,,	२	,,
(६)	तमः प्रभा नारकि	,,	१	,,	,,	१॥	,,
(७)	तमस्तमा प्रभा नारकि	,,	०॥	,,	,,	१	,,

असुरकुमार के देव ज० २५ योजन उ० उर्ध्व लोकमे सौधर्म कल्प अधोलोकमे तीसरी नरक. तीर्यगलोगमें असंख्याते द्विप समुद्र अवधिज्ञानसे जाने देखे। नागादि नौजातिके देव० ज० २५ योजन. उ० उर्ध्वलोकमें ज्योतीषीयोंके उपरका तला. अधोलोकमे पहली नरक. तीर्यगलोकमें संख्याते द्विपसमुद्र. पर्वव्यन्तर देव. और ज्योतिषी देव. ज० उ० संख्याते द्विप समुद्र ज्ञाने. सौधर्मेशान कल्पके देव जघन्य आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० उर्ध्व स्वध्वजा पताका अधोमें पहली नारक तीर्यगलोकमें असंख्याते द्विपसमुद्र

एवं सनत्कुमार महीन्द्रदेव परन्तु अधोलोकमें दूसरी नरक जाने. एवं ब्रह्म और लांतकदेव परन्तु अधोलोकमें तीसरी नरक जाने. एवं महाशुक्र सहस्रदेव परन्तु अधोलोकमें चोथी नरक जाने. एवं आणत प्राणत अरण्य अच्यूतदेव परन्तु अधोलोक पांचमी नरक जाने. एवं नौग्रीवेगके देव परन्तु अधोलाकमें छटी नरक जाने. एवं च्यारानुत्तर वैमान परन्तु अधोलोकमें सातमी नरक जाने और सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव, लोकभिन्न याने सर्व त्रसनालिको जाने यह बात ख्यालमे रखना कि सब देव उर्ध्व तो अपने अपने वैमानके ध्वजा पताका और तीर्यगलोकमे असंख्याते द्विप समुद्र देखता है। तीर्यंच पांचेन्द्रिय ज० आंगुलके असंख्यातमे भाग. उ० असंख्याते द्विप समुद्र जाने.। मनुष्य ज० आंगु० असं० भाग उ० सर्व लोक जाने देखे और लोक जैसे असंख्यात खंड अलोकमें भी जान सकते है। परन्तु वहां रूपी पदार्थ न होनेसे मात्र विषय ही मानी जाती है.

(३) संस्थान-अवधिज्ञानद्वार जिस क्षेत्रकों जानते है वह कीस आकारसे देखते वह कहते है. नारकि तीपायाके संस्थान. भुवनपति पालाके संस्थान, व्यन्तर देव ढोलके संस्थान. ज्योतिषी झालरके संस्थान. बारह देवलोकके देव उर्ध्व मर्दंग के संस्थान, नौग्रीवेग पुष्पोंकि चंगेरीके आकार, पांचानुत्तर वैमानके देव, कुंमारिकाके कंचुके संस्थान मनुष्य और तीर्यंच अनेक संस्थानसे जानते है।

(४) नारकी देवताओमें अवधिज्ञान है उसे अभ्यान्तर ज्ञान कहते हैं कारण वह परभवसे आते है तब ज्ञान साथमें ले के आते हैं। तीर्यंचकों बाह्य ज्ञान. अर्थात् वह उत्पन्न होनेके बाद क्षोपशम भावसे ज्ञान होता है। मनुष्यमें दोनो प्रकारसे ज्ञान होता है अभ्यान्तर ज्ञान और बाह्यज्ञान ।

(५) नारकि देवता और तीर्यंच पांचेन्द्रियके ज्ञान है वह देशसे होता है (मर्यादा संयुक्त) और मनुष्य के देश और सर्व दोनो प्रकारसे होता हैं

(६) नारकि देवताओंके ज्ञान है सो अवस्थीत है कारण वह भवप्रत्य ज्ञान है और मनुष्य तीर्यंचके ज्ञान तीनो प्रकारका है हियमान वृद्धमान और अवस्थीत।

(७) नारकि देवताओके अवधिज्ञान अनुगामि है याने जहां जाते है वहां साथमें चलता है और मनुष्य तीर्यंचमें अनुगामि अनानुगामि दोनों प्रकारसे होता है।

(८) नारकि देवताओंके अवधिज्ञान अप्रतिपाति है कारण वह भवप्रत्य होता है और तीर्यंच पांचेन्द्रियमें प्रतिपाति है मनुष्यके दोनो प्रकारका होता है प्रतिपाति अप्रतिपाति कारण मनुष्यमें केवलज्ञान भी होता है परम अवधिज्ञान भी होता है इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्

थोकडा नम्बर ६८

सूत्रश्री भगवतीजी शतक ८ उ० २ पांच ज्ञानकि लब्धि।

द्वारोंके नाम. जीव, गति, इन्द्रिय, काय, सूक्षम, पर्याप्ति, भवार्थी, भवसिद्धि, संज्ञी, लब्धि, ज्ञान, योग, उपयोग, लेश्या, कषाय, वेद, आहार, नाण, काल, अन्तर. अल्पाबहुत्व, ज्ञानपांच, मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, तथा अज्ञान तीन मतिअज्ञान, श्रुतिअज्ञान, विभंगज्ञान, चन्ह–जहां. भ हो वहा भजना, स्यात् हो स्यात न भी हो स्यात् कम भी हो. जहा नि–नियम. निश्चय कर होता ही है।

संख्या.	मार्गणा.	पांच ज्ञानसे.	तीनाज्ञानसे.
१	समुच्चय जीवमें	५ भजना	३ भजना
२	पहली नरक १० भुवनपति व्यन्तरमें	३ नियमा	३ भजना
३	छे नरक ज्योतिषी १२ देवलोक नौग्रीवेक	३ नियमा	३ नियमा
४	पांचानुत्तर वैमानमें	३ नियमा	० ० ०
५	पांच स्थावर असंज्ञी मनुष्यमें	० ० ०	२ नियमा
६	तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यचमें	२ नियमा	२ नियमा
७	संज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रियमें	३ भजना	३ भजना
८	संज्ञी मनुष्यमे	५ भजना	३ भजना
९	श्री सिद्ध भगवानमें	१ नियमा	० ० ०
१०	नरकगतिऔर देवगतियोंमें	३ नियमा	३ भजना
११	तीर्यंचगतियोंमें	२ नियमा	२ नियमा
१२	मनुष्य गतियोंमें	३ भजना	२ नियमा
१३	सिद्धगतियोंमें	१ नियमा	० ० ०
१४	सेन्द्रिय पांचेन्द्रियमें	४ भजना	३ भजना
१५	तीन वैकलेन्द्रियमें	२ नियमा	२ नियमा
१६	एकेन्द्रियमें	० ० ०	२ नियमा
१७	अनेन्द्रियमें	१ नियमा	० ० ०

१८	सकाय त्रसकायमें	५ भजना	३ भजना
१९	पांच स्थावर कायमें	० ० ०	२ नियमा
२०	अकायमें	१ नियमा	० ० ०
२१	सूक्ष्ममें	० ० ०	२ नियमा
२२	बादरमें	५ भजना	३ भजना
२३	नोसूक्ष्मनो बादरमें	१ नियमा	० ० ०
२४	प्रथम नरक १० भुवन० व्यन्तरके अपर्याप्ता	३ नियमा	३ भजना
२५	पांच नरक २१ देवलोक ज्योतिषीयोके अपर्याप्ता.	३ नियमा	३ नियमा
२६	पांचानुत्तर वैमानके अपर्याप्तामें	३ नियमा	० ० ०
२७	सातवी नरकके अपर्याप्तामें	० ० ०	३ नियमा
२८	पांच स्थावर असंज्ञी मनु० अपर्या०	० ० ०	२ नियमा
२९	तीन वैकले० असंज्ञी तीर्यंच अपर्याप्ता	२ नियमा	२ नियमा
३०	संज्ञी तीर्यंचके अपर्याप्ता	२ नियमा	२ नियमा
३१	संज्ञी मनुष्यके अपर्याप्ता	३ भजना	२ नियमा
३२	नरकसे नौग्रीवैगके पर्याप्तामें	३ नियमा	३ नियमा
३३	पांचानुत्तर वैमातके पर्याप्तामें	३ नियमा	० ० ०
३४	पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यंच असंज्ञी मनुष्यके पर्याप्तामें	० ० ०	२ नियमा
३५	संज्ञी तीर्यंचके पर्याप्तामें	३ भजना	३ भजना

३६	संज्ञी मनुष्यके पर्याप्तामें			५ भजना	३ भजना
३७	नोपर्याप्ता नोअपर्याप्तामें			१ नियमा	० ० ०
३८	नरक और देव भवस्थामें	भवमें रहे हुवे कों		३ नियमा	३ भजना
३९	तीर्थंच भवस्थामें			३ भजना	३ भजना
४०	मनुष्य भवस्थामें			५ भजना	३ भजना
४१	अभवस्थामें			१ नियमा	० ० ०
४२	भवसिद्धि जीवोंमें	० ० ०	० ० ०	५ भजना	३ भजना
४३	अभवसिद्धिमें	० ० ०	० ० ०	० ० ०	३ भजना
४४	नोभव्य नोअभव्यमें			१ नियमा	० ० ०
४५	संज्ञी जीवोंमें			४ भजना	३ भजना
४६	असंज्ञी जीवोंमें			२ नियमा	२ नियमा
४७	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी			१ नियमा	० ० ०
४८	ज्ञानलद्धियोंमें			५ भजना	० ० ०
४९	ज्ञानके अलद्धियोंमें			० ० ०	३ भजना
५०	मतिश्रुति ज्ञानके लद्धियोंमें			४ भजना	० ० ०
५१	तस्स अलद्धियोंमें			१ नियमा	३ नियमा
५२	अवधि० मनः पर्यवज्ञानलद्धियोंमें			४ भजना	० ० ०
५३	तस्स अलद्धियोंमें			४ भजना	३ भजना
५४	केवलज्ञानके लद्धियोंमें			१ नियमा	० ० ०

५५	तस्स अलद्धियोंमें	४ भजना	३ भजना
५६	मतिश्रुति अज्ञानके लद्धियोंमें	० ० ०	३ भजना
५७	तस्स अलद्धियोंमें	५ भजना	३ भजना
५८	विभंग ज्ञानके लद्धियामें	० ० ०	३ नियम
५९	तस्स अलद्धियामें	५ भजना	२ नियमा
६०	दर्शनके लद्धियामें	५ भजना	३ भजना
६१	सम्यग्दर्शनके लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
६२	तस्स अलद्धियामें	० ० ०	३ भजना
६३	मिथ्या-मिश्रदर्शन लद्धियामें	० ० ०	३ भजना
६४	तस्सलद्धियामे	५ भजना	३ भजना
६५	चारित्र लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
६६	तस्स अलद्धियामें	४ भजना	३ भजना
६७	सा० छ० प० सू० चारित्र लद्धियोंमें	४ भजना	० ० ०
६८	तस्स अलद्धियामें	४ भजना	३ भजना
६९	यथाख्यात चा० लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
७०	तस्सालद्धियामें	४ भजना	३ भजना
७१	चारित्रा चारित्रके ल० में	३ भजना	० ० ०
७२	तस्स अलद्धियामें	५ भजना	३ भजना

७३	दानादिलब्धि लाभ० भोग. उपभोग. वीर्य लब्धि के लब्धियामें ०.० ०.०.०	५ भजना	३ भजना
७४	तस्सालब्धियामें	१ नियमा	० ० ०
७५	बाललब्धिके लब्धियामें	३ भजना	३ भजना
७६	तस्स अलब्धियामें	५ भजना	० ० ०
७७	पंडित लब्धिके लब्धियामें	५ भजना	० ० ०
७८	तस्स अलब्धियामें	४ भजना	भजना
७९	बाल पंडित ल० ल० में	३ भजना	० ० ०
८०	तस्स अलब्धियामें	५ भजना	३ भजना
८१	सेन्द्रिय. स्पर्शेन्द्रियके लब्धियामें	४ भजना	३ भजना
८२	तस्सालब्धियामें	१ नियमा	० ० ०
८३	श्रोत्रेन्द्रिय० चक्षु० घ्राणेन्द्रिय ल० में	४ भजना	३ भजना
८४	तस्सालब्धियामें	३ नियमा	२ नियमा
८५	रसेन्द्रियके लब्धियामें	४ भजना	३ भजना
८६	तस्सालब्धियामें	२ नियमा	२ नियमा
८७	मत्यादि च्यार ज्ञानमें	४ भजना	० ० ०
८८	केवलज्ञानमें	१ नियमा	० ० ०
८९	चक्षु अचक्षुदर्शमें	४ भजना	३ भजना
९०	अवधि दर्शनमें	३ भजना	३ नियमा

९१	केवलदर्शनमें	१ नियमा	० ० ०
९२	सयोगी. मन. वचन काययोगमें	५ भजना	३ भजना
९३	अयोगिमें	१ नियमा	० ० ०
९४	साकार मणाकरोपयोगमें	५ भजना	३ भजना
९५	सलेशी शुक्ललेशीमें	५ भजना	३ भजना
९६	कृष्णादि पांच लेश्यामें	४ भजना	३ भजना
९७	अलेशीमें	१ नियमा	० ० ०
९८	सकषायि. क्रोधमानमायालोभमें	४ भजना	३ भजना
९९	अकषायिमें	५ भजना	० ० ०
१००	सवेद. स्त्रि. पुरुष. नपुंसकवेदमें	४ भजना	३ भजना
१०१	अवेदीमें	५ भजना	० ० ०
१०२	आहारीक जीवोमें	५ भजना	३ भजना
१०३	अनाहारीक जीवोमें	४ भजना	३ भजना

पाचों ज्ञानकि विषय थोकडा नं. ६४-६५-६६ में लिखी गइ है तीन अज्ञानकि विषय संक्षेपसे यहां लिखी जाति है. मति अज्ञानके च्यार भेद है द्रव्यसे परिग्रहीत द्रव्यकों जाने. क्षेत्रसे परिग्रहित क्षेत्रको जाने. कालसे परिग्रहित कालको जाने, भावसे परिग्रहित भावको जाने. श्रुति अज्ञानके भी इसी माफीक च्यार भेद है परन्तु वहां सामान्य विशेष रूपमे प्ररूपणा करे. एवं विभंगज्ञानकेभी च्यार भेद है परन्तु परिग्रहितद्रव्यादिको सामान्य विशेष रूपमे जाने और देखे (इति)

कालद्वार—सज्ञानिके दो भेद है. सादि सान्त. प्रथम गुणस्थान त्यागसे ज्ञानकि सादि है और ग्यारवे गुणस्थानादिसे पुनः प्रथम गुणस्थान जाना ज्ञानका अन्त है। मतिज्ञान श्रुतिज्ञानकि स्थिति जघन्य अन्तरमुहुर्त्त उ० छासट (६६) सागरोपम साधिक एवं अवधिज्ञान परन्तु जघन्य एक समयका कालभी है. मनःपर्यव ज्ञान. ज० एक समय. उ० देशोनपूर्वकोड. केवलज्ञानकि स्थिति नही है किन्तु सादि अनन्त है. मतिअज्ञान श्रुति अज्ञानके तीन भेद है अनादि अनन्त.=अभव्यापेक्षा, अनादि सान्त, भव्यापेक्षा सादि सान्तकि स्थिति ज० अन्तरमहुर्त उ० देशोन अर्धपुद्गल. विभंगज्ञान. ज० एक समय उ० तेतीस सागरोपम देशोन पूर्व कोड अधिक।

अन्तरद्वार—सज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतिज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्यवज्ञानीका अन्तर पडे तो ज० अन्तर मुहुर्त्त उ० देशोन आधापुद्गल. केवलज्ञानका अन्तर नही है मतिअज्ञान श्रुतिअज्ञान सादी सान्तका अन्तर ज० अन्तर मुहुर्त्त उ० छासट सागरोपम साधिक. विभंगज्ञानका अन्तर ज० एक समय उ० अनंतकाल यावत् देशोन आधापूद्गलपरावर्तन।

अल्पाबहुत्वद्वार=सर्व स्तोक मनःपर्यवज्ञानी. अवधिज्ञानी असंख्यातगुणे, मतिज्ञानी श्रुतिज्ञानी आपसमे तूल्य और विशेषाधिक. केवलज्ञानी अनंतगुण. सज्ञानीविशेषाधिक सर्वस्तोक विभंगज्ञानी, मतिअज्ञानी श्रुतिअज्ञानी आपसमे तुल्य अनंतगुण समुच्चयअज्ञानि विशेषाधिक।

ज्ञानपर्यवकि अल्पाबहुत्व सर्वस्तोक मनःपर्यव ज्ञानके पर्यव अवधिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. श्रुतिज्ञानके पर्यव अनन्त गुणे मतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. केवलज्ञानके पर्यव अनंतगुणे ॥ सर्वस्तोक विभंगज्ञानके पर्यव. श्रुतिअज्ञानके पर्यव अनंतगुणे मतिज्ञानके पर्यव

अनंतगुणे । दोनो सामिल ॥ सर्वस्तोक मनःपर्यव ज्ञानके पर्यव. विभंगज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. अवधिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. श्रुतिअज्ञानके पर्यव अनंतगुने. श्रुतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. मति अज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. मतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. केवल ज्ञानके पर्यव अनंतगुणे ॥ इतिशम्।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.

इति श्री शीघ्रबोध भाग ६ ठा समाप्तम्

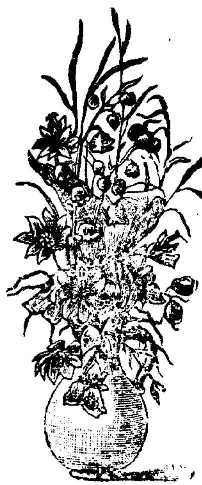

अथश्री

शीघ्रबोध भाग ७ वां.

थोकडा नम्बर ६६

इस थोकडे में जीवों के प्रश्न लिखे जाते है जीसकों पढनेसे तर्कशक्ति बहुत बढ जाति है अनेक आगमोंका सूक्ष्मज्ञान कि भी प्राप्ती होती है स्याद्वाद रहस्यका भी ज्ञान हो जाता है और संसार समुद्रमें अनेक प्रकारकि आपतियोंसे सहज ही से मुक्त हो जाता है बुद्धिबल इतना तो जोरदार हो जाता है कि इस थोकडेकों उपयोग पूर्वक कण्ठस्थ करलेनेके बाद कैसा ही प्रश्न क्यों न हो वह फौरन् ही समझमे आजायगा और स्याद्वादसे उस्का उत्तर भी वह ठीक तोरसे दे सकेगा वास्ते आप इस थोकडेको कण्ठस्थ कर अनुभव रसका आन्नद लिजिये। शम्

जीवोंके भेद.	कोनसे कोनसे स्थानपर मिलते हैं उनोंके नाम कि मार्गणा निचे मुजब है.	नारकीके भेद. १४	तीर्यञ्चके भेद. ४८	मनुष्यके भेद. ३०३	देवतोंके भेद. १९८
१	अधोलोकके केवलीमें	०	०	१	०
२	निश्चय एकावतारीमें	०	०	०	२
३	तेजोलेशी एकेन्द्रियमें	०	३	०	०

४	पृथ्वीकायमें	०	४	०	०
५	मिश्रदृष्टि तिर्यंचमें	०	५	०	०
६	उर्ध्वलोककि देवीमें	०	०	०	६
७	नरकके पर्याप्तामें	७	०	०	०
८	दोयोगवाले तीर्यंचमें	०	८	०	०
९	उर्ध्वलोक नोगर्भज तेजोलेशीमें	०	३	०	६
१०	एकान्त सम्यग्द्रष्टिमें	०	०	०	१०
११	वचनयोगी चक्षुइन्द्रियतीर्यचमें	०	११	०	०
१२	अधोलोकके गर्भजमें	०	१०	२	०
१३	वचनयोग तीर्यंचमें	०	१३	०	०
१४	अधोलोक वचनयोगी औदारीकश०	०	१३	१	०
१५	केवलीमें	०	०	१५	०
१६	उर्ध्वलोक पांचेन्द्रियतेजोलेशीमें	०	१०	०	६
१७	सम्यग्द्रष्टि घ्राणेन्द्रियतीर्यंचमें	०	१७	०	०
१८	सम्यग्द्रष्टि तीर्यंचमें	०	१८	०	०
१९	उर्ध्वलोकके तेजोलेशीमें	०	१३	०	६
२०	मिश्रदृष्टिगर्भजमें	०	५	१५	०
२१	औदारीकसे वैक्रियकरनेवालोमें	०	६	१५	०
२२	एकेन्द्रियजीवोमें	०	२२	०	०
२३	अधोलोकके मिश्रदृष्टिमें	७	५	१	१०

२४	घ्राणेन्द्रिय तीर्यंचमें	०	२४	०	०
२५	अधोकवचन योगीदेवोंमें	०	०	०	२५
२६	त्रसतीर्यंचमें	०	२६	०	०
२७	शुक्लेशी मिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	७
२८	तीर्यंच एक संहननवालोंमें	०	२८	०	०
२९	अधोलोक त्रस औदारीकमें	०	२६	३	०
३०	एकान्तमिथ्यात्वी तीर्यंचमें	०	३०	०	०
३१	अधोलोक पुरुषवेद भाषकमें	०	५	१	२५
३२	पद्मलेशीमिश्र दृष्टिमें	०	५	१५	१२
३३	पद्मलेशी वचन योगीमें	०	५	१५	१३
३४	उर्ध्वलोकके एकान्तमिथ्यात्वीमें	०	२८	०	६
३५	अवधिदर्शन औदारीक श० में	०	५	३०	०
३६	उर्ध्वलोक एकान्त नपुंसकमें	०	३६	०	०
३७	अधोलोक पांचेन्द्रिय नपुंसकमें	१४	२०	३	०
३८	अधोलोकके मनयोगीमें	७	५	१	२५
३९	अधोलोक एकान्त असंज्ञीमें	०	३८	१	०
४०	औदारीक शुक्लेशीमें	०	१०	३०	०
४१	शुक्लेशी सम्यग्द्रष्टि अभाषक	०	५	१५	२१
४२	शुक्लेशी वचनयोगीमें	०	५	१५	२२
४३	उर्ध्वलोकके मनयोगीमें	०	५	०	३८

४४	शुक्ललेशी देवताओंमें	०	०	०	४४
४५	कर्मभूमि मनुष्योंमें	०	०	४५	०
४६	अधोलोकके वचन योगीमें	७	१३	१	२५
४७	उर्ध्वलोकके शुक्लेशी अवधिज्ञान	०	५	०	४२
४८	अधोलोक त्रसअभाषक	७	१३	३	२५
४९	उर्ध्वलोक शुक्ललेशी अवधिदर्शन	०	५	०	४४
५०	ज्योतिषीयोंकि अगतिमें	०	५	४५	०
५१	अधोलोकके औदारीकमें में	०	४८	३	०
५२	उर्ध्वलोक शुक्ल० सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	०	४२
५३	अधोलोक एकान्त नपुंसक वेदमें	१४	३८	१	०
५४	उर्ध्वलोक शुक्ललेशीमें	०	१०	०	४४
५५	अधोलोक बादर नपुंसकमें	१४	३८	३	०
५६	तीर्यग्लोक मिश्रद्दष्टिमें	०	५	१५	३६
५७	अधोलोक पर्याप्तामें	७	२४	१	२५
५८	अधोलोक अपर्याप्तामें	७	२४	२	२५
५९	कृष्णालेशी मिश्रद्दष्टिमें	३	५	१५	३६
६०	अकर्मभूमिसंज्ञीमें	०	०	६०	०
६१	उर्ध्वलोक अनाहारीमें	०	२३	०	३८
६२	अधोलोक एकान्त मिथ्यात्वीमें	१	३०	१	३०
६३	अधो० उर्ध्वलोकके देवामरमें	०	०	०	६३

६४	पद्मलेशी सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	३०	२४
६५	अधोलोग तेजोलेश्यामें	०	१३	२	५०
६६	पद्मलेशीमें	०	१०	३०	२६
६७	मिश्रदृष्टि देवतोमें	०	०	०	६७
६८	तेजोलेशीमिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	४८
६९	उर्ध्वलोक बादरसास्वतोमें	०	३१	०	३८
७०	अधोलोकके अभाषकमें	७	३५	३	२५
७१	अधोलोक अवधिदर्शनमें	१४	५	२	५०
७२	तीर्यग्लोकके देवताओमें	०	०	०	७२
७३	अधोलोकके बादरमरणोवालोमें	७	३८	३	२५
७४	मिश्रदृष्टिनोगर्भजमें	७	०	०	६७
७५	उर्ध्वलोकके अवधिज्ञानमें	०	५	०	७०
७६	उर्ध्वलोकके देवताओमें	०	०	०	७६
७७	अधो० चक्षुइन्द्रियनोगर्भजमें	१४	१२	१	५०
७८	उर्ध्व० नोगर्भज सम्यग्द्रष्टिमें	०	८	०	७०
७९	उर्ध्वलोकके सास्वतोमें	०	४१	०	३८
८०	धातकिखंडका त्रसमें	०	२६	५४	०
८१	सम्यग्द्रष्टि देवतोंके पर्याप्तामें	०	०	०	८१
८२	शुक्ललेशी सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	३०	४२
८३	अधोलोक मरणोवालोमें	७	४८	३	२५

८४	शुक्ललेशी जीवोमें	०	१०	३०	४४
८५	अधो० कृष्णालेशीत्रसमें	६	२६	३	५०
८६	उर्ध्वलोकके पुरुषवेदमें	०	१०	०	७६
८७	उर्ध्वलोक घ्राणेन्द्रियसम्यग्द्रष्टिमें	०	१७	०	७०
८८	उर्ध्व० सम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	०	७०
८९	अधो० चक्षुइन्द्रियमें	१४	२२	३	५०
९०	मनुष्य सम्यग्द्रष्टिमें	०	०	९०	०
९१	अधोलोकके घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३	५०
९२	उर्ध्व० त्रसमिथ्यात्वीमें	०	२६	०	६६
९३	अधोलोकके त्रसमें	१४	२६	३	५०
९४	देवतामिथ्यात्वीपर्याप्तामें	०	०	०	९४
९५	नोगर्भजाभाषक सम्यग्द्रष्टिमें	६	८	०	८१
९६	उर्ध्वलोकके पांचेन्द्रियमें	०	२०	०	७६
९७	अधो० कृष्णालेशीबादरमें	६	३८	३	५०
९८	धातकीखंडके प्रत्येक शरीरमें	०	४४	५४	०
९९	वचनयोगीदेवताओमें	०	०	०	९९
१००	उर्ध्व० प्र० शरीरीबादरमिथ्यात्वी	०	३४	०	६६

थोकडा नंबर ७०

१०१	वचनयोगीमनुष्यमें	०	०	१०१	०
१०२	उर्ध्वलोकक्षेत्रसमें	०	२६	०	७६
१०३	अधोलोककेनोगर्भजमें	१४	३८	१	५०
१०४	एकान्त मिथ्या० सास्वतोंमें	०	३०	५६	१८
१०५	अधो० के बादरमें	१४	३८	३	५०
१०६	मनयोगी गर्भजमें	०	५	१०१	०
१०७	अधोलोकके कृष्णलेशीमें	६	४८	३	५०
१०८	औदारीक श० सम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	६०	०
१०९	कृष्ण० वैक्रिय० नोगर्भजमें	६	१	०	१०२
११०	उर्ध्वलोक बादर प्र० शरीरमें	०	३४	०	७६
१११	अधो० के प्रत्येक शरीरमें	१४	४४	३	५०
११२	उर्ध्वलोकके मिथ्यात्वीमें	०	४६	०	६६
११३	वचनयोगीघ्राणेन्द्रियऔदारीकमें	०	१२	१०१	०
११४	औदारी० वचनयोगीमें	०	१३	१०१	०
११५	अधोलोकमें	१४	४८	३	५०
११६	मनुष्यापर्याप्ता मरनेवालोमें	०	०	११६	०
११७	क्रियावादीसमोसरण अमरमें	६	०	३०	८१
११८	उर्ध्वलोक प्रत्येक शरीरमें	०	४२	०	७६

११९	घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगसास्वतेमें	७	१२	१९	८९
१२०	एकान्त असंज्ञी अपर्याप्तामें	०	१९	१०९	०
१२१	विभंगज्ञान मरनेवालोमें	७	९	१९	६४
१२२	कृष्णलेशीवैक्रय० स्त्रिवेदमें	०	९	१९	१०२
१२३	तीनशरीरीऔदारीक सास्वतोमें	०	३७	८६	०
१२४	लवणसमुद्रके घ्राणेन्द्रियसास्वतोमें	०	१२	११२	०
१२५	लवणसमु० के तेजोलेशीमें	०	१३	११२	०
१२६	मरणेवाले गर्भज जीवोमें	०	१०	११६	०
१२७	वैक्रयशरीर मरनेवालोमें	७	६	१९	९६
१२८	देवीमें	०	०	०	१२८
१२९	एकान्त असंज्ञी बादरमें	०	२८	१०१	०
१३०	लवणसमु० त्रसमिश्रयोगीमें	०	१८	११२	०
१३१	मनुष्य नपुंसकवेदमें	०	०	१३१	०
१३२	सास्वता मिश्रयोगीमे	७	२९	१९	८९
१३३	मनयोगी सम्यग्द्रष्टि असं. भववालोमें	७	९	४९	७६
१३४	बादर औदारीक सास्वतोमें	०	३३	१०१	०
१३५	प्र० शरीरी एकान्त असंज्ञीमें	०	३४	१०१	०
१३६	तीनलेशी औदारीशरीरमें	०	३५	१०१	०
१३७	क्रियावादी असास्वतोंमें	६	५	४९	८१
१३८	मनयोगी सम्यग्द्रष्टिमें	७	९	४९	८१

१३९	औदारीकनोगर्भजमें	०	३८	१०१	०
१४०	कृष्णलेशी अमरमें	३	०	८६	५१
१४१	अवधिदर्शन मरनेवालोमें	७	५	३०	६६
१४२	पांचेन्द्रिय सम्यक्० मरनेवालोमें	६	१०	४५	८१
१४३	एकान्तनपुंसक बादरमें	१४	२८	१०१	०
१४४	नोगर्भज सास्वतांमें	७	३८	०	६६
१४५	अपर्याप्ता सम्यग्द्रष्टिमे	६	१३	४५	८१
१४६	त्रसनोगर्भज एकान्तमिथ्या० में	१	८	१०१	३६
१४७	लवणसमुद्रके अभाषकमें	०	३५	११२	०
१४८	स्त्रिवेद वैक्रियशरीरमें	०	५	१५	१२८
१४९	संज्ञी एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	०	११२	३६
१५०	तीर्यग्लोकके वचनयोगीमें	०	१३	१०१	३६
१५१	तीर्यग्लोग पांचेन्द्रियनपुंसकमें	०	२०	१३१	०
१५२	तीर्यग्लोगपांचेन्द्रियसास्वतोंमें	०	१५	१०१	३६
१५३	एकान्त नपुंसक वेदमें	१४	३८	१०१	०
१५४	तेजोलेशीवचनयोगी सम्यक्० में	०	५	१०१	४८
१५५	तीर्यक् प्र० शरीरीबादरपर्याप्तामें	०	१८	१०१	३६
१५६	तीर्यक्बादर पर्याप्तामें	०	१९	१०१	३६
१५७	मनुष्य एकान्तमिथ्यात्वी अपर्याप्तामे	०	०	१५७	०
१५८	नोगर्भज एकान्तमिथ्याबादर में	१	२०	१०१	३६

१५९	तीर्यक्० प्र० शरीरीपर्याप्तामें	०	२२	१०१	३६
१६०	ती० कृष्णलेशीसम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	९०	६२
१६१	ती० के पर्याप्तामें	०	२४	१०१	३६
१६२	देवतासम्यग्द्रष्टियोंमें	०	०	०	१६२
१६३	स्त्रिवेद अवधिदर्शनमें	०	५	३०	१२८
१६४	प्र० शरीरीनोगर्भेज एकान्तमिथ्या०	१	२६	१०१	३६
१६५	पांचेन्द्रिय नपुंसकवेदमें	१४	२०	१३१	०
१६६	अभाषक मरनेवालोमें	०	३५	१३१	०
१६७	कृष्णलेशी घ्राणेन्द्रिय वचनयोगी	३	१२	१०१	५१
१६८	कृष्णलेशी वचनयोगीमें	३	१३	१०१	५१
१६९	ती० नोगर्भेजकृष्णलेशी त्रसमें	०	१६	१०१	५२
१७०	तेजोलेशीवचनयोगीमें	०	५	१०१	६४
१७१	नो० कृ० त्रसमरनेवालोंमें	३	१६	१०१	५१
१७२	कृष्णलेशीस्त्रिवेद सम्यक्०	०	१०	९०	७२
१७३	तेजोलेशीअभाषकमें	०	८	१०१	६४
१७४	नोगर्भेजकृष्णले० अपर्याप्तामें	३	१९	१०१	५१
१७५	औदारीक शरीर च्यारलेशीमें	०	३	१७२	०
१७६	लव० त्रस एकान्तमिथ्यात्वीमें	०	८	१६८	०
१७७	तीर्य० पांचेन्द्रियसम्यग्द्रष्टिमें	०	१५	९०	७२
१७८	तीर्य० चक्षुइन्द्रिय सम्यग्द्रष्टिमें	०	१६	९०	७२

१७९	तीर्य० समु० नपुंसकवेदमें	०	४८	१३१	०
१८०	तीर्य० सम्यक्द्रष्टिमें	०	१८	६०	७२
१८१	नोगर्भेज चक्षु० सम्यग्द्रष्टिमें	१३	६	०	१६२
१८२	नो० घ्राणेन्द्रिय सम्यग्द्रष्टिमें	१३	७	०	१६२
१८३	नो० सम्यग्द्रष्टिमें	१३	८	०	१६२
१८४	मिश्रयोगी देवता वैक्रियमें	०	०	०	१८४
१८५	कृष्णालेशी सम्यग्द्रष्टिमें	५	१८	६०	७२
१८६	निललेशी सम्यग्द्रष्टिमें	६	१८	६०	७२
१८७	अभाषकमनुष्य एकसंस्थानीमें	०	०	१८७	०
१८८	विभंगज्ञानी देवताओमें	०	०	०	१८८
१८९	तीर्य० नोगर्भेज त्रसमे	०	१६	१०१	७२
१९०	लवणासमुद्रके चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	१६८	०
१९१	तीर्यक्० कृष्णालेशीनोगर्भेजमें	०	३८	१०१	५२
१९२	लवण० घ्राणेन्द्रियमें	०	२४	१६८	०
१९३	समुच्चयनपुंसकमें	१४	४८	१३१	०
१९४	लवण० त्रसजीवोंमें	०	२६	१६८	०
१९५	सम्यग्द्रष्टि वैक्रियशरीरमें	१३	५	१५	१६२
१९६	तेजोलेशी सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	६०	६६
१९७	एकवेदीचक्षुइन्द्रियमें	१४	१२	१०१	७०
१९८	एकान्तमिथ्यात्वी अभाषकमें	१	२२	१५७	१८

१९९	नोगर्भेजवैक्रयमिश्रयोगीमें	१४	१	०	१८४
२००	वचनयोगीतीनशरीरीमें	७	८	८६	९९

थोकडा नम्बर ७१.

२०१	एकवेदी त्रसजीवोमें	१४	१६	१०१	७०
२०२	नोगर्भेज विभंगज्ञानीमें	१४	०	०	१८८
२०३	नो० वैक्रय मिथ्यात्वीमें	१४	१	०	१८८
२०४	एकान्त मिथ्या० तीनशरीरीमें	०	२९	१९७	१८
२०५	एकान्त मिथ्या० मरनेवालोमें	०	३०	१९७	१८
२०६	लवगा समुद्रके बादरमें	०	३८	१९८	०
२०७	मनयोगी मिथ्यात्वीमें	७	९	१०१	९४
२०८	घणा भववाले अवधिज्ञानमें	१३	९	३०	१९०
२०९	समु० संख्यातकालके त्रसमरनेवाले	१	२६	१३१	९१
२१०	एकान्तसंज्ञी मिश्रयोगीमें	१३	५	४९	१४७
२११	तिर्यक्लोगके नोगर्भेजमें	०	३८	१०१	७२
२१२	मनयोगी जीवोमें	७	५	१०१	९९
२१३	एकान्त मिथ्यात्वी मनुष्यमें	०	०	२१३	०
२१४	मिथ्यात्वी वैक्रय मिश्रमें	१४	६	१५	१७६
२१५	औदारीक तेजोलेशीमें	०	१३	२०२	०
२१६	लवगासमुद्रमें	०	४८	१६८	०

२१७	वचनयोगी पांचेन्द्रियमें	७	१०	१०१	६६
२१८	त्रस वैक्रय मिश्रमें	१४	५	१५	१८४
२१९	वैक्रय मिश्रमें	१४	६	१५	१८४
२२०	वचनयोगीमें	७	१३	१०१	६६
२२१	अचरम बादर पर्याप्तामें	७	१९	१०१	६४
२२२	पांचेन्द्रिय सास्वतोंमें	७	१५	१०१	६६
२२३	वैक्रय मिथ्यात्वीमें	१४	६	१५	१८८
२२४	चक्षुइन्द्रिय सास्वतोंमें	७	१७	१०१	९९
२२५	प्र० शरीरी बादरपर्याप्तामें	७	१८	१०१	९९
२२६	औदारीक अपर्याप्तामें	०	२४	२०२	०
२२७	नोगर्भेज बादर अभाषकमें	७	२०	१०१	९९
२२८	त्रस सास्वतोंमें	७	२१	१०१	९९
२२९	प्र० शरीरी पर्याप्तामें	७	२२	१०१	९९
२३०	त्रसौदारीक अभाषकमें	०	१३	२१७	०
२३१	पर्याप्ताजीवोमें	७	२४	१०१	९९
२३२	पांचेन्द्रि औदारीमिश्रमें	०	१५	२१७	०
२३३	वैक्रय शरीरमें	१४	६	१५	१९८
२३४	औदारीक मिश्रयोगी घ्राणेन्द्रियमें	०	१७	२१७	०
२३५	औदारीक मिश्रयोगी त्रसमें	०	१८	२१७	०
२३६	मनुष्यकि आगतिके नोगर्भेजमें	६	३०	१०१	९९

२३७	औदारीक पांचेन्द्रिय मरनेवालोमें	०	२०	२१७	०
२३८	प्र० शरीरी बादर सास्वतोंमें	७	३१	१०१	९९
२३९	सम्यग्द्रष्टि मिश्रयोगीमें	१३	१८	९०	१४८
२४०	सास्वते बादरमें	७	३३	१०१	९९
२४१	प्र० शरीरी नोगर्भेज मरनेवालोमें	७	३४	१०१	९९
२४२	बादरौदारिक मिश्रयोगीमें	०	२५	२१७	०
२४३	औदारीक एकान्त मिथ्यात्वीमें	०	३०	२१३	०
२४४	तीनशरीरी नोगर्भेज मरनेवालोमें	७	३७	१०१	९९
२४५	समु० असंज्ञी त्रसमें	१	२१	१७२	५१
२४६	प्र० शरीरी सास्वतोंमें	७	३९	१०१	९९
२४७	अवधिदर्शनमें	१४	५	३०	१९८
२४८	तीर्यक्० पांचेन्द्रिय अपर्याप्तामें	०	१०	२०२	३६
२४९	तीर्यक्० चक्षुइन्द्रियपर्याप्तामें	०	११	२०२	३६
२५०	भव्यसिद्धि सास्वतोंमें	७	४३	१०१	९९
२५१	तीर्यक्० त्रस अपर्याप्तामें	०	१३	२०२	३६
२५२	औदारीक० अभाषकमें	०	३५	२१७	०
२५३	मिश्रयोगी मरनेवालोंमें	७	३०	१३१	८५
२५४	स्त्रिवेद मिश्रयोगीमें	०	१०	११६	१२८
२५५	पांचेन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	५	२१३	३६
२५६	चक्षुइन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	६	२१३	३६

२५७	घ्राणेन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	७	२१३	३६
२५८	त्रस एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	८	२१३	३६
२५९	धर्म देवकि आगतिके घ्राणेन्द्रियमें	५	२४	१३१	९९
२६०	पांचेन्द्रिय तीनशरीरी सम्यक्० में	१३	१०	७५	१६२
२६१	कृष्णलेशी असास्वतोंमें	३	५	२०२	५१
२६२	पुरुषवेदी सम्यग्दृष्टिमें	०	१०	९०	१६२
२६३	प्र० शरीरी समुच्चय असंज्ञीमें	१	३९	१७२	५१
२६४	तीर्यक्० कृष्णलेशी स्त्रिवेदमें	०	१०	२०२	५२
२६५	औदारीक शरीर मरनेवालोंमें	०	४८	२१७	०
२६६	पांचेन्द्रिय कृष्णा० अनाहारीमें	३	१०	२०२	५१
२६७	चक्षुइन्द्रिय कृष्णा० अनाहारीमें	३	११	२०२	५१
२६८	एकदृष्टि त्रसकायमें	१	८	२१३	४६
२६९	तीर्यक्० कृष्णा त्रस मरनेवालोंमें	०	२६	२१७	२६
२७०	बादर एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	२०	२१३	३६
२७१	मनुष्यकि आगतिके मिथ्यात्वीमें	६	४०	१३१	९४
२७२	मनुष्यकि आगतिके प्र० शरीरीमें	६	३६	१३१	९९
२७३	निललेशी एकान्तमिथ्यात्वीमें	०	३०	२१३	३०
२७४	कृष्णलेशी एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	३०	२१३	३०
२७५	क्रियावादी समौसरणमें	१३	१०	९०	१६२
२७६	मनुष्यकि आगतिमें	६	४०	१३१	९९

२७७	च्यार लेशीयावालोंमें	०	३	१७२	१०२
२७८	तीर्यक्० बादर अभाषकमें	०	२५	२१७	३६
२७९	चक्षुइन्द्रिय सम्यक्० घणोभववालोमें	१३	१६	९०	१६०
२८०	पांचेन्द्रिय सम्यकृदृष्टिमें	१३	१५	९०	१६२
२८१	चक्षुइन्द्रिय सम्यग्दृष्टिमें	१३	१६	९०	१६२
२८२	घ्राणेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिमें	१३	१७	९०	१६२
२८३	त्रसकाय सम्यग्दृष्टिमें	१३	१८	९०	१६२
२८४	तीर्यक्लोगके पुरुषवेदमें	०	१०	२०२	७२
२८५	चक्षुइन्द्रिय एक संस्थान औदारीकमें	०	१२	२७३	०
२८६	घ्राणेन्द्रिय एक संस्थान औदारीकमें	०	१३	२७३	०
२८७	तीर्यक्० तेजोलेशीमें	०	१३	२०२	७२
२८८	तीन शरीरी मनुष्यमें	०	०	२८८	०
२८९	त्रस एक संस्थान औदारीकमें	०	१६	२७३	०
२९०	एक दृष्टिवाले जीवोंमें	१	३०	२१३	४६
२९१	तीर्यक्० कृष्णालेशी मरनेवालोंमें	०	४८	२१७	२६
२९२	ज० अन्त० उ० दो सागरो० एक संस्थान मरने०	२	३८	१८७	६५
२९३	चक्षुइन्द्रिय कृष्णालेशी मरनेवालोंमें	३	२२	२१७	५१
२९४	नोगर्भजकि आगतिके कृष्णा० त्रसमें	०	२६	२१७	५१
२९५	घ्राणेन्द्रिय कृष्णा० मरनेवालोमें	३	२४	२१७	५१

२९६	एकान्त संज्ञीमें	१३	५	१३१	१४७
२९७	त्रस कृष्णलेशी मरनेवालोमें	३	२६	२१७	५१
२९८	पांचेन्द्रिअ पर्याप्ता एक संस्थानीमें	७	५	१८७	९९
२९९	चक्षुइन्द्रिअ पर्याप्ता एक संस्थानीमें	७	६	१८७	९९
३००	स्त्रिवेद एक संस्थानीमें	०	०	१७२	१२८

थोकडा नम्बर ७२.

३०१	एक संस्थानी औदारीक बादरमें	०	२८	२७३	०
३०२	घ्राणेन्द्रियेक संस्थानी अचर्म मरने०	७	१४	१८७	९४
३०३	मनुष्यमें	०	०	३०३	०
३०४	नोगर्भेज पांचेन्द्रिय मिश्रयोगी	१४	५	१०१	१८४
३०५	सम्य० आगति कृष्ण० बादरमें	३	३४	२१७	५१
३०६	तीर्यक् घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगीमें	०	१७	२१७	७२
३०७	तीर्यक् त्रस मिश्रयोगीमें	०	१८	२१७	७२
३०८	असास्वता मिथ्यात्वीमें	७	५	२०२	९४
३०९	सम्य० आगति एक संस्थानी त्रसमें	७	१६	१८७	९९
३१०	औदारीक तीनशरीरी एकसंस्थानीमें	०	३७	२७३	०
३११	औदारीक एक संस्थानीमें	०	३८	२७३	०
३१२	नोगर्भेजकि आगति कृष्ण० तीन शरीरी	०	४३	२१७	५२

३१३	असास्वतोमें	७	९	२०२	६६
३१४	कृष्णालेशी स्त्रीवेदमें	०	१०	२०२	१०२
३१५	प्र० तीन शरीरी कृष्णा० मरनेवालोमें	३	४४	२१७	९१
३१६	त्रसानाहारी अचममें	७	१३	२०२	९४
३१७	नोगर्भज घ्राणेन्द्रिय मिथ्या०में	१४	१४	१०१	१८८
३१८	श्रोतेन्द्रिय अपर्याप्तामें	७	१०	२०२	९९
३१९	कृष्णालेशी मरनेवालोमें	३	४८	२१७	९१
३२०	तीन शरीरी स्त्रीवेदमें	०	५	१८७	१२८
३२१	त्रस अपर्याप्तामें	७	१३	२०२	९९
३२२	बादरानाहारी अचममें	७	१६	२०२	९४
३२३	नोगर्भज पांचेन्द्रियमें	१४	१०	१०१	१९८
३२४	तीन शरीरी त्रस मिथ्या० मरे	७	२१	२०२	९४
३२५	औदारीक चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०३	०
३२६	मिथ्या० एक संस्थानी मरनेवालोमें	७	३८	१८७	९४
३२७	नोगर्भज घ्राणेन्द्रियमें	१४	१४	१०१	१९८
३२८	बादर अभावक अचममें	७	२५	२०२	६४
३२९	औदारीक त्रसमें	०	२६	३०३	०
३३०	औदारीक एकान्त भवधारणी देह	०	४२	२८८	०
३३१	नोगर्भज बादर मिथ्या० में	१४	२८	१०१	१८८
३३२	त्रस एकान्त संख्याकालकिस्थिति-वालोमें	७	२४	२०२	६६

३३३	चक्षुइन्द्रिय ए० सं० स्थि०में	७	२०	२०७	९९
३३४	तीर्यक्० अधोलोककि स्त्रिमें	०	१०	२०२	१२२
३३५	घ्राणेन्द्रिय ए० सं० स्थि०में	७	२२	२०७	९९
३३६	कारमाण त्रसमें	७	१३	२१७	६६
३३७	नोगर्भेज प्र० शरीरी अचर्ममें	१४	३४	१०१	१८८
३३८	अभाषक अचर्ममें	७	३५	२०२	९४
३३९	गर्भज० तीर्यक्० के मरनेवालोमें	०	४८	२१७	७४
३४०	नोगर्भेज बादर तीनशरीरीमें	१४	२७	१०१	१६८
३४१	औदारीक बादरमें	०	३८	३०३	०
३४२	घ्राणेन्द्रिय मिथ्या० मरनेवालोंमें	७	२४	२१७	९४
३४३	तेजोलेश्यावाले जीवोंमें	०	१३	२०२	१२८
३४४	त्रस मिथ्या० मरनेवालोंमें	७	२६	२१७	६४
३४५	तीनशरीरी मिथ्या० मरने० में	७	४२	२०२	६४
३४६	प्र० शरीरी ज० अन्तरमुहूर्त उ० १६ सागरोपमकि स्थितिके मरनेवालोंमें	५	४४	२१७	८०
३४७	अनाहारीक जीवोंमें	७	२४	२१७	६६
३४८	बादर अभाषकमें	७	२५	२१७	६६
३४९	त्रस मरनेवालोंमें	७	२६	२१७	६६
३५०	नोगर्भेज तीनशरीरीमें	१४	३७	१०१	१६८
३५१	औदारीक शरीरमें	०	४८	३०३	०

३५२	ज० अन्त० उ० १७ सा० मरने०में	६	४८	२१७	८१
३५३	नोगर्भजकि गतिके त्रस तीनशरीरीमें	२	२१	२२८	१०२
३५४	मिथ्य० एकान्तसंख्या० स्थितिमें	७	४६	२०७	९४
३५५	तीर्यक् लो० पांचेन्द्रिय एकसंस्थानिमें	०	१०	२७३	७२
३५६	बादर मिथ्या० मरनेवालोंमें	७	३८	२१७	९४
३५७	सम्या० आगतिके बादरमें	७	३४	२१७	९९
३५८	अभावक जीवोंमें	७	३५	२१७	९९
३५९	तीर्य० घ्राणेन्द्रिय एकसंस्थानीमें	०	१४	२७३	७२
३६०	उर्ध्व० तीर्य० पुरुषवेदमें	०	१०	२०२	१४८
३६१	तीर्य० त्रस एकसंस्थानीमें	०	१६	२७३	७२
३६२	प्र० शरीरी मिथ्या० मरनेवालोंमें	७	४४	२१७	६४
३६३	सम्य० आगतिमें	७	४०	२१७	६६
३६४	नोगर्भजकि गतिके बादर तीनश० में	२	३२	२२८	१०२
३६५	ज० अन्त० २९ सा० स्थि० मर०में	७	४८	२१७	६३
३६६	मिथ्या० मरनेवालोंमें	७	४८	२१७	६४
३६७	प्र० शरीरी मरनेवालोंमें	७	४४	२१७	६६
३६८	पुरुष एकसंस्था० घणाभववालोंमें	०	०	१७२	११[illegible]
३६९	अधो० तीर्य० चक्षु० मिश्रयोगी	१४	१६	२१७	१२[illegible]
३७०	कृष्णाले० संख्य० स्थितिवालोंमें	३	४८	२१७	१०३
३७१	समुच्चय मरनेवालोंमें	७	४८	२१७	६६

३७२	तीर्य० कृष्णा० तीन शरीरी बादर०	०	३२	२८८	९२
३७३	तीर्य० बादर एक संस्थानीमें	०	२८	२७३	७२
३७४	अ० ती० बादरकृष्णा० एकान्त-भवधारणी देह	३	३२	२८८	९१
३७५	तीर्य० पांचेन्द्रिय कृष्णालेशी	०	२०	३०३	५२
३७६	एक संस्थानी मिश्रयोगी पांचेन्द्रिय अनेरीयामें	०	५	१८७	१८४
३७७	तीर्य० चक्षु० कृष्णालेशीमें	०	२२	३०३	५२
३७८	भुजपुरकि गतिके पांचे० तीन शरीरी	४	१०	२०२	१६२
३७९	तीर्य० घ्राणेन्द्रिय कृष्णालेशीमें	०	२४	३०३	५२
३८०	पुरुष तीन शरीरी अचर्ममें	०	५	१८७	१८८
३८१	तीर्य० त्रस कृष्णालेशीमें	०	२६	३०३	५२
३८२	तीर्य० तीन शरीर कृष्णालेशीमें	०	४२	२८८	५२
३८३	तीर्य० एक संस्थानीमें	०	३८	२७३	७२
३८४	संज्ञी एक संस्थानीमें	१४	०	१७२	१९८
३८५	नोगर्भजकि गतिका बादरमें	२	३८	२४३	१०२
३८६	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पांचेन्द्रियअचर्म	०	२०	२८८	७८
३८७	उर्ध्व० तीर्यके त्रस मिथ्या० एकान्त भवधारणी देहमें	०	२१	२८८	७८

३८८	अधो० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह बादरमें	७	३२	२८८	६१
३८९	संज्ञी अभव्य तीन शरी० अतीर्यंचमें	१४	०	१८७	१८८
३९०	पुरुषवेद तीन शरीरीमें	०	५	१८७	१९८
३९१	पांचेन्द्रिय कृष्ण० एक संस्थानीमें	६	१०	२७३	१०२
३९२	तीर्य० बादर तीन शरीरीमें	०	३२	२८८	७२
३९३	तीर्य० बादर कृष्णलेशीमें	०	३८	३०३	५२
३९४	संज्ञी अभव्य तीन शरीरीमें	१४	५	१८७	१८८
३९५	तीर्य० पांचेन्द्रियमें	०	२०	३०३	७२
३९६	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पांचेन्द्रिय	०	२०	२८८	८८
३९७	तीर्य० चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०३	७२
३९८	अधो० तीर्य० ए० भवधारणी देह	७	४२	२८८	६१
३९९	तीर्य० घ्राणेन्द्रियमें	०	२४	३०३	७२
४००	अभव्य पुरुषवेदमें	०	१०	२०२	१८८

थोकडा नम्बर ७३.

४०१	तीर्य० त्रस जीवोंमें	०	२६	३०३	७२
४०२	तीर्य० तीन शरीरीमें	०	४२	२८८	७२
४०३	तीर्य० कृष्णलेशीमें	०	४८	३०३	५२
४०४	समु० संज्ञी असं० भववाले अतीर्यंचमें	१४	०	२०२	१८८

४०५	उरपुरकी गतिका चक्षु० मिश्रयोगी	१०	१६	२१७	१६२
४०६	उरपुरकि गतिका घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगीमें	१०	१७	२१७	१६२
४०७	बा० प्र० कृष्णा० एक संस्थानीमे	६	२६	२७३	१०२
४०८	तीर्थ० एकान्त छद्मस्थमें	०	४८	२८८	७२
४०९	बादरकृष्णा० एक संस्थानिमें	६	२८	२७३	१०२
४१०	पुरुषवेदमें	०	१०	२०२	१९८
४११	तीर्थ० प्र० शरीरी बादरमें	०	३६	३०३	७२
४१२	स्त्रिकि गतिके संज्ञी मिथ्या० में	१२	१०	२०२	१८८
४१३	प्रशस्त लेश्यामे	०	१३	२०२	१९८
४१४	संज्ञी मिथ्यात्वीमें	१४	१०	२०२	१८८
४१५	प्र० शरीरी कृष्णा० एक संस्था०	६	३४	२७३	१०२
४१६	अप्रशस्तलेशी तीन शरीरी बादर एक संस्थानीमें	१४	२७	२७३	१०२
४१७	स्त्रीकि गति कृष्णा० एकसंस्थानी	४	३८	२७३	१०२
४१८	प्र० बादर एकसंस्थान एकान्त भव धारणीदेह	७	२९	२७३	११३
४१९	कृष्णलेश्या एक संस्थानीमें	६	३८	२७३	१०२
४२०	मिश्रयोगीबादर एकान्त असंयममें	१४	२०	२०२	१८४
४२१	स्त्रिकि गति अप्रशस्तलेशी प्र० शरीर एक संस्थानिमें	१२	३४	२७३	१०२

४२२	त्रिकि गतिके संज्ञीमें	१२	१०	२०२	१९८
४२३	प्र० शरीरी मिश्रयोगी एकान्त असंयममें	१४	२३	२०२	१८४
४२४	समुच्चयसंज्ञीमें	१४	१०	२०२	१९८
४२५	मिश्रयोगि एकान्त अपच्चरकाणीमें	१४	२९	२०२	१८४
४२६	कृष्णलेशी बादर प्र० तीन शरीरीमें	६	३०	२८८	१०२
४२७	अप्रशस्तलेशी एक संस्थानीमें	१४	३८	२७३	१०२
४२८	कृष्ण बादर तीन शरीरीमें	६	३२	२८८	१०२
४२९	कृष्ण बा० एकान्त असंयममें	६	३३	२८८	१०२
४३०	त्रि० गतिके त्रस मिश्र० घणा भववालोमे	१२	१८	२१७	१८३
४३१	त्रि० गतिके त्रस मि० में	१२	१८	२१७	१८४
४३२	त्रसमिश्रयोगि संख्या० भववालोमे	१४	१८	२१७	१८३
४३३	त्रसमिश्रयोगिमें	१४	१८	२१७	१८४
४३४	कृ० प्र० तीन शरीरीमें	६	३८	२८८	१०२
४३५	मिश्रयोगी बादर मिथ्या० में	१४	२९	२१७	१७९
४३६	बादर तीन शरीरी अप्रशस्तलेशी	१४	३२	२८८	१०२
४३७	बाद० एकान्त अपच० अप्रशस्तलेशी	१४	३३	२८८	१०२
४३८	कृष्ण० तीन शरीरी	६	४२	२८८	१०२
४३९	कृ० एकान्त अपचक्खाणीमें	६	४३	२८८	१०२

४४०	मिश्रयोग बादरमें	१४	२५	२१७	१८४
४४१	अधो० तीर्यकु०के चक्षु०तीन शरी०	१४	१७	२८८	१२२
४४२	प्र० तीन शरीरी अप्रशस्तलेशी	१४	३८	२८८	१०२
४४३	प्र० मिश्रयोगी	१४	२८	२१७	१८४
४४४	प्र० एकान्त भवधारणी देह घणा भववालोमें	७	३८	२८८	१११
४४५	अधो० तीर्य० तीन शरीरी त्रस मिश्रयोगमें	१४	२१	२८८	१२२
४४६	अप्रशस्त लेश्या तीन शरीरीमें	१४	४२	२८८	१०२
४४७	एकान्त असंयम अप्रशस्तलेशी	१४	४३	२८८	१०२
४४८	एकान्त भवधारणी देह घणा भववालोमें	७	४२	२८८	१११
४४९	त्रि गतिके एकान्त भव० देह	६	४२	२८८	११३
४५०	भवसिद्धि एकान्त भव० देह	६	४२	२८८	११३
४५१	उरपुरकि गति कृष्ण० प्र० तीन शरीरमें	२	४४	३०३	१०२
४५२	भुजपुरकि गति० अधो० तीर्य० प्र० तीन शरीरी	४	३८	२८८	१२२
४५३	त्रि० गति कृ० प्र० शरीरी	४	४४	३०३	१०२
४५४	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद० पांचे० घणा भवमें	०	२०	२८८	१४६

४५५	कृष्ण० प्र० शरीरमें	६	४४	३०३	१०२
४५६	अधो० तीर्य० तीनशरीरीबादर	१४	३२	२८८	१२२
४५७	अप्रशस्तलेशी बादरमें	१४	३८	३०३	१०२
४५८	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्० चचु० में	०	२२	२८८	१४८
४५९	उर्ध्व० तीर्य० के एकसंस्थानीमें	०	३८	२७३	१४८
४६०	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्० घ्राणेइन्द्रियमें	०	२४	२८८	१४८
४६१	अधो० तीर्य के चक्षुइन्द्रियमें	१४	२२	३०३	१२२
४६२	अधो० तीर्य० बादर एकान्त छद्० में	१४	३८	२८८	१२२
४६३	अधो० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमे	१४	२४	३०३	१२२
४६४	स्त्रि० गतिके अधो० तीर्य० तीन शरीरीमें	१२	४२	२८८	१२२
४६५	अ० तीर्य० के त्रसमे	१४	२६	३०३	१२२
४६६	अधो० तीर्य० के तीन शरीरीमे	१४	४२	२८८	१२२
४६७	अप्रशस्तलेश्यामें	१४	४८	३०३	१०२
४६८	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीबादरमे	०	३२	२८८	१४८
४६९	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त असंयम बादरमें	०	३३	२८८	१४८
४७०	अधो० तीर्य० एकान्त छद्० स्त्रि० गतिमे	१२	४८	२८८	१२२

४७१	उर्ध्व० तिर्य० के पांचेद्रियमें	०	२०	३०३	१४८
४७२	अधो० तिर्य० एकान्त छद्मस्थमें	१४	४८	२८८	१२२
४७३	उर्ध्व० तिर्य० के चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०३	१४८
४७४	उर्ध्व० तिर्य० के एकान्तछद्म० बादरमें	०	३८	२८८	१४८
४७५	उर्ध्व० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमें	०	२४	३०३	१४८
४७६	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरी घणा भववालोमें	०	४२	२८८	१४६
४७७	उर्ध्व० तीर्य० त्रसमें	०	२६	३०३	१४८
४७८	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीमें	०	४२	२८८	१४८
४७९	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त असंयममें	०	४३	२८८	१४८
४८०	,, ,, एकान्त छद्म० प्र० शरीरीमें	०	४४	२८८	१४८
४८१	खि० गतिके अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमें	१२	४४	३०३	१२२
४८२	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० घणा भववालोमें	०	४८	२८८	१४६
४८३	अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमें	१४	४४	३०३	१२२
४८४	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० में	०	४८	२८८	१४८
४८५	खि गतिके अधो० तीर्य० में	१२	४८	३०३	१२२
४८६	भुजपुरकि गतिके तीन शरीरी बादरमें	४	३२	२८८	१६२

४८७	अधो० तीर्य० लोकमें	१४	४८	३०३	१२२
४८८	खेचरकि गतिके तीन शरीरी बादरमें	६	३२	२८८	१६२
४८९	उर्ध्व तीर्य० के बादरमें	०	३८	३०३	१४८
४९०	चोपदकि गतिके तीन श० बादरमे	८	३२	२८८	१६२
४९१	खेचरकि गतिके पांचेन्द्रियमें	६	२०	३०३	१६२
४९२	उरपुरकि गतिके तीन श० बादरमें	१०	३२	२८८	१६२
४९३	उर्ध्व० तीर्य० प्र० शरीरी घणा भववालोंमें	०	४४	३०३	१४६
४९४	खेचरकि गतिके प्र० तीन शरीरमें	६	३८	२८८	१६२
४९५	उर्ध्व तीर्य० के प्र० शरीरीमें	०	४४	३०३	१४८
४९६	भुजपुरकि गतिके तीन शरीरीमें	४	४२	२८८	१६२
४९७	खेचरकि गतिके त्रसमें	६	२६	३०३	१६२
४९८	खेचरकि गतिके तीन शरीरमें	६	४२	२८८	१६२
४९९	उर्ध्व० तीर्य० में	०	४८	३०३	१४८
५००	चोपदकि गतिके तीन शरीरमें	८	४२	२८८	१६२

थोकडा नम्बर ७४.

५०१	त्रस एक संस्थानीमें	१४	१६	२७३	१६८
५०२	उरपुरकि गतिके तीन शरीरमें	१०	४२	२८८	१६२
५०३	तिर्यचकि गतिके घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१६२

५०४	खेचरकि गतिके एकान्त छद०	६	४८	२८८	१६२
५०५	तीर्यंचकि गतिके त्रसमें	१४	२६	३०३	१६२
५०६	संज्ञी तीर्यंचकि गतिके तीनशरीरमें	१४	४२	२८८	१६२
५०७	अन्तरद्विपके पर्याप्ताके अलद्धियोंमें	१४	४८	२४७	१९८
५०८	उरपुरकि गतिके एकान्त सकषायमें	१०	४८	२८८	१६२
५०९	चोपदकि गतिके प्र० शरीरी बादरमें	८	३६	३०१	१६२
५१०	तीर्यंचणि गतिके एकान्त संयोगिमें	१२	४८	२८८	१६२
५११	एक संस्थान प्र० शरीरी बादरमें	१४	२६	२७१	१९८
५१२	तीर्यंचकि गतिके एकान्त संयोगिमें	१४	४८	२८८	१६२
५१३	एक संस्थानी मिथ्यात्वीमें	१४	३८	२७३	१८८
५१४	भव्य जीवोंके स्पर्शनेवाले एकान्त छद० चक्षु०	१४	२२	२८८	१९०
५१५	तीर्यंचणि गतिके बादरमें	१२	३८	३०३	१६२
५१६	भ० जीवोंके भेद स्प० एकान्त छद० घ्राणेन्द्रि०	१४	२४	२८८	१९०
५१७	खि० गति एक संस्थानि प्र० शरीरीमें	१२	३४	२७३	१९८
५१८	पांचेन्द्रियमें एकान्त छद० घणोभव०	१४	२०	२८८	१९६
५१९	चक्षुइन्द्रिय एकान्त असंयममें	१४	१७	२८८	१९८
५२०	पांचेन्द्रिय एकान्त सकषायमें	१४	२०	२८८	१९८

५२१	एकसंस्थानी घणा भववालोमें	१४	३८	२७३	१९६
५२२	एकान्त सकषाय चक्षु०	१४	२२	२८८	१९८
५२३	एकसंस्थानीमें	१४	३८	२७३	१९८
५२४	एकान्त सकषाय घ्राणे० में	१४	२४	२८८	१९८
५२५	पांचेन्द्रिय मिथ्यात्वीमें	१४	२०	३०३	१८८
५२६	एकान्त सकषाय त्रसमें	१४	२६	२८८	१९८
५२७	तीर्यंचकि गतिमें	१४	४८	३०३	१६२
५२८	एकान्त छद० बा० मिथ्या०	१४	३८	२८८	१८८
५२९	त्रि गतिके त्रस मिथ्या०	१२	२६	३०३	१८८
५३०	तीनशरीरी प्र० घणा भववालोमें	१४	३८	२८८	१९६
५३१	त्रि० गति पांचे० संख्या भव०	१२	२०	३०३	१९६
५३२	तीनशरीरी बादरमें	१४	३२	२८८	१९८
५३३	एकान्त असंयम बादरमें	१४	३३	२८८	१६८
५३४	एकान्त छद० अभव्य प्र० शरीरी	१४	४४	२८८	१८८
५३५	पाचेन्द्रिय जीवोमें	१४	२०	३०३	१६८
५३६	त्रि० गतिके बा० एकान्त सकषाय०	१२	३८	२८८	१६८
५३७	त्रि० गतिके घ्राणेन्द्रियमें	१२	२४	३०३	१६८
५३८	एकान्त छद० बादरमें	१४	३८	२८८	१६८
५३९	घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१६८
५४०	त्रि० गतिके तीनशरीरीमें	१२	४२	२८८	१६८

५४१	त्रस जीवोमें	१४	२६	३०३	१९८
५४२	तीन शरीरी एकान्त छद्म०	१४	४२	२८८	१९८
५४३	एकान्त असंयममें	१४	४३	२८८	१९८
५४४	प्र० श० एकान्त छद्म०	१४	४४	२८८	१९८
५४५	सम्य० तीर्यंचके अलद्धियामें	१४	३०	३०३	१९८
५४६	एकान्त छद्म० घणो भववालोमें	१४	४८	२८८	१९६
५४७	त्रि० गतिके प्र० श० मिथ्या०	१२	४४	३०३	१८८
५४८	एकान्त छद्मस्थमें	१४	४८	२८८	१९८
५४९	मिथ्या०प्र० शरीरीमें	१४	४४	३०३	१८८
५५०	सम्य० नारकिके अलद्धिया	१	४८	३०३	१९८
५५१	त्रि० गतिके मिथ्या० में	१२	४८	३०३	१८८
५५२	एकेन्द्रिय पर्याप्तके अलद्धिया	१४	३७	३०३	१९८
५५३	मिथ्यात्वीमें	१४	४८	३०३	१८८
५५४	नौ ग्रीवैगके पर्याप्तके अलद्धिया	१४	४८	३०३	१८९
५५५	जीवोंके मध्यभेद स्पर्शनेवालोमें	१४	४८	३०३	१९०
५५६	नरक पर्याप्ताके अलद्धियोंमें	७	४८	३०३	१९८
५५७	त्रि० गतिके प्र० शरीरीमें	१२	४४	३०३	१९८
५५८	तीर्यंच पांचेन्द्रिय वैक्रयके अल०	१४	४३	३०३	१९८
५५९	प्रत्येक शरीरीमें	१४	४४	३०३	१९८
५६०	तेजोलेशी एकेन्द्रियके अल०	१४	४९	३०३	१९८

५६१	घणो भववाले जीवोमें	१४	४८	३०३	१९६
५६२	एकेन्द्रिय वैक्रयश० अलद्धिया	१४	४७	३०३	१९८
५६३	सब संसारी जीवोमे	१४	४८	३०३	१९८

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ७६.

कोनसे कोनसे बोलोंमें कीतने कीतने जीवोंके भेद मीलते है वह अन्तिम कोष्टमें समुच्चय जीवों के भेद के अंक रखे गये है बाद क्रमशः च्यारों कोष्टमें नरक, तीर्यंच, मनुष्य, देवताओं के अलग अलग जीवों के भेद रखे गये है इस थोकडे कों कण्ठस्थ करनेवालोंको शास्त्रों का बोध और तर्कबुद्धि सहज में प्राप्त हो सकेगा.

जीवोंके भेद कि संख्या.	कोनसी मार्गणामें कीतने जीवोंके भेद मीलते है उस मार्गणाका नाम.	नरकके १४ भेद.	तीर्यंचके ४८ भेद.	मनुष्योंके ३०३ भेद.	देवताओंके १९८ भेद.	समुच्चय.
१	समुच्चय जीवोंमें जीवोंके भेद	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२	नरकगतिमें	१४	०	०	०	१४
३	तीर्यंचगतिमें	०	४८	०	०	४८
४	मनुष्यगतिमें	०	०	३०३	०	३०३
५	देवगतिमें	०	०	०	१९८	१९८
६	तीर्यंचणीमें	०	१०	०	०	१०
७	मनुष्यणीमें	०	०	२०२	०	२०२
८	देवीमें	०	०	०	१२८	१२८
९	सइन्द्रियजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१०	एकेन्द्रियजीवोंमें	०	२२	०	०	२२
११	बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिंद्रियमें	०	२।२।२	०	०	२
१२	पांचेन्द्रिय जीवोंमें	१४	२०	३०३	१९८	५३५

१३	अनेंद्रिय (केवली)	०	०	१५	०	१५
१४	श्रोत्रेंद्रिय जीवोंमें	१४	२०	३०३	१९८	५३५
१५	चक्षुइन्द्रियमें	१४	२२	३०३	१९८	५३७
१६	घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१९८	५३९
१७	रसेन्द्रियमें	१४	२६	३०३	१९८	५४१
१८	स्पर्शेन्द्रियमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१९	श्रोत्रेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२८	१५	०	४३
२०	चक्षुइन्द्रियका अलब्धियामें	०	२६	१५	०	४१
२१	घ्राणेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२४	१५	०	३९
२२	रसेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२२	१५	०	३७
२३	स्पर्शेन्द्रियका अलब्धियामें	०	०	१५	०	१५
२४	सकायजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२५	पृथ्वी, अप, तेउ, वायुकायमें	०	४ ४ ४ ४	०	०	४
२६	वनस्पतिकायमें	०	६	०	०	६
२७	त्रसकायमें	१४	२६	३०३	१९८	५४१
२८	सयोगि--काययोगिमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२९	मनयोगिमें	७	५	२०१	९९	२१२
३०	वचनयोगिमें	७	१३	२०१	९९	२२०
३१	औदारीककाययोग	०	४८	३०३	०	३५१
३२	औदारीकमिश्रकाययोग	०	३०	२१७	०	२४७
३३	वैक्रयकाययोग	१४	६	१५	१९८	२३३
३४	वैक्रयमिश्रकाययोग	१४	६	१५	१८४	२११
३५	आहारीककाययोग	०	०	१५	०	१५
३६	आहारीकमिश्रकाययोग	०	०	१५	०	१५

३७	कारमणकाययोग	७	२४	२१७	९९	३४७
३८	अयोगिमे	०	०	१५	०	१५
३९	सवेदीजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४०	स्त्रिवेदवालोमें	०	१०	२०२	१२८	३४०
४१	पुरुषवेदवालोमें	०	१०	२०२	१९८	४१०
४२	नपुंसकवेदवालोमें	१४	४८	१३१	०	१९३
४३	अवेदीजीवोमें	०	०	१५	०	१५
४४	एकवेदवालेजीवोमें	१४	३८	१०१	७०	२२३
४५	दोवेदवालेजीवोमें	०	०	१७२	१२८	३००
४६	तीनवेदवालेजीवोमें	०	१०	३०	०	४०
४७	सकषायि, क्रोध, मान माया लोभमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४८	अकषायिमें	०	०	१५	०	१५
४९	सलेशीजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
५०	कृष्णनिलकापोतलेशीमें	६	४८	३०३	१०२	४५९
५१	तेजसलेशीमें	०	१३	२०२	१२८	३४३
५२	पद्मलेशीमें	०	१०	३०	२६	६६
५३	शुक्ललेशीमें	०	१०	३०	४४	८४
५४	एकलेश्यावालेजीवोमें	१०	०	०	९६	१०६
५५	दोलेश्यावालेजीवोमें	४	०	०	०	४
५६	तीनलेश्यावालोमें	०	३५	१०१	०	१३६
५७	च्यारलेश्यावालोमें	०	३	१७२	१०२	२७७
५८	पांचलेश्यावालोमें	०	०	०	०	०
५९	छेलेश्यावालोमें	०	१०	३०	०	४०

६०	एकलीकृष्णलेश्यामें	६	०	०	०	६
६१	एकलीनिललेश्यामें	६	०	०	०	६
६२	एकलीकापोतलेश्यामें	६	०	०	०	६
६३	एकली तेजसलेश्यामें	०	०	०	२६	२६
६४	एकली पद्मलेश्यामें	०	०	०	२६	२६
६५	एकली शुक्कलेश्यामें	०	०	०	४४	४४
६६	अलेशी जीवोमें	०	०	१५	०	१५
६७	सम्यकत्वदृष्टिमें	१३	१८	९०	१६२	२८३
६८	मिथ्यादृष्टिमें	१४	४८	३०३	१८८	५५३
६९	मिश्रदृष्टिमें	७	५	१५	६७	९४
७०	एकदृष्टिवाले जीवोंमे	१	३०	२१३	४६	२९०
७१	दोयदृष्टिवाले जीवोमें	०	८	६०	१८	८६
७२	तीनदृष्टिवाले जीवोमें	१३	१०	३०	१३४	१८७
७३	सास्वा दन सम्यकत्वमें	१३	१८	३०	१३४	१९५
७४	क्षोपशम सम्यकत्वमें	१३	१०	९०	१६२	२७५
७५	क्षायक सम्यकत्वमे	२	८	९०	१६२	२६२
७६	उपशम सम्यकत्वमे	१	१०	३०	१३४	१७५
७७	वैदीक सम्यकत्वमे	७	५	१५	६७	९४
७८	चक्षुदर्शनमें	१४	२२	३०३	१९८	५३७
७९	अचक्षुदर्शनमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
८०	अवधिदर्शनमें	१४	५	३०	१९८	२४७
८१	केवलदर्शनमें	०	०	१५	०	१५
८२	समुच्चयज्ञानी मतिश्रुतिज्ञानीमें	१३	१८	९०	१६२	२८३
८३	अवधिज्ञानीमें	१३	५	३०	१६२	२१०

८४	मनपर्यवज्ञान केवल ज्ञानमें	०	०	१५	०	१५
८५	समु० अज्ञान मति० श्रुतिअज्ञान	१४	४८	३०३	१८८	५५३
८६	विभंग ज्ञानमें	१४	५	१५	१८८	२२२
८७	संयति० सा० सू० यथा०	०	०	१५	०	१५
८८	छेदोपस्था० परि०	०	०	१०	०	१०
८९	असंयतिमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९०	संयतासंयतिमें	०	५	१५	०	२०
९१	साकारमनाकारोपयोगमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९२	आहारीकमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९३	अनाहारीकमें	७	२४	२१७	९९	३४७
९४	भाषकमें	७	१३	१०१	९९	२२०
९५	अभाषकमें	७	३५	२१७	९९	३५८
९६	परतमें अपरतमें	१४	४८	३०३	१९८	५५३ ५६३
९७	ओपरत नो अपरतमें	०	०	०	०	०
९८	पर्याप्ता जीवोंमे	७	२४	१०१	९९	२३१
९९	अपर्याप्तामें	७	२४	२०२	९९	३३२
१००	नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता	०	०	०	०	०
१०१	सूक्ष्म जीवोमें	०	१०	०	०	१०
१०२	बादर जीवोमें	१४	३८	३०३	१९८	५५३
१०३	नोसूक्ष्म नोबादर	०	०	०	०	०
१०४	संज्ञी जीवोमें	१४	१०	२०२	१९८	४२४
१०५	असंज्ञी जीवोमें	०	३८	१०१	०	१३९
१०६	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी	०	०	१५	०	१५
१०७	भव्य जीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३

१०८	अभव्यजीवोंमें	१४	४८	३०३	१८८	५५[illegible]
१०९	नोभव्य नो अभव्यमें	०	०	०	०	०
११०	चरमजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६[illegible]
१११	अचरमजीवोंमें	१४	४८	३०३	१८८	५५[illegible]
११२	गर्भेज जीवोंमें	०	१०	२०२	०	२१[illegible]
११३	नोगर्भज जीवोंमे	१४	३८	१०१	१९८	३५[illegible]
११४	भरतक्षेत्रके जीवोंमे	०	४८	३	०	५१
११५	महा विदेहक्षेत्रमें	०	४८	९	०	५[illegible]
११६	जंबुद्विपक्षेत्रमें	०	४८	२७	०	७[illegible]
११७	लवणसमुद्रमें	०	४८	१६८	०	२१[illegible]
११८	धातकी खंडमें	०	४८	५४	०	१०[illegible]
११९	पुष्करार्द्धद्विपमें	०	४८	५४	०	१०[illegible]
१२०	अढाइद्विपमें	०	४८	३०३	०	३५[illegible]
१२१	असंख्यातद्विप समुद्रमें	०	४८	३०३	०	३५[illegible]
१२२	कीसी स्थानकि पोलारमे	०	१२	०	०	१[illegible]
१२३	लोकरे चर्मान्तमे	०	१२	०	०	१[illegible]
१२४	सिद्धक्षेत्रमें	०	१२	०	०	१[illegible]
१२५	श्रीसिद्ध भगवानमें	०	०	०	०	०

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

इति श्री शीघ्रबोध भाग ७ वां समाप्तम्.

॥ श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

शीघ्रबोध भाग ८ वां।

थोकडा नं० ७७

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० १.

(योगों की अल्पा बहुत्व).

संसारी जीवों के चौदे भेद है-जैसे सुक्ष्म एकेन्द्रि के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता, बादर एकेन्द्रि के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता एवं बेन्द्रि, तेरिन्द्रि, चोरिन्द्रि, सन्नीपंचेन्द्रि और असन्नीपंचेन्द्रि के दो दो भेद पर्याप्ता अपर्याप्ता करके १४ भेद हुवे।

जीव के आत्म प्रदेशों से अध्यवसाय उत्पन्न होते है और वह शुभाशुभ करके दो प्रकारके है। इन अध्यवसायों की प्रेरणा से जीव पुद्गलोंको ग्रहण करके प्रणमाते है उसे परिणाम कहते है वह सूक्ष्म है और परिणामों की प्रेरणा से लेश्या होती है और लेश्या की प्रेरणा से मन वचन काया के योग व्यापार होते है जिसे योग कहते है। योग दो प्रकार के होते है। (१) जघन्य योग (२) उत्कृष्ट योग । उपर जो १४ भेद जीवोंके कहे है उनमें जघन्य और उत्कृष्ट योग की तरतमता है उसी को अल्पाबहुत्व करके नीचे बतलाते हैः—

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्मएकेन्द्रिके अपर्याप्ताका जघन्ययोग.

(२) बादर एकेन्द्रि के अपर्याप्ता का जघन्य योग असं० गुणा.

(३) बेरिन्द्रि के ,, ,, ,, ,,

(४) तेरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(५) चौरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(६) असन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(७) सन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(८) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्याप्ताका		,,	,,
(९) बादर एकेन्द्रि के	,,	,,	,,
(१०) सुक्ष्म एकेन्द्रि के अपर्याप्ता का उत्कृष्ट०			,,
(११) बादर एकेन्द्रि के	,,	,,	,,
(१२) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्याप्ता का		,,	,,
(१३) बादर एकेन्द्रि के	,,	,,	,,
(१४) बेरिन्द्रि के पर्याप्ता का जघन्य०		,,	,,
(१५) तेरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(१६) चौरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(१७) असन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(१८) सन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(१९) बेरिन्द्रि के अपर्याप्ता का उत्कृष्ट०		,,	,,
(२०) तेरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(२१) चौरिन्द्रिके	,,	,,	,,
(२२) असन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(२३) सन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(२४) बेरिन्द्रि के पर्याप्ता का		,,	,,
(२५) तेरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(२६) चोरिन्द्रि के	,,	,,	,,
(२७) असन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,
(२८) सन्नी पंचेन्द्रि के	,,	,,	,,

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ७८

[श्री भगवती सूत्र श० २५–ऊ० १].

जीवोंके योगों की तरतमता देखने के लिये यह थोकडा खूब दीर्घदृष्टिसे विचार करने योग्य है।

प्रथम समय के उत्पन्न हुवे दो नारकी के नैरीया क्या सम योग वाले है या विषम योगवाले है ? स्यात् सम योग वाले है स्यात् विषम योग वाले है। क्योंकि प्रथम समय के उत्पन्न हुवे नारकी के नेरीयों के योग आहारीक से अणाहारीक और अणाहारीक से आहारीक के परस्पर स्यात् न्यून है, स्यात् अधिक है और स्यात् बराबर भी है। यद्यपि न्युन हो तो असंख्यातभाग, संख्यातभाग, संख्यातगुण, असंख्यातगुण न्यून हो सकते है और अगर अधिक हो तो इसी तरह असंख्यातभाग, संख्यातभाग, संख्यातगुण, असंख्यातगुण, अधिक होते है और यदि बराबर हो तो दोनों के योग तुल्य होते है। यथाः—

(१) एक समय का आहारीक है परन्तु मींडक गती करके आया है और दूसरा जीव भी एक समय का आहारीक है परन्तु ईलका गतो करके आया है। इन दोनों के योग असंख्यातभाग, न्यूनाधिक ।

(२) एक जीव एक समय का आहारीक है और मींडक गती से आया है तथा दूसरा जीव दो समय का आहारीक है परन्तु एक वंका गती करके आया है। इन दोनों के योग संख्यात भाग न्यूनाधिक है।

(३) एक जीव एक समय का आहारीक है और मींडक गती

करके आया है दूसरा एक समयका अहारीक अणाहारी है परन्तु एक वंका गती करके आया है। इनके योग संख्यातगुण न्यूनाधिक है।

(४) एक जीव एक समय का आहारीक मींडक गती करके आया है और दूसरा दो समय का अणाहारीक दो समय की वंका गती करके आया है। इन दोनों के योगों में असंख्यातगुण न्यूनाधिकपने है।

जैसे नारकी कहो उसी माफक शेष भुवनपति १० स्थावर ५, विकलेन्द्रि ३, तीर्यंच पंचेन्द्रि १, मनुष्य १, व्यन्तर १, ज्योतिषी १, वैमानिक १, एवं चौवीस दंडक भ। समझ लेना। विशेष विस्तार गुरु महाराज की उपासना कर प्राप्ती करना चाहिये इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ७९

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० १.)

(योगों की अल्पाबहुत्व).

योग १५ हैं यथा (४ मनका) सत्य मनयोग, असत्य मन योग, मिश्र मनयोग और व्यवहार मनयोग। (४ वचन का) सत्य वचनयोग, असत्य वचनयोग, मिश्र वचनयोग और व्यवहार वचनयोग। (७ काय का) औदारीक काययोग, औदारीक मिश्र काययोग, वैक्रिय काययोग, वैक्रिय मिश्रकाययोग, आहारिक काययोग, आहारीक मिश्र काय योग और कार्मण काययोग। एवं १५।

योग के स्थान असंख्याते हैं परन्तु यहां समान्यता से १५ ही को ग्रहण कर प्रत्येक के दो दो भेद जघन्य और उत्कृष्ट करके ३० बोलों की अल्पाबहुत्व कही है यथाः—

(१) सबसे स्तोक कार्मण का जघन्य योग.

(२) औदारीक के मिश्र का जघन्य योग असं० गुणा.

(३) वैक्रिय के „ „ „ „

(४) औदारीक का जघन्य योग „ „

(५) वैक्रिय का „ „ „

(६) कार्मण का उत्कृष्ट योग „ „

(७) आहारीक के मिश्र का जघन्य योग „ „

(८) आहारीक के मिश्र का उत्कृष्ट योग „ „

(९) औदारीक के मिश्र का और वैक्रीय के मिश्र का उत्कृष्ट योग परस्पर तुल्य और ८ में बोल से असंख्यात गुणा.

(१०) व्यवहार मनका जघन्य योग असं० गुणा.

(११) आहारीक का „ „ „ „

(१२) तीन मन के और चार वचन के जघन्य योग परस्पर तुल्य और ११ वा बोल से असंख्यात गुणा.

(१३) आहारीक का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणा.

(१४) औदारीककाय योग, वैक्रीय काययोग, चार मनका और चार वचन का एवं १० का उत्कृष्ट योग परस्पर तुल्य और १३ वें बोल से असं० गुणा ॥ इति ॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकड़ा नं० ८०.

(श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० २.)

(द्रव्य).

द्रव्य दो प्रकार के है। जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। जीव द्रव्य क्या संख्याता हैं ? असंख्याता हैं या अनन्ता हैं ? संख्याता, असंख्याता नही किन्तु अनन्ता है क्योंकि जीव अनन्ता है इसी वास्ते जीव द्रव्य भी अनन्ता है।

अजीव द्रव्य क्या संख्याते, असंख्याते या अनन्ते हैं ? संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं क्योंकि अजीव द्रव्य पांच हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी है। आकाश और पुद्गल के अनन्ते प्रदेश हैं और काल वर्तमान एक समय है, भूत, भविष्यापेक्षा अनन्ते समय है इस वास्ते अजीव द्रव्य अनन्ता है।

जीव द्रव्य अजीव द्रव्यके काम आते है, या अजीव द्रव्य जीव द्रव्यके काम आते है? जीव द्रव्य अजीव द्रव्य के काम नहीं आते है किन्तु अजीव द्रव्य जीव द्रव्यके काम आते है क्योंकि जीव अजीव द्रव्य को ग्रहण करके १४ बोलों उत्पन्न करते है यथा-औदारीक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारीक शरीर, तेजस शरीर, कार्मण शरीर, श्रोत्रेन्द्रीय, चक्षुरिन्द्रीय, घ्राणेन्द्रीय, रसेन्द्रीय, स्पर्शेन्द्रीय. मन योग, वचन योग, काय योग, श्वासोश्वास, एवं चौदा।

अजीव द्रव्य के नारकी का नेरीया काम में आते है या अजीव द्रव्य नारकी के नेरीये के काम आते है ? अजीव द्रव्य के नारकी काम में नहीं आते है परन्तु नारकी के अजीव द्रव्य काम

में आते है। यावत् ग्रहण करके १२ बोल निपजावे औदारीक शरीर, आहारीक शरीर वर्जके इसी माफक १३ दंडक देवताओं का भी समझ लेना और पृथ्वीकाय अजीव द्रव्य को ग्रहण करके ६ बोल निपजावे। ३ शरीर, १ स्पर्शेन्द्री, १ काय योग, १ श्वासोश्वास। इसी तरह अपकाय तेउकाय और वनस्पतिकाय भी समझ लेना तथा वायुकाय में ७ बोल कहना याने वैक्रिय शरीर अधिक कहना और बेइन्द्री में ८ बोल शरीर ३ इन्द्री २ योग १ और श्वासोश्वास। तेरिन्द्री में ९ बोल। इन्द्री एक वधी घ्राणेन्द्री एवं ९। चौरिन्द्रीमें १०। इन्द्री एक वधी चक्षु। तिर्यंच पंचेन्द्री में १३ बोल शरीर ४ इन्द्री ५ योग ३ और श्वासोश्वास एवं १३ और मनुष्य में सम्पूर्ण १४ बोल उत्पन्न करे। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ८९

(श्री भगवती सूत्र श० २५-उ०-२.)

(स्थितास्थित).

हे भगवान्! जीव औदारिक शरीरपणे जो पुद्गल ग्रहण करते हैं वे क्या " ठिया " स्थित-याने अकम्प पुद्गल ग्रहण करें या " अठिया " कम्पायमान पुद्गल ग्रहण करे! गौतम! अकंप पुद्गल भी ले और कंपायमान पुद्गल भी ले. यदि स्थित पुद्गल ले तो क्या द्रव्य से ले, क्षेत्र से ले, काल से ले या भावसे ले! अगर द्रव्य से ले तो अनन्त प्रदेशी क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाह्या, काल से एक समय दो तीन यावत् असंख्यात समय की स्थिती

का, भाव से ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्शवाले पु० को लेवे, अगर वर्ण का लेवे तो एक गुण काला दो तीन यावत् अनन्त गुण काला का लेवे एवं १३ बोल वर्णादि २० बोल में लगाने से भाव के २६० भांगा, और स्पर्श किया हुवा १, अवगाह्या २, अणन्तर अवगाहा ३, अणुवा ४, बादर ५, उर्ध्वदिशीका ६, अधोदिशीका ७, तीर्यगदिशीका ८, आदिका ९, मध्यका १०, अन्तका ११, अणुपूर्वी १२, सविषय १३, निर्व्याघात ६ दिशा व्याघाताश्रीय स्यात् तीन दिशी च्यार दिशी पांच दिशी १४, एवं द्रव्यका १, क्षेत्रका १, कालका १२, भावका २६०, और स्पर्शादि १४, कुल २८८ बोल का पुद्गल औदारिक शरीर पणे ग्रहण करे एवं वैक्रिय, आहारिक परन्तु नियमा छे दिशीका लेवे, कारण दोनो शरीर त्रसनाली में है, और तेजस शरीर की व्याख्या औदारीक शरीर माफिक करना तथा कार्मण शरीर च्यार स्पर्शवाले होनेसे ५२ बोल कम करने से द्रव्यादि २३६ बोलका पुद्गल ग्रहण करे,

जीव श्रोत्रेन्द्रीय पणे २८८ बोलों वैक्रिय शरीर की माफिक नियमा छे दिशि का पुद्गल ग्रहण करे एवं चक्षु, घ्राण, रसेन्द्री भी समझना, स्पर्शेन्द्री औदारिक शरीर की माफिक समझना।

मन वचन पणे कार्मण शरीर कि माफिक चौफरसी पुद्गल ग्रहण करे। परन्तु त्रसनाली में होने से नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे और काययोग तथा श्वासोश्वास औदारीक शरीर के माफिक २८८ बोलका पुद्गल ग्रहण करे, व्याघाताश्रीय ३-४-५ दिशी का और निर्व्याघात आश्रीय नियमा ६ दिशीका पु० ग्रहण करे, इति। समुचय जीव उपर चौदा (५ शरीर, ५ इन्द्रीय ३ योग, १ श्वासोश्वास) बोल कहा इसी को अब प्रत्येक दंडक पर लगाते हैं।

नारकी, देवताओ में १२ बोल पावे (आहारीक औदारीक

वर्जके) समुच्चयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का समझना।

पृथ्वी, अप, तेउ और वनस्पति में ६ बोल (शरीर, ३ इन्द्रिय, १ काय १ श्वासोश्वास १) पावे और समुच्चयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे, परन्तु दिशी में स्यात् ३-४-५ दिशी निर्व्याघात नियमा ६ दिशी का पुद्गल ले एवं वायुकाय परन्तु वैक्रिय शरीर अधिक है, और वैक्रिय शरीर पुद्गल नियमा छे दिशी का लेवे।

बेरिन्द्री में ८ तेरिन्द्री में ९ चौरिन्द्री में १० सर्व समुच्चयवत् समझना परन्तु नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय १३ बोल (आहारक वर्ज के) और मनुष्य में १४ बोल पावे। सर्वाधिकार समुच्चयवत् २८८ बोल का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का ले क्योंकि १९ दंडकों के जीवों केवल त्रसनाली में ही होते हैं इसलिये नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे शेष ५ दंडक स्थावरों को सर्व लोक में है वास्ते स्यात् ३-४-५ दिशीका पु० ले। यह लोकके अन्त आश्रीय है। इस थोकडे को ध्यान पूर्वक विचारो।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ८२.

[श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ३.]

(संस्थान).

संस्थान-आकृती को कहते है जिसके दो भेद है जीव

संस्थान समचौरसादि छे भेद और अजीव संस्थान परिमंडलादि छे भेद हैं। यहां पर अजीव संस्थान के भेद लिखते हैं-(१) परिमंडल संस्थान जो चूडी के आकार होता है (२) वट्ट संस्थान गोल लड्डू के आकार (३) त्रस-सिंघोडे के आकार (४) चौरस चोकीके आकार (५) आयतन लम्बा आकार (६) अन्वस्थित इनपांचों से विपरीत हो। परिमंडल संस्थान के द्रव्य क्या संख्याते, असंख्याते या अनन्ते है? संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं एवं यावत् अन्वस्थातादि छेओं संस्थान के द्रव्य अनन्ते हैं।

परिमंडल संस्थान के प्रदेश क्या संख्याते, असंख्याते, या अनन्ते हैं? संख्याते असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं। यावत् अन्वस्थातादि छेओं संस्थान के कहना। अब इन छओं संस्थानों की द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व कहते हैं:—

(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान के द्रव्य.
(२) वट्ट संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(३) चौरस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(४) त्रस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(५) आयतन संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(६) अन्वस्थित संस्थान के द्रव्य असंख्यात गुणा.

प्रदेशापेक्षा संस्थानों की अल्पाबहुत्व भी इसी माफिक समझ लेना। अब द्रव्य प्रदेशापेक्षा दोनोंकी शामिल अल्पाबहुत्व कहते हैं—(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान का द्रव्य (२) वट द्रव्य सं० गुणा० (३) चौरस द्रव्य सं० गुणा० (४) त्रस द्रव्य सं० गुणा० (५) आयतन द्रव्य सं० गुणा० (६) अन्वस्थित द्रव्य असं० गुणा० (७) परिमंडल प्रदेश असं० गुणा० (८) वट प्रदेश सं० गुणा० (९) चौरस प्रदेश सं० गुणा० (१०) त्रस

प्रदेश सं० गुणा० (११) आयतन प्रदेश सं० गु० (१२) अन्व स्थित प्रदेश असं० गुणा० इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम् ।

थोकड़ा नं० ८३.

[श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३.]

(संस्थान०)

संस्थान पांच प्रकार के होते हैं–यथा परिमंडल० वट्ट० त्रस० चौरस० आयतन परिमंडल संस्थान क्या संख्याते, असंख्याते या अनंते है ? संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते है एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना ।

रत्नप्रभा नारकी में परिमंडल संस्थान अनन्ते है, एवं यावत् आयतन संस्थान भी अनन्ते है, इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रैवेक, ५ अनुत्तर वैमान और सिद्धशिला, पृथ्वी एवं ३५ बोलों में पांचों संस्थान अनन्ते अनन्ते है, पैंतीस को पांच गुणा करने से १७५ भागा हुवा ।

एक यवमध्य परिमंडल संस्थानमें दूसरे परिमंडल संस्थान कितने है ? अनन्ते है एवं यावत् आयतन संस्थान भी अनन्त कहना, इसी तरह एक यवमध्य परिमंडल की माफिक शेष वट्टादि चारों संस्थानों की व्याख्या करनी एक संस्थान में दूसरे पांचो संस्थान अनन्ते है इसलिये पांचको पांचका गुण करनेसे २५ बोल हुवे, पूर्ववत् नरकादि ३५बोलोंमें २५–२५ बोल पावे एवं कुल ८७५ भांगा हुवा और १७५पहिलीका सब मिलके १०५०भांगा हुवा ।

सेवंभंते सेवंभंते सचम् ।

थोकड़ा नं० ८४.

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३)

(संस्थान).

पुद्गल परमाणु के एकत्रित होने से अजीव का संस्थान (आकार) बनता है उसी का सविस्तार वर्णन करेंगे कि कितने २ परमाणु इकट्ठे होने से कौन २ से संस्थानकी उत्पत्ति होती है !

परिमंडल संस्थान के दो भेद होते है, परतर और धन। जो परतर परिमंडल संस्थान है वह जघन्य से जघन्य २० प्रदेश का होता है और अवगाहना भी २० आकाश प्रदेश की होती है। उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी और असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाही होता है और धन परिमंडल संस्थान जघन्य ४० प्रदेशी और ४० आकाश प्रदेश अवगाही होता है, और उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी असंख्याते आकाश प्रदेश अवगाहते है, शेष यंत्र से समझना:—

संस्थान.	परतर.		घन.	
	उज प्रदेशी	जुम प्रदेशी	उज प्रदेशी	जुम प्रदेशी
वट्ट जघन्य	५	१२	७	३२
त्रंस ,,	३	६	४	३५
चौरस ,,	४	९	८	२७
आयत ,, *	१५	६	४५	१२

नोट—*आयतन का तीसरा भेद श्रेणी है उन के उज प्रदेशी ३ प्रदेशी है जुम प्रदेशी २ प्रदेशी हैं।

जघन्य जितने प्रदेश का संस्थान होता है उतनाही आकाश प्रदेश अवगाहता है और उत्कृष्ट प्रदेश सब संस्थान अनन्त प्रदेशी है और असंख्याता आकाश प्रदेश अवगाहते हैं। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ८५.

श्री भगवती सूत्र श० १८–उ० ४.

(जुम्मा)

लोक में जो जीव अजीव पदार्थ हैं वह द्रव्य और प्रदेशापेक्षा कितने २ हैं उनकी गिणती करने के लिये यह संख्या बांधी है।

गोतम स्वामी भगवान् से पूछते हैं कि हे भगवान! जुम्मा कितने प्रकार के हैं? गौतम! चार प्रकार के है. यथा=कुडजुम्मा, तेउगा जुम्मा, दावरजुम्मा, और कलउगा जुम्मा। जैसे किसी एक रासी में से चार चार निकालने पर शेष ४ बचे उसे कुडजुम्मा कहते हैं। इसी तरह चार २ निकालने हुवे शेष ३ बचे उसे तेउगा जुम्मा कहते हैं। अगर चार २ निकालने पर शेष २ बचे तो दावरजुम्मा, कहते हैं और एक बचे तो कलउगा जुम्मा, कहते हैं। नारकी के नेरिया क्या कुडजुम्मा है, यावत् कलउगा जुम्मा है? जघन्य पदे कुडजुम्मा, उत्कृष्ट पदे तेउगा, मध्यम पदे चारों आंता पावे। इसी तरह १० भुवनपती १ तीर्यंच पंचेन्द्री,

१ मनुष्य, १ व्यंतर, १ ज्योतिषी और वैमानिक एवं १६ दंडक समझ लेना। पृथ्वीकाय जघन्य पदे कुडजुम्मा, उत्कृष्ट पदे दावर जुम्मा और मध्यम पदे चारों भांगा पावे। इसी तरह अप, तेउ, वायु, बेरिन्द्री, तेरिन्द्री और चौरिन्द्री भी समझ लेना। वनस्पति जघन्य उत्कृष्ट पदे अपदा मध्यम पदे चारों भांगा पावे एवं सिद्ध भगवान भी समझना.

पनरह दंडक की स्त्री (मनुष्य १, तीर्यंच १, देवता १३) जघन्य उत्कृष्ट पदे कुड जुम्मा, और मध्यम पदे चारों भांगा।

॥ इति ॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकड़ा नं० ८६.

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३.)

(संस्थान जुम्मा)

हे भगवान्! एक परिमंडल संस्थान द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कलउगा जुम्मा है? गौतम! कलउगा जुम्मा है, शेष कुडजुम्मादि तीन बोल नहीं पावे। एवं वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझना क्योंकि एक द्रव्यका प्रश्न है इस लिये कलउगा जुम्मा ही होवे।

घणा परिमंडल संस्थान के प्रश्नोत्तर में पहिले इसके दो भेद बताये हैं समुचय (सर्व) और अलग अलग। समुचय आश्रीय परिमंडल संस्थान कीसी समय कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलउगा है और अलग अलग की अपेक्षा से कीसी भी

समय पूछो एक कलउग जुम्मा मिलेगा शेष ३ बाल नहीं, एवं वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझ लेना।

हे भगवन्! एक परिमंडल संस्थान के प्रदेश क्या कुड जुम्मा है यावत् कलउगा है? गौतम! स्यात् कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलउगा जुम्मा है। घणा परिमंडल की पुच्छा समुचय की अपेक्षा स्यात् कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलयुग जुम्मा है और अलग अलग की अपेक्षा कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एवं, वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी कहना।

हे भगवन्! क्षेत्रापेक्षा एक परिमंडल संस्थान क्या कुड जुम्मा प्रदेश क्षेत्र अवगाह्य है यावत् कलयुग जुम्मा प्रदेश क्षेत्र अवगाह्य है? गौतम! कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष ३ बोल नहीं एवं एक वट्ट संस्थान स्यात् कुडजुम्मा, तेउगा और कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है। द्वावर जुम्मा नहीं, और एक त्रस संस्थान स्यात् कुडजुम्मा, तेउगा, और द्वावरजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष कलयुगा नहीं, और चौरस संस्थान स्यात् कुड-जुम्मा, तेउगा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है। द्वावर जुम्मा नहीं और आयतन संस्थान, स्यात् कुडजुम्मा, तेउगा, द्वावरजुम्मा अवगाह्या है, कलयुगा नहीं।

घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा—समुचय आश्रीय कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, एवं शेष घणा चार संस्थानों की अपेक्षा भी कुडजुम्मा प्रदेश अवगाहा है कारण पांचों संस्थान पूर्ण लोक व्याप्त हैं सो लोक कुडजुम्मा प्रदेशी है और अलग २ घणा परिमंडल संस्थानों की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, प्रदेश अवगाह्य है। घणा वट्ट संस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुड-जुम्मा, घणा तेउगा, घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है। घणा त्रस

संस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, घणा तेउगा, घणा द्वावरजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है। घणा चौरस संस्थान अलग २ की अपेक्षा (वट्टवत्) घणा कुडजुम्मा, तेउगा, कलयुग प्रदेश अवगाहा है, और अलग २ घणा आयतन संस्थान घणा कुडजुम्मा प्रदेश यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है।

हे भगवान्! एक परिमंडल संस्थान कालापेक्षा क्या कुडजुम्मा समयकी स्थितिवाला है ? यावत् कलयुगा समयकी स्थितिवाला है. १ गौतम स्यात् कुडजुम्मा समयकी स्थितिवाला है एवं यावत् स्यात् कलयुगा समयकी स्थितिवाला है। इसी तरह वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन संस्थान भी चारों बोलोंके समयकी स्थितिवाला कहना। घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा, समुच्चय आश्रीय स्यात् कुडजुम्मा, एवं यावत् स्यात् कलयुगा समयकी स्थितिके कहने और अलग २ की अपेक्षा भी इसी तरह घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा समयकी स्थितिका कहना। एवं शेष वट्ट, त्रस, चौरस और आयतनकी भी व्याख्या परिमंडलवत् करनी।

हे भगवान् एक परिमंडल संस्थान भावाश्रीय काला गुणके पर्यवापेक्षा क्या कुडजम्मा है ? यावत् कलयुगा है ? गौतम ! स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है। एवं यावत् आयतन संस्थान भी समझना। घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा, समुच्चयाश्रीय स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा घणा कुडजुम्मा है यावत् घणा कलयुगा है कहना। एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना। यह एक काले वर्णकी अपेक्षा कहा है। इसी तरह ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्शको पांचों संस्थानो कह देना ॥ इति ॥

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० ८७

[श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३.]

(श्रेणी)

आकाश प्रदेशकी पंक्तिको श्रेणी कहते है। गौतमस्वामी भगवान्से प्रश्न करते है कि हे भगवान्! समुच्चय आकाश प्रदेशकी द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या संख्याती, असंख्याती, या अनन्ती है? गौतम! संख्याती, असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है। इसी तरह पूर्वादि छे दिशीकी भी कह देना। एवं समुच्चयवत् अलोकाकाशकी भी श्रेणी समझना (अनन्ती है)।

द्रव्यापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती नहीं, अनन्ती नहीं किन्तु असंख्याती है। इसी तरह छे दिशी भी समझना।

प्रदेशापेक्षा समुच्चय आकाश प्रदेशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है, एवं पूर्वादि छे दिशीकी भी कहना।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती है परंतु अनन्ती नहीं, एवं पूर्वादि चार दिशी कहना, परंतु उंची नीची केवल असंख्याती है।

प्रदेशापेक्षा आलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा! गौतम, स्यात् संख्याती, असंख्याती अनन्ती है। परंतु पूर्वादि चार दिशीमें नियमा अनन्ती है, उंची नीचीमें तीनों बोल पावे।*

---

* लोकालोकमें स्यात् संख्याती श्रेणी कहनेका कारण यह है कि लोकके अन्तमें लोक और अलोकका खूणा है वहांपर संख्याता आकाश प्रदेश लोकालोककी अपेक्षासे है इसी वास्ते संख्याती श्रेणी कही।

समुच्चय श्रेणी क्या सादि सान्त है (१) सादि अनन्त है, (२) अनादि सान्त है, (३) या अनादि अनन्त है? (४) गौतम! अनादि अनन्त है शेष तीन भांगा नहीं, इसी तरह पूर्वादि छे दिशी भी समझ लेना।

लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! सादि सान्त है. शेष तीन भांगा नहीं एवं छे दिशी भी समझ लेना।

अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! स्यात् सादि सान्त यावत् अनादि अनन्त चारों भांगा पावे यथा—

(१) सादि सान्त-लोककी व्याघातमें।

(२) सादि अनन्त-लोकके अन्तमें अलोककी आदि है परंतु फिर अन्त नहीं।

(३) अनादि सान्त-अलोक अनादि है परंतु लोकके पासमें अन्त है।

(४) अनादि अनन्त-जहां लोकका व्याघात न पडे वहां।

पूर्व पश्चिम और उत्तर दक्षिण दिशी सादी सान्त वर्ज देना तथा उंची नीची दिशी पूर्ववत् चारों भांगा पावे।

हे भगवान्! द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या कुडजुम्मा है? यावत् कलयुगा है? गौतम! कुडजुम्मा है, शेष तीन भांगा नहीं, एवं यावत् छे दिशीमें कहना, इसी तरह द्रव्यापेक्षा लोकाकाशकी श्रेणी भी समझ लेना, यावत् छे दिशीकी व्याख्या कर देना एवं अलोकाकाशकी भी व्याख्या करना।

प्रदेशापेक्षा आकाश श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! कुडजुम्मा है शेष तीन भांगा नहीं एवं छे दिशी।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! स्यात् कुडजुम्मा है स्यात् दावरजुम्मा है शेष दो भांगा नहीं, एवं

पूर्वादि चार दिशी, और उर्ध्व अधो दिशी अपेक्षा कुडजुम्मा है शेष तीन भांगा नहीं।

प्रदेशापेक्षा अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एवं छे दिशी परन्तु उंची नीची दिशीमें कलयुगा वर्जके शेष ३ भांगा कहना।

श्रेणी सात प्रकारकी है (१) ऋजु (सीधी), (२) एक वंका, (३) दो वंका, (४) एक खूणावाली, (५) दो खूणावाली, (६) चक्रवाल, (७) अर्ध चक्रवाल (स्थापना)।

हे भगवान्! जीव अनुश्रेणी (सम) गति करे या विश्रेणी (विषम)? गौतम! अनुश्रेणी गती करे परंतु विश्रेणी गति नहीं करे इसी तरह नारकादि २४ दंडकोंके जीव समझ लेना, एवं परमाणु पुद्गल भी अनुश्रेणी करे, विश्रेणी नहीं करे, द्विप्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी भी अनुश्रेणी करे विश्रेणी न करे। इति।

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० ८८

[श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४]

(द्रव्य)

द्रव्य छे प्रकारके है—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल।

हे भगवान्! धर्मास्तिकाय द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है? गौतम! कलयुगा है शेष तीन बोल नहीं, क्योंकि धर्मास्तिकाय द्रव्यापेक्षा एक ही है एवं अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय भी समझ लेना।

द्रव्यापेक्षा जीवकी पृच्छा. गौतम! कुडजुम्मा है शेष तीन बोल नहीं एवं काल भी।

द्रव्यापेक्षा पुद्‌गलास्तिकायकी पृच्छा. गौतम! स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा चारों बोल पावे।

हे भगवान्! प्रदेशापेक्षा धर्मास्तिकाय क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है? गौतम! कुडजुम्मा है शेष तीन बोल नहीं. एवं अधर्मास्तिकायादि छेओं द्रव्य प्रदेशापेक्षा कुडजुम्मा है।

षट् द्रव्योंकी द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व—

(१) धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय, द्रव्यापेक्षा परस्पर तुल्य और सबसे स्तोक है।

(२) जीव द्रव्य अनन्त गुणा (३) पुद्‌गल द्रव्य अनन्त गुणा और (४) काल द्रव्य अनन्त गुणा।

षट् द्रव्योंकी प्रदेशापेक्षा अल्पाबहुत्व—

(१) धर्माधर्मास्तिकायके प्रदेश परस्पर तुल्य और सबसे स्तोक है।

(२) जीवोंके प्रदेश अनन्त गु०। (३) पुद्‌गल प्रदेश अनन्त गुणा। (४) काल प्र० अनन्त गु०।

(५) आकाशके प्रदेश अनन्त गुणे।

एकेक द्रव्यकी द्रव्य और प्रदेशापेक्षा अल्पाबहुत्व-

(१) धर्मास्तिकाय द्रव्य अपेक्षा स्तोक है धर्मास्तिकाय प्रदेश असंख्यात गुणा।

(२) अधर्मास्ति० द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश असंख्यात गुण एवं जीव और पुद्गल की। अल्पा० समझना.

(३) आकाशास्ति० द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश अनन्त गुणा और काल की अल्पाबहुत्व नही।

षट्द्रव्य के द्रव्य और प्रदेशों की अल्पा०—

(१) धर्मास्ति० अधर्मास्ति० और आकाशास्तिकाय के द्रव्य परस्पर तुल्य और सब से स्तोक।

(२) धर्माधर्मास्तिकाय के प्रदेश परस्पर तुल्य असंख्यात गुणा।

(३) जीव द्रव्य अनन्त गुणा। (४) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा।

(५) पुद्गल द्रव्य अनंत गुणा। (६) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा।

(७) काल द्रव्य अनन्त गुणा। (९) आकाश प्रदेश अनन्त गुणा।

हे भगवान्! धर्मास्तिकाय अवगाही हुई है ? (गौतम) हां अवगाही है, तो क्या संख्याता, असंख्याता या अनन्ता प्रदेश अवगाहा है ? संख्याता और अनन्ता नही किन्तु असंख्याता प्रदेश अवगाहा है, यद्यपि असंख्याता प्रदेश अवगाहा है तो वह कुडजुम्मा है, या यावत् कलयुगा है ? (गौतम) कुडजुम्मा है शेष तीन बोल नहीं एवं अधर्मास्ति० आकाशास्ति० जीवास्ति० पुद्गलास्ति० और काल की भी व्याख्या करनी के केवल कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष तीन बोल नहीं।

रत्नप्रभा नारकीकी पृच्छा ? गौतम) कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष ३ बोल नहीं, इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रैवेक, ५ अनुत्तर वैमान १ सिद्धशिला और लोक ये ३५ बोलों की व्याख्या करनी के एक कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है शेष नहीं।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ८९

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४.

(जीवों का प्रमाण.)

इस थोकडे में सब जीवों को जुम्मा रासी कर के द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भावाश्रीय बतावेंगे।

(१) जीव द्रव्य प्रमाण।

हे भगवान्! एक जीव द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा या कलयुगा है? (गौतम) कलयुगा है, क्योंकि एक जावाश्रीय प्रश्न है इस लिए एवं २४ दंडक और सिद्ध के भी एक जीवाश्रीय कलयुगा ही कहना।

घणा जीवों की अपेक्षा क्या कुडजुम्मा है? यावत् कलयुगा है? (गौतम) घणा जीवों की गणती का दो भेद है एक समुचय दूसरा अलग २, जिस में समुचय को अपेक्षा तो कुडजुम्मा है, शेष ३ भांगा नहीं और अलग २ की अपेक्षा कलयुगा है शेष ३ भांगा नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा? (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, और अलग २ की अपेक्षा कलयुगा है शेष ३ बोल नहीं, एवं २४ दंडक और सिद्ध भी समजलेना।

(२) जीव प्रदेश प्रमाण.

हे भगवान्! प्रदेशापेक्षा एक जीव क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है! (गौतम) प्रदेश दो प्रकार के है, एक जीव प्रदेश

और दूसरा शरीर प्रदेश, जिसमें जीव प्रदेश तो कुडजुम्मा है शेष ३ भांगा नहीं, और शरीर प्रदेश स्यात् कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है एवं २४ दंडक भी समजना। एक सिद्ध के प्रदेश की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नहीं है, और जीव प्रदेश अपेक्षा कुडजुम्मा है, शेष नहीं.

घणा जीवों के प्रदेशाश्रीय पृच्छा ? (गौतम) जीवों अपेक्षा समुचय कहो या अलग २ कहो कुडजुम्मा प्रदेश है, शेष ३ भांग नहीं और शरीरापेक्षा समु० स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा। और अलग २ अपेक्षा कुडजुम्मा भी यावत् कलयुगा भी घणा। एवं नरकादि २४ दंडकों में भी समझलेना।

घणा सिद्धों की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नही है, और जीवोंके प्रदेशापेक्षा समुचय और अलग २ में सब ठिकाणे कुडजुम्मा प्रदेश कहना शेष ३ भांगा नहीं।

(३) क्षेत्रापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान् ! समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है यावत् कलयुग प्रदेश अवगाह्य है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है, एवं २४ दंडकों और सिद्ध की भी व्याख्या करनी।

घणा जीव की पृच्छा ? (गौतम) समुचय तो कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, क्योंकि जीव सर्व लोक में है और लोकाकाश कुडजुम्मा प्रदेशी है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, यावत घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है।

घणा नारकी की पृच्छा ? (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाहा है और अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य

है एवं एकेन्द्री वर्जके यावत् वैमानिक और सिद्धोंकी व्याख्या करनी और एकेन्द्रीय समुचय जीववत् कहना।

(४) कालापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान् ! समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा समय स्थिति वाला है यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है? (गौतम) कुडजुम्मा स्थितीवाला है, क्योंकि काल का समय कुडजुम्मा है और जीव सब काल में शाश्वता है।

एक नारकी के नेरिये की पृच्छा ! (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति का है एवं २४ दंडक और सिद्ध समुचय जीव की माफिक समझना।

घणा जीव की पृच्छा ! (गौतम) समुचय और अलग २ कुडजुम्मा समय की स्थिति वाले हैं शेष बोल नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा ! (गौतम) समुचय स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाले हैं और अलग २ अपेक्षा कुडजुम्मा घणा यावत् घणा कलयुगा समय की स्थिति वाले है एवं २४ दंडकों और सिद्ध समुचयवत्।

(५) भावापेक्षाप्रमाण.

हे भगवान् ! समुचय एक जीव काला गुण पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है? (गौतम) जीव, प्रदेशाश्रीय वर्णादि नहीं है, और शरीर प्रदेशापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा पर्याय वाला है, एवं २४ दंडकों और सिद्धों के शरीर नहीं।

समुचय घणा जीव की पृच्छा ! (गौतम) जीवों के प्रदेशोंपेक्षा वर्णादि नहीं है और शरीरापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा पर्याय वाले है, एवं २४ दंडकों भा समझ लेना और

काले वर्ण की व्याख्या के माफिक शेष वर्ण ५ गंध, २ रस, ५ स्पर्श आठ एवं २० बोलों की व्याख्या समझ लेना ।

(६) ज्ञानपर्यायापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान् ! समुचय एक जीव मतिज्ञान की पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा है, यावत् कलयुगा है ? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एवं एकेन्द्रीय वर्ज के शेष १९ दंडकों समझ लेना । एकेन्द्रीय में मतिज्ञान नहीं है ओर इसी तरह घणा जीवोंपेक्षा समुचय और अलग २ की व्याख्या भी करदेनी, एवं श्रुतज्ञान भी समझना और अवधीज्ञान की व्याख्या भी इसी तरह करदेना परन्तु १९ दंडक की जगह १६ दंडक कहना क्योंकि पांच स्थावर के सिवाय तीन विकलेन्द्री में भी अवधीज्ञान नहीं होता है और मनः पर्यव ज्ञान की भी व्याख्या मतिज्ञानवत् करनी परन्तु मनुष्य दंडक सिवाय अन्य दंडक में मनः पर्यव ज्ञान नहीं है, इस लिये एक ही दंडक कहना । केवल ज्ञान की पृच्छा ? (गौतम) कुड जुम्मा पर्याय है शेष तीन बोल नहीं एवं घणा जीव समुचय और अलग २ की भी व्याख्या करदेनी ।

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान में २४ दंडक और विभंग ज्ञान में १६ दंडक चक्षुदर्शन में १७ दंडक, अचक्षुदर्शन में २४ दंडक और अवधी दर्शन में १६ दंडक इन सबकी व्याख्या मतिज्ञानवत् समझनी, और केवलदर्शन केवलज्ञानकी माफिक यह थोकडा खूब दीर्घद्रष्टि से विचारने लायक है, धर्म ध्यान इसी को कहते है, द्रव्यानुयोग में उपयोग की तिव्रता होने से कर्मों की बडी भारी निर्जरा होती है, इस लिये मोक्षाभिलाषियों को हमेशा इस बात की गवेषणा करनी चाहिये । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम् ।

थोकड़ा नं० ९०.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४.

(जीव कंपाकंप.)

हे भगवान्! समुच्चय जीव क्या कंपायमान है या अकंप है? (गौतम) जीव दो प्रकार के है। एक सिद्धोंके और दूसरे संसारी जिसमें सिद्धों के जीव दो प्रकार के है, एक अणंतर (जो एक समय का) सिद्धा और दूसरा परंपर (बहुत समय का) सिद्धा, सो परम्पर सिद्ध है वे अकंप है और अणंतर सिद्ध है वे कंपायमान है अगर कंपायमान है तो क्या देश (एक हिस्सा) कंपायमान है या सर्व कंपायमान है? देश कंपायमान नहीं है किन्तु सर्व कंपायमान है क्योंकि मोक्ष जाता हुआ जीव रस्ते में सर्व प्रदेशों से चलता है।

संसारी जीव दो प्रकार के है एक शलेस प्रतिपन्न (चौदवें गुणस्थानवर्ती) और दूसरा अशैलेस (पहिले से तेरवें गुण स्थान तक के) जिस में शैलेस प्रतिपन्न है वह अकंप है, और अशैलेस है वह कंपायमान है? अगर कंपायमान है तो क्या देश कंपायमान है या सर्व कंपायमान है, देश कंपायमान भी है और सर्व कंपायमान भी है। जैसे हाथ हिलाना यह देश कंपाय मान या आत्म सर्व प्रदेशों से गती आगती करता है सो सर्व है।

नारकी के नेरीयों की पृच्छा? (गौतम) देशकम्प भी है और सर्व कम्पी भी है कारण नारकी दो प्रकार के है, एक परभव गमन गतीवाले, और दूसरे वर्तमान भवस्थित देशकंप है, इसी माफिक भुवनपति १०, स्थावर, ५ विकलेन्द्री, तीन १ मनुष्य, १ व्यंतर, १ जोतिषी और वैमानिक भी समझ लेना। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ६१.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४.

(पुद्गलों की अल्पाबहुत्व.)

पुद्गल-परमाणु संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी स्कंध इनकी द्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा बहुत्व कहते हैं—

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कंध के द्रव्य है ।
(२) परमाणु पुद्गल के द्रव्य अनन्त गुणे ।
(३) संख्यातप्रदेशी के द्रव्य संख्यात गुणे ।
(४) असंख्यातप्रदेशी के द्रव्य असंख्यात गुणे ।

प्रदेशापेक्षा भी अल्पाबहुत्व इसी माफिक (द्रव्यवत्) समझलेना ।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पाबहुत्व.)

(१) सब से स्तोक अनन्तप्रदेशी स्कंध के द्रव्य ।
(२) तस्य प्रदेश अनंत गुणे ।
(३) परमाणु पुद्गल के द्रव्य प्रदेश अनंत गुणे ।
(४) संख्यात प्रदेशी स्कंध के द्रव्य संख्यात गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे ।
(६) असंख्यात प्रदेश स्कंध के द्रव्य असंख्यात गुणे !
(७) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे ।

क्षेत्रापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक आकाश प्रदेश अवगाहा द्रव्य ।

(२) संख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य संखात गुणे ।
(३) असंख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य असंख्यात गुणे ।
इसी माफिक प्रदेश की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना ।
(१) सब से स्तोक एक प्रदेश अवगाह द्रव्य और प्रदेश ।
(२) संख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य संख्यात गुणे ।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे ।
(४) असंख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य असंख्यात गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे ।

कालापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक समय की स्थिति के द्रव्य ।
(२) संख्यात समय स्थिति के द्रव्य संख्यात गुणे ।
(३) असंख्यात समय स्थिति के द्रव्य असंख्यात गुणे ।
इसी माफिक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना ।
(१) सब से स्तोक एक समय की स्थिति के द्रव्य और प्रदेश
(२) संख्यात समय की स्थिति के द्रव्य संख्यात गुणे ।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे ।
(४) असंख्यात समय की स्थिति के द्रव्य असंख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे ।

भावापेक्षा प्रमाण कि अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक अनन्त गुण काले पुद्गलों के द्रव्य।
(२) एक गुण काला पुद्गल द्रव्य अनन्त गुणे ।
(३) संख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य संख्यात गुणे ।
(४) असंख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफीक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेनी ।
(१) सब से स्तोक अनंत गुण काले के द्रव्य ।

(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) एक गुण काला द्रव्य और प्रदेश अनन्त गुणे ।
(४) संख्यात प्रदेश काले० पु० द्रव्य सं० गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे ।
(६) असं० प्रदेश काले० पु० द्रव्य असंख्यात गुणे ।
(७) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।

इसी माफिक ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष,) एवं १६ बोलों की व्याख्या काले वर्णवत् तीन तीन अल्पाबहुत्व करनी ।

कर्कश स्पर्श की अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश का द्रव्य ।
(२) सं० गु० कर्कश द्रव्य सं० गु०
(३) असं गु० कर्कश द्रव्य असं गु० ।
(४) अनंत गुणा कर्कश द्रव्य अनंत गुणे ।

कर्कश स्पर्श प्रदेशापेक्षा अल्पा०

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश के प्रदेश ।
(२) सं० गुणा कर्कश के प्रदेश असं० गुणे ।
(३) असं० गुणा कर्कश के प्रदेश असं० गुणे ।
(४) अनंत गुणा कर्कश के प्रदेश अनंत गुणे ।

कर्कश० द्रव्य प्रदेशापेक्षा अल्पा० ।

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश के द्रव्य प्रदेश ।
(२) सं० गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य सं० गुणे ।
(३) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।
(४) असं० गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य असं० गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।

(६) अनंत गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य अनंत गुणे ।
(७) तस्य प्रदेश अनंत गुणे ।

इसी माफिक मृदुल, गुरु, लघु भी समझ लेना । कुल ६९ अल्पाबहुत्व हुई । ३ द्रव्य की, ३ क्षेत्र की, ३ काल की, और ६० भाव की ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ९२.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४.

(१) द्रव्य प्रदेशापेक्षा पुच्छा ।

हे भगवान् ! एक परमाणु पुद्गल द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है ? गौतम ! कलयुगा है, शेष तीन भांगा नहीं एवं यावत् अनंत प्रदेशी स्कन्ध द्रव्यापेक्षा कलयुगा है ।

घणा परमाणु पुद्गल की द्रव्यापेक्षा पृच्छा ? गौतम ! समुच्चयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा स्यात् चारों भांगा पावे, अलग २ की अपेक्षा केवल कलयुगा शेष ३ भांगा नहीं एवं यावत् अनंत प्रदेशी स्कन्ध भी समझना ।

एक परमाणु पुद्गल प्रदेशापेक्षा पृच्छा ! (गोतम कलयुगा है शेष भांगा नहीं, एक दोपदेशी स्कंधको पृच्छा ! गौतम दावरजुम्मा है, एक तीन प्रदेशी स्कंध तेउगा है, एक चार प्रदेशी स्कंध कुडजुम्मा है, एक पांच प्रदेशी स्कंध कलयुगा है, एक छे प्रदेशी स्कंध दावरजुम्मा है, एक सात प्रदेशी स्कंध तेउगा है, एक आठ प्रदेशी स्कंध कुडजुम्मा है, नव प्रदेशी स्कंध कलयुगा

है, दश प्रदेशी स्कंध दावरजुम्मा है, शेष तीन भांगा नहीं, एक संख्यात प्रदेशी स्कंध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा एवं यावत् एक अनन्त प्रदेशी स्कंध में भी चारों भांगा समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पुच्छा! (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा कलयुगा है, शेष तीन भांगा नहीं।

घणा दो प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम! समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा तथा स्यात् दावरजुम्मा है शेष दो भांगा नहीं और अलग २ की अपेक्षा दावरजुम्मा है, शेष तीन भांगा नहीं, घणा तीने प्रदेनी स्कंध समुचयापेक्ष स्यात् कुडजुम्मादि चारों भांगा पावे और अलग २ की अपेक्षा तेउगा है, घणा चार प्रदेशी स्कंध समुचयापेक्षा कुडजुम्मा है, और अलग २ की अवेक्षा भी कुडजुम्मा है, शेष ३ मांगा नहीं, घणा पांच प्रदेशी स्कंध और घणा नौ प्रदेशी स्कंध की व्याख्या परमाणु पुद्गलवत्, घणा छः प्रदेशी और घणा दश प्रदेशी की व्याख्या दो प्रदेशीवत्, घणा सात प्रदेशी की व्याख्या तीन प्रदेसीवत् और घणा आठ प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् कह देना।

घणा संख्यात प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम! समुचयापेक्षा स्यात् चारों भांगा पावे। और अलग २ की अपेक्षा भी चारों भांगा पावे! कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एवं असंख्यात् प्रदेशी और अनंत प्रदेशी भी समझ लेना।

(२) क्षेत्रापेक्षा पृच्छा

हे भगवान्! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है? कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है शेष ३ भांगा नहीं।

एक दो प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम। स्यात् दावर

जुम्मा स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है शेष दो भांगा नहीं। एक तानीप्रदेशी स्कंध स्यात् तेउगा दावरजुम्मा और कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है, कुडजुम्मा नहीं। एक चार प्रदेशी स्कंध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है। एवं यावत् पांच, छ, सात आठ, नौ, दश प्रदेशी संख्यात असंख्यात और अनंत प्रदेशी भी स्यात कुडजुम्मा यावत् कलयुगा आवगाह्या है।

घणा परमाणु पद्गल की पृच्छा ? गौतम ! समुचय कुडजुम्मा प्रदेश आवगाह्या है। कारण परमाणु सर्व लोक में है। अलग २ की अपेक्षा कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है। घणा दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? गौतम ! समुचय कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्या है और अलग २ की अपेक्षा घणा दावरजुम्मा घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है। शेष दो भांगा नहीं। घणा तीन प्रदेशी स्कन्ध समुचय की अपेक्षा कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्या है। अलग २ की अपेक्षा घणा तेउगा दावरजुम्मा और कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है। शेष कुडजुम्मा नहीं। घणा चार प्रदेशी स्कन्ध समुचय की अपेक्षा कुडजुम्मा प्रदेश आवगाह्या है। अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है एवं पांच प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् करनी।

(३) कालापेक्षा पृच्छा

हे भगवान ! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है ? गौतम स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? गौतम ! समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय स्थिति का है एवं अलग २ की

अपेक्षा भी घणा कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय कि स्थिति का है इसी माफक दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

(४) भावापेक्षा पृच्छा

हे भगवान् ! एक परमाणु पु० कालावर्ण की पर्यायाश्रीय क्या कुडजुम्मा प्रदेशी है यावत् कलयुगा प्रदेशी है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेशी है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना, घणा परमाणु की पृच्छा ? (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेशी है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेशी है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या करनी, जैसे काले वर्ण का कहा इसी तरह शेष ४ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, ऊष्ण, स्निग्ध, रूक्ष,) एवं १६ बोल समझ लेना।

एक अनन्त प्रदेशी स्कंध कर्कश स्पर्शाश्रीय क्या कुडजुम्मा प्रदेशी यावत् कलयुगा प्रदेशी है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेशी है एवं घणा अनन्त प्रदेशी स्कंध भी समुचयापेक्षा स्यात् चारों भांगा और अलग २ अपेक्षा भी चारों भांगा (कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा कहना) एवं मृदुल गुरु, लघु की भी व्याख्या करनी, ये चार स्पर्श वाले पुद्गल संख्यात, असंख्यात प्रदेशी नहीं होते किन्तु अनन्त प्रदेशी ही होते है क्योंकि ये चार स्पर्श बादर स्कंध में होते है जहां ये चार स्पर्श हैं वहां पूर्व कहे चार स्पर्श नियमा हैं, यह थोकडा दीर्घ दृष्टि से विचारने योग्य है।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० ६३

श्री भगवती सूत्र श० २५ उ० ४.

(परमाणु).

हे भगवान् ! परमाणु पुद्गल क्या कम्पायमान है के अकम्प है ? गौतम ! स्यात् कम्पायमान है स्यात् अकम्प है एवं दो तीन यावत् दश प्रदेशी तथा संख्यात् असंख्यात् और अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? गौतम ! कम्पायमान भी घणा और अकम्प भी घणा इसी तरह घणा दो तीन प्रदेशी यावत् घणा अनन्त प्रदेशी स्कंन्ध भी समझ लेना।

एक परमाणु पुद्गल कम्पायमान रहे तो कितने काल तक और अकम्प रहे तो कितने काल तक रहे ? गौतम ! कम्पायमान रहे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलीका के असंख्यात में भाग और अकम्प रहे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्याता काल एवं दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल कम्पायमान तथा अकम्प की पृच्छा ? गौतम ! सदा काल सास्वता एवं दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

एक परमाणु पुद्गल कम्पायमान तथा अकम्प का अन्तर पडे तो कितने काल का ? गौतम ! कम्पायमान का स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असंख्याता काल और परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असंख्यात काल और अकम्प का स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० आवलिका के असं० भाग और पर

स्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असंख्याता काल क्योंकि दो आदि प्रदेश में जाकर रहे तो असं० काल तक रहे।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? गौतम ! कम्पमान का स्वस्थान अन्तर ज० एक समय उ० असं० काल परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल क्योंकि जो परमाणु अलग हुवा है वही परमाणु अनन्त काल के पीछे अवश्य आकर मिलता है। उत्कृष्ट अनन्त काल तक अलग रहे और अकम्प की स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० आवलीका के असं० भाग परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

घणा दो प्रदेशी तीन प्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अन्तर नहीं क्योंकि बहुवचन होने से कम्पायमान और अकम्प सास्वते होते है।

(कम्पायमान् तथा अकम्प का अल्पा०)

(१) सब से स्तोक कम्पायमान परमाणु.
(२) अकम्पमान परमाणु असंख्यात गुणा.

एवं दो प्रदेशी यावत असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान अकम्प असंख्यात गुणे.

(१) सबसे स्तोक अकम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध।
(२) कम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त गुणे।

(परमाणु पु० से अनं० प्रदेशी स्कन्ध की कम्पाकम्प आश्रीयद्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा०।)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अकम्प द्रव्य।
(२) अनन्त प्रदेशी कम्पायमान द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य अनंत गुणे।

(४) संख्यात प्र० कम्पायमान द्रव्य असं० गुणे।
(५) असंख्यात प्र० ,, ,, ,, ,,
(६) परमाणु पु० अकम्प० ,, ,, ,,
(७) संख्यात प्र० ,, ,, सं० ,,
(८) असंख्यात प्र० ,, ,, असं० ,,

इसी माफक प्रदेशकी अल्पा० समझना; परन्तु परमाणु को अप्रदेशी कहना और ७ में बोल में संख्यात प्र० स्कन्ध के प्रदेश असंख्यात[1] गुणा कहना अब द्रव्य और प्रदेश की अल्पा०।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अकम्प का द्रव्य।
(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे।
(३) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान का द्रव्य अनन्त गुणे।
(४) तस्य प्रदेश अनं० गुणे।
(५) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य प्रदेश अनं० गुणे।
(६) संख्यात प्र० कम्पायमान द्रव्य असं० गुणे।
(७) तस्य प्र० संख्यात गुणे।
(८) असंख्यात प्र० कम्प० द्रव्य असं० गुणे।
(९) तस्य प्रदेश असं० गुणे।
(१०) परमाणु पु० अकम्प० द्रव्य, प्रदेश असं० गुणे।
(११) सं० प्र० अकम्प० द्रव्य असं० गुणे।
(१२) तस्य प्रदेश सं० गुणे।
(१३) असं० प्र० अकम्प० द्रव्य असं० गुणे।
(१४) तस्य प्रदेश असं० गुणे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

---

१ असंख्यात् गुणा कहा सो विचारणीय है।

थोकडा नं० ६४

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४

(परमाणु पुद्गल).

हे भगवान ! एक परमाणु पु० क्या सर्वकम्प है, देश कम्प है या अकम्प है ? गौतम ! देश कम्प नहीं है स्यात् सर्व कम्प है स्यात् अकम्प है । देशकम्प नहींहै ।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा. गौतम ! स्यात् देश कम्प (एक विभाग) है । स्यात् सर्व कम्प है और स्यात् अकम्प भी है एवं तीन चार यावत् अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या इसी तरह करनी ।

घणा परमाणु की पृच्छा. गौतम ! देश कम्प नहीं है सर्व कम्प घणा और अकम्प भी घणा है और घणा दो प्रदेशी स्कन्ध, देश कम्प भी घणा, सर्व कम्प भी घणा, और अकम्प भी घणा, इसी तरह घणा तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना ।

हे भगवान् ! एक परमाणु पु० सर्व कम्प और अकम्प पने रहे तो कितने काल तक रहे ? गौतम ! कम्पायमान रहे तो ज० एक समय उ० आवलीका के असंख्यात में भाग जितना काल और अकम्प रहे तो ज० एक समय उ० असं० काल० तथा दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्पायमान और सर्व कम्पायमान पने रहे तो ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग जितना काल और अकम्प पने रहे तो ज० एक समय उ० असं० काल एवं तीन, चार

यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना और घणा परमाणु, दो प्रदेशी, तीन प्रदेशी यावत् घणा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सर्व कम्प, देश कम्प और अकम्प सर्वाद्धा याने सास्वता है।

एक परमाणु पु० के सर्वकम्प और अकम्पका अन्तर कितना है? गौतम! कम्पायमान स्वस्थानाश्रीय ज० एक समय उ० असं० काल एवं परस्थानाश्रीय भी समझना और अकम्प का स्वस्थानाश्रय ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अन्यस्थानाश्रय ज० एक समय उ० असं० काल भावना पूर्ववत् क्योंकि द्विप्रदेशादि स्कन्ध की स्थिति असंख्याता काल की है।

द्वि प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प, सर्व कम्प और अकम्प का अन्तर ज० तो सबका एक समय है और उत्कृष्ट देश कम्प और सर्व कम्प का स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असं० काल और परस्थान आश्री अनन्त काल क्योंकि वे दो प्रदेश अलग २ होकर दूसरे स्कन्धों में जा मिले तो उ० अनन्ता काल तक अलग रहकर फिर वेही दो प्रदेश दो प्रदेशी स्कन्धपने मिले तो उ० अनन्त काल में मिले और अकम्प का अन्तर स्वस्थानापेक्षा उ० आवली का के असं० भाग और पर स्थानापेक्षा अनन्त काल भावना पूर्ववत् एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी व्याख्या कर देनी।

घणा परमाणु पु० दो प्रदेशी स्कन्ध तीन प्र० चार प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के देश कम्प, सर्वकम्प और अकम्प का अन्तर नहीं है कारण सर्व काल में तीनों प्रकारके पुद्गल सास्वते हैं।

(प्रत्येक अल्पाबहुत्व).

(१) सबसे स्तोक सर्व कम्पायमान परमाणु पु० ।

(२) अकम्प परमाणु पु० असं० गुणा ।

(१) सबसे स्तोक दो प्रदेशी स्कन्ध सर्व कम्प।
(२) दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प असं० गु०।
(३) ,, ,, अकम्प असं० गु० एवं दो,

तीन यावत् असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की भी अल्पा० दो प्रदेशीवत् अलग २ लगा लेना।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० स्कन्ध सर्व कम्प।
(२) अकम्प अनन्त प्र० स्कन्ध अनन्त गुणा।
(३) देशकम्प ,, ,, अनन्त गुणा।

द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का सर्वकम्प द्रव्य।
(२) अनं० प्र० अकम्प का द्रव्य अनन्त गुणा।
(३) ,, ,, देशकम्प० ,, अनं० गु०।
(४) असं० प्र० सर्वकम्प० ,, अनं० गु०।
(५) सं० प्र० ,, ,, असं० गु०।
(६) परमाणु पु० ,, ,, असं० गु०।
(७) सं० प्र० देशकम्प० ,, असं० गु०।
(८) असं० प्र० ,, ,, असं० गु०।
(९) परमाणु पु० अकम्प० ,, असं० गु०।
(१०) सं० प्र० ,, ,, सं० गु०।
(११) असं० प्र० ,, ,, असं० गु०।

इसी तरह प्रदेश की भी अल्पा० समझ लेना; परन्तु परमाणु को अप्रदेशी और १० में बोल में संख्यात प्रदेशी अकम्प प्र० असं० गुणे कहना।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० सर्व कम्पका द्रव्य ।

(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।

(३) अनं० प्र० अकम्प द्रव्य अनं० गुणे ।

(४) तस्य प्र० अनं० गुणे ।

(५) अनं० प्र० देशकम्प द्रव्य अनं० गुणे ।

(६) तस्य प्र० अनंत गुणे ।

(७) असं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य अनं० गु० ।

(८) तस्य प्र० असंख्यात गुणे ।

(९) सं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य असं० गु० ।

(१०) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।

(११) परमाणु पु० सर्वकम्प० द्रव्य प्र० असं० गु० ।

(१२) सं० प्र० देशकम्प० द्रव्य असं० गु० ।

(१३) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।

(१४) असं० प्र० देशकम्प द्रव्य असं० गु० ।

(१५) तस्य प्रदेश असं० गु० ।

(१६) परमाणु पु० अकम्प० द्रव्य प्रदेश असं० गु० ।

(१७) सं० प्र० अकम्प द्रव्य सं० गु० ।

(१८) तस्य प्रदेश सं० गु० ।

(१९) असं० प्र० अकम्प द्रव्य असं० गु० ।

(२०) तस्य प्रदेश असं० गु० ।

यह थोकडा खूब दीर्घ दृष्टी से विचारने योग्य है ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ६५

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ०-१

(पुद्गल).

सर्व लोक में पुद्गल तीन प्रकार के है. प्रयोगशा, मिश्रशा और विशेशा।

दोहा—जीव गृह्या ते प्रयोगशा मिशा जीवा रहित।
विशेषा हाथ आवे नहीं ज्ञानी भाख्या ते तहत् ॥

प्रयोगशा-जीव ने जो पुद्गल शरीरादिपने गृहण किया वह।
मिश्रशा-जीव शरीरादि पने गृहण करके छोडे हुवे पुद्गल।
विशेषा-शीतोंष्णादि पने जो स्वभाव से प्रणम्या पुद्गल।

अब इन पुद्गलों का शास्त्रकारोने अलग २ भेद करके बतलाया है, प्रयोगशा पु० का नव दंडक कहते है जिसमें पहिले दंडक में जीव के ८१ भेद है, यथा सात नारकी, रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा तमप्रभा, तमस्तमःप्रभा. १० भुवनपति-असुरकुमार, नागकु० सुवर्णकु० विद्युतकु० अग्निकु० द्वीपकु० दिशाकु० उदधिकु० वायुकु० स्तनित्कुमार. ८ व्यंतर-पिशाच, भूत, जक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व. ५ ज्योतिषी-चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा. १२ देवलोक सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, महेन्द्र, ब्रह्म, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आणत्, प्राणत्, आरण, अच्युत. ग्रैवेक-भद्र, सुभद्र, सुजया, सुमाणसा, सुदर्शना, प्रियदर्शना, अमोघ, सुपडिबन्धा, यशोधरा. ५ अनुत्तर वैमान-विजय, विजयंत, जयंत, अपराजित, सर्वार्थसिद्ध. ५ सूक्ष्म-पृथ्वीकाय, अपूकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय

एवं ५ बादरकाय-पृथ्वीकायादि. ३ विकलेन्द्री बेरिंद्री, तेरिंद्री, चौरिन्द्री, ५ असन्नीतिर्यंच. जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरी भुजपरी, एवं ५ सन्नी तिर्यंच जलचरादि० दो मनुष्य-गर्भज और समुत्सम यह पहिले, दंडके ८१ भेद हुवे।

(२) दूसरा दंडकमे जीवोंके पर्याप्ता—अपर्याप्ता के १६१ बोल है जेसे जीवोंके ८१ भेद कहा है जिस्के अपर्याप्ता के ८१ और पर्याप्ता के ८० क्योंकि समुत्सम मनुष्य पर्याप्ता नहीं होते एवं ८१-८० मिलके १६१ भेद दूसरे दंडकका १६१ बोल हुवा.

(३) तीसरे दंडकमें पर्याप्ता अपर्याप्ता के शरीर ४९१ है यथा दूसरे दंडक में जो १६१ बोल कहे हैं जिसमें तीन तीन शरीर सब में पावे कारण नारकी देवता में वैक्रिय, तेजस, कार्मण शरीर है और मनुष्य तिर्यंच में औदारिक, तेजस, कार्मण है इसलिये १६१ को तीन गुणा करने से ४८३ भेद हुवे तथा वायुकाय और ५ सन्नी तिर्यंच में शरीर पावे चार जिसमें तीन २ पहिले गणचुके शेष ६ बोलों के ६ शरीर और मनुष्य में ५ शरीर है जिसमें ३ पहिले गण चुके शेष २ मनुष्य के और ६ वायु तिर्यंच के एवं ८ मिलाने से ४९१ भेद तीजे दंडक का हुवा।

(४) चौथे दंडक में जीवों की इन्द्रियों के ७१३ भेद है यथा दूसरे दंडक में १६१ भेद कह आये हैं जिसमें एकेन्द्रियके २० बोलों में २० इन्द्री विकलेन्द्री के ६ बोलों कि १८ इन्द्री शेष १३५ बोलों में पांच २ इन्द्री गणनेसे ६७५ इन्द्रियां एवं २०-१८-६७५ सब मिलके ७१३ भेद हुवे।

(५) पांचवे दंडक में शरीर की इन्द्रियों के २१७५ भेद है। यथा-तीसरे दंडक के ४९१ भेद कह आये है जिसमें एकेन्द्रीय के ६१ शरीर में इन्द्रीय ६१ हैं और विकलेंद्री के १८ शरीर में इन्द्रीय ५४ हैं शेष ४१२ शरीर पंचेन्द्रीयके हैं, जिसमें २०६०

इन्द्रीयां हैं एवं ६१-५४-२०६० मिलके सर्व २१७५ भेद पांचवें दंडक के हुवा।

(६) छठे दंडक में पर्याप्तापर्याप्ता में वर्णादिके ४०२५ भेद यथा दूसरे दडक में १६१ बोल कह आये हैं उनको ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श और ५ संस्थान के साथ गुणा करनेसे ४०२५ भेद हाते है, क्योंके १६१ बालों में वर्णादि २५ पचवीस बोल गीननेसे ४०२५ बोल हुवे।

(७) सातवें दंडक के ११६३१ भेद यथा तीसरे दंडक में जो बोल ४९१ शरीर कह आये हैं, जिसमें वर्णादि २५ बोल पाते है वास्ते वर्णादि २५ बोल से गुणा करनेसे १२२७५ बोल हुवे, परन्तु ४९१ भेद में १६१ भेद कार्मण शरीर के है और कार्मण शरीर चौफरसी होता है इसलिये १६१ भेदके चार चार स्पर्श कम करनेसे ६४४ भेद कमती हुवे बाकी ११६३१ भेद सातवें दंडक के।

(८) आठवें दंडक के १७८२५ भेद यथा चौथे दंडक में ७१३ जीवों की इन्द्रियां कही हैं जिसमें वर्णादि २५ पचविंश बोल पावे वास्ते ७१३ बोलों को वर्णादि २५ बोलसे गुणा करनेसे १७८२५ भेद आठवें दंडक के हुवे।

(९) नौवें दंडक के ५१५२३ भेद यथा पांचवें दंडक के २१७५ भेद कहे हैं, उनको वर्णादि २५ बोलसे गुणा करने से ५४३७५ भेद हुवे परन्तु एक २ इन्द्री में एक २ कार्मण शरीर है और कार्मण चौस्पर्शी है, इसलिये २८५२ बोल कम करनेणे शेष ५१५२३ भेद नौवें दंडक के हुवे एवं नवों दंडक के ८१-१६१-४९१-७१३-२१७५=४०२५-११६३१-१७८२५-५१५२३ सब मिला कैसे ८८६२५ भेद हुवे, सो इतने प्रकारके प्रयोगशा पुद्गल प्रणमते हैं पुद्गलों की बडीही विचित्रता है, ऐसा जगत में कोइ जीव

नहीं है कि जिसने इन पुद्गलों को ग्रहण न किया हो एकवार नहीं परन्तु अनन्तीबार इसी तरह ग्रहण कर करके छोडा है जैसे प्रयोगशा के नौ दंडक और उनके भेद करके बताये हैं, उसी माफिक मिश्रशाके भी भेद समझ लेना विशेषा पुद्गल वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, और संस्थानपने प्रणम्या है उसके ५३० भेद हैं वह शीघ्रबोध दूसरे भागसे समझलेना, एवं प्रयोगशा, मिश्रशा विशेषा के १७७७८० भेद हुवे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ६६.

श्री भगवती सूत्र श० ८–उ० ९.

(बन्ध)

बंध दो प्रकारके होते हैं, एक प्रयोगबंध जो किसी दूसरेके प्रयोग से होता है. और दूसरा विशेषबंध जो स्वभाव से ही होता है।

(१) विशेष बंध के दो भेद अनादिबंध और सादीबंध जिसमें अनादीबंध के तीन भेद है धर्मास्तिकाय का अनादीबंध है एवं अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय का भी अनादि बन्ध है इन तीनु के स्वस्व प्रदेश के साथ अनादिबंध है।

धर्मास्तिकाय का अनादिबंध है वह क्या सर्वबंध है या देश बंध है ? गौतम ! देशबंध है क्योंकि संकल के माफिक प्रदेश से प्रदेश बंधा हुवा है, एवं अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय भी समझ लेना।

धर्मास्तिकाय के विशेषाबंध की स्थिति कितनी है? गौतम! सर्वाद्धा याने सदाकाल सास्वता बंध है एवं अधर्मास्ति० आकाशास्ति० भी समझ लेना।

सादी विशेषा बन्ध कितने प्रकारका? गौ० तीन प्रकारका बन्धनापेक्षा, भाजनापेक्षा और परिणामापेक्षा जिसमें बंधानापेक्षा जैसे दो प्रदेशी, तीन, चार यावत् अनंत प्रदेशी का आपस में बंध हो। परन्तु रूक्षसे रूक्ष न बंधे स्निग्ध से स्निग्ध न बन्धे परन्तु रूक्ष और स्निग्ध संबंध होवे वह भी जघन्य गुण वर्जके जैसे एक गुण रूक्ष और एक गुण स्निग्ध का बंध न होवे परंतु विषम मात्रा जैसे एक गुण रूक्ष और दो गुण स्निग्ध का बंध होवे इसी तरह यावत् अनंत प्रदेशी तक समझ लेना, इनकी स्थिती ज० एक समय की उ० असंख्याताकाल०।

भाजनापेक्षा—जैसे किसी भाजन में जूना गुल तथा तंदूल मद्रादि गालने से उनका स्वभाव से बन्ध हो, उनकी स्थिती ज० एक समय उ० संख्या० कालकी है।

परिमाण बन्ध— जैसे बादल, इन्द्रधनुष, अमोघा, उद्गमच्छादि इनकी स्थिती ज० एक समय उ० छे मासकी है।

प्रयोग बन्ध के तीन भेद—अनादि अनन्त, अनादि सांत। और सादि सांता जिसमें (१) अनादि अनंत-जीव के आठ रुचक प्रदेशोंका बन्ध वह भी तीन २ प्रदेशके साथ है, और शेष आत्म प्रदेश हैं वे सादि सांत हैं, (२) सादी अनंत एक सिद्धों के आत्म प्रदेश स्थित हुवे हैं वह सादी है परन्तु अन्त नहीं, (३) सादि सांतके ४ भेद हैं—आलावणबन्ध, अल्लियावणबन्ध, शरीरबन्ध, और शरीर प्रयोगबंध।

आलावणबन्ध—जैसे तृणके भारेका बन्ध, काष्ट के भारेका बन्ध, एवं पत्र, पलाल, वेली आदि का बन्ध इनकी ज० स्थिती एक समय उ० संख्याता काल०।

अल्लियावणबंध के ४ भेद—लेसाण बंध, उच्चयबन्ध, समुच्चयबंध, और साधारणबंध, जिसमें लेसाणबंध जैसे कादेसे, चूनेसे, लाखसे, मेंणसे, पत्थर तथा काष्टादि को जोडकर घर प्रासाद आदि बनाना इसकी स्थिती ज० अंतर मुहूर्त उ० संख्याता काल (२) उच्चयबन्ध-जैसे--तृणरासी, काष्टरासी, पत्र रासी तुस, भुस० गोबर रासी का ढेर करने से बंध होता है इसकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याता काल-(३) समुच्चयबन्ध-जैसे-तालाब, कूवा, नदी, द्रह, बावडी, पुष्कर्णी, देवकुल, सभा, पर्वत, छत्री, गढ, कोट, किला, घर, रस्ता, चौरस्तादि जिनकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताकालकी है. (४) साधारणबन्ध-जिसके दो भेद—देसबन्ध जैसे गाडा, गाडली, पीलाण, अम्बाडी, पिलंग, खुरसी, आदि और दूसरा सर्वबन्ध जैसे पाणी दूध इत्यादि इनकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताकाल।

शरीरबन्ध के दो भेद-पूर्व प्रयोगापेक्षा और वर्तमान प्रयोगापेक्षा जिस में पूर्व प्रयोग जैसे नरकादि सर्व संसारी जीवों के जैसा २ कारण हो वैसा २ बंध होता है. और वर्तमान प्रयोग बंध जैसे केवली समुद्घात से निवृत्त होता हुवा अन्तरा और मथनमें प्रवृत्तमान तेजस और कारमण का बन्धक होवे, कारण उस वक्त केवल प्रदेशही होते हैं।

शरीर प्रयोग बन्धके ५ भेद जैसे औदारिक शरीर प्रयोग बंध, वैक्रिय० आहारक० तेजस० और कारमण शरीर प्रयोगबंध इनकी स्थिती सविस्तार आगे के थोकडे में कहेंगे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ६७.

श्री भगवती सूत्र श० ८-उ० ९.

(सर्वबंध देशबंध.)

शरीर पांच प्रकारके हैं-औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, तेजस, और कार्मण शरीर (१) औदारिक शरीर आठ बोल से निपजावे-द्रव्य से, वीर्य से, संयोग से, प्रमाद से, भवसे जोगसे कर्मसे आयुष्यसे औदारिक शरीर का स्वामी कौन है? (१) समुचय जीव (२) समुचय एकेन्द्री (३) पृथ्वीकाय (४) अप (५) तेउ० (६) वाउ० (७) वनस्पति० (८) बेरेन्द्री (९) तेरिन्द्री (१०) चौरिन्द्री (११) तिर्यंच पंचेंद्र। (१२) मनुष्य इन बारह बोलों में सर्व बन्धका आहार ले वह ज० एक समय का है सर्व बन्धका आहार जीव जिस योनी में उत्पन्न हो उस योनी में जाके प्रथम समय ग्रहण करता है और वह प्रथम समय का लिया हुवा आहार उमर भर रहता है, जैसे तेलके अंदर बडा का दृष्टांत.

देश बंधका आहार—समुचय जीव, समुचय एकेन्द्रिय, वायुकाय तिर्यंचपंचेन्द्री, और मनुष्य इन पांच बोलों के जीवों का देश बंध के आहार की स्थिति ज० एक समय की भी है कारण ये जीव औदारक शरीर से वैक्रिय करते हैं और वैक्रिये से पीछा औदारिक करते हुवे प्रथम समय ही काल करे तो औदारिक के देश बंध का एक समय जघन्य बंधक हूआ. शेष सात बोलों (४ स्थावर, ३ विकलेन्द्री) के जीव देश बंध ज० क्षुलक भव से तीन समय न्यून कारण दो समय की विग्रह गती और एक समय सर्व बंध का एवं ३ समय न्यून

क्षुल्लक भव (२५६ आवली) देश बंधका आहार करे और १२ बोल के जीवों की उत्कृष्ट देश बंध की स्थिति नीचे प्रमाणे।

समुचय जीव, मनुष्य, और तिर्यंच तीन पल्योपम एक समय न्यून समुचय एकेन्द्री, पृथ्वीकाय २२००० वर्ष एक समय न्यून, एवं अप्पकाय ७००० वर्ष, तेउ० तीन दिन, वायु ३००० वर्ष, वनस्पति १०००० वर्ष, बेरिन्द्री १२ वर्ष, तेरिन्द्री ४९ दिन, चोरिन्द्री ६ मास सब में एक समय न्यून समझना क्योंकि एक समय सर्व बंध का आहार ले।

औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर-समुचय औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुल्लक भव तीन समय न्यून कारण १ समय प्रथम भव में सर्व बंध का आहार किया और दो समय की विग्रह गती की और उ० ३३ सागरोपम पूर्व क्रोड वर्ष में एक समय अधिक कारण कोइ जीव पूर्व कोडी का भव किया उसमें एक समय सर्व बंध का आहार लिया सो पूर्व कोड में न्यून हुवा वहां से सातवीं नरक वा सर्वार्थ सिद्ध विमान में ३३ सा० और वहां से २ समय की विग्रह गती करके उत्पन्न हुवा इस वास्ते १ समय अधिक कहा शेष ११ बोलों का स्वकायाश्री सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुल्लक भव तीन समय न्यून और उ० अपनी २ स्थिति से एक समय अधिक समझना भावना पूर्ववत्।

देश बंध का स्वकायाश्री अन्तर कहते हैं-समुचय जीव, समुचय एकेन्द्री, वायुकाय, तिर्यंच पंचेन्द्री और मनुष्य इनमें ज० एक समय उ० अन्तर मुहूर्त (वैक्रियापेक्षा) शेष ७ बोलों में ज० एक समय उ० ३ समय।

देश बन्ध का परकायाश्री अन्तर-समुचय एकेन्द्री सर्व बंध अन्तर ज० २ क्षुल्लक भव तीन समय न्यून और देश बंध

का एक क्षुलक भव १ समय अधिक उ० दोनों बोलों को २००० सागरोपम संख्याता वर्षाधिक।

वनस्पतिकाय और-समुच्चय एकेन्द्रीय का सर्व अन्तर ज० एकेन्द्रीय माफिक उ० असंख्याता काल पृथ्वीकाय की काय स्थितिवत्-शेष ९ बोल का सर्व बन्धान्तर ज० एकेन्द्री माफिक और उ० अनन्त काल (वनस्पति काल)।

(अल्पा बहुत्व)

(१) सबसे स्तोक औदारिक शरीर के सर्व बंध के जीवों।
(२) अबन्धक जीवों विशेषाधिक।
(३) देश बन्धक जीवों असं० गुणे।

(२) वैक्रिय शरीर ९ कारणों से बन्धते हैं जिसमें ८ पूर्व औदारिकवत् और नवमां लब्धि वैक्रिय। जिसका स्वामी (१) समुच्चय जीव, (२) नारकी, (३) देवता, (४) वायुकाय, (५) तीर्यंच पंचेन्द्री, (६) मनुष्य।

समुच्चय वैक्रिय का बन्ध दो प्रकार के है सर्व बन्ध और देश बन्ध जिसमें सर्व बन्ध की स्थिति ज० एक समय (नरकादि प्रथम समय आहार ले वह सर्वबन्ध है) उत्कृष्ट दो समय (मनुष्य, तिर्यंच औदारिक से वैक्रिय बनाता हुवा प्रथम समय का सर्वबंधका आहार गृहण करके काल करे और नारकी देवता में उत्पन्न हो वहां प्रथम समय सर्वबंध का आहार ले इसवास्ते दो समय का सर्वबंध का आहार कहा है ओर देशबंध की स्थिति ज० एक समय मनुष्यादि औदारिक शरीर से वैक्रिय बनावे उस वक्त एक समय का देशबंध का आहार ग्रहण करके काल करे) उ० ३३ सागरोपम एक समय न्युन।

नारकी, देवताओं में सर्व बन्धका आहार ज० उ० एक

समय और देशबंध का ज० अपनी २ जघन्य स्थिती से तीन समय न्यून कारण दो समय की विग्रह गती और एक समय सर्व बन्धका। और उ० अपनी २ उत्कृष्ट स्थिती से १ समय न्यून।

वायुकाय तिर्यंच पंचेंद्री और मनुष्य में वैक्रिय शरीर के सर्वबंधके आहार की स्थिती ज० उ० एक समय और देशबन्ध की स्थिती ज० एक समय उ० अन्तरमुहुर्त।

वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध देशबन्ध का अन्तर ज० एक समय उ० अनंतो काल यावत् वनस्पति काल, नारकी, देवता में स्वकायाश्रीय अन्तर नहीं है, कारण नारकी, देवता मरके नारकी देवता नहीं होते। वायुकाय का स्वकायाश्रीय वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का अन्तर ज० अंतर मुहुर्त उ० पल्योपम के असंख्यात में भाग इसी तरह देशबन्धका भी अन्तर समझ लेना। तिर्यंच मनुष्य के स्वकायाश्रीय वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का अन्तर ज० अन्तर मुहुर्त उ० प्रत्येक क्रोड पूर्व वर्षोंका। नारकी देवता का परकायापेक्षा वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का अन्तर ज० अपनी २ जघन्य स्थिती से अन्तर मुहुर्त अधिक और देशबंधका ज० अंतर मुहुर्त उ० दोनों का अनंत काल (वनस्पतिकाल) आठमें देवलोकतक समझना। नवमें देवलोक से नौ ग्रेवेयक तक सर्वबंध का अंतर ज० अपनी २ स्थिती से प्रत्येक वर्ष अधिक और देशबंधका अंतर ज० प्रत्येक वर्ष उ० दोनों बोल में अनन्ता काल (वनस्पतिकाल) चार अनुत्तर विमान के देवताओं का सर्वबन्ध अन्तर ज० ३१ सागरोपम प्रत्येक वर्ष अधिक देशबंध का अन्तर ज० प्रत्येक वर्ष उ० संख्याता सागरोपम और सर्वार्थसिद्ध विमान में फिर नहीं जावे वास्ते अन्तर नहीं है, और वायुकाय, तिर्यंच तथा मनुष्य में

क्रिय शरीर सर्वबन्ध देशन्बध का आन्तर अन्तर मुहुर्त उ० अनंताकाल (वनस्पतिकाल) ।

(अल्पा बहुत्व).

(१) सबसे स्तोक वैक्रिय शरीर के सर्वबंध के जीवों ।
(२) वैक्रिय शरीर देशबंध वाले जीवों असं० गुणे ।
(३) ,, ,, अबंध वाले जीवों अनन्त गुणे ।

(३) आहारिक शरीर बांधने के ८ कारण औदारिकवत् नौवां लब्धि जिसका स्वामी मनुष्य वह भी ऋद्धिवन्त मुनिराज है आहारिक शरीर के सर्वबंध की स्थिती ज० उ० एक समय और देशबंध की स्थिती ज० उ० अन्तर मुहुर्त अन्तर सर्व बंध देशबंध का ज० अन्तर मुहुर्त उ० अनन्तकाल यावत् अर्द्धपुद्गल परावर्त ।

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीर के जीवों सर्वबन्ध ।
(२) आहारक शरीर के देश बन्धके जीवों संख्यात गुणे ।
(३) ,, ,, अबन्धक जीवों अनन्त गुणे ।

(४) तेजस शरीर बंध का स्वामी एकेन्द्रीयसे यावत् पंचेन्द्री है और आठ कारण से बंध होता है औदारिकवत् तेजस शरीर सर्व बंध नहीं होता केवल देशबंध होता है जिसके दो भेद अनादी अनन्त (अभव्यापेक्षा) और अनादि सान्त (भव्यापेक्षा) इन दोनों का अन्तर नहीं है निरन्तर बंध होता है

(१) तेजस शरीर का अबन्धक स्तोक ।
(२) और देश बंधक जीवों अनन्त गुणा ।

(५) कार्मण प्रयोग बंध के आठ भेद-यथा ज्ञानावर्णीय दर्शना०, वेदनी०, मोहनी०, आयुष्य०, नाम०, गोत्र०, अंतराय० इन आठ कर्मो के बंधका ७९ कारण शीघ्रबोध० भाग २ में लिखा है करमाणका देशबंध है सर्वबंध नहीं होते है स्थिती तथा अन्तर तेजस शरीर के माफिक समझ लेना अल्पाबहुत्व आयुष्य कर्म

छोड के शेष ७ कर्मकी तेजस शरीरवत् और आयुष्य कि सबसे स्तोक देशबंध के और अबन्धके संख्यात गुणे।

(परस्पर बन्ध अबन्ध)

(१) औदारिक शरीर के सर्वबंध का बंदक है वहां वैक्रिय, आहारिक का अबन्धक है और तेजस कार्मण का देश बन्धक है इसी तरह औदारिक शरीर के देशबंध का भी कह देना।

(२) वैक्रिय शरीरका बंधक है वहां औदारिक, आहारि शरीर का अबंधक है तेजस कार्मण का देशबंधक है इसी तरा वैक्रिय का देशबंध का भी कहना।

(३) आहारिक शरीर का बंधक है वहां औदारिक वैक्रिय का अबंधक है और तेजस कार्मण का देशबंधक है एवं आहारिक शरीर के देश बंध का भी कहना।

(४) तेजस शरीर का देशबंधक है वहां औदारिक शरी का बंधक भी है और अबंधक भी है यदि बंधक है तो देशबंधक भी है और सर्वबंध भी है एवं आहारिक वैक्रिय शरीर भी समझ लेना कार्मण शरीर नियमा देशबंध है।

(५) कार्मण शरीर की व्याख्या तेजसवत् करना। इति।

(अल्पाबहुत्व).

(१) सबसे स्तोक आहारिक शरीर का सर्व बंधक।

(२) आहा० शरीर का देश बंधक सं० गु०।

(३) वैक्रिय ,, सर्व ,, असं० गु०।

(४) ,, ,, देश ,, ,,

(५) तेजस कार्मण का अबंधका अनं० गु०।

(६) औदा० शरीर सर्वबंधक अनं० गु०।

(७) ,, ,, अबंधका विशेषा।
(८) ,, ,, देश ,, असं० गु०
(९) तेजस कार्मण का देश बंधक विशेषा।
(१०) वैक्रिय का अबंधक विशेषा।
(११) आहारिक शरीर के अबंधक विशेषा।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नं० ६८

श्री भगवती सूत्र श० ८-उ० १०

(पुद्गल).

हे भगवान! पुद्गल कितने प्रकार से प्रणमते है? गौतम! पांच प्रकार से यथा वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ और संस्थान ५ एवं २५ बोलों से प्रणमते हैं।

पुद्गलास्तिकाय के एक प्रदेश को क्या एक द्रव्य कहना १ या घणा द्रव्य कहना २ या एक प्रदेश कहनो ३ या घणा प्रदेश कहना ४ या एक द्रव्य एक प्रदेश कहना ५ या एक द्रव्य घणा प्रदेश कहना ६ या घणा द्रव्य एक प्रदेश कहना ७ या घणा द्रव्य घणा प्रदेश कहना? इन ८ भांगा में से एक प्रदेश में दो भांगा पावे (१) एक प्रदेश (२ अपेक्षा से एक द्रव्य भी कहते हैं।

दो प्रदेशी में पांच भांगा पावे क्रमसर तीन प्रदेशी में सात भांगा पावे क्रमसर चार प्रदेशी में ८ भांगा पावे एवं ५-६-७-८-

९-१० संख्याते, असंख्याते और अनन्ते प्रदेशो में भी ८-८ भांगा समझ लेना ॥ एवं २-५-७-८० सब मिलाके ९४ भांगे हुवे ।

हे भगवान् ! जीव पुद्गली है या पुद्गल है ? गौतम ! जीव पुद्गली भी है और पुद्गल भी है क्योंकि जैसे किसी मनुष्य के पास छात्र हो उसको छत्री कहते हैं दंड हो उसको दंडी कहते हैं इसी माफिक जीव ने पूर्व काल में पुद्गल ग्रहण किया था इस वास्ते पु० ग्रहणापेक्षा से जीवको पुद्गल कहते हैं और श्रोतेन्द्रि, चक्षु०, घ्राण०, रस० स्पर्शेन्द्री की अपेक्षा से जीव को पुद्गली कहते हैं। यहा उपचरित्तनयापेक्षा समझना ।

पृथ्व्यादि पांच स्थावर एक स्पर्शेन्द्रीय अपेक्षा पुद्गली है और जीव अपेक्षा पुद्गल है। बेइंद्रिय के दोइन्द्री तेन्द्रीय के तीनइन्द्रिय चौरिन्द्रीय के चारइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीवापेक्षा से पुद्गल है नारकी १, भुवनपति १०, तिर्यंच पंचेन्द्री १, मनुष्य १, व्यंतर १, ज्योतिषी १, वैमानिक एवं १६ दंडक में पांचइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीव की अपेक्षा से पुद्गल है भावना पूर्ववत् । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ६६

श्री भगवती सूत्र श० १०-उ० १.

(लोक दिशा)

दिशा दश प्रकार की है यथा—

(१) इन्द्रा [पूर्व दिशा], [२] अग्नि [अग्निकौन]

[३] जमा (दक्षिण दिशा), (४) नेरुती [नैरुत कौन], (५) वाउणा [पश्चिम दिशा], (६) वायु (वायव कौन), (७) सोमा [उत्तर दिशा], (८) ईसाण [ईसान कौन], (९) विमला [ऊंची दिशा] (१०) तमा [नीची दिशा]।

इन्द्रा (पूर्व दिशा) में क्या जीव है १ जीव का देश है २, जीवका प्रदेश है ३, अजीव है ४, अजीव का देश है ५, अजीवका प्रदेश है ६ ? गौतम ! हां जीव है यावत् अजीवका प्रदेश है जीव है तो क्या एकेन्द्री है बे० ते० चो० पं० और अनेंद्रिया है ? हां एकेन्द्रीय बेन्द्रीय तेन्द्रीय चौन्द्रीय पंचेन्द्रीय और अनेन्द्रीय ये ६ बोल हैं इनके देश ६ और प्रदेश ६ एवं १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद हैं एक रूपी दूसरा अरूपी जिसमें पूर्व दिशा में रूपी का स्कन्द है स्कन्धदेश है स्कन्धप्रदेश है तथा परमाणु पुद्गल है एवं चार और अरूपी का ७ धर्मास्तिकाय नहीं है परंतु धर्मास्तिकाय का एक देश है और प्रदेश घणा है एवं अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय २ और सातवां काल एवं अजीव के ११ और जीव के १८ सब मिला के २९ बोल पूर्व दिशा में पावे एवं पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में २९-२९ बोल पावे।

अग्निकौन की पृच्छा ? गौ० जीव नही है जीव का देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है अगर जीवके देश है तो क्या एकेन्द्रीयके हैं।

(१) अग्निकौन में नियमा एकेन्द्रीयका देश है।
(२) घणा एकेन्द्रीयके घणा देश एक बेन्द्रियको एक देश
(३) ,, ,, ,, ,, ,, के घणादेश
(४) ,, ,, ,, ,, घणे बेन्द्रिय के घणादेश
(७) एवं तीन आलावा तेरिन्द्रिय का १० तीन चौरिंद्री

का (१३) पंचेन्द्रीय का (१६) अनेन्द्रियका एवं १६ आलाव कहना। प्रदेशापेक्षा।

(१) घणा एकेन्द्रियके घणो प्रदेश।

(२) „ „ „ एक बेरिन्द्रयका घणे प्रदेश।

(३) „ „ „ घणो बेरिन्द्रीके घणे प्रदेश।

एवं तेरिन्द्रीके दो, चौरिन्द्रीके दो, पंचेंद्रीके दो, और अनेंद्रियके दो सर्व ११ अलावा कुल जीवोंके २७ भेद हुवे और अजीव के दो भेद-रूपी और अरुपी जिसमें रूपीं के चार भेद-स्कंध, स्कंधदेश, स्कंधप्रदेश, और परमाणुपुद्गल, दूसरा अरूपी जिसके ६ भेद-धर्मास्तिकाय नहीं है परंतु धर्मास्तिकाय का एक देश, और घणा प्रदेश एवं अधर्मास्तिकाय देश प्रदेश आकाशास्तिकाय देश, प्रदेश एवं अजीव के १० और जीवका २७ सर्व मिलाके ३७ बोल अग्निकौन में पावे एवं नैऋत्य वायकोन ईसान कौन में भी ३७-३७ बोल समझना।

विमला (ऊंचीदिशी) में जीव के २७ भेद अग्निकोनवत् और अजीव के ११ भेद पूर्व दिशिवत् एवं ३८ बोल समझना और नीची दिशी में ३७ बोल कहना कालका समय नही है।

(प्र०) ऊंची दिशी में कालका समय है और नीची में नही कहा जिसका क्या कारण ? मेरु पर्वत का एक भाग स्फाटिक रत्नमय है और नीचे का भाग पाषाणमय है, उपर स्फटिक रत्नवाला भाग में सूर्य की प्रभा पडती है और नीचेका भाग पाषाणमय होनेसे सूर्य की प्रभाको नहीं खींच सकता इस लिये शास्त्रकार ने वहां समय की विवक्षा नहीं की, और नीची दिशा में अनेन्द्रीया का प्रदेश कहा सो यह केवली समुद्घातकी अपेक्षा से हैं। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १००

श्री भगवती सूत्र श० ११–उ० १०

(लोक)

हे भगवान् ? लोक कितने प्रकारके है ? गौ० चार प्रकार के यथा—द्रव्यलोक, क्षेत्रलोक, काललोक और भावलोक जिसमें पहिले क्षेत्रलोक की व्याख्या करते हैं, क्षेत्रलोक तीन प्रकारका है उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग लोक उर्ध्वलोक में १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तर विमान और सिद्धशिला, अधोलोकमें ७ नारकी और तिर्यग् लोक में जम्बूद्वीप, लवण समुद्रादि असंख्याद्वीप समुद्र है।

अधोलोक तिपाई के संस्थान तीर्यग् लोक झालर के संस्थान, ऊर्ध्वलोक उभी मृदंगाकार (संस्थान) सर्व लोक तीन सरावला के अथवा जामा पहिरे हुवे पुरुष के संस्थान है और अलौक पोला गोला (नारियल) के संस्थान है।

अधोलोक क्षेत्रलोक में जीव है, जीव के देश हैं, जीवके प्रदेश है एवं अजीव, अजीव के देश, अजीव के प्रदेश हैं ? जीव है यावत् अजीव का प्रदेश है तो क्या एकेन्द्रिय यावत् अनेन्द्रिय है ? हां एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय एवं ६ बोल और इन छे का देश और छे का प्रदेश सर्व १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद रुपी और अरुपी जिसमें रुपी के चार भेद पूर्ववत् और अरुपी के ७ भेद धर्मास्ति का देश, प्रदेश एवं अधर्मास्ति, आकाशास्त का भी देश, प्रदेश और काल

समय एवं २९ बोल अधोलोक में पावे इसी तरह तीर्यग् लोक मे २९ और ऊर्ध्व लाक में काल का समय छाड के शेष २८ बोल पावे।

सर्व लोक में बोल पावे २९ पूर्ववत् और अलोक में जीवादि नही है फक्त आकाश है वह भी सर्वाकाश से अनन्त में भाग न्यून (लोक जितना न्यून)।

नीचालोक के एक आकाश प्रदेश पर जीव नहीं है जीव का देश, प्रदेश और अजीव, अजीव के देश, प्रदेश है। यथा—

(१) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश तो नियमा है।

(२) घणे एकेन्द्रियके घणे देश एक बेरिन्द्रिय का एक देश।

(३) ,, ,, ,, ,, घणे बेन्द्रिय के घणे देश।

एवं तेन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय के दो दो बोल कहना एवं ११।

(१) घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश।

(२) घणे एकेन्द्रियके घणे प्रदेश और एक बेन्द्रियका घणे प्रदेश।

(३) ,, ,, ,, ,, और घणे ,, ,, ,,

एवं तेन्द्रिय २ चौन्द्रिय २ पचेन्द्रिय २ एवं ९।

(१) घणे एकेन्द्रियके घणे देश और एक अनेन्द्रियको एक देश।

(२) ,, ,, ,, ,, ,, ,, घणे देश.

(३) ,, ,, ,, ,, घणे ,, ,,

एवं ३-९-११ मिलके २३ भांगे हुवे और अजीव के ४ भेद चार रुपी और पांच अरुपी पूर्ववत् कुल ३२ बोल हुवे।

ऊंचा लोक के एक आकाश प्रदेश पर काल का समय

छोडके शेष ३१ बोल पावे तीर्यक् लोकमें नीचा लोक वत् ३२ बोल पावे लोंक के एक आकाश प्रदेश पर भी कहना। अलोकाकाश पर जीव आदि नही है केवल आकाश अनन्त अगुरु लघु पर्याय संयुक्त है। २।

(२) द्रव्यलोक-नीचे लोक में अनन्ते जीव द्रव्य है अनन्ते अजीव द्रव्य है एवं ऊंचा लोक, तीर्यक् लोंक और सर्व लोंक अलोक में केवल अजीव वह भी आकाश अनन्त अगुरु लघु पर्याय संयुक्त है।

(३) काललोक-ऊंचा, नीचा, तीर्यक् और सर्वलोक कोई कर्ता नहीं करे, नहीं, और करसी नहीं एवं तीनों काल में सदा सास्वत है एवं अलोक।

(४) भावलोक ऊंचो, नीचो, तीर्यक् लोक और सर्वलोक में अनंते वर्ण, गंध, रस स्पर्श और संस्थान का पर्याय है॥ और अनन्ते गुरुलघु और अनन्ते अगुरुलघु पर्याय करके संयुक्त है और अलोक में केवल आकाश द्रव्य अगुरुलघु संयुक्त है।

इसका जादा खुलासा देखना हो तो श्रीमान् विनयविजयजी महाराज कृत लोकप्रकाश देख लीजीये॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकड़ा नं० १०१.

श्री भगवती सूत्र श० १६–उ० ८.

लोक-लोक के देश और लोक के प्रदेशों का अधिकार पहले थोकडोंमें आगे लिखा गया है अब लोंक के चरमान्त का २१०

बोलो मे जीवादि ६ पदके कितने २ बोल हैं वह इस थोकडे द्वारा नीचे लिखते हैं।

समुचय लोक के पूर्व के चरमान्त में क्या (१) जीव, (२) जीवका देश, (३) जीवका प्रदेश, (४) अजीव, (५) अजीवका देश, (६) अजीवका प्रदेश है ? जीव नहीं है जीवका देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है जीव का देश है तो क्या एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का देश है। (१) घणेन्द्रिय एकेन्द्रिय के घणे देश सूक्ष्म जीवापेक्षा सास्वते लाधे, (२) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और एक बेन्द्रिय के एक देश, (३) घणे एकेन्यि के घणे देश और एक बेन्द्रिय के घणे देश, (४) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और घणे बेन्द्रिय के घणे देश-एवम् तेन्द्रिय के ३ चौन्द्रिय के ३ पंचेन्द्रिय के ३ एवम् (१३) (१४) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और एक अनेंद्रिय के घणे देश (१५) घणे एकेंन्द्रिय के घणे देश और घणे अनेंद्रिय के घणे देश (१६) और प्रदेश की व्याख्या घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश (१७) घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश एक बेन्द्रिय के घणे प्रदेश (१८) घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश और घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् तेन्द्रिय के २ चौरिन्द्रिय के २ पंचेंन्द्रिय के २ अनेंन्द्रिय के २ एवम् २६ बोल जीवों के हुवे।

अजीव दो प्रकार के हैं रूपी और अरूपी. जिस्में रूपी के ४ भेद (१) स्कंध (२) स्कंधदेश (३) स्कन्धप्रदेश (४) परमाणु और अरूपी के ६ भेद धर्मास्तिकाय नहीं है संपूर्णापेक्षा परंतु धर्मास्तिकाय के देश, प्रदेश है एवं अधर्मास्ति के २ आकाशास्तिकाय के २ अरूपी के ६ और रूपी के ४ मिलके अजीव के १० भेद तथा जीवके २६ सर्व मिलाकर पूर्व दिशा के चरमांत में ३६ बोल हुए. एवम्, दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशा भी समझना।

उपरवत् ७ नारकी १२ देवलोक ९ नवग्रैवेयक ५ अणुत्तर-विमान १ इसी प्रभारा पृथिवी (सिद्धशिला) एवम् ३४ बोलों के चारों दिशों के चरमांत में तथा समुचय लोक के चारों दिशों के चरमांत मिलके १४० चरमांत में बोल छत्तीस छत्तीस पावे।

ऊंचेलोक के चरमान्त की पृच्छा-ऊंचेलोक के चरमान्त में (१) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का देश सदा काल साश्वता है (२) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का घणे देश और एक बेन्द्रिय का एक देश (३) और घणे बेन्द्रिय के घणे देश एवम् तेन्द्रिय का २, चौन्द्रिय का २, पंचेन्द्रिय का २, मिलकर ९ बोल तथा प्रदेश (१०) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय के घणे प्रदेश (साश्वता) (११) एकेन्द्री अनेन्द्रिय का घणा प्रदेश और एक बेन्द्रिय के घणे प्रदेश (१२) घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् २ तेन्द्रिय का, २ चोन्द्रिय का२, पंचेन्द्रिय का२, मिलकर १८ भेद हुवे और अजीव के १० भेद है रूपी के स्कन्ध, स्कन्धदेश, स्कन्धप्रदेश, परमाणु पुद्गल और अरूपी के धर्मास्तिकाय देश, प्रदेश अधर्मास्तिकाय देश, प्रदेश, आकाशास्तिकाय देश, प्रदेश, एवम् सर्व मिलाकर ऊंचेलोक के चरमान्त में बोल २८ पावे।

नीचेलोक के चरमान्त की पृच्छा बोल ३२ पावे, यथा घणे एकेन्द्रिय के घणे देश, एक बेन्द्रिय का एक देश, घणे बेन्द्रिय के घणे देश, एवम् तेन्द्रिय २ चौन्द्रिय २ पंचेन्द्रिय २ अनेन्द्रिय २ मिलाकर ११ तथा प्रदेश-घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश एक बेन्द्रिय का घणे प्रदेश, घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् तेन्द्रिय के २, चोन्द्रिय के २ पंचेन्द्रिय का२, अनेन्द्रिय के २, मिलाकर ११ अजीवका १० पूर्ववत् सर्व ३२ इसी माफिक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान एक इसीप्रभारा (सिद्धशिला) के इन १५ के ऊंचे तथा नीचे ३० चरमान्त समझना।

रत्नप्रभा के ऊपर के चरमान्त की पृच्छा जैसे विमला दिशा में बोल २८ समझना रत्नप्रभा को वर्जे के ६ नरक। के उपर के और सातों नारकी के नीचे के चरमान्त ९३ और १२ देवलोक के नीचे ऊंचे के २४ चरमान्त एवम् ३७ चरमांत में बोल पावे ३३ जिसमें जीव के देश के १२ एकेन्द्रिय पंचेंद्रिय के घणे देश भी लेणे, प्रदेश का ११ अजीव का १० ।

लोक के पूर्व का चरमांत का परमाणु पुद्गल क्या एक समय में लोक के पश्चिम के चरमांत तक जा सके ? हां गौतम ! पूर्व के चरमांत का परमाणु एक समय में पश्चिम के चरमांत में जा सक्ता है॥ एवम् पश्चिम से पूर्व, दक्षिण से उत्तर, उत्तर से दक्षिण तथा ऊंचेलोक के चरमांत से नीचेलोक के चरमांत और नीचेलोक के चरमांत से ऊंचेलोक के चरमांत तक एक समय में जा सकता है जिस परमाणु में तीव्र वर्ण, गंध, रस, स्पर्श होता है वह परमाणु एक समय में १४ राजलोक तक जा सक्ता है । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०२.

श्री भगवती सूत्र श० ११-उ० १०.

(लोक.)

हे भगवान ! लोक कितना बडा है ? गौतम ! चौदह राज का है । यानि असंख्याते कोडोन कोड योजन लम्बा चोडा है ॥ जिस्की स्थापना—

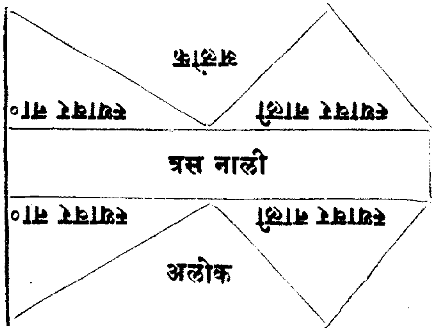

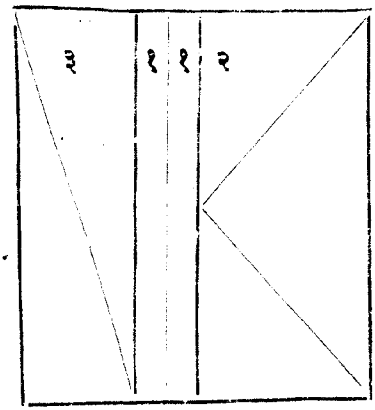

घन चौतरा.

यह सातराज लम्बा चौडा चौतरा है जिसके मध्य भाग से नाप लेने के लिये कोई देवता महान् ऋद्धि, ज्योति, कान्ती महासुख और महा भाग्य का धणी जिसके चलनें की सक्ती कैसी है यह कहते हैं जम्बूद्वीप एकलक्ष योजन का लम्बा चौडा है जिस्के मध्य भाग में मेरु पर्वत एक लक्ष योजन का ऊंचा है उस मेरु

से चौतर्फ जम्बूद्वीप के ४ दरवाजे, पैतालीस २ हजार योजन दूर है उस मेरु पर्वत् की चूलका पर पूर्वोक्त ऋद्धि वाले छे देवते खडे है उस वक्त चार देवीयां जम्बूद्वीप के चारों दरवाजे पर लवणसमुद्र की तर्फ मुंह करके हाथ में एक २ मोदक का लड्डु लिये खडी है वे दरवाजे समधरती से ८ योजन ऊंचे है वहां से उन लड्डूओं को वे देवीयां समकाल छोडे और देवीयों के हाथ से लड्डू छूटते ही मेरूपरसे छेओं देवताओं से एक देवता वहांसे निकले और ऐसा शीघ्र गति से चले कि उन चारों लड्डूवों को अधर हाथ में लेले याने जमीन पर न गिरने दे, ऐसी शीघ्र गती वाले वे छेओं देवता लोकका नापा (अन्त) लेनेको जावे, और उसी समय किसी साहूकार के एक हजार वर्षकी आयुष्य वाला पुत्र जन्मा, गौतम स्वामी प्रश्न करते है कि हे भगवान् ! उस पुत्र के माता पिता काल धर्म प्राप्त हो गये इतने काल में वे छेओं देवताओ छओ दिशी का अंत लेके आवे ? गौ० नहीं तो क्या वह लडका सम्पूर्ण आयुष्य पूर्ण करे तब वे देवता लोकका अंत लेकर आवे ? गौ० नहीं तो उसके हाड, नाम गोत्र विच्छेद हो जाय इतना काल वितीत होने से वे देवता लोक का अन्त लेके आवे ? गौ० नहीं।

हे भगवान् ! ऐसी शीघ्र गती वाले देवता भी इतने काल तक चले तों क्या गतक्षेत्र जादा है या शेष रहा क्षेत्र जादा है ? गौ० गत क्षेत्र जादा है और शेष रहा क्षेत्र कम है शेष रहे हुवे क्षेत्र से गतक्षेत्र असंख्यात गुणे है और गत क्षेत्र से शेष रहा क्षेत्र असंख्यात में भाग है। इतना वड लोक है।

अलोक की पृच्छा ! लोक के माफीक कहना विशेष इतना है कि समयक्षेत्र ४५ लक्ष योजन का है जिसकी मर्यादा के लिये चौतर्फ मनुष्योत्तर पर्वत् है और मध्य भाग में मेरुपर्वत् है ॥ उसपर दश देवता महऋद्धिक बैठे है और आठ देवी मनुष्योत्तर

पर्वत से मोदक के लड्डू छोडे और शीघ्र गतीवाला देवतां अधर हाथ में लेले, इसकी सब व्याख्या पूर्ववत् कहदेना विशेष इतना है के वहां ४ लड्डू कहे है यहां ८ कहना और वहां छे दिशी का सन्त लानेको गये कहा है यहां दश दिशी कहना और लडके की आयुष्य लक्ष वर्ष की कहना तथा गतक्षेत्र की अपेक्षा शेष रहा क्षेत्र अनन्त गुणा कहना शेष रहे क्षेत्रसे गतक्षेत्र अनन्त में भाग है इतना बडा अलोक है।

लोक और अलोक किसी देवता ने नापा किया नहीं करे नहीं और करेगा नहीं परन्तु ज्ञानीयों ने ज्ञान से देखा है वैसी ही औपमा द्वारा बतलाया हे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०३.

श्री भगवती सूत्र श० ५-उ० ८.

(परमाणु.)

हे भगवान्! परमाणु पु० इधर उधर चलता है कि स्थिर है? गौ० स्यात् चलता है, स्यात् स्थिर है, भांगा २, दो प्रदेशी की पृच्छा? (१ स्यात् चले (२) स्यात् न चले (३) स्यात् देश चले स्यात् देश न चले एवं भांगा ३, तीन प्रदेशी का भी भांगा ३ पूर्ववत् (४) स्यात् देश चले स्यात् बहुत से देश न भी चले (५) स्यात् बहुत से देश चले स्यात् एक देश न चले एवं भांगा ५। चार प्रदेशी के ५ भांगा पूर्ववत् (६) बहुत से देश चले, बहुत से देश नहीं चले इसी माफिक ५-६-७-८-९-१०

संख्याते असंख्या० अनंत० प्रदेशी के सूक्ष्म और बादर के भी छे छे भांगे समझ लेना एवं सर्व भांगे ७६ हुवे।

(२) परमाणु पु० तरवार की धारसे छेदन भेदन नहीं होवे, अग्नि में जले नहीं, पुष्करावृत मेघ वर्षे तो सडे नहीं एवं दो प्रदेशी यावत् सूक्ष्म अनंत प्रदेशी और बादर अनन्त प्रदेशी छेदन भेदन जले या सडे गले विध्वंस होवे और स्यात् नही भी होवे।

(३) परमाणु पु० क्या सार्द्ध है, समध्य है, सप्रदेश है, अनार्द्ध है, अमध्य है, अप्रदेश है ? इन छे बोलों में एक अप्रदेशी है शेष सुन्य है दो प्रदेशी पृच्छा छे बोलों में दो बोल पावे सार्द्ध और सप्रदेश एवं ४-६-८-१० प्रदेशी में भी समझ लेना और तीन प्रदेशी में दो बोल समध्य सप्रदेश एवं ५-७-९ प्रदेशी और संख्यात प्रदेशी में छे बोलों में से १ अप्रदेशी वर्ज के शेष ५ बोल पावे एवं असं० अनं० प्रदेशी भी समजलेना।

(४) परमाणु पु० परमाणु पु० ने स्पर्श करता जावे तो नीचे लिखे नौ भागों में से कितना भांगा स्पर्शे (१) देश से देश (२) देश से देशा[1] (३) देश से सर्व (४) देश से देश (५) देशा से देशा (६) देशा से सर्व (७) सर्वसे देश (८) सर्व से देशा (९) सर्व से सर्व, जिस्मे परमाणु पुद्गल सर्व से सर्व स्पर्शे परमाणु पुद्गल ने स्पर्शतो जावे तो भांगा एक १ परमाणु पुद्गल दो प्रदेशी ने स्पर्श तो जावे तो भांगा दो पावे ७-९ मो परमाणु तीन परदेशी ने स्पर्श तो जावेतो भांगा ३ पावे ७-८-९ यावत् अनं० प्रदेशी कहना।

दो प्रदेशी परमाणु को स्पर्शतो जावे तो भांग २ पावे ३-९ दो प्रदेशी दो प्र० को स्पर्शतो जावे तो भांगा ४ पाये १-३-७-९

---

१ जहां पर देशा शब्द हो वहां बहुवचन समझो।

दो प्र० तीन प्र० को स्पर्शता जावे तो भांगा ६ पावे १-२-३-७-८-९ एवं यावत् अनन्त प्रदेशी समज लेना।

तीन प्रदेशी परमाणु को स्पर्श करता जाय तो भांगा ३ पावे ३-६-९ तीन प्र० दो प्र० को स्पर्श करतो जावेतो भांगा ६ पावे १-३-४-६-७-९ तीन प्र० तीन प्र० को स्पर्श करता जावे तो भांगा ९ पूर्ववत् पावे एवं यावत् अनन्त प्रदेशी कहना चार प्रदेशी से यावत् अनन्त की व्याख्या तीन प्रदेशीवत् करनी।

(५) परमाणु की स्थिती ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी स्थिती कहदेना।

(६) एक आकाश प्रदेश अवगाहा पुद्गलों की स्थिती दो प्रकार की है एक कम्पता हुआ जैसे एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाने वाला और दूसरा अकम्पमान याने स्थिर जिसमें कम्पमान की ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अकम्प की ज० एक समय उ० असं० काल० एवं दो तीन यावत् असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाहा आदि समझना।

(७) एक गुण काले पु० की स्थिती ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् अनन्त गुण काले पु० कीभी समझ लेना इसी तरह ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श भी समझ लेना।

(८) जो पुद्गल (सुक्ष्मपणे प्रणम्य है वे ज० एक समय उ० असं० काल एवं बादरपने प्रणम्या भी कहना।

(९) पुद्गल शब्द पने प्रणम्या है वे ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग।

(१०) जो पुद्गल अशब्द पने प्रणम्या है वे ज० एक समय उ० असं काल।

११) परमाणु पु० का अंतर ज० एक समय उ० असं०

काल दो प्रदेशी का अंतर ज० एक समय उ० अनंत काल एवं यावत् अनंत प्रदेशी कहना।

(१२) एक प्रदेश अवगाहा पुद्गल का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् असं० प्रदेशी अवगाहा पु० भी कहना, और कम्पमान सब जगह ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग० भाग। वर्ण. गंध, रस, स्पर्श, सुक्ष्म पणे और बादर पने प्रणम्या हुवा कम्पमान, अकम्पमान का अंतर पूर्ववत् समझलेना।

(१३) शब्दपने प्रणम्या का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल ।

(१४) अशब्द पने प्रणम्या का अंतर ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग।

(१५) अल्पाबहुत्व (१) सबसे स्तोक क्षेत्र स्थानायुः (२) अवगाहना स्थानायुः असं० गुणा (३) द्रव्य स्थानायुः असं० गुणा (४) भाव स्थानायुः असं० गुणा विस्तार सूत्रसे देख लेना।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं १०४.

श्री भगवती सूत्र श० ११–उ० १.

(उत्पल कमल)

(द्वार) उत्पात् १, परिणाम २, अपहरण ३, अवगाहना ४, कर्मबन्धे ५, कर्मवेद ६, उदय ७, उदीर्ण ८, लेश्या ९, दृष्टी

१०, ज्ञान अज्ञान ११, योग १२, उपयोग १३, वर्ण १४, उस्वास १५, आहार १६, ब्रन्ति १७, क्रिया १८, बंध १९ संज्ञा २०, कषाय २१, वेदबन्ध २२, संज्ञी २३, इन्द्रीय २४, अनुबंध २५, संवाह २६, आहार २७, स्थिति २८, समुद्घात २९, चवन ३०, वेदना ३१, मूलोत्पात् ३२ इति।

यह बत्तीस द्वार उत्पल कमलपर उतारे जावेंगे द्रव्यानु योग में प्रवेश करने वालों के लिये यह विषय बहुत ही उपयोगी है।

राजग्रहीनगर के गुणशिला उद्यान में भगवान् श्री वीर प्रभु पधारे उस वखत श्री गौतमस्वामी ने प्रश्न किया है भगवान्! उत्पल कमल के पत्ते में एक जीव है या अनेक? गौतम पत्ते में एक जीव है परन्तु उसकी निश्राय में अनेक जीव उत्पन्न होते हैं याने पत्ते की डंडी में मूलगा एक जीव रहता है शेष उसकी निश्राय से पते में असंख्यात जीव हैं।

(१) उत्पात्-उत्पल कमलमे जीव चोंहत्तर जगह से आके उत्पन्न होते हैं यथा ४६ तिर्यंच (यहां वनास्पतिके चार ही भेद माना है) ३ मनुष्य (पर्याप्ता, अपर्याप्ता, समुत्सम) २५ देवता (भुवनपति १०, व्यंतर ८, ज्योतिषी ५, पहला दूसरा देवलोक) इन ७४ जगह से आके जीव उत्पन्न होते हैं.

(२) परिमाण-एक समय में १-२-३ यावत् संख्याते असंख्याते जीव उत्पन्न होते है।

(३) अपहारण-उस एक पत्ते के जीवों को एकेक समय एकेक जीवको निकले तो असंख्याते काल याने असं० उत्सर्पणी अवसर्पिणी व्यतीत होजाय इन जीवोंको किसी ने निकाला नहीं निकालेगा नहीं परंतु ज्ञानियोंने अपने ज्ञानसे देखा है।

(४) अवगाहना-उत्पल कमल की अवगाहना ज० अंगुल के असंख्यातमां भाग उ० एक हजार योजन कुछ अधिक।

(५) कर्मबंध-ज्ञानवर्णीय कर्मके बंधक स्यात् एक जीव मिले स्यात् बहुत जीव मिले एवं आयुष्य कर्म वर्ज के शेष ७ कर्म कहना और आयुष्य कर्म बंधक के भांगा ८ (१) आयुष्य कर्म का बंधक एक (२) अबंधक एक (३) बंधक बहुत (४ अबंधक बहुत (५) बंधक एक अबंधक एक (६) बंधक एक अबंधक बहुत (७) बंधक बहुत अबंधक एक (८) बंधक बहुत अबंधक भी बहुत इसी माफक जहां पर फीर भी ८ भांगा कहे उसकों भी इसी तरह लगा लेना सात कर्मोंके १४ भांगे यथा ज्ञानवर्णी का एक और ज्ञानवर्णीय के बहोत इस तरह एक वचन बहुवचन करने से १४ भांगे हुवे और ८ आयुष्य के एवं २२ भांगे।

(६) कर्मवेदे-ज्ञानावर्णीय कर्म वेदने वाले किसी समय एक. और किसी समय बहुत जीव मिले एवं वेदनीय कर्म छोड के शेष कर्मो के १४ भांगे और वेदनीसाता, असाता दो प्रकार की वेदे इसलिये इसके ८ भांगा पूर्ववत् एवं २२ भांगा।

(७) उदय ज्ञानवर्णीय के उदयवाला किसो समय एक जीव मिले और किसी समय बहोत एवं अंतराय यावत् ८ कर्मो कि १६ भांगा हुवे।

(८) उदीर्णा-वेदनी और आयुष्य कर्म को छोड के शेष ज्ञानावर्णीयादि ६ कर्मोंके एक वचन बहुवचनाश्रीय १२ भांगे और वेदनी आयुष्यके ८-८ भांगे पूर्ववत् समझना एवं २८ भांगे।

(९) लेश्या-उत्पपल० में चार लेश्या कृष्ण, नील, कापोत, और तेजो इन चार लेश्याओं के अस्सी भांगे होते है यथा अ-संयोगी ८ किसी समय कृष्णलेसी एक, किसी समय नील लेसी एक, किसी समय कापोत लेसी एक और किसी समय तेजो लेशी एक यह एक वचनापेक्षा चार भांगा इसी तरह बहुवचन के भी चार भांगा समझ लेना एवं ८ भागा और द्विक संयोगी २४

कृष्ण, नील		कृष्ण, कापोत		कृष्ण, तेजो	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

नील, कापोत		नील, तेजो		कापोत, तेजो	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

त्रिक संयोगी ३२

कृ०	नी०	का०	कृ०	नी०	ते०	कृ०	का०	ते०	नी०	का०	ते०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

चतुष्क संयोगी १६ भांगा।

कृ०	नील०	का०	ते०	कृ०	नील०	का०	ते०
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
१	३	३	३	३	३	३	३

एवं ८,२४,३२,१६ मिला के सब ८० भांगे हुवे इसी माफिक कषाय द्वार तथा संज्ञाद्वार कहेंगे वहां भी ८० भांगे समझ लेना।

(१०) दृष्टी-मिथ्या दृष्टी है वे किसी समय एक जीवमिले और किसी समय बहुत्व जीवमिले इसलिये भांगा दो और भी जहां दो भांगा लिखें वहां यही दो भांगे समझना।

(११) ज्ञान-अज्ञानी भांगा दो पूर्ववत्।

(१२) योग-एककाय योगी है भांगा २ पूर्ववत्।

(१३) उपयोग-साकारोपयोग, अनाकारोपयोग भांगा ८ असंयोगी ४ द्विसंयोगी ४ साकार १-३ अनाकार १-३ और साकार ११-१३-३१-३३।

(१४) वर्ण-जीवापेक्षा अवर्णयावत् अस्पर्श है और शरीरापेक्षा ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श।

(१५) उश्वास-उश्वासगा है निश्वासगा है और नोउश्वासगा निश्वासगा है (वाटे वहतां) जिसके भांगा २६ यथा असंयोगी ६ तीन एक वचन ३ बहुवचन।

द्वि० वचन, द्विसंयोगी १२ त्रिक संयोगी ८

उ०	नि०	उ०	नो०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	३	१	१
१	३	१	३	१	३	१	१	३	३	१	३
३	१	३	१	३	१	१	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	१	३	३	३	३	३

(१६) आहारक-आहारक है भांगा २ पूर्ववत्।

(१७) वृत्ति-अवृत्ति है भांगा २ पूर्ववत्।

(१८) क्रिया-सक्रिय है भांगा २ पूर्ववत्।

(१९) बन्ध-सातकर्म का बन्धगा, आठ कर्म का बन्धगा जिसका भांगा ८ पूर्ववत्।

(२०) संज्ञा-आहारादि चारों संज्ञा पावे जिसके भांगा ८० पूर्ववत्। लेश्या द्वारसे देखो।

(२१) कषाय क्रोधादि चारों कषाय पावे भांगा ८० पूर्ववत्

(२२) वेद-एक नपुंसक है भांगा दो पूर्ववत्।

(२३) वेदबन्ध-स्त्री, पुरुष, नपुंसक तीनों वेद के बांधने वाले है भांगा २६ पूर्ववत्। उश्वास द्वारकी माफीक।

(२४) संज्ञी-असंज्ञी है भांगा दो पूर्ववत्।

(२५) इंद्रिय-सइंन्द्रिय है, भांगा दो पूर्ववत्।

(२६) अनुबंध याने काय स्थिती-ज० अंतर मु० उ० असंख्याते काल।

(२७) संवह-उत्पल कमल का जीव अन्य स्थान में जाकर पीछा उत्पल कमल में आवे जैसे पृथ्वी और उत्पल कमल में

गमनागमन करे ऐसे ही अन्य काया में भी गमनागमन करे उसे " संवह " कहने है ।

उत्पल और पृथ्वी में गमनागमन करे तो जिसका दो भेद एक भवापेक्षा और दूसरा कालापेक्षा जिसमें भवापेक्ष ज० दो भव उ० असं० भव और काल ज० दो अंतर मु० उ० असं० काल इसी तरह अप, तेउ, वायु, भी समझ लेना वनस्पति ज० दो उ० अनं० भव और काल ज० दो अंतरमु० उ० अनं० काल तीन विकलेन्द्रिय में ज० दो भव और काल पृथ्वीवत् उ० सं० भव और सं० काल तीर्यच पंचेन्द्रिय और मनुष्य ज० दो भव और काल पृथ्वीवत् उ० ८ भव करे और काल प्रत्येक पूर्वकोड ।

(२८) आहार-२८८ बोल का आहार ले परंतु नियमा छे दिशी का (देखो शीघ्रबोध भाग ३)

(२९) स्थिती-ज० अंतर मु० उ० दश हजार वर्ष ।

(३०) समुद्घात-तीन पावे, कषाय, वेदनी और मरणन्ति तथा समोईया दोनो प्रकार से मरे ।

(३१) चवण-उत्पल का जीव चवके ४९ जगहजावे । ४६ तीर्यच ३ मनुष्य कर्म भूमीका पर्या० अपर्या० समुर्च्छिम ।

(३२) मूलद्वार-सर्व प्राण, भूत, जीव, सत्व याने सर्व संसारी जीव उत्पल कमल के मूल, स्कंध, त्वचा, पत्र, केसरा-कणिकादि पणे अनंतीवार उत्पन्न हुवा है यथा असइ अहुवा अणंतिरकुतो । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

इति श्री शीघ्रबोध भाग ८ वा समाप्तम्.

अथश्री

शीघ्रबोध भाग ९ वां.

थोकडा नम्बर १०५

(गुणस्थानपर ५२ द्वार)

[१] नामद्वार [२] लक्षणद्वार [३] क्रियाद्वार [४] बन्धद्वार [५] उदय० [६] उदिर्णा० [७] सत्ता० [८] निर्जरा० [९] आत्मा० [१०] कारण० [११] भाव० [१२] परिसह० [१३] अमर० [१४] पर्याप्ता० [१५] आहारिक० [१६] संज्ञा० [१७] शरीर० [१८] संघयण० [१९] संस्थान० [२०] वेद० [२१] कषाय० [२२] सन्नी० [२३] समुद्घात० [२४] गति० [२५] जाति० [२६] काय० [२७] जीवके भेद० [२८] योग० [२९] उपयोग० [३०] लेश्या० [३१] दृष्टी० [३२] ज्ञान० [३३] दर्शन० [३४] सम्यक्त्व० [३५] चारित्र० [३६] नियंट्ठा० [३७] समोवसरण० [३८] ध्यान० [३९] हेतु० [४०] मार्गणा० [४१] जीवयोनी० [४२] दंडक० [४३] नियमा भजना० [४४] द्रव्यप्रमाण० [४५] क्षेत्रप्रमाण० [४६] सान्तर निरन्तर० [४७] स्थिति० [४८] अन्तर० [४९] आगरेस० [५०] अवगाहना० [५१] स्पर्शना० [५२] अल्पाबहुत्व०

[१] नामद्वार—[१] मिथ्यात्व गुणस्थानक [२] सास्वादन० [३] मिश्र० [४] अव्रतिसम्यक्त्वदृष्टि० [५] देशव्रती० [६] प्रमत्तसंयत० [७] अप्रमत्तसंयत० [८] निवृत्तीबादर० [९]

अनिवृत्तीबादर० [१०] सुक्ष्मसम्पराय० [११] उपशान्तमोह० [१२] क्षीणमोह० [१३] संयोगी० [१४] अयोगी गुणस्थानक०

[२] लक्षणद्वार—[१] मिथ्यात्व गुणस्थानकके तीन भेद अनादी अनन्त [अभव्यकी अपेक्षा] [२] अनादी सान्त [भव्यापेक्षा] [३] सादीसान्त [सम्यक्त्व प्राप्त करके पीछा मिथ्यात्वमें गया उसकी अपेक्षा] और मिथ्यात्व दो प्रकारका है एक व्यक्त मि० दूसरा अव्यक्त मि० जिसमें एकेन्द्रिय बेरिन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रियमें अव्यक्त मिथ्यात्व है और पंचेन्द्रिय कितनेक व्यक्त मि० कितनेक अव्यक्त मि० है जिस्में व्यक्त मि० के २५ भेद हैं यथा—

(१) जीवको अजीव श्रद्धे-जैसे कितनेक लोक एकेन्द्रिय आदिको जीव नहीं मानते हैं। केवल चलते फिरते ही को जीव मानते हैं यह एक किस्म का मिथ्यात्व है।

(२) अजीवको जीव श्रद्धे-जैसे जितने जगत्में पदार्थ हैं वे सब जीव हैं। यानि जड पदार्थोंको भी जीव माने मि०

(३) साधुको असाधु श्रद्धे-याने, जो पंच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति आदि सदाचारमें प्रवृत्ति करनेवालेको साधु न माने। मि०

(४) असाधुको साधु श्रद्धे-यथा आरम्भ, परिग्रह, भांग, गांजा, चडसादि पीनेवाले अनेक संसारी जीवोंको भी साधु माने। मि०

[५] धर्मको अधर्म श्रद्धे-जैसे अहिंसा, सत्य शील, तपादि शुद्ध धर्मको अधर्म समझे। वह भी मिथ्यात्व है।

(६) अधर्मको धर्म श्रद्धे-जैसे यज्ञ, होम, जप, पंचाग्नि तापना, कन्दमूल खाना, ऋतुदान देना इत्यादि अधर्मको धर्म माने। मि०

(७) मोक्षमार्गको संसारका मार्ग श्रद्धे-जैसे ज्ञान दर्शन चारित्रादिको संसार समझे। " मि०

(८) संसारके मार्गको मोक्षका मार्ग श्रद्धे-जैसे मृतककी पीछे पींड, श्राद्ध, ओसर, बलीदानादिको मोक्ष मार्ग समझना। मि०

(९) मोक्ष गयेको अमोक्ष समझना-जैसे केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष गयेको फिर आके अवतार लेंगे ऐसा कहना। मि०

(१०) अमोक्षको मोक्ष कहना-जैसे कृष्णादिकी अभी मोक्ष नही हुवा उनको मोक्ष हुवा मानना। मि०

(११) अभिग्रह मिथ्यात्व-जैसे मिथ्यात्व, हठ, कदाग्रहको पकडकर कुगुरु, कुदेव, कुधर्मपर ही श्रद्धा रक्खे अपने ग्रहण कियेको मिथ्या समझने पर भी न छोडे। मि०

(१२) अनभिग्रह मिथ्यात्व-जैसे कुदेव, कुगुरु, कुधर्मपर वैसे ही सुदेव, सुगुरु, सुधर्मपर एक सरीखी श्रद्धा रखे सबको एक सरीखा माने। मि०

(१३) संशय मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंपर संकल्प विकल्प करना और उसपर संशय करना। मि०

(१४) अनाभोग मिथ्यात्व-जिसको धर्माधर्म, हिताहितका कुछ भी ख्याल नहीं है अजाणपनेसे या बेदरकारीसे हरएक काम करता है। मिथ्यात्वादि कों सेवन करता है मि०

(१५) अभिनिवेश मिथ्यात्व-धर्माधर्म, सत्यासत्यकी गवेषणा और विचार करके उसका निश्चय होनेपर भी अपने हठकों नहीं छोडना। मि०

(१६) लौकिक मिथ्यात्व-लोकोंके देखादेखी मिथ्यात्वकी क्रिया करे अर्थात् धन पुत्रादिके लिये लौकिक देवोंकी सेवा उपासना करे। मि०

(१७) लोकोत्तर मिथ्यात्व-मोक्षके लिये करने योग्य क्रिया करके लौकिक सुखकी इच्छा करे या वीतराग देवके पास लौकीक सुख सम्पदा धनादिकी प्रार्थना करे। उसे लोकोत्तर मिथ्यात्व कहते है।

[१८] ऊंणो मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंसे न्यून प्ररुपणा करे तथा जीवको अंगुष्ट प्रमाण माने या न्युन क्रिया करे। मि॰

[१९] अधिक मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंसे अधिक प्ररु-पणा करे। या अधिक क्रिया करे—मनःकल्पित क्रिया करे। मि॰

[२०] विपरीत मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंसे विपरीत प्ररुपणा करे या विपरीत क्रिया करे—कुलिंगादि कों धारण करे।

[२१] गुरुगत मिथ्यात्व-अगुरुको गुरु करके माने जैसे जंगम, जोगी, सेवडा, चमखंडा चमचीरीया की जिसमें गुरुका गुण न हो लक्षण न हो और लिंग न हो अथवा स्वलिंगी पासत्था उसन्ना संसक्ता कुलिंग्यादिको गुरु माने। मि॰

(२२) देवगत-जो रागी द्वेषी आरम्भ उपदेशी जिनकी मुद्रामें राग द्वेष विषय कषाय भरा है ऐसे देव हरी, हलधर भेरु भवानी शीतला मातादिको देव माने। मि॰

(२३) पर्वगत-जैसे होली, कृष्ण अष्टमी, गोगानवमी, आमावास्यादि लौकिक पर्वको पर्व मान कर मिथ्यात्वकी क्रिया करे। मि॰

(२४) अक्रिय मिथ्यात्व-क्रिया करनेसे क्या फल होता है इत्यादि माने-क्रिया का नास्तिपणा बतलाना। मि॰

(२५) अविनय मिथ्यात्व-देव, गुरु, संघ, स्वाधर्मी भाइयों का उचित विनय न करके उनका अविनय-आशातना करे। मि॰

यह २५ प्रकारका मिथ्यात्व कहा। इसके सिवाय शास्त्रका-

रोंने मिथ्यात्वकी ४-५-१० यावत् अनेक तरहसे प्ररुपणा की है वे सब भेद एक दूसरेमें समावेस हो सकते है। परन्तु विस्तार करनेका इतना ही कारण है कि बालजीव सुगमतासे समझ सके। वास्तवमें मिथ्यात्व उसीका नाम है जो सद् वस्तुको असद समझे। जब सुगमताके लिये इसके जितने भेद करना चाहे उतना भी हो सकते है।

मिथ्यात्वको गुणस्थानक क्यों कहा ? इसमें कौनसे गुणका स्थानक है ? अनादिकालसे जीव संसारमें पर्यटन करता आया है। यथा दृष्टांतः-दो पुरुष कीसी रस्ते पर जा रहे थे और जाते २ उन दोनोंकी नजर एक सीपके टुकडा पर पडी। एकने कहा भाइ ! यह चांदीका टुकडा पडा है, दूसरेने कहा चांदी नही यह सीपका टुकडा है। इसी तरह जीव अनादिकालसे संसार चक्रमे फिरने हुवे कभी भी उसको ऐसे ज्ञानकी प्राप्ति नहीं हुइ कि चांदी किसे कहते है और सीप किसे कहते है। आज यह ज्ञान हुवा कि उसके सफेद रंग और चमकको देख कर कहा कि यह चांदी है इसी विपरीत ज्ञानको मिथ्यात्व कहते है और जिस वस्तुका पहिले कुछ भी ज्ञान नहीं था उसको आज विपरीतपने जानता है वह जानना यह एक किसमका गुण है। इसी तरह जीव अव्यवहार रासीमें भ्रमण करते अनंत काल व्यतीत हो गया परन्तु वह इस बातको नहीं जानता था कि देवगुरु धर्म किसे कहते है और क्या वस्तु है। आज उसको इतना क्षयोपशम हुवा है की वह सद्को असद् समझता है। अब किसी वक्त सुयोग मिलेगा तो यथावत् सम्यग ज्ञानकी भी प्राप्ति हो जायगी। परन्तु जब तक मिथ्यात्व गुणस्थानककी श्रद्धा है तबतक चतुष्क गती रुपी संसारार्णवमें भटकता ही रहेगा, विना सम्यग् ज्ञानके परम सुखको प्राप्त नहीं कर सकता।

(२) सास्वादन गुणस्थानकका लक्षण—जीव अनादि-

कालसे मिथ्यात्वमें रमण करता २ स्वाभावहीसे कर्म पतल करके द्रव्य, क्षेत्रादिका संयोग मिलनेसे प्रथम औपशम सम्यक त्वको ग्रहण कर चतुर्थ गुणस्थानकको प्राप्त करता है, वहां प अच्छा निमित्त मिलनेसे क्रमशः उत्तरोत्तर गुणोंकी प्राप्ति क अंतमें मोक्ष सुखको भी प्राप्त करलेता है। यदि अच्छा निमत मिले तो चतुर्थ गुणस्थानकसे गिरता हुवा सास्वादन गुणस्थान पर आता है यथा दृष्टांत:-कोइ पुरुष खीरखांड (दूधपाक) क भोजन करनेके बाद वमन होनेपर गुलचटा स्वाद रहता है। इस माफिक सम्यक्त्वको वमन करता हुवा सास्वादन गुणस्थान पर आता है अथवा गंभीर घंटाका नाद कम होते २ रणका शब्द पीछे रहता है या जीवरूपी वृक्ष सम्यक्त्व रूपी फल मो रूपी पवनके चलनेसे गिरकर मिथ्यात्व रूपी जमीन पर पहूंचा तब तक सास्वादन गुणस्थानक कहलाता है इसकी स्थिति ६ आवलीकाकी है। इससे कौनसे गुणकी प्राप्ति हुई? कृष्ण पक्षीका शुक्ल पक्षी हुवा और उत्कृष्ट देशोण अर्द्ध पुद्गल परावर्तन करके नियमा मोक्ष जावेगा।

(३) मिश्र गुणस्थानकका लक्षण--जैसे श्र.खंडका स्वाद कुछ खट्टा और कुछ मीठा होता है इसी तरह मिश्र गु० वालेका परिणाम मिश्रभाव रहता है। यथा दृष्टान्त-किसी नगरके बाहर क्षान्त्यादि गुणालंकृत मुनि महाराजके पधारनेकी खबर सुनके नगरके सब लोग धर्मदेशना सुननेको गये उस समय एक मिथ्या सेठ भी धर्मदेशना सुननेके लिये चला, मगर रस्तेमें अकस्मात् काम हो जानेसे विलम्ब हो गया इतनेमें मुनि महाराज देशना दे विहार कर गये। यह बात सेठने सुनी और वह सोचने लगा कि मैं कैसा अभागा हूं कि मुझे महात्माके दर्शन तक भी न हुवा खेर. अब चलो दूसरे तापसादि हैं उनके पास जा आवे कहीं भी धर्म सुनना है धर्म तो सब एकसाही है। इससे यह हुवा कि

शासन पर प्रेम नही और अन्य धर्म पर द्वेष भी नही। शासनके सम्मुख हुवा पर स्वीकार करनेकों असमर्थ है। जीव दूसरे गु० की माफक शुक्ल पक्षी है और नियमा मोक्ष जावेगा।

[४] अवृत्ति सम्यगदृष्टि गु०का लक्षण— चतुर्थ गु० प्राप्त करनेवाला जीव प्रथम ७ प्रवृत्तियांका क्षय या उपशम करता है। यथा—

(१) अनन्तानुवन्धी क्रोध–पत्थर की रेखाके समान।
(२) „ मान–वज्रके स्तम्भसमान।
(३) „ माया–वांसकी जडके समान।
(४) „ लोभ–किरमजी रेशमके रंग समान

यह चोकडि घात करे तों सम्यक्त्वकी, स्थिति करे तो यावत् जीवकी और गती करे तो नरककी।

(५) मिथ्यात्व मोहनी–मिथ्यात्वमें ही मग्न रहै।

(६) मिश्र मोहनी-यह भी सच्चा और यह भी सच्चा (मिश्रभाव)

(७) सम्यक्त्व मोहनी– क्षायक सम्यक्त्व को न आने दे और सम्य० का विराधक भी न होने दे। इन ७ प्रकृतियोंके ९ भांगे होते है।

[१] चार प्रकृति क्षय करे ३ प्र० उपशमावे तो क्षयोपशम सम्यक्त्व।

[२] पांच प्र० क्षय करे और २ प्र० उपशमावे तो क्षयोपशम

[३] छे प्र० क्षय करे १ प्र० उपशमावे तो क्षयोपशम सम्य०

[४] चार प्र० क्षय० २ प्र० उपशमावे १ वेदे तों क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व हो।

[५] ५ प्र० क्षय० १ प्र० उप० १ वेदे तो वेदक सम्य०

[६] ६ प्र० उप० १ प्र० वेदे तो उपशम वेदक सम्य०

[७] ६ प्र० क्षय० १ प्र० वेदे तो क्षायिक वेदक सम्य०

[८] ७ प्र० उपशमावे तो उपशम सम्य०

[९] ७ प्र० क्षय करे तो क्षायिक सम्य०

इन ९ भागोंमें से कोइ भी एक भांगा प्राप्त करके चतुर्थ गु० में आवे। जीवादि नौ पदार्थोंको यथार्थ जाणे और वीतरागके शासन पर सच्ची श्रद्धा रक्खें। संघकी पूजा प्रभावनादि सम्यक्त्व की करनी करे नौकारशी आदि वर्षी तपको सम्यक् प्रकारे श्रद्धे परन्तु व्रत पच्चखाणादि करनेको असमर्थ। क्योंकि व्रत पच्चखाण अप्रत्याख्यानी चौकके क्षयोपशम भावसे होता है। सो यहां नहीं है। चतुर्थ गु० याने सम्यक्त्वके प्राप्त होनेसे सात बोलोंका आयुष्य नहीं बंधता-(१) नारकी (२) तिर्यंच (३) भुवनपति० (४) व्यंतर (५) ज्योतिषी (६) स्त्रीवेद (७) नपुंसकवेद अगर पहिले बंध गया हो तो भोगना पडे। चौथे गु० वाला ज० ३ भव करे उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(५) देशव्रती (श्रावक) गु० का लक्षण—जीव ११ प्रकृतियोंका क्षय या क्षयोपशम करे जिसमें ७ पूर्व कह आये हैं और चार अप्रत्याख्यानीका चौक। यथाः।

(१) क्रोध-तलावके मट्टीकी रेखा समान।

(२) मान-हाडका स्थम्भ समान।

(३) माया-मेंढाके सिंग समान।

(४) लोभ-नगरका कीच या गाडीका खंजण समान।

यह चौकडी श्रावकके व्रतकी घात करती है स्थिती १ वर्ष की है और इससे तिर्यंचकी गती होती है। इन ११ प्रकृतीयोंके क्षय होनेसे जीव पांचवां गु० प्राप्त करता है और जीवादि पदा-

वोंको श्रद्धा पूर्वक जाणें, सामायिक, पोषध, प्रतिक्रमण, नौकारसी आदि तप करे, आचार विचार स्वच्छ रक्खें लोक विरुद्ध कार्य न करे, अभक्षादि तुच्छ वस्तुका परित्याग करे, और मरके वैमानिकमें जावे। इस गुणस्थानकके प्राप्त होनेसे जीव ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(६) प्रमत्त संयत गु० का लक्षण—जीव १५ प्रकृति क्षय या क्षयोपशम करनेसे इस गु० को प्राप्त करता है जिसमें ११ प्र० पूर्व कही और चार प्रत्याख्यानी चौक।

(१) क्रोध-रेतीपर गाडाकी लकीर समान।
(२) मान-काष्टके स्थम्भ समान।
(४) माया-चलते हुवे बलदके मूत्रकी धारा समान।
(५) लोभ-आंखके अंजन समान।

यह चोकडी सराग संयमकी घातक है। स्थिति इस चार मासकी है। और गती मनुष्यकी। इस गु० में जीव पंच महाव्रत, ५ समिति, ३ गुप्ति, चरणसत्तरी करणसत्तरी आदि मुनि मारग सम्यग प्रकारसे आराधे और मरके नियमा वैमानिकमें जावे। इस गु० वाला ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(७) अप्रमत्त संयत गु० का लक्षण—मद, विषय कषाय, निद्रा और विकथा इन पाचों प्रमादको छोडके अप्रमत्त पने रहे। इस गुणस्थानवाला जीव तद्भव मोक्ष जाय या उ० ३ भव करे।

(८) निवृत्ति बादर गु० लक्षण—अपूर्वकरण शुक्ल ध्यानके प्राप्त होनेसे यह गु० प्राप्त होता है। इस गु० से जीव श्रेणी प्रारंभ करते हैं. एक उपशम और दूसरी क्षपक। जो पूर्व कही १५ प्रकृतियोंको उपशमावे वह उपशम श्रेणि करे और जो

क्षय करे वह क्षपक श्रेणी करता है। पन्द्रह प्रकृति पूर्व कही और हास्य, रती, अरती, शोक, भय, जुगुप्सा एवं २१ प्रकृतिका क्षय करके नौवें गु० को प्राप्त करता है।

(९) अनिवृत्ति बादर गु० लक्षण—इस गु० में स्त्री वेद, पुरुषवेद, नपुंसक वेद और संज्वलकात्रिकको क्षय करे।

(१) क्रोध-पानीकी लकीर समान।

(२) मान-तृणका स्थंभ समान।

(३) माया-वांसकी छोल समान।

यह त्रिक यथाख्यात चारित्रका घातीक है, स्थिती क्रोधकी दो मासकी, मानकी एक मासकी, मायाकी पन्द्रह दिनकी और गती देवताकी एवं कुल २७ प्रकृती क्षय या उपशम करनेसे दशवें गु० को प्राप्त करता है।

(१०) सुक्ष्मसंपराय गु० का लक्षण—यहां पर संज्वलका लोभ जो हलदीके रंग समान बाकी रहा था उसका क्षय करे एवं २८ प्रकृतिका क्षय करे। यदि पूर्वसे उपशान्त करता हुवा उपशम श्रेणी करके आया हो तो यहांसे इग्यारवें उपशान्तमोह वीतरागी गु० में आवे और ज० एक समय उ० अन्तर मुहूर्त ठहरकर पिछा गिरे तो क्रमशः आठवें गु० पर आके क्रमशः पहले गु० तक भी जा सकता है अगर इग्यारवें गु० पर काल करे तो अनुत्तर वैमानमें उपजे। क्योंकि इग्यारवे गुणस्थानक पर आया हुवा जीव आगे नही जा सकता। यदि तद्भव मोक्ष जानेवाला हो तो आठवे गु० से क्षपक श्रेणि करके दशवें गु० से बारहवें गु० को प्राप्त करे।

(१०) क्षीणमोह वीतरागी गु० का लक्षण—यहां ज्ञानावर्णिय, दर्शनावर्णिय और अन्तराय कर्मका क्षय करके १३

वे गु० को प्राप्त करे और तेरवें गु० के प्रथम समय अनन्त केवलज्ञान अनन्त केवलदर्शन अनन्तचारित्र अनन्तदानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि, और वीर्यलब्धिको प्राप्त करे। इस गु० पर ज० एक अन्तर म० उ० आठ वर्ष कम पूर्व क्रोड रह कर फिर चौदवें गु० में जावे। यहां पांच लघु अक्षर (अ इ उ ऋ लृ) उच्चार्ण काल रह कर पीछे अनंत, अव्याबाध, अक्षय, अविनाशी, सादी अनंत भंगे मोक्ष सुखको प्राप्त करता है।

(३) क्रियाद्वार--क्रियाके पांच भेद हैं-आरंभीया परिगृहिया, मायावत्तीय, अपच्चखाणीया और मिथ्यादर्शनवत्तीया पहिले और तीजे गु० में पांचों क्रिया लागे, दूजे, चौथे गु० चार क्रिया मिथ्यादर्शन० की नहीं। पांचमें गु० तीन क्रिया (मिथ्या द० अव्रत० नहीं) छठ्ठे गु० दो (आरम्भ० माया०) क्रिया तथा ७-८-९-१० गु० एक मायावतीया क्रिया और ११-१२-१३-१४ गुण० पाचों क्रिया नहीं, अक्रिया है।

(४) बन्धद्वार--प्रथम गु० से तीसरा वर्जके सातमें गु० तक आयुष्य वर्जके सात कर्म बान्धे और आयुष्य बांधता हुवा ८ कर्म बांधे तथा ३-८-९ वे आयुष्य वर्जके सात कर्म बांधे आयुष्यका अबन्धक है। दशमें गु० छे कर्म (आयुष्य मोह० वर्जके) बांधे. ११-१२-१३ गु० एक साता वेदनी बांधे और चौदवां गु० अबंधक है।

नोट ज० ऊ० बंध स्थानक---वेदनीयका ज० बंध स्थान तेरवे गु० तथा ज्ञानावर्णिय-दर्शन० नाम० गोत्र० अंतराय कर्मका ज० बंध दशवें गु० और मोहनी० का ज० बन्ध स्थान नौवें गु० है तथा उत्कृष्ट बंध सातों कर्मका मिथ्यात्व गु० में होता है।

(५) उदयद्वार—प्रथमसे दशवें गु० तक आठों कर्मोंका उदय तथा ११-१२ गु० सात कर्मोंका उदय मोहनीय वर्जके और १३-१४ गु० चार अघाती कर्मोंका उदय वेदनी० नाम० गोत्र० आयुष्य।

(६) उदीरणा द्वार—प्रथमसे तीसरा गु० वर्जके छट्टे गु० तक ७-८ कर्म उदीरे० (आयुष्य वर्जके) तीजे गु० सात कर्म उदरे ७-८-९ में गु० छे कर्म उदीरे आयु० वेदनी वर्जके। दशमें गु० ५-६ कर्म उदीरे [पांचवालामोह० वर्जे] इग्यारवें गु० पांच कर्म उदीरे। बारवें गु० पांच या दो उदीरे (दोवाला नाम० गोत्र०) और १३-१४ वें उदीरणा नहीं है।

(७) सत्ता द्वार—प्रथमसे इग्यारवें गु० तक आठों कर्मोंकी सत्ता है। बारहवें गु० सात कर्मकी सत्ता मोहनी० वर्जके और १३-१४ गु० चार अघाति कर्मकी सत्ता है।

(८) निर्जरा द्वार—प्रथमसे दशवां गु० तक आठों कर्मोंकी निर्जरा तथा ११-१२ में गु० सात कर्मोंकी [मोहनी वर्जके] और १३-१४ गु० चार अघाति कर्मोंकी निर्जरा होती है।

(९) आत्मा द्वार—आत्मा ८ प्रकारका है द्रव्यात्मा; कषाय० योग० उपयोग० ज्ञान० दर्शन० चारित्र० और वीर्यात्मा। प्रथम और तीजे गु० छे आत्मा [ज्ञान० चारित्र वर्जके] तथा २-४ गु० ७ आत्मा [चारित्र वर्जके] तथा पांचमेंसे दशमें गु० तक आठों आत्मा तथा ११-१२-१३ में आत्मा सात [कषाय वर्जके] और चौदमें गु० छे आत्मा [कषाय, योग० वर्जके]

(१०) कारण द्वार—कारण पांच-मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद कषाय और योग। प्रथम और तीजे गु० पांचों कारण। २-४ गु० में चार मिथ्यात्व वर्जके। ५-६ गु० में तीन [अव्रत छोडके]।

७-८-९-१० गु० में दो कारण कषाय और योग। ११-१२-१३ गु० में एक कारण, योग। और चौदवें गु० में कारण नहीं।

(११) भाव द्वार—भाव पांच-औपशमिक भाव, क्षायिकभाव, क्षयोपशमिक भाव, औदयिकभाव, और परिणामिक भाव। १-२-३ गु० में भाव ३ उद० क्षयो० और परि०। ४ से ११ गु० तक पाचों भाव। १२ गु० में चार भाव (उपशम वर्जके)। १३-१४ में ३ भाव क्षयो० वर्जके।

(१२) परिसह द्वार—बावीस परिसह देखो शीघ्रबोध भाग १॥ प्रथमसे नौवें गु० तक २२ परिसह, जिसमें एक समय २० वेदे-शीत, उष्ण और चलना, बैठना इन चारमेंसे दो प्रति पक्षी छोडके। १०-११-१२ गु० में १४ परिसह आठ मोहनीका वर्जके एक समय १२ वेदे। १३-१४ गु० ११ परिसह वेदे वेदनीय कर्मका।

(१३) अमर द्वार—३-१२-१३-गु० में मरे नहि शेष ११ गु० में मरे। वास्ते तीन गु० अमर है।

(१४) पर्याप्ता द्वार—१-२-४ गु० पर्याप्ता, अपर्याप्ता होवे शेष ११ गु० में केवल पर्याप्ता होवे।

(१५) आहारीक द्वार—१-२-४-१३ गु० में आहारी, अणाहारी दोनो और नौ गु० में केवल आहारी। और चौदवां गु० केवल अणाहारी।

(१६) संज्ञा द्वार—संज्ञा चार-आहार संज्ञा, भय० मैथुन० परिग्रह० पहिले गु० से पांचवें गु० तक चारों संज्ञा तथा छट्ठे गु० भजना और शेष ९ गु० में नो संज्ञा।

(१७) शरीर द्वार—शरीर ५ औदारिक, वैक्रिय, आहा-

रक, तेजस और कार्मण। प्रथमसे पांच वे गु० तक शरीर ४ पावे आहारक नहीं तथा छठे सातवें गु० में शरीर पांच और शेष ७ गुण० शरीर तीन औदारिक, तेजस, कार्मण।

(१८) संहनन द्वार—संहनन ६-वज्रऋषभनाराच संहनन, ऋषभ नाराच०, नाराच०, अर्द्ध नाराच०, कीलिका० छेवट्ठ संहनन। प्रथमसे छट्ठे गु० तक छेओं संहनन शेष ८ गु० में एक वज्र ऋषभनाराच० संहनन होता है।

(१९) संस्थान द्वार—संस्थान छे हैं, समचतुस्रादि-चौदे ही गु० में छओं संस्थान पावे।

(२०) वेद द्वार—वेद तीन, पहिलेसे नौवे गु० तक तीनों वेद। शेष ६ गु० में अवेदी।

(२१) कषाय द्वार—कषाय २५ है, जिसमें १६ कषाय ९ नौ कषाय हैं। पहिले दूसरे गु० में २५ कषाय। ३-४ गु० में २१ कषाय (अनंतानुबंधी चोक निकला) पांचवें गु० में १७ (अप्रत्याख्यानी चौक निकला) ६-७-८ गु० में १३ (प्रत्याख्यानी चौक निकला) नौवें गु० में ७ कषाय (छे हास्यादि निकला) दशवें गु० में एक संज्वलका कषाय, शेष चार गु० अकषाई है।

(२२) संज्ञी द्वार—पहिले, दूसरे गु० में संज्ञी असंज्ञी दोनों प्रकारके जीव होते है। १३-१४ गु० नो संज्ञी नो असंज्ञी; शेष १० गु० संज्ञी है।

(२३) समुद्घात द्वार—समुद्घात सात-वेदनी, कषाय, मरणंति वैक्रिय, तेजस, आहारीक, केवली समुद्घात। १-२-४-५ गु० में पांच समु० क्रमशः तीजे गु० में तीन (वेदनी, कषाय,

वैक्रिय० छट्ठे गु० में छै समु० केवली वर्जके। तेरवें गु० एक केवली समु० शेष ७ गु० में समुद्घात नहीं।

	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
गु.	गति	जाति	काय	जीवभेद	योग	उपयोग	लेश्या	दृष्टि
१	४	५	६	१४	१३	६	६	१
२	४	४	१	६	१३	६	६	१
३	४	१	१	१	१०	६	६	१
४	४	१	१	२	१३	६	६	१
५	२	१	१	१	१२	६	६	१
६	१	१	१	१	१४	७	६	१
७	१	१	१	१	११	७	३	१
८	१	१	१	१	९	७	१	१
९	१	१	१	१	९	७	१	१
१०	१	१	१	१	९	७	१	१
११	१	१	१	१	९	७	१	१
१२	१	१	१	१	९	७	१	१
१३	१	१	१	१	५-७	२	१	१
१४	१	१	१	१	०	२	०	१

(३२) ज्ञान द्वार—पहिले, तीसरे गु० में तीन अज्ञान। २-४-५ गु० में तीन ज्ञान छट्ठेसे बारहवे गु० तक चार ज्ञान और तेरवे, चौदवें गु० एक केवल ज्ञान।

(३३) दर्शन द्वार—प्रथमसे बारहवे गु० तक तीन दर्शन तेरवें, चौदवें एक केवल दर्शन।

(३४) सम्यक्त्व द्वार—सम्यक्त्वके ५ भेद-क्षायक, क्षयोपशम, उपशम, वेदक, और सास्वादन। पहिले और तीसरे गु० सम्यक्त्व नहीं, दूसरे गु० सास्वादन स०। चौथासे सातवें गु० स० चार. सास्वादन वर्जके। नौवे गुणस्थान दशवें गु इग्यारवें गु० दो स० (क्षा० उप०) और १२-१३-१४ गु० एक क्षायक सम्यक्त्व है।

(३५) चारित्रद्वार—चारित्रके ५ भेद. सामायकादि-१-२-३-४ गु० में चारित्र नहीं (पांच वे गु० चारित्राचारित्र छट्ठे सातमें गु० में तीन चारित्र (सामा० छेदो० परि०) आठवें नौमें गु० दो चारित्र (सामा० छेदो०) दशमें गु० सुक्ष्मसम्पराय चारित्र, और ११-१२-१३-१४ में गु० में यथाख्यात चारित्र।

(३६) नियंट्ठाद्वार—नियंट्ठाके छे भेद-पुलाक, बुकस पडिसेवन, कषाय कुशील, निग्रन्थ और स्नातक। प्रथमसे पांचवें गु० तक नियंट्ठा नहीं। छट्ठे, सातवें गु० नियंट्ठा चार क्रमशः। आठवें, नौवे. गु० नियंट्ठा तीन (बु० प० क०) दशवें गु० में कषाय कुशील। ११--१२ गु० में निग्रन्थ और १३--१४ गु० में स्नातक नि०

(३७) समोसरणद्वार—समोसरणके चार भेद-क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी और विनयवादी। पहिले गु० में स० तीन (क्रिया वादी नही) तीजे गु० में दो अज्ञानवादी और विनयवादी। शेष बारों ही गु० में समोसरन १ क्रियावादी।

(३८) ध्यानद्वार—ध्यानके चार भेद-आर्तध्यान, रौद्र

ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। १-२-३ गु० में ध्यान दो आर्त० रौद्र० तथा ४-५ गु० तीन (आर्त० रौद्र० धर्म ध्यान) छट्ठे गु० आर्त० धर्म ध्यान। सातमें गु० में धर्म ध्यान और शेष गु० में केवल शुक्ल ध्यान है।

(३९) हेतुद्वार-हेतु ५७ है. कषाय २५ योग १५ अवृत १२ (५ इन्दी ६ काय १ मन) और मिथ्यात्व ५ पचवीस प्रकार से नं० ११ से १५) एवं ५७ हेतु। पहिले गु० में पंचावन (आहारक आहारीक मिश्र वर्जके)। दूजे गु० में पचास (पांच मिथ्यात्व वर्जके)। तीजे गु० ४३ हेतु (अनंतानु बन्धी चौक और तीन योग[1] वर्जके) चौथे गु० ४६ हेतु (तीन योग[1] वधीया) पांचवें गु० ३९ हेतु (अप्रत्याख्यानी चौक, औदारिक मिश्र, कार्मण योग और त्रस जीवोंकी अवृत्त टली) छट्ठे गु० २६ हेतु-यहां आहारक मिश्र योग वधा और अवृत्त ११ प्रत्याख्यानी चौक घटा। सातमें गु० २४ हेतु- (वैक्रिय मिश्र, आहारक मिश्र वर्जके) आठवें गु० २२ हेतु. (आहारक; वैक्रिय योग वर्जके) नौवें गु० १६ हेतु (हास्य-छक वर्जके) दशवें गु० नौ योग १ संज्वल लोभ एवं १० हेतु। ११-१२ गु० हेतु नौ (नौयोग) तेरवें गु० ५-७ हेतु (योग) चौदमें गु० अहेतु।

(४०) मार्गणाद्वार-एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थान जाना उसको मार्गणा कहते है-पहिले गु० की मार्गणा ४ पहिले गु० वाले ३-४-५-७ गु० जावे। दूसरे गु० वाला मिथ्यात्व गु० में आवे. तीजे गु० वाला १-४ गु० में जावे। चौथे गु० वाला १-२-३-५-७ गु० में जावे। पांचवें गु० वाला १-२-३-४-७ गु० में जावे। छठे गु० वाला १-२-३-४-५-७ गु० में जावे। सातमें गु० वाला ४-६-८ गु० जावे। आठमें गु० वाला ७-९-४ गु० में जावे।

---

१ औदारिक मिश्र, वैक्रिय मिश्र और कार्मण।

नौमें गु० वाला ८-१०-४ गु० में जावे। दशमें गु० वाला ९-११-१२-४ गु० में जावे इग्यारमें गु० वाला ४-१० गु० में जावे बारमें गु० वाला तेरमें गु० जावे तेरवे वाला चौदवें गु० जावे। और चौदवे गु० वाला मोक्ष जावे।

(४१) जीवयोनिद्वार-योनी ८४ लक्ष है। पहिले गु० में ८४ लक्ष, दूसरे गु० में ३२ लक्ष, तीजे गु० में २६ लक्ष, चौथे गु० में २६ लक्ष, पांचमें गु० में १८ लक्ष, छट्ठे गु० में १४ लक्ष, सातमें गु० से यावत् चौदमें गु० तक १४ लक्ष।

(४२) दंडकद्वार-पहिले गु० में २४ दंडक दूजेमें १९ दंडक (पाच स्थावर वर्जके) तीजे गु० में १६ दंडक (तीनविकलेन्द्रिय वर्जके) एवं चौथे गु० में १६ दं० पांचमें गु० में दो दं० और छठेसे चोदमें गु० तक एक दंडक।

(४३) नियमा भजनाद्वार १-४-५-६-७-१३ गु० में नियमा जीव मिले शेष आठ गु० में भजना।

(४४) द्रव्य परिमाण द्वार—वर्तमानापेक्षा पहले गुण स्थानसे चौदहवा गुणस्थान तक जघन्य एकेक जीव मीले और उत्कृष्ट पहले गु० असंख्याते जीव वह पल्योपम के असंख्यातमे भागके समय जीतना यहां गुणस्थान स्वीकारापेक्षा है एवं पांचवे गु० तक छट्ठे सातवे प्रत्येक हजार आठवे नौवे दशवे गु० तक एकसो बासठ इग्यारवें चौपन बारहवे तेरहवे चौदहवे गु० एकसो आठ जीव मीले। पूर्व प्रतिपन्नापेक्षा प्रथम गु० जघन्य और उत्कृष्ट अनन्ते जीव मीले। दूसरे तीसरे गु० ज० एक जीव उ० पल्योपमके असंख्यात समय जीतने जीव मीले। चोथे गु० ज० पल्यो० असं० भाग० उत्कृष्ट-जघन्यसे असंख्यात गुणे एवं पंचवे गु० छटे सातवे गु० ज० प्रत्येक हजार क्रोड उ० प्र० हजार क्रोड। आठवे से

बारहवे गु० तक ज० संख्याते सेंकडो उ० सं० सेंकडो। तेरहवे ज० गु० प्रत्येक कोड। चौदहवे गु० ज० उ० प्रत्येक सो जीव मीले। इति द्वारम्।

(४५) क्षेत्र प्रमाण द्वार—एक जीवापेक्षा पहले से चोथे गुणस्थान तक ज० अंगुलके असंख्यातमे भाग उ० हजार योजन साधिक क्षेत्रमें होवे। पांचवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० हजार योजन। छट्टे गु० से बारहवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० पांचसो धनुष्य, तेरहवे गु० ज० प्र० हाथ उ० सर्व लोकमें चौदहवे गु० ज०प्र० हाथ उ० पांचसो धनुष्य। बहुत जीवोंकि अपेक्षा पहले गु० ज० उ० सर्व लोकमें, दूसरे गु० से बारहवे गु० तक ज० लोक के असंख्यातमें भाग उ० लोकके असंख्यातमे भाग. तेरहवे ज० लोक० असं० भाग० उ० सर्व लोकमें। चौदहवे गु० ज० लोक० असं० भाग, उ० लोकके असंख्यातमे भाग इति।

(४६) निरान्तर द्वार—जघन्यापेक्षा पहले गु० सर्वदा यानि सर्व कालमें पहले गुणस्थानमें जीव निरान्तर आया करते है दूसरे से चौद वे गुणस्थान तक दो समय तक निरान्तर आवे। उत्कृष्टापेक्षा-पहले गु० सर्व काल तक निरान्तर आवे. दूसरे तीसरे चोथे गु० पल्योपमके असंख्यात भागके काल जीतनी वखत आवे। पांचवे गु० आवलिकाके असं० भाग० छटे सातवे गु० आठ समय तक निरान्तर आवे। आठवे से इग्यारवे गु० तक संख्यात समय तक, बारहवा आठ समय तक, तेरहवा सर्वदा. चौदहवा आठ समय तक जीवों को निरान्तर आया करता है इति।

(४७) स्थितिद्वार—जघन्य स्थिति अपेक्षा पहले तीसरे गु० अन्तर महुर्त. दूसरे से इग्यारवे तक एक समय. बारहवे. तेरहवे. चौदहवे. कि अन्तर महुर्त कि जघन्य स्थिति है

उत्कृष्टापेक्षा पहले गु० अभव्यापेक्षा, अनादि अन्त, भव्यापेक्षा अनादि सान्त प्रतिपाति यानि सम्यक्त्वसे पडा हुवा कि देशोना आधा पुद्गल, दूसरे गु० छे अवलिका. तीसरे गु० अन्तर महुर्त चोथा गु० छासट सागरोपम साधिक. पांचवे छटे गु० देशोन कोड पूर्व. सातवा से बारहवे तक अन्तर महुर्त. तेरहवे गु० देशोना कोड पूर्व चौदहवे गु० पंच ह्रस्वाक्षर उच्चारण जीतनो अन्तर महुर्त कि स्थिति इति ।

(४८) अन्तर द्वार—एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अन्तर महुर्त उ० छासट सागरोपम साधिक, दूसरे गु० जघन्य पल्योपमके असंख्यातमे भाग, तीसरे गु० से इग्यारवे गु० तक अन्तर महुर्त उ० दूसरे से इग्यारवे तक देशोना अर्द्ध पुद्गल काल बारहवे तेरहवे चौदहवे गु० अन्तर नहीं है। घणा जीवोंकि अपेक्षा-पहले गु० अन्तर नही दूसरे से इग्यारवे गुणस्थानमे ज० एक समय उत्कृष्ट दूसरे गु० आवलिकाके असं० भाग. तीसरे गु० पल्योपम के असंख्यातमे भाग, चोथे गु० सात दिन, पांचवे गु० चौदह दिन, छटे गु० पन्नरादिन. सातवे आठवे नौवे गु० छ मास दशवे गु० प्रत्येक वर्ष. इग्यारवे छे मास. बारहवे तेरहवे चौदवे आन्तर नहीं है इति ।

(४९) आगरीस द्वार—एक जीवापेक्षा जघन्य आवे तो पहले से चौदहवा गु० एकवार आवे उत्कृष्ट आवे तो पहलो गु० प्रत्येक हजार वार. दूसरो गु० दो वार. तीजो चोथो प्रत्येक हजार वार. पांचवो छट्ठो सातवों गु० प्रत्येक सो वार आवे. आठवो नौवो दशवो चार वार आवे । इग्यारवो गु० दो वार आवे, बारहवा तेरहवा चौदवा गु० एक वार आवे । बहुत जीवों कि अपेक्षा-पहलेसे इग्यारवे तक ज० दो वार आवे. बारहवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे । उत्कृष्ट पहला गु० असं-

ख्यात वार आवे दूसरा पांच वार आवे तीजा चोथा गु० असं० वार आवे, पांचवा छट्ठा सातवा, प्रत्येक हजार वार आवे आठवा नौवा दशवा गु० नौ वार आवे. इग्यारवा गु० पांच वार आवे. बारहवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे इति।

(५०) अवगाहनाद्वार—जघन्यापेक्षा, पहले से चोथे गु० तक अंगुलके असंख्यातमे भाग पांचवे से चौदह गु० तक प्रत्येक हाथकि। उत्कृष्टापेक्षा पहले से चोथे गु० एकहजार योजन साधिक. पांचवे गु० से चौदहवे गु० तक पांचसो धनुष्यकि अवगाहना है इति।

(५१) स्पर्शनाद्वार--एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अंगुलके असं० भाग उ० चौदहराज दूसरे गु० ज० अंगुलके असं० भाग उ० छेराज उंचा. तीसरे गु० ज० अंगु० छेराज उंचा. चोथा गु० ज० अं० गु० उ० निचा ६ राजा उंचा पांचराज। पांचवेसे चौदहवे गु० तक ज० प्रत्येक हाथ उ० पांचवे गु० निचो उचो पांचराज. छठे गु० से इग्यारवे गु० तक निचो चारराज उंचो सातराज बारहवे चौदहवे पांचसो धनुष्य. तेरहवे गु० सर्व लोकको स्पर्श करे। घणा जीवों कि अपेक्षा पहला गुणस्थान ज० उ० सर्व लोक स्पर्श करे, दूसरे गु० ज० अंगुलके असंख्यातमे भाग उ० दशराज, तीसरे गु० ज० अंगु० उ० सातराज. चोथे गु० ज० लोकके असं० भाग उ० आठराज. पांचवे गु० से चौदहवे गु० ज० लोकके असं० भाग० उ० इग्यारवे गु० तक सातराज. बारहवा लोक के असं० भाग. तेरहवा सर्वलोक स्पर्शे चौदहवा गु० लोकके असंख्यातवे भाग का क्षेत्र स्पर्श करे इति।

(५२) अल्पाबहुत्व द्वार—

(१) सबसे स्तोक इग्यारवें गु० उपशम श्रेणीवाले ५४ है

(२) बारहवें गु० वाले सं० गुणे (१०८) क्षपक श्रेणि

(३) ८-९-१० गु० वाले परस्पर तुल्य विशेषा प्र० सो

(४) तेरहवें गु० वाले सं० गु० प्रत्येक क्रोड जीवों।

(५) सातवें गु० वाले सं० गु० प्रत्येक सो क्रोड।

(६) छट्ठे गु० वाले सं० गु० प्रत्येक हजार क्रोड।

(७) पांचवें गु० वाले असं० गु० तीर्यंचापेक्षा

(८) दूजे गु० वाले असं० गु० (विकलेन्द्री अपेक्षा)

(९) तीजे गु० स्थान वाले असं० गु० (चारगती अपेक्षा)

(१०) चौथे गु० वाले असं० गु० (सम्यक्त्व दृष्टी अपेक्षा)

(११) चौदवें गु० वाले अनं० गु० (सिद्धापेक्षा)

(१२) पहिले गु० वाले अनं० गु० (एकेन्द्रीय अपेक्षा)

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०६

श्री पन्नवणा सूत्र पद १८

(काय स्थिती)

स्थिति दो प्रकारकी होती है भव स्थिति और काय स्थिति। याने एक ही भवमें जितना काल रहे उसको भव स्थिति कहते है। जैसे पृथ्वीकायमें ज० अन्तर मुहूर्त उ० २२००० हजार वर्ष तक रहे। काय स्थिति-जिस कायमें जन्मम-रण करे परन्तु दूसरी कायमें जब तक उत्पन्न न हो उसको काय स्थिति कहते है। जैसे पृथ्वीकायसे मरके फिर पृथ्वीकायमें

उत्पन्न हों इसी तरह एक ही कायमें वारंवार जन्ममरण करे। तो असंख्याते काल तक रह सके उसे काय स्थिति कहते हैं।

सूचना.

१ पुढवीकाल-द्रव्य से असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल, क्षेत्र से असंख्याते लोक॥ काल से असंख्या काल और भाव से अंगुलके असं० भागमें जितने आकाश प्रदेश हो उतने लोक।

२ असंख्याते काल-द्रव्य से क्षेत्र से काल से तो पूर्ववत् और भाव से आवलीकाके असं० भागमें जितना समय हो उतना लोक।

३ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन-जैसे द्रव्य से अनन्ती उत्स० अवस० क्षेत्र से अनन्ता लोक, कालसे अनंतोकाल भाव से अर्द्ध पुद्गल परावर्तन

४ वनस्पति काल-द्रव्य से अनंती सर्पिणि उत्सर्पिणि क्षेत्र से अनंतेलोक, कालसे अनंतोकाल. भावसे असंख्याता पुद्गल परावर्तन।

५ अ० अ०—अनादि अनन्त। ७ अ० सा०-अनादिसान्त।

६ सा० अ०—सादि अनन्त। ८ सा० सा०—सादिसान्त।

गाथा—जीवं[1] गइं[2]दियं[3] काए[4] जोए[5] वेदे[6] कसायं[7] लेसायं[8]।
सम्मत्त[9]णाण[10] दंसणे[11] संजमे[12] उवओगे[13] आहारे[14] ॥ १४॥
भासगयं[15] परित्त[16] पज्जत्त[17] सुहूम[18] सन्नी[19] भवं[20]ऽत्थि[21] चरिमेयं[22]।
एतेसित पदाणं कायठिई होइ णायव्वा ॥ २॥

मार्गणा.	जघन्य कायस्थिति	उत्कृष्ट कायस्थिति०
१ समुचय जीवोंकि	सास्वता	सास्वता
२ नारकीकि काय०	१०००० वर्ष	३३ सागरोपम
३ देवताकि काय	,,	,,
४ देवी ,,	,,	५५ पल्योपम
५ तिर्यंच ,,	अन्तर मुहूर्त	अनंतकाल (बना०)
६ तिर्यंचणी ,,	,,	तीन प० प्रत्येक कोड पूर्व
७ मनुष्य ,,	,,	,, ,, ,,
८ मनुष्यणी ,,	,,	,, ,, ,,
९ सिद्ध भगवान	सास्वता	सास्वता
१० अपर्याप्ता नारकी	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
११ ,, देवता	,,	,,
१२ ,, देवी	,,	,,
१३ ,, तीर्यंच	,,	,,
१४ ,, तीर्यंचणी	,,	,,
१५ ,, मनुष्य	,,	,,
१६ ,, मनुष्यणी	,,	,,
१७ पर्याप्ता नारकी	१०००० वर्ष अन्तर मुहूर्तउणा	३३ सागर अन्तरमुहूर्त कुच्छ कम
१८ ,, देवता	,,	भव स्थि. अ. मु. उणा
१९ ,, देवी	,,	५५ पल्योपम ,,
२० ,, तीर्यंच	अन्तर मुहूर्त	३ पल्य अ. मु. उणा

२१ पर्याप्ता तीर्यंचणी	अन्तर मुहूर्त	३ पल्य अ. मु. उणा
२२ ,, मनुष्य	,,	,, ,,
२३ ,, मनुष्यणी	,,	,, ,,
२४ सइन्द्रिय	०	अनादि अनं. अना. सां०
२५ एकेन्द्रिय	अन्तर मुहूर्त	अनंतकाल (वना०)
२६ बेरिन्द्रिय	,,	संख्याते वर्ष
२७ तेरेन्द्रिय	,,	,,
२८ चौरिन्द्रिय	,,	,,
२९ पंचेन्द्रिय	,,	१००० सागर० साधिक
३० अनेन्द्रिय	०	सादी अनन्त
३१ सकायी	०	अन० अन्त० अ० सा०
३२ पृथ्वीकाय	अन्तर मुहूर्त	असंख्याते काल
३३ अप्पकाय	,,	,,
३४ तेउकाय	,,	,,
३५ वायुकाय	,,	,,
३६ वनस्पतिकाय	,,	अनंतकाल (वन०)
३७ त्रसकाय	,,	२००० सागर सं० वर्ष
३८ अकाय	सादि अणंत	सादी अनन्त
४५-३१ से ३७ नं. अप.	अन्तर मु०	अन्तर मुहूर्त
५०-३२ से ३६ नं. प०	,,	संख्याता वर्ष
५१ सकाय पर्याप्ता	,,	प्रत्येक सौ सागर
५२ त्रस० पर्याप्ता	,,	,,
५३ समुचय बादर	,,	असं. काल असं. जितने
५४ बादर वनस्पति	,,	लोकाकाश प्रदेश हो

५५ समुच्चय निगोद	,,	अनन्तकाल
५६ बादर त्रसकाय	,,	२००० साग० झाझिरी
६२ बादर पृ. अप्प. ते. वा प्रत्येक[५७] व.[५८] बा. नि.[५९]	,,	७० कोडा कोडी साग०
६१ समुच्चय[६०] सूक्ष्म[६१] पृ.[६२] अ. ते.[६३] वा. व. नि.[६४]	,,	असंख्याते काल
८६-५३ से ६९ नं. तक[६५ ६६ ६७ ६८ ६९] के अपर्याप्ता	,,	अन्तरमुहूर्त
९३ समुच्चय सूक्ष्म पृ. अ. ते.[८७] वा. व. और[८८] निगोद पर्याप्ता[८९ ९० ९१ ९२]	,,	,,
९९ बादर[९३] पृ. अ. वा. प्रत्येक बा.व. पर्याप्ता	,,	सं. हजारों वर्ष
१००बादर तेउ. पर्याप्ता	,,	संख्याता अहोरात्री
१०१ समुच्चय बादर प.		प्रत्येक सो साग० साधिक
१०३ समुच्चय निगोद बादर निगोद पर्या.	,,	अन्तरमुहूर्त
०४ सयोगी	...	नादि अनन्त अना. सा.
१०५ मनयोगी	१ समय	अन्तरमुहूर्त
१०६ वचनयोगी	,,	,,
१०७ काययोगी	अन्तर मुहूर्त	अनन्तकाल (वना)
१०८ अयोगी	०	सादि अनन्त

१०९ सवेदी	०	अ० अ, अ० सां, सा० सां
११० स्त्रीवेद	१ समय	११० पल्यो. पृ.को. पृ. सा.
१११ पुरुषवेद	अन्तरमुहूर्त	प्रत्येक सो सागरो०
११२ नपुंसकवेद	१ समय	अनन्त काल (वन)
११३ अवेदी	सादी अनन्त	सा. सा. ज.१ स.उ.अं.मु.
११४ सकषाई	अ. अ. अ. सां	
,, सादिसान्त	सा. सा.	देशोन अर्द्ध पुद्गल
११५ क्रोध	अन्तरमुहूर्त	अन्तरमुहूर्त
११६ मान	,,	,,
११७ माया	,,	,,
११८ लोभ	१ समय	,,
११९ अकषाई	सा.अ. सा. सा.	ज. १ समय उ० अं. मु.
१२० सलेशी	...	अना० अ, अ० सां.
१२१ कृष्णलेशी	अन्तरमुहूर्त	११ सागर अं. मु. अधिक
१२२ नीललेशी	,,	१० ,, पल्य. असं. भा.अ.
१२३ कापोतलेशी	,,	३ ,, ,,
१२४ तेजोलेशी	,,	२ ,, ,,
१२५ पद्मलेशी	,,	१० ,, अन्तरमु. अधिक
१२६ शुक्ललेशी	,,	३३ ,, ,,
१२७ अलेशी	...	सादि अनन्त
१२८ सम्यक्त्वदृष्टि	अन्तरमुहूर्त	सा.अ,सा.सां,६६सा.सा.
१२९ मिथ्यादृष्टि	अ. अ. अ. सा.	सा. सां.
,, सादि सन्त	अन्तर मुहूर्त	अनन्तकाल (अर्द्ध पुद्गल)
१३० मिश्रदृष्टी	,,	अन्तर मुहूर्त

१३१ क्षायक सम्य०	...	सादि अनन्त
१३२ क्षयोपशम०	अन्तर मुहूर्त	६६ सागर साधिक
१३३ सास्वादन	1 समय	६ आवली
१३४ उपशम	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१३५ वेदक	”	”
१३६ सनाणी	अन्तर मुहूर्त	सा. अ, सा० सा, ६६ सा
१३७ मतिज्ञानी	”	६६ सागर साधिक
१३८ श्रुतज्ञानी	”	”
१३९ अवधिज्ञानी	१ समय	”
१४० मनःपर्यवज्ञानी	”	देशोण पूर्व क्रोड
१४१ केवलज्ञानी	०	सादि अनन्त
१४२ अज्ञानी	अ० अ अना०	सा, सा० सा, जिसमें
१४३ मति अज्ञानी	सा सा. कीस्थि	ति जघन्य अन्तर
१४४ श्रुत अज्ञानी	मुहूर्त उ० अन	न्तकालकी (अर्द्ध पुद्गल)
१४५ विभंगज्ञानी	१ समय	३३ सागर पृ० सा०
१४६ चक्षु दर्शन	अन्तर मुहूर्त	प्रत्येक हजार सागरो०
१४७ अचक्षु दर्शन	...	अ० अ० अ० सान्त
१४८ अवधि दर्शन	१ समय	१३२ सागरो साधिक
१४९ केवल दर्शन	...	सा. अनन्त
१५० संयती	१ समय	देशोण पूर्व क्रोडी
१५१ असंयती	अन्तर मुहूर्त	अ० अ० अ० सा० सा०
,, सा० सा०	”	अनन्तकाल (अर्द्ध पु०)
१५२ संयतासंयत	”	देशोण पूर्व क्रोड
१५३ नोस० नोस०	...	सादि अनन्त

१५४ समायक चा०	१ समय	देशोण पूर्व क्रोड
१५५ छेदोपस्थापनीय	अन्तर मुहूर्त	,,
१५६ परिहार वि०	,, १८ मास	,,
१५७ सुक्ष्म संपराय०	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१५८ यथाख्यात०	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५९ साकार उपयोग	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
१६० अनाकार उप०	,,	,,
१६१ आहारक छद्मस्थ	क्षुलक भवदो०स	मय न्थून असं० काल×
१६२ आहारक केवली	अन्तर मुहूर्त	देशोण पूर्व क्रोड
१६३ अणाहारी छद्म०	१ समय	दो समय
१६४ ,,केवली सयोगी	३ समय	३ समय
१६५ ,,केवली अयोगी	पांच ह्रस्व अक्ष	र उच्चार्ण काल
१६६ सिद्ध	...	सादि अनन्त
१६७ भाषक	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१६८ अभाषक सिद्ध	...	सादि अनन्त
१६९ अभाषक संसारी	अन्तर मुहूर्त	अनन्त काल
१७० कायपरत	,,	असं. काल (पुढवीकाल)
१७१ संसार परत	,,	अर्द्ध पुद्गल परावर्त
१७२ काय अपरत	,,	अनन्तकाल (वना. काल)
१७३ संसार अपरत	...	अ० अ० अ०, सां०
१७४ नोपरतापरत	...	सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर मुहूर्त	पृथक्त्व सो सागरो साधिक
१७६ अपर्याप्ता	,,	अन्तर मुहूर्त

× विग्रह न करे ।

१७७ नोपर्याप्ताऽपर्याप्ता	...	सादि अनन्त
१७८ सुक्ष्म	अन्तरमुहूर्त	असं. काल (पुढवीकाल
१७९ बादर	"	असं. काल (लोकाकाश)
१८० नो सुक्ष्म नो बादर	...	सादि अनन्त
१८१ संज्ञी	अन्तरमुहूर्त	पृथक्त्व सो सागर साधि
१८२ असंज्ञी	"	अनन्तकाल (वन)
१८३ नो संज्ञी असंज्ञी	...	सादि अनन्त
१८४ भव सिद्धि	...	अनादि सान्त
१८५ अभव सिद्धि	...	अनादि अनन्त
१८६ नोभवसिद्धि अ.सि	...	सादि अनन्त
१८७ धर्मास्तिकाय	...	अनादि अनन्त
१८८ अधर्मास्तिकाय	...	"
१८९ आकाशास्तिकाय	...	"
१९० जीवास्तिकाय	...	"
१९१ पुद्गलास्तिकाय	...	"
१९२ चर्म	...	अनादि सान्त
१९३ अचर्म	...	अ० अ०, सा० अ०

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०७

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३.

(अल्पाबहुत्व)

जीव ९ गति ५ इन्द्रिय ७ काय ८ योग ५ वेद ५ कषाय ६ लेश्या ८ सम्यक्त्व ३ नाण ८ दर्शन ४ संयम ७ उपयोग २ आहार २ भाषक २ परत ३ पर्याप्ता ३ सुक्ष्म ३ संज्ञी ३ भव्य ३ अस्तिकाय ५ चर्म २ इन २२ द्वारोंका अलग २ अल्पाबहुत्व तथा जीवोंके १४ भेद, गुणस्थानक १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ५ एवं ६२ बोल उतारे जावेंगे।

मार्गणा.	जी० गु० यो० उ० ले०	अल्पाबहुत्व.
१ समुच्चय जीवोंमें	१४-१४-१५-१२-६	वि० ९
२ नारकीमें	३—४-११—९-३	असं० गु० ३
३ तीर्यंचमें	१४—५-१३—९-६	अनं० गु० ८
४ तीर्यंचणीमें	२—५-१३—९-६	असं० गु० ४
५ मनुष्यमें	३-१४-१५-१२-६	असं० गु० २
६ मनुष्यणीमें	२-१४-१३-१२-६	स्तोक १
७ देवतामें	३—४-११—९-६	असं० गु० ५
८ देवीमें	२—४-११—९-४	सं० गु० ६
९ सिद्धमें	०—०—०—२-०	अनं० गु० ७

१ देवगती	३—४-११—९-६	असं० गु० ३
२ मनुष्यगती	३-१४-१५-१२-६	स्तोक १
३ तीर्यंचगती	१४—५-१३—९-६	अनं० गु० ५
४ नरकगती	३—४-११—९-३	असं० गु० २
५ सिद्धगती	०—०—०—२-०	अनं० गु० ४
१ सइन्द्रिय	१४-१२-१५-१०-६	वि० ७
२ एकेन्द्रिय	४—१—५—३-४	अनं० गु० ६
३ बेइन्द्रिय	२—२—४—५-३	वि० ४
४ तेइन्द्रिय	२—२—४—५-३	वि० ३
५ चौरिन्द्रिय	२—२—४—६-३	वि० २
६ पंचेन्द्रिय	४-१२-१५-१०-६	स्तोक १
७ अनेन्द्रिय	१--२-५/७-२-१	अनं० गु० ५
१ सकायी	१४-१४-१५-१२-६	वि० ८
२ पृथ्वीकाय	४—१—३—३-४	वि० ३
३ अप्पकाय	४—१—३—३-४	वि० ४
४ तेउकाय	४—१—३—३-३	असं० गु० २
५ वाउकाय	४—१—५—५-३	वि० ५
६ वनस्पतिकाय	४—१—३—३-४	अनं० गु० ७
७ त्रसकाय	१०-१४-१५-१२-६	स्तोक १
८ अकाय	०—०—०—२-०	अनं० गु० ६
१ सयोगी	१४-१३-१५-१२-६	वि० ५
२ मनयोगी	१-१३-१४-१२-६	स्तोक १
३ वचनयोगी	५-१३-१४-१२-६	असं० गु० २

४ काययोगी	१४-१३-१५-१२-६	अनं० गु० ४
५ अयोगी	१—१—०—२-०	अनं० गु० ३
१ सवेदी	१४—९-१५-१०-६	वि० ५
२ स्त्रीवेदी	२—९-१३-१०-६	सं० गु० २
३ पुरुषवेदी	२—९-१५-१०-६	स्तोक १
४ नपुंसकवेदी	१४—९-१५-१०-६	अनं० गु० ४
५ अवेदी	१—५-११- ९-१	अनं० गु० ३
१ सकषायी	१४-१०-१५-१०-६	वि० ६
२ क्रोध०	१४—९-१५-१०-६	वि० ३
३ मान०	१४—९-१५-१०-६	अनं० गु० २
४ माया०	१४—९-१५-१०-६	वि० ४
५ लोभ०	१४-१०-१५-१०-६	वि० ५
६ अकषायी	१—५—११—९-१	स्तोक १
१ सलेशी	१४-१३-१५-१२-६	वि० ८
२ कृष्णलेशी	१४—६-१५-१०-१	वि० ६
३ नील०	१४—६—१५-१०-१	वि० ७
४ कापोत०	१४—६-१५-१०-१	अनं० ५
५ तेजो०	३—७-१५-१०-१	सं० गु० ३
६ पद्म०	२—७-१५-१०-१	सं० गु० २
७ शुक्ल०	२-१३-१५-१२-१	स्तोक १
८ अलेशी०	१—१—०—२-०	अनं० गु० ४
१ सम्यगदृष्टी	६-१२-१५—९-६	अनं० गु० २
२ मिथ्यादृष्टी	१४—१-१३—६-६	अनं० गु० ३

३ मिश्रदृष्टी	१—१-१०—६-६	स्तोक १
१ सास्वादन	६—१-१३—६-६	स्तोक १
२ क्षयोपशम	२—४-१५—७ ६	असं० गु० ४
३ वेदक	२—४-१५—७-६	सं० गु० ३
४ उपशम	२—८-१५—७-६	सं० गु० २
५ क्षायक	२-११-१५—९-६	अनं० गु० ५
१ सनाणी	६-१२-१५—९-६	वि० ५
२ मतिश्रुति ज्ञानी	६-१०-१५—७-६	वि० ३
३ अवधि०	२-१०-१५—७-६	असं० गु० २
४ मनःपर्यव०	१—७-१४—७-३	स्तोक १
५ केवलनाणी	१—२—5/७-२-१	अनं० गु० ४
१ मतिश्रुति अनाणी	१४-२-१३—६-६	अनं० गु० २
२ विभंगनाणी	२—२-१३—६-६	स्तोक १
१ चक्षुदर्शन	३।६-१२-१४-१०-६	असं० गु० २
२ अचक्षुदर्शन	१४-१२-१५-१०-६	अनं० गु० ४
३ अवधिदर्शन	२-१२-१५-१०-६	स्तोक १
४ केवलदर्शन	१—२—७—२-१	अनं० गु० ३
१ संयती संयम	१—९-१५—९-६	वि० ६
२ सामायक ,,	१—४-१५—७-६	सं० गु० ५
३ छेदोपस्थापनीय ,,	१—४-१५—७-६	सं० गु० ४
४ परिहार विशुद्धि ,,	१—२—९—७-३	सं० गु० २
५ सुक्ष्म संपराय ,,	१—१—९—७-१	स्तोक १

६ यथाख्यात	१—४-११—९-१	सं० गु० ३
७ संयमासंयम	१—१-१२—६-६	असं० गु० ७
८ असंयम	१४—४-१३—९-६	अनं० गु० ८
१ साकारउपयोग	१४-१४-१५-१२-६	सं० गु० २
२ अनाकारउपयोग	१४-१३-१५-१२-६	स्तोक १
१ आहारिक	१४-१३-१४-१२-६	असं० गु० २
२ आणाहारिक	८—५—१—१०-६	स्तोक १
१ भाषक	५-१३-१४-१२-६	स्तोक १
२ अभाषक	१०—५—५-१०-६	अनं० गु० २
१ परत	१४-१४-१५-१२-६	स्तोक १
२ अपरत	१४—१-१३—६-६	अनं० गु० ३
३ नोपरतापरत	०—०—०—२—०	अनं० गु० २
१ पर्याप्ता	७-१४-१४-१२-६	सं० गु० ३
२ अपर्याप्ता	७-३-५-६-६	अनं० गु० २
३ नोपर्याप्ताअपर्याप्ता	०—०—०—२-०	स्तोक १
१ सुक्ष्म	२—१—३—३-३	असं० गु० ३
२ बादर	१२-१४-१५-१२-६	अनं० गु० २
३ नोसुक्ष्मनोबादर	०—०—०—२-०	स्तोक १
१ संज्ञी	२-१२-१५-१०-६	स्तोक १
२ असंज्ञी	१२—२—६—६-४	अनं० गु० ३
३ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी	१—२-५।७—२-१	अनं० गु० २

१ भव्य	१४-१४-१५-१२-६	अनं० गु० ३
२ अभव्य	१४—१-१३—६-६	स्तोक १
३ नोभव्याभव्य	०—०—०—२-०	अनं० गु० २
१ चरम	१४-१४-१५-१२-६	अनं० गु० २
२ अचरम	१४—१-१३—८-६	स्तोक १

पंच अस्तिकायकी अल्पाबहुत्व शीघ्रबोध भाग ८ वां में देखो।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०८।

श्री पन्नवणा सूत्र पद १०

(क्रियाधिकार)

हे भगवान ! जीव अन्त क्रिया करे ? गौतम ! कोई करे कोई न करे ! एवं नरकादि यावत् २४ दंडक और एक समुचय जीव एवं २५ एक जीवाश्रीय और इसी तरह २५ दंडक घणा जीवाश्रीय कुल ५० सूत्र हुवे।

नारकी नारकीपने अन्त क्रिया करे ? गौ० नहीं करे एवं मनुष्य वर्जके शेष २३ दंडक भी कह देना। मनुष्यमें कोई अन्त क्रिया करे कोई न करे। असुर कुमार असुर कुमारपने अन्त क्रिया करे ? गौ० नहीं करे एवं मनुष्य वर्जके २३ दंडक कहना और मनुष्यमें अन्त क्रिया कोई करे कोई न करे इसी तरह २४ दंडक चौवीस दंडक पने लगा लेना। चौवीसको २४ गुणा करनेसे ५७६ सूत्र !

नारकीसे निकल कर अनन्तर अन्त क्रिया करे या परंपर अन्त क्रिया करे ? गौ० अनन्तर और परम्पर अन्त क्रिया करे। एवं रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालूकाप्रभा, और पंकप्रभा, समझ लेना शेष धूमप्रभा, तमःप्रभा, और तमस्तमःप्रभा, अनन्तर अन्त क्रिया न करे किन्तु परम्पर अन्त क्रिया कर सके!

असुरादि दशों देवता परंपर अनंतर दोनों अन्त करे। एवं पृथ्वी, पाणी, वनस्पति भी समझ लेना और तेउ वाउ, तीन विकलेन्द्रि अनंतर नहीं किन्तु परंपर अन्त क्रिया कर सके।

तिर्यंच पंचेन्द्रि मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक अनं० परं० दोनों करे। अगर जो नारकी अन्त क्रिया करे तो एक समय कितना करे इसका अधिकार सिझणा द्वारमें सविस्तार लिखा है। देखो थोकडा नम्बर १२०।

नारकी मरके नारकीमें उपजे ? गौ० नहीं उपजे एवं २२ दंडक नारकी में नहीं उपजे। तीर्यंच पंचेन्द्रिमें कोई उपजे कोई नहीं उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेकों मिले? कोईको मिले कोईको न मिले। जिसको मिले वह समजे? कोई समजे कोई नहीं समजे। जो समझे उसको मतिश्रुति ज्ञान मिले ? हां नियमा मिले। जिसको मतिश्रुति ज्ञान मिले वह व्रत नियम उपवास पोसह पच्चकूखाणादि करे? कोई करे कोई न करे। जो व्रतादि करे उसको अवधिज्ञान होवे ? किसीको अवधिज्ञान उपजे किसीको नहीं उपजे। जिसको अवधिज्ञान उपजे वह दिक्षाले ? नही लेवे।

नारकी मनुष्य पने उपजे उसको व्याख्या अवधिज्ञान तक तीर्यंचवत् करनी। आगे जिसको अवधिज्ञान हो वह दिक्षा ले? कोई ले और कोई न भी ले। जो दीक्षा ले उसको मनः

र्यव ज्ञान उपजे ? किसीको उपजे किसीको नही उपजे । जिसको मनः पर्यव ज्ञान उपजे उसको केवल ज्ञान उपजे ? किसीको उपजे कीसीको नहीं भी उपजे । जिसको उपजे वह अन्त क्रिया करे ? हां केवल ज्ञानवाला नियमा अन्त क्रिया करे ।

दश भुवनपतिकी भी व्याख्या इसी तरह करनी; परन्तु इतना विशेष कि भुवनपति पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमें उपजे। परन्तु उस जगह केवली प्ररुपीत धर्म सुननेको ना मिले, शेष बोल नारकीवत् ।

पृथ्वी, पानी वनस्पति मरके पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रीमें कोई उपजे कोई नहीं उपजे । जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेको न मिले, श्रोत्रेन्द्रियका अभाव है । तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्यमें उपजे उनको व्याख्या नारकीवत् । तेउ वाउ मरके पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रीमें उपजे उसकी व्याख्या पृथ्वीकाय वत् करनी । और जो तिर्यंच पंचेन्द्रीमें उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म किसीको मिले और किसीको नहीं मिले । जिसीको मिल भी जाय तो वह श्रद्धे नहीं और शेष मनुष्य, नारकी देवताके दंडकमें तेउ वाउ नहीं उपजे ।

बेन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरिन्द्रियकी व्याख्या पृथ्वीकायवत् करनी परन्तु इतना विशेष है कि मनुष्यमें मनःपर्यव ज्ञान उपार्जन करे । (केवलज्ञान नहीं.)

तीर्यंच पंचेन्द्रीकी व्याख्या पृथ्वीकायवत् । परन्तु इतना विशेष कि तीर्यंच पंचेन्द्री नारकीमें भी कोई उपजे । कोई नहीं उपजे । जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेको मिले ? किसको मिले किसीको न मिले ! जिसको मिले वह समझे ? कोई समझे कोई नहीं समझे । जो समझे वह श्रद्धे, परतीते, रुचे ? हां समझे यावत् रुचे । जिसको रुचे उसको मति, श्रुति,

अवधि ज्ञान होवे ? हां होवे। जिसको ज्ञान होवे वह व्रत नियम करे ? नही करे इसी तरह तिर्यंच असुर कुमारादिसे यावत् ८ मां देवलोक तक देव पणे उपजे उसकी भी व्याख्या कर देनी मनुष्यमें केवल ज्ञान और अन्त क्रिया भी कर सक्ते है। इसी माफीक मनुष्य थी समझना व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिककी व्याख्या असुरकुमारवत् करनी।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०६

(पद्वि द्वार)

श्री पन्नवणा सूत्र तथा जम्बूद्वीप पन्नती सूत्रसे तेवीस पद्वि.

(१) सात एकेन्द्रिय रत्न

१ चक्ररत्न—खंड साधनेका रस्ता बतानेवाला
२ छत्ररत्न—बारह योजनमें छाया करे
३ दन्डरत्न—तामस गुफाका कमाड खोले
} चार चार हाथ के लम्बे होते हैं

४ खड्गरत्न—वैरीको सजा देनेके लिये ५० अंगुलका लंबा १६ अंगुलका चोडा, आधा अंगुलका जाडा और ४ अंगुलकी मूठ यह चारों रत्न आयुध शालामें उत्पन्न होते हैं

५ मणिरत्न—चार अंगुल लम्बा दो अंगुल चौडा अंधेरेमें प्रकाश करनेवाला।

६ कांगणी रत्न—सोनारकी अरणके आकार। आठ सोनईयों भार तोलमें आठपासा. छे तला, बारहखूंणा. इससे तमिस्रा गुफामें ४९ मांडले किये जाते है।

७ चामर रत्न—दो हाथका लम्बा होते है नदी उतरतां काम
आवे (यह तीन रत्न लक्ष्मीके भंडारमें उत्पन्न
होते है ।

(२) सात पंचेन्द्रिय रत्न

१ सेनापती रत्न—मध्यके दो खन्ड वर्जके शेष ४ खन्ड साधे।

२ गाथापती रत्न—चौवीस प्रकारका अनाज निपजावे । पहिले
पेहरमें बोवे, दूजे पेहरमें पावे, तीजे पेहरमें
लूंणे (काटे) चौथे पहरमें स्थानपर पंहुचा दे।

३ वार्द्धकी रत्न—नगर वसावे ४२ भूमीया मेहल बनावे ।

४ पुरोहित रत्न—शान्ती पाठ पढे या मुहूर्त बतलावे ये चारों
रत्न राजधानीमें उत्पन्न होते है। और चक्र-
वर्तीसे कुछ न्युन होते है ।

५ हाथी रत्न— } ये दोनों रत्न वैताढ्य पर्वतके मूलसें प्राप्त होते है।
६ अश्व रत्न— } और असवारीके काम आते है

७ स्त्री रत्न—विद्याधरोंकी श्रेणीमें उत्पन्न होती है और चक्रव-
र्त्तिके भोगमें आती है। और चक्रवर्त्तिसे चार अंगुल
न्यून होती है ।

(३) नौ बडी पद्वियें.

१ तीर्थंकर—चौतीस अतीशयादि सर्वज्ञ भगवान्

२ चक्रवर्ती—८४ हजार हस्ती, अश्व, रथ ९६ क्रोड पैदल।

३ वासुदेव—चक्रवर्तीसे आधी ऋद्धि बल होता है ।

४ बलदेव—दिक्षा लेके सद्गतीमें जाते है

५ मंडलीक—देशका अधिपति एक राजा होता है ।

६ केवली—अनन्त ज्ञान-दर्शन-चारित्र वीर्यगुण संयुक्त।

७ साधू-८ श्रावक। ९ सम्यक् दृष्टी ।

आवगाद्वार.

पहिली नारकीसे निकले हुवे जीवोंमे है सात एकेन्द्रिय वर्जके शेष १६ पद्वि पावे।

दूसरी नरकसे निकले हुवेमे १५ पद्वि पावे (चक्रवर्ती वर्जके)
तीसरी नरकसे निकला० १३ पद्वि पावे (बलदेव वासुदेव वर्जके)
चौथी नरकसे निकला० १२ पद्वि पावे (तीर्थंकर वर्जके)
पांचमी नरकसे निकला० ११ पद्वि पावे (केवली वर्जके)
छट्ठी नरकसे निकला० १० पद्वि पावे (साधु वर्जके)
सातमी नरकसे निकला० ३ पद्वि पावे. हस्ती० अश्व० और सम्यकूदृष्टि, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीसे निकला हुवा० २१ पद्वि पावे. तीर्थंकर चक्रवर्ती वर्जके। पृथ्वी, पाणी, वन० सन्नी तिर्यंच और सन्नी मनुष्यसे निकला १९ पद्वि पावे (ती-च-ब-वा वर्जके) तेउ, वाउ, विकलेन्द्रीसे निकला० ९ पद्वि. (७ एकेन्द्रीय रत्न, हस्ती और अश्व०) असन्नी मनुष्य. तिर्यंचसे निकला० १८ पद्वि पावे. ७ एकेन्द्री रत्न ७ पंचेन्द्री और नं० म० सा० श्रा० स० एवं १८ पहिले दूसरे देवलोकसे निकला २३ पद्वि पावे।
तीजेसे आठवें देवलोक तकका निकला० १६ पद्वि पावें। (७ पद्वि पंचेन्द्री ९ मोटी० और नौसे बारहवा तथा नौग्रैवेयकसे निकला १४ पद्वि पावे (हस्ती० अश्व नहीं)
पंचानुत्तरसे निकला० ८ पद्वि पावे (वसुदेव वर्जके ८ मोटी०)

जावगाद्वार

नारकी पहिलीसे चोथी तक ११ पद्वि वाले जीव जावे (७ पंचेन्द्रीय पद्वि, चक्री, वासुदेव, सम्यकूदृष्टी और मंडलीक राजा) नारकी ५-६ में ९ पद्वि वाले जावें। (स्त्री, सम्यगूदृष्टीवर्जके) पांच स्थावरमें १४ पद्वि वाले जावें। एकेन्द्री ७ पंचेन्द्रीय ६ (स्त्री नहीं) और मंडलीक० एवं १४॥ विकलेन्द्री ३ असन्नी मनुष्य तिर्यंचमें

१५ पद्विवाले जीव जावे यथा (१४ पूर्ववत् और सम्यगदृष्टी) सन्नी मनुष्य तिर्यंचमें १५ पद्वि वाले जावे पूर्ववत् ।

भुवनपती १० व्यन्तर, ज्योतिषी, १-२ देवलोकमें १० पद्वि वाले जावे (स्त्री वर्जके ६ पंचेन्द्री, साधु, श्रावक, सम्यग० और मंडलीक । तीजेसे आठमें देवलोकमें १० पद्वि वाले जावे पूर्ववत् परन्तु आराधिक । नौवेसे बारमें देवलोकमें ८ पद्वि वाले जावे पूर्ववत् परन्तु (हस्ती अश्व वर्ज के) आराधिक । नौवेसे बारवें देवलोकमें ८ पद्वि पावे जावे साधु, श्रावक, सम्यक० मंडलीक० सेनापती, गाथापती, वार्द्धकी, प्रोहत नौग्रैवेक, पंचानुत्तरमें दो पदवी वाले जावे (साधु. सम्यगदृष्टी)

पावणद्वार.

नारकी देवतामें पदवी १ मिले (सम्यगदृष्टी)

पृथ्वीकायमें ७ पद्वि मिले (एकेन्द्री रत्न ७)

चार स्थावरमें पदवी नहीं मिले ।

विकलेन्द्री ३ में १ पद्वि मिले (सम्यगदृष्टी, अपर्याप्ति अवस्थामें)

समुच्चय तिर्यंचमें ११ पद्वि मिले (एकेन्द्री ७, अश्व, हस्ती, श्रावक, सम्यगदृष्टी)

तिर्यंचपंचेन्द्रीमें ४ पद्वि मिले (हस्ती० अश्व० श्रावक० सम्यगदृष्टी)

असन्नी तिर्यंचमें ८ पद्वि मिले (सातेकेन्द्रि और सम्यगदृष्टी)

नपुंसकमें ११ पद्वि मिले (७ एकेन्द्री, साधु, केवली, श्रावक, सम्यगदृष्टी)

कृतनपुंसकमें ४ पद्वी मिले (साधु, केवली, श्रावक, सम्यगदृष्टी)

जन्मनपुंसकमें २ पद्वी मिले [श्रावक, सम्यगदृष्टी]

समुच्चयपंचेन्द्रीमें १६ पद्वि मिले (एकेन्द्रीय ७ वर्जके)

समुच्चय मनुष्यमें १४ पद्वि मिले (७ एकेन्द्रीय, अश्व, हस्ती वर्जके)

पुरुषवेदमें १२ पद्वि मिले (७ एकेन्द्रीय और स्त्री० वर्जके

साधुमें १२ पद्धि मिले चार पांचेन्द्रिय ८ वडी पद्धि
अढाई द्वीपके बाहर २ पद्धि मिले (श्रावक० सम्यगदृष्टी)

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११०

(गत्यागति)

जीव मरके दूसरी गतीमें उत्पन्न होता है उसको गति कहते हैं। और जिस गतीसे आकार उत्पन्न होता है उसको आगती कहते हैं। जैसे नारकीसे निकलकर जिस गतिमें जावे (यथा रत्नप्रभा नारकीका जीव तीर्यंचके १० और मनुष्य गतिके ३० भेदोंमें उत्पन्न होता है। उसको गती कहते हैं। और १० भेदें तीर्यंचके जीव १५ भेदे मनुष्यके जीव रत्नप्रभा नारकीमें उत्पन्न होता हैं-उसको आगती कहते हैं। इसी तरह सब जगह समझ लेना।

मार्गणा			न०	ती०	मनुष्य	देवता.	समुचय.
१ रत्नप्रभा	नारकीकी	आगती	०	१०	१५	०	२५
२ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०
३ शर्कर०	,,	आगती	०	५	१५	०	२०
४ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०
५ वालूप्रभा	,,	आगती	०	+४	१५	०	१९
६ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०

७ पंकप्रभा	,,	आगती	०-+३-	१५-	०-		१८
८ ,,	,,	गती	०-१०-	३०-	०-		४०
९ धूमप्रभा	,,	आगती	०-×२-	१५-	०-		१७
१० ,,	,,	गती	०-१०-	३०-	०-		४०
११ तमप्रभा	,,	आगती	०-×१-	१५-	०-		१६
१२ ,,	,,	गती	०-१०-	३०-	०-		४०
१३ तमस्तमः	,,	आगती	०- १-	१५-	०-		१६
१४ तमस्तम नारकीकी गती				०-१०-	०-	०-	१०
१५ भुवनपति व्यंतर कि आगती				०-१०-१०१-		०-	१११
१६ ,, गती				०-१६-	३०-	०-	४६
१७ ज्योतिषी सौधर्म दे० आगती				०- ५-	४५-	०-	५०
१८ ,, ,, गती				०-१६-	३०-	०-	४६
१९ दूजा दे० आगती				०- ५-	३५-	०-	४०
२० ,, गती				०-१६-	३०-	०-	४६
२१ प्रथम किल्विषी कि आगती				०- ५-	२५-	०-	३०
२२ ,, गती				०-१६-	३०-	०-	४६
२३ तीजेसे आठवे दे० आगती				०- ५-	१५-	०-	२०
२४ ,, गती				०-१०-	३०-	०-	४०
२५ नौवे दे०से सर्वार्थसिद्ध आगतो				०- ०-	१५-	०-	१५
२६ ,, गती				०- ०-	३०-	०-	३०
२७ पृ० पाणी० वन० आगती				०-४८-	१३१-	६४-	२४३
२८ ,, ,, ,, गती				०-४८-	१३१-	०-	१७९
२९ तेउ वाउ आगती				०-४८-	१३१-	०-	१७९
३० ,, ,, गती				०-४८-	०-	०-	४८
३१ तीन विकलेन्द्री आगती				०-४८-	१३१-	०-	१७९
३२ ,, गती				०-४८-	१३१-	०-	१७९

+ भुज० वर्जे। खेचरवर्जे. थलचर. उजपुरवर्जे ×

३३	असन्नी तीर्यंच पंचेन्द्री.	आगती	०-४८-१३१- ०-१७९
३४	,, ,,	गती	२-४८-२४३-१०२-३९५
३५	सन्नी ,,	आगती	७-४८-१३१- ८१-२६७
३६	,, ,,	गती	१४-४८-३०३-१६२-५२७
३७	जलचर	आगती ...	१४-४८-३०३-१६२-५२७
३८	थलचर	पाँचोंकी ...	८-४८-३०३-१६२-५२१
३९	खेचर	३६७ की ..	६-४८-३०३-१६२-५१९
४०	उरपरी	है. गती ...	१०-४८-३०३-१६२-५२३
४१	भुजपरी	कहते हैं ...	४-४८-३०३-१६२-५१७
४२	असन्नी मनुष्यकि	आगती	०-४०-१३१- ०-१७१
४३	,, ,,	गती	०-४८-१३१- ०-१७९
४४	सन्नी मनुष्यकि	आगती	६-४०-१३१- ९९-२७६
४५	,, ,,	गती	१४-४८-३०३-१९८-५६३
४६	देवकुरु उत्तरकुरुकि	आगती	०- ५- १५- ०- २०
४७	,, ,,	गती	०- ०- ०-१२८-१२८
४८	हरीवास रम्यककी	आगती	०- ५- १५- ०- २०
४९	,, ,,	गती	०- ०- ०-१२६-१२६
५०	हेमवय पेरणवयकी	आगती	०- ५- १५- ०- २०
५१	,, ,,	गती	०- ०- ०-१२४-१२४
५२	छप्पन अन्तरद्वीप	आगती	०-१०- १५- ०- २५
५३	,, ,,	गती	०- ०- ०-१०२-१०२
५४	तीर्थंकरकी	आगती	३- ०- ०- ३५- ३८
५५	,,	गती	०- ०- ०- मोक्ष
५६	केवलीकी	आगती	४- ८- १५- ८१-१०८
५७	,,	गती	०- ०- ०- ०- मोक्ष
५८	चक्रवर्तीकी	आगती	१- ०- ०- $\frac{८१}{९९}$- $\frac{८२}{१००}$
५९	,,	गती	१४- ०- ०- ०- १४

६० बलदेवकी आगती	२	०	०	८३/९२	८३/१०१
६१ ,, गती	पदवी अमर (दिक्षा ले)				
६२ वासुदेवकि आगति	२	०	०	३०	३२
६३ ,, गति	१४	०	०	०	१४
६४ मंडलीक राजा आगती	६	४०	१३१	९९	२७६
६५ ,, ,, गति	१४	४८	३०३	१७०	५३५
६६ साधु आराधिक आगती	५	४०	१३१	९९	२७५
६७ ,, ,, गती	०	०	०	७०	७०
६८ साधु विराधिक आगती	५	४०	१३१	९४	२७०
६९ ,, ,, गती	०	०	०	१२४	१२४
७० श्रावक आराधिक आगती	६	४०	१३१	९९	२७६
७१ ,, ,, गती	०	०	०	४२	४२
७२ ,, विराधिक आगती	६	४०	१३१	९४	२७१
७३ ,, ,, गती	०	०	०-१२२	१२२	
७४ सम्यक्त्वदृष्टीकी आगती	७	४०	२१७	९९	३६३
७५ ,, गती	१२	१८	३०	११८/१६२	२५८/२२२
७६ मिथ्यादृष्टीकी आगती	७	४८	२१७	९४	३६६
७७ ,, गती	१४	४८	३०३	१८८	५५३
७८ मिश्रदृष्टीकी आगती	७	४८	२१७	९४	३६६
७९ ,, गती	अमर (काल न करे)				
८० स्त्रीवेदकी आगती	७	४८	२१७	९९	३७१
८१ ,, गती	१२	४८	३०३	१९८	५६१
८२ पुरुष वेदकी आगती	७	४८	२१७	९९	३७१
८३ ,, गती	१४	४८	३०३	१९८	५६३
८४ नपुंसकवेदकी आगती	७	४८	१३	९९	२८६
८५ ,, गती	१४	४८	३०३	१९८	५६३

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १११

श्री पन्नवणा सूत्र पद ६

(गत्यागती)

१ रत्नप्रभा नारकीकी आगती ११ की-पांच सन्नी तीर्यंच, पांच असन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य. एवं ११ तथा गती ६ की पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य।

२ शर्करप्रभा नारकीकी आगती ६ की—पांच सन्नी मनुष्य और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य। तथा गती ६की-पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

३ वालुप्रभा नारकीकी आगति ५ की—भुजपरी तीर्यंच वर्जके उपरवत् पांच और गति ६ की पूर्ववत्।

४ पंकप्रभा नारकीकी आगति ४ की—खेचर वर्जके शेष ४ पूर्ववत् और गती ६ की पूर्ववत्।

५ धूमप्रभा नारकीकी आगत ३ की—थलचर वर्जके शेष ३ पूर्ववत् और गति ६ की पूर्ववत्।

६ तमप्रभा नारकीकी आगत ४ की—स्त्री, पुरुष, नपुंसक और जलचर तथा गती ६ की पूर्ववत्।

७ तमःतमप्रभा नारकीकी आगती ३ की—पुरुष, नपुंसक और जलचर तथा गती ५ की (सन्नी तीर्यंच पांच)

दश भुवनपती, व्यंतरकी आगती १६ की—पांच सन्नी पांच असन्नी तीर्यंच १० संख्याते वर्षका कर्म भूमि मनुष्य ११

असंख्याते वर्षका कर्म भूमी मनुष्य १२ अकर्म भूमि १३ अन्तर द्वीप १४. खेचर युगलीया १५ थलचर युगलीया. १६ तथा गती ९ की—पांच सन्नी तीर्यंच ५ संख्याता वर्षका कर्मभूमि मनुष्य ६ पृथ्वी० ७ अप्प० ८ वनास्पति ९।

ज्योतिषी सौधर्म ईशान देवलोककी आगती ९ की—पांच सन्नी तीर्यंच, संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य, असंख्याते वर्षका कर्मभूमि, अकर्मभूमि, और थलचर युगलीया। तथा गती ९ की भुवनपतीवत्।

तीजे देवलोकसे आठमें देवलोक तककी आगती ६ की—पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य। तथा गती ६ की—पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

नौमें देवलोकसे बारमें देवलोक तककी आगती ४ की—संयती, असंयती, संयतासंयती और मिथ्यादृष्टी मनुष्य। तथा गती १ संख्यात वर्षका कर्मभूमि मनुष्यकि.

नौग्रैवैक बिमान की आगती २ की—साधुलिंग सम्यगदृष्टी और साधुलिंग मिथ्यादृष्टी। तथा गती १ संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

पांच अनुत्तर विमानकी आगती २ की—अप्रमत्त ऋद्धि पत्ता और अप्रमत अऋद्धि पत्ता। तथा गती १ सं० वर्षका कर्म भूमि मनुष्य।

पृथ्वी, अप्प० वनस्पति० की आगती ७४ की-तीर्यंच ४६ (वनस्पति ६ की जगह ४ समझना) मनुष्य ३ भुवनपती १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ सौधर्म, ईशान देवलोक। तथा गती ४९ कि तीर्यंच के ४६ मनुष्य के ३।

तेउ० वायु० की आगती ४९ की—तीर्यंच के ४६ मनुष्य ३ तथा गती ४६ कि तीर्यंचके

विकलेन्द्रियकी आगती ४९ की पूर्ववत् तथा गती भी इसी तरह ४९ की ।

तीर्यंच पंचेन्द्रियकी आगती ८७ की-तीर्यंच ४६ मनुष्य ३ भुवनपती १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ देवलोक ८ और नारकी ७ एवं ८७ तथा गती ९२ की—८७ पूर्ववत् संख्याते वर्षका कर्म भूमि असंख्याते वर्षका कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तरद्वीपा, स्थलचर युगलीया एवं ९२ ।

मनुष्यकी आगती ९६ की—तीर्यंच ३८ (तेउ० वायुका ८ वर्जके) मनुष्य ३ भूवनपती १० व्यंतर ८ ज्योतिषी ५ देवलोक १२ ग्रैवेक विमान ९ अनुत्तर विमान ५ नारकी ६ एवं ९६ तथा गती १११ की—९६ पूर्ववत तेउ० वाउ० ८ सातमी नारकी, असंख्याते वर्ष कर्मभूमि अकर्मभूमि अन्तर द्वीपा, स्थलचर युगलीया, खेचर युगलीया और सिद्ध गती एवं १११

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११२

श्री पन्नवणा सूत्र पद २१ ।

(शरीर)

(१) नामद्वार---औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर तेजस शरीर कार्मण शरीर.

(२) अर्थ द्वार—(१) औदारिक शरीर याने हाडमांस लोही राधयुक्त सडण पडण विद्धंसण धर्मवाला होनेपर भी तीर्थंकर गणधरादि इस शरीरको धारण किया है मोक्ष जानेमे यह शरीर प्रधान कारण है वास्ते इस शरीर को प्रधान माना गया है (२) वैक्रिय शरीर औदारिकसे विप्रीत और दृश्यादृश्य नाना प्रकारका रुप बनावे। (३) आहारीक शरीर चौदह पूर्वधर बनावे जिसके चार कारण है यथा प्रश्न पूछनेके लिये तीर्थंकरोंकी ऋद्धि देखनेके लिये, संशय निवारण करनेके लिये जीव रक्षाके लिये। (४) तेजस शरीर, आहारके पाचन क्रिया करनेवाला (५) कार्मण शरीर, पचे हुवे आहारको यथायोग्य प्रणमावे।

(३) अवगाहना द्वार---औदारिक, वैक्रियकी जघन्य अंगुलके असं० भाग उ० औदारिककी १ हजार योजन साधिक, वैक्रियकी १ लक्षयोजन साधिक। आहारक शरीरकी ज० १ हाथ ऊणा उ० १ हाथ। तेजस, कार्मणकी ज० अंगुलके असं० भाग उ० १४ राज प्रमाण।

(४) शरीर संयोग द्वार---औदारिकमें तेजस कार्मणकी नियमा शेष दोकी भजना। वैक्रियेमें तेजस कारमणकी नियमा

औदारिककी भजना आहारक नहीं। आहारकमें वैक्रिय नहीं शेष ३ शरीरकी नियमा। तेजसमें कार्मणकी नियमा। कार्मणमें तेजसकी नियमा बाकी तीन शरीरकी भजना।

(५) द्रव्य द्वार--औदारिक० वैक्रिय शरीरका द्रव्य असंख्याते असंख्याते है। आहारक० संख्याते०। तेजस कार्मणका अनंते अनन्ते है।

(६) प्रदेश द्वार--प्रदेश पांचो शरीरोंके अनन्ते अनन्ते है।

(७) द्रव्यकी अल्पाबहुत्व द्वार--सबसे स्तोक आहारक शरीरके द्रव्य, वैक्रिय श० द्रव्य असं० गु० औदारिक श० द्रव्य असं० गु० तेजस कार्मण परस्पर तुल्य अनं० गु०।

(८) प्रदेशका अल्पा बहुत्व--सबसे स्तोक आहारक शरीरका प्रदेश,। वैक्रिय श० प्र० अस० गु०। औदारिक श० प्र० असं० गु०। तेजस श० प्र० अनं० गु० कार्मण श० प्र० अनं० गु०।

(९) द्रव्य प्रदेशकी अल्पा बहुत्व--

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीरका द्रव्य (२) वैक्रिय श० का द्रव्य असं० गु० (३) औदारिक श० का द्रव्य असं० गु० (४) आहारिक श० का प्रदेश अनं० गु० (५) वैक्रिय श० का प्रदेश असं० गु० (६) औदारिक श० का प्रदेश असं० गु० (७) तेजस कार्मण श० द्रव्य अनन्त गु० (८) तेजस श० प्रदेश अनं० गु० (९) कार्मण श० प्रदेश अनं० गु०

(१०) स्वामी द्वार--औदारिक श० का स्वामी मनुष्य तीर्यंच वैक्रिय श० का स्वामी चारों गतीके जीव। आहारक श० के स्वामी चौदह पूर्वधर मुनि। तेंजस कारमण का स्वामि चारों गति के जीव होते है।

(११) संस्थान द्वार—औदारिक, तेजस, कार्मण श० में छे संस्थान। वैक्रियमें दो (सम० हुड०) आहारकमें १ समचौरस।

(१२) संहनन द्वार—औदारिक, तेजस कार्मण छे संहनन वैक्रिय श० में संहनन नहीं। आहारकमें १ वज्रऋषभनाराच।

(१३) सुक्ष्म बादर द्वार—(१) सबसे सुक्ष्म कार्मण श० (२) उससे तेजस बादर (३) आहारक बादर (४) वैक्रिय बादर (५) औदारिक बादर। सबसे बादर औदारिक उससे वैक्रिय सूक्ष्म। आहारक सुक्ष्म। तेजस सुक्ष्म। कार्मण सुक्ष्म।

(१४) प्रयोजन द्वार—औदारिकका प्रयोजन आठ कर्मोंको क्षय करके मोक्षमें जानेका है। वैक्रियका प्रयोजन नाना प्रकारका रुप बनाना। आहारकका प्रयोजन संशय छेदन करना। तेजस कार्मणका प्रयोजन संसारमें भवभ्रमण करानेका है।

(१५) विषय द्वार—औदारिकको विषय रुचकद्वीप, तक वैक्रियकि असंख्याते द्वीप समुद्र तक। आहारककि अढाई द्वीप तक। तेजस कार्मणकि चौदह राजलोक तक कि विषय है।

(१६) स्थिति द्वार—औदारिक, ज० अन्तर मु० उ० तीन पल्योपम। वैक्रिय ज० १ समय उ० ३३ सागरोपम। आहारक ज० उ० अन्तर मुहूर्त। तेजस कार्मणकी अनादि अनन्त अनादि सान्त।

(१७) अवगाहनाकी अल्पाबहुत्व।

(१) सबसे स्तोक औदारिक शरीरकी ज० अवगाहना
(२) तेजस कार्मणकी ज० अ० वि०
(३) वैक्रियकी ज० अ० असं० गु०
(४) आहारककी ज० अ० ”

(१८) अल्पाबहुत्व द्वार
(१ स्तोक आहारीक शरीर
(२) वैक्रय श० असं० गु०

(५) " की उ० " वि०	(३) औदारिक श० असं० गु.
(६) औदारिकी " " सं० गु०	(४) तेजस कारमण आपस
(७) वैक्रियकी " " "	में तुल्य और अनंत गु.
(८) तेजसकार्मण " " असं० गु०	

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११३

श्री भगवती सूत्र श० १९ उ० ३

(अवगाहना अल्पा०)

(१) सबसे स्तोक सुक्ष्म निगोदके अपर्याप्ताकी जघन्य अवगाहना
(२) सुक्ष्म वायुकायके अपर्या० की ज० अव० असं० गु०
(३) सुक्ष्म तेउ० " " " " "
(४) सुक्ष्म अप्प० " " " " "
(५) सुक्ष्म पृथ्वी० " " " " "
(६) बादर वायु० " " " " "
(७) बादर तेउ० " " " " "
(८) बादर अप्प० " " " " "
(९) बादर पृथ्वी० " " " " "
(१०) बादर निगोद " " " " "
(११) प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिके अप० ज० अव० असं० गु०
(१२) सुक्ष्म निगोद पर्या० की ज० अव० असं० गु०
(१३) सुक्ष्म निगोद अप० की उत्कृष्ट अव० वि०
(१४) " पर्या० की " " "

(१५) सुक्ष्म वायु० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(१६) ,, अप० उ० अव० वि०
(१७) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(१८) सुक्ष्म तेउ० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(१९) ,, अप० उ० अव० वि०
(२०) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(२१) सुक्ष्म अप्प पर्या ज० अव० असं० गु०
(२२) ,, अप० उ० अव० वि०
(२३) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(२४) सुक्ष्म पृथ्वी० पर्या ज० अवअ० सं० गु०
(२५) ,, अप० उ० अव० वि०
(२६) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(२७) बादर वायु० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(२८) ,, अप० उ० अव० वि०
(२९) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(३०) बादर तेउ० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(३१) ,, अप० उ० अव० वि०
(३२) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(३३) बादर अप्प० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(३४) ,, अप० उ० अव० वि०
(३५) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(३६) बादर पृथ्वी० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(३७) ,, अप० उ० अव० वि०
(३८) ,, पर्या० उ० अव० वि०
(३९) बादर निगोद०पर्या० ज० अव० असं गु०
(४०) ,, अप० उ० अव० वि०
(४१) ,, पर्या० उ० अव० वि०

(४२) प्रत्येक शरीर बादर वन० पर्या० ज० अव० असं० गु०
(४३) „ „ अप० उ० अव० असं० गु०
(४४) „ „ पर्या० उ० अव० असं० गु०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११४

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ० ५ ।

(सप्रदेश)

पुद्गल चार प्रकारके होते है—द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे, और भावसे जिसमें द्रव्यसे पुद्गलोंके दो भेद-सप्रदेशी (द्विपरमाणु-वादि) और अप्रदेशी (परमाणु) क्षेत्रसे पु० के दो भेद-सप्रदेशी (दो प्रदेशीसे यावत् असं० प्रदेश अवगाह) और अप्रदेशी (एक आकाश प्रदेश अवगाही) कालसे पुद्गलोंके दो भेद—सप्रदेशी (दो समयसे यावत् असं० समयकी स्थितिका) और अप्रदेशी (एक समयकी स्थितिको) भावसे पुद्गलोंके दो भेद—सप्रदेशी (दो गुण कालेसे यावत् अनन्त गुण काला) और अप्रदेशी (एक गुण काला)

जहां द्रव्यसे अप्रदेशी है वहां क्षेत्रसे नियमा अप्रदेशी है । कालसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी । एवं भावसे और क्षेत्र से अप्रदेशी है वह द्रव्यसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी । एवं कालसे भावसे ॥ और कालसे अप्रदेशी है वह द्रव्यसे क्षेत्रसे भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात अप्रदेशी है । और भावसे अप्रदेशी है वह द्रव्यक्षेत्रकालसे स्यात सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है और

जो द्रव्यसे सप्रदेशी है वह क्षेत्रसे कालसे भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात अप्रदेशी है। और क्षेत्रसे सप्रदेशी है वह द्रव्यसे नियमा सप्रदेशी है। और कालसे भावसे स्यात सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है। और कालसे सप्रदेशी है वह—द्रव्य क्षेत्र भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है। और भावसे सप्रदेशी है। वह द्रव्यसे क्षेत्रसे कालसे स्यात् सप्रदेशी स्यात अप्रदेशी है।

(अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक भवसे अप्रदेशी द्रव्य
(२) कालसे अप्रदेशी द्रव्य असं० गु०
(३) द्रव्यसे अप्रदेशी द्रव्य असं० गु०
(४) क्षेत्रसे अप्रदेशी द्रव्य असं० गु०
(५) क्षेत्रसे सप्रदेशी द्रव्य असं० गु०
(६) द्रव्यसे सप्रदेशी द्रव्य वि०
(७) कालसे सप्रदेशी द्रव्य वि०
(८) भावसे सप्रदेशी द्रव्य वि०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ११५

श्री भगवती सूत्र श० ५ उ० ८।

(हियमाणा वड्ढमाणा)

हे भगवान्! जीव हियमान (न्यून होना) है वड्ढमाण (वृद्धि होना) है या अवस्थित है? गौ० जीव हियमान नहीं है।

वृद्धिमान नहीं है किन्तु अवस्थित है। नारकीके नेरीयोंकी पृच्छा? नारकीके नेरीया हियमान० भी है वृद्धिमान भी है और अवस्थित भी है एवं यावत् २४ दंडक कहना सिद्ध भगवान वृद्धमान है और अवस्थित है।

समुचय जीव अवस्थित रहे तो सदाकाल सास्वता, नारकीका नैरीया हियमान वृद्धमान रहे तो ज० एक समय उ० आविलीकाके असं० भाग, और अवस्थित रहे तो विरह कालसे दुगुणा। "देखो शीघ्रबोध भाग १ में विरह द्वार"। एवं चौवीस दंडकमें हियमान वृद्धमान नारकीवत् और अवस्थित काल विरह द्वारसे दुगणा, परन्तु पांच स्थावरमें अवस्थित कालहियमानवत् समज लेना। सिद्धोंमें वृद्धमान ज० एक समय उ० आठ समय और अवस्थित काल ज० एक समय उ० छे मास इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नंबर ११६

श्री भगवती सूत्र श० ५ उ० ८।

(सावचया सोवचया)

हे भगवान! जीव [1]सावचया है या [2]सोवचया है? या सावचया [3]सोवचया है? या [4]निरुवचया निरवचया? जीव निरुवचया निरवचया? है शेष तीन भांगा नहीं। नारकी आदि २४ दंडकमें पूर्वोक्त चारों भांगा पावे। सिद्धोंमें भांगा दो [१] सावचया [२] निरुवचया निरवचया।

---

१ वृद्धि। २ हानी। ३ वृद्धि हानी। ४ वृद्धि नहीं हानी नहीं।

समुचय जीवमें निरुवचया निरवचया है वह सर्वाद्धं है और नारकीमें निरुवचया निरवचया वर्जके शेष तीन भागोंकी स्थिति ज० एक समय उ० आवलीकाके असं० भाग और निरुवचया निरवचयाकी स्थिति विरह द्वार सदृश समझना परन्तु पांच स्थावरमें निरुवचया निरवचया भी ज० एक समय उ० आविली-काके असं० भाग, सिद्ध भगवानमें सावचया ज० एक समय उ० आठ समय और निरुवचया निरवचया ज० एक समय उ० छे मास: इति ।

नोट—पांच स्थावरमें अवस्थित काल तथा निरुवचया निरवचया काल अवलिकाके असं० भाग कहा है वह परकाया-पेक्षा है स्वकायका विरह नहीं है ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० ११७

श्री पन्नवणासूत्र पद १४.

(कषायपद)

जिन महात्माओंने चतुर्गती रूप घोर संसारको तैरके परम पदको प्राप्त किया है वे सब इस कषायके स्वरूपको समझके और इसका परित्याग करके ही अक्षय सुख [मोक्ष पद] को प्राप्त हुए हैं । विना इसके परित्याग किये अक्षय सुखकी प्राप्ति कदापि नहीं हो सक्ती इस लिये पहिले इसको यथावत् समझे और फिर उसका त्याग करें ।

कषाय चार प्रकारका है-क्रोध, मान, माया और लोभ. जिसमें पहिले एक क्रोधकी व्याख्या करते हैं। क्रोधकी उत्पत्ती चार कारणोंसे होती है यथा।

[१] अपने लिये [स्वकार्य] [२] परके लिये [कुटुम्बादि]
[३] दोनोंके लिये [स्वपर] [४] निरर्थक [विना कारण]

और भी क्रोधके उत्पत्तीका चार कारण कहे है यथा।

[१] शरीरके लिये। [२] उपाधी-धनधान्यादि वस्तुके लिये। [३] क्षेत्र-जगा-जमीनादिके लिये। [४] वत्थु-बागबगीचा खेती आदिके लिये।

क्रोध चार प्रकारका है।

[१] अनन्तानुबंधी-पत्थरकी रेखा सदृश।
[२] अप्रत्याख्यानी-तलावके मट्टीकी रेखा सदृश।
[३] प्रत्याख्यानी-गाडीके पंहियेकी लकीर सदृश।
[४] संज्वल-पानीकी लकीर सदृश।

ओर भी क्रोध चार प्रकारका कहा है।

[१] उपशान्त-उपशमा हुवा। [२] अनोपशान्त-उदयमें वर्तता।
[३] आभोग-जानता हुवा। [४] अनाभोग-अनजानता हुवा।

एवं सोलह प्रकारका क्रोध समुचयजीव करे। इसी माफक २४ दंडकके जीवों करें। इस लिये १६ का २५ गुणा करनेसे ४०० भांगे हुवे।

एक जीव क्रोध करनेसे भूत कालमें आठों कर्मोंके पुद्गल एकत्रित[1] किये। वर्तमानमें करते है[2]। और भविष्यमें [3]करेंगे। एवं विशेषकर कर्म पुद्गलोंको एकत्रितकर बन्ध सामग्री योग्य [4]किया, [5]करे और [6]करेंगें, इसी तरह क्रोध करके आठों कर्म बांध्यां बांधे, [3]बाधसी,-उदीरीया, उदीरे, [3]उदीरसी-वेदीया, वेदे, [3]वेदसी-और निर्जरीया, निर्जरे, [3]निर्जरसी एवं एक जीवा श्रीय क्रोधके १८ भांगे हुवे। इसी तरहे घणा जीवोंश्रय भी १८, कुल ३६ यह समुचय जीवोंश्रय कहा। इसी माफक २४ दंडकमें भी ३६-३६ भांगे लगानेसे २५ को ३६ गुणा करनेसे ९०० और पूर्वके ४०० एवं १३०० भांगे हुवे. इसी तरह मान, माया, लोभके लगानेसे १३०० को चारगुण कुल ५२०० भांगे हुवे।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं ११८

श्री भगवती सूत्र श० १ उ० ५।

(कषाय)

[1]स्थिति ४ [2]अवगाहना ४ शरीर ५ संहनन ६ संस्थान ६ लेश्या ६ दृष्टी ३ नाण ८ योग ३ उपयोग २ एवं ४७ बोल जिसमें नारकी आदि २४ दंडकमें कितने कितने बोल मिले वह यंत्र द्वारा दिखाते है—

मार्गणा.	बोल	स्थि ४	अ. ४	श. ५	सं. ६	सं. ६	ले. ६	दृ. ३	ना ८	यो ३	उ. २
नारकीमें	२९	४	४	३	०	१	३	३	६	३	२
भुवन व्यन्तर	३०	४	४	३	०	१	४	३	६	३	२
ज्यो यावत् अच्युत् दे०	२७	४	४	३	०	१	१	३	६	३	२
नौग्रेवक वै०	२६	४	४	३	०	१	१	२	६	३	२
अनुत्तर वैमान	२२	४	४	३	०	१	१	१	३	३	२
पृ० पा० वना०	२३	४	४	३	१	१	४	१	२	१	२
तेउ० वाउ०	२२	४	४	३/४	१	१	३	१	२	१	२
विकलेन्द्रिय	२६	४	४	३	१	१	३	२	४	२	२
तीर्यंच पंचेन्द्रिय	४४	४	४	४	६	६	६	३	६	३	२
मनुष्यमें	४७	४	४	५	६	६	६	३	८	३	२

१ स्थितिके चार भेद है—यथा [१] जघन्य स्थिति [२] जघन्य स्थितिसे एक समय दो समय तीन समय यावत् संख्याते समय अधिक [३] संख्याते समयसे एक समय अधिक यावत् असंख्याते समय अधिक [४] उत्कृष्ट स्थिति।

२ अवगाहनाके चार भेद है यथा—[१] जघन्य अवगाहना [२] जघन्य अवगाहनासे एक दो तीन यावत् संख्याते प्रदेश अधिक [३] संख्यातेसे एक दो तीन यावत् असंख्याते प्रदेश अधिक [४] उत्कृष्ट अवगाहना।

शेष सात द्वारोंके बोल सुगम है देखो लघुदंडकमें।

नारकीमें बोल पावे २९ जोकी स्थितिके चार भेद हैं जिसमेंसे दूसरा भेद और अवगाहनाके दूसरे तीसरे भेद और मिश्र दृष्टी एवं चार बोलोंमें क्रोधी मानी मायी लोभी इन चारों कषायके ८० भांगे होते हैं। शेष २५ बोलोंमें क्रोधादि चार कषायके २७ भांगे होते हैं। ये दोनों प्रकारके भांगे नीचे लीखे यंत्रसे समझना।

८० भांगोंकी स्थापना.

असंयोगी ८ भांगा, द्विसंयोगी २४ भांगा, त्रिकसंयोगी ३२ भांगा, चार संयोगी १६ भांगा, एवं ८० भांगा।

असंयोगी ८ यथा-क्रोधीएक, मानीएक, मायीएक, लोभीएक, क्रोधीघणा, मानीघणा, मायीघणा, लोभीघणा।

द्विसंयोगी भांगा २४

क्रो. मां.		क्रो. मा.		क्रो. लो.		मां. मा.		मां. लो.		मा. लो.	
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३	१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१	३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

तीन संयोगी भांगा ३२

क्रो. मां. मा.			क्रो. मां. लो.			क्रो. मा. लो.			मां. मा लो.		
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

चार संयोगी भांगा १६

क्रो.	मां.	मा.	लो.	क्रो.	मां.	मा.	लो.
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
१	३	३	३	३	३	३	३

एवं ८० भांगे। अब २७ भांगोकी स्थापना नीचे लिखते है यथा-[१] क्रोधके हरबख्तमें सास्वते मिलते हैं। [२] क्रोधका घणा और मानका एक [३] क्रोधका घणा और मानका घणा एवं दो मायाके और दो लोभके एवं ७ असंयोगी द्विसंयोगी भांगे हुवे, और तीन संयोगीके १२ भांगे। यंत्रसे।

क्रो०	मां०	मा०	क्रो०	मां०	लो०	क्रो०	मा०	लो०
३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३

चार संयोगी भागा ८

क्रो०	मा०	मा०	लो०	क्रो०	मा०	मा०	लो०
३	१	१	१	३	३	१	१
३	१	१	३	३	३	१	३
३	१	३	१	३	३	३	१
३	१	३	३	३	३	३	३

देवतामें भुवनपतीसे यावत् बारहवें देवलोक तक अपने २ बोलोंसे चार २ बोल [नारकीवत्] में भाग ८० शेष बोलोंमें भांगे २७ है। जिसकी स्थापना उपरवत्। परन्तु नारकीके २७ भागोंमें क्रोधी सास्वते बहुवचन कहे हैं यहां देवतामें लोभी बहुवचन सास्वता कहना। एवं नौ नौग्रैवेक और पंचानुत्तर वैमानमें तीन बोल (मिश्रदृष्टी वर्जके) में भागा ८० शेष बोलोंमें भागा २७ कहना।

पृथ्वी, पानी, वनस्पतिमें बोल २३ जिसमें तेजूलेशीमें भांगा ८० शेष बोल २२ तथा तेउ वायुके २२ बोलोंमें अभंग है। याने चारों कषायवाले जीव हरसमय असंख्याते मिलते है।

तीन विकलेन्द्रियमें बोल २६ जिसमें [१] स्थितिका दूसरा बोल। [२] अवगाहनाका दूसरा बोल [३] मतिज्ञान [४] श्रुतिज्ञान। [५] सम्यक्त्वदृष्टी इन पांचों बोलोंमें भांगा ८० शेष बोलोंमें अभंग। तीर्यंच पंचेन्द्रिय नारकीवत् चार बोलोंमें भांगा ८० शेष बोलोंमें अभंग। मनुष्यमें बोल ४७ जिसमें दो स्थितिका दूजो तीजो बोल दो अवगाहनाका दूजो तीजो बोल आहारिक शरीर, और मिश्रदृष्टी इन छे बोलोंमें ८० भांगा शेष बोलोंमें अभंग।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ११९

श्री पन्नवणा सूत्र पद १५।

(इन्द्रिय)

संसारी जीवोंके इन्द्रिय दो प्रकारकी है—एक द्रव्येन्द्रिय और दूसरी भावेन्द्रिय. द्रव्येन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको ग्रहण करते है- जैसे कर्णेन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको ग्रहण किया और वे पुद्गल इष्ट अनिष्ट होनेसे रागद्वेष होना यह भावेन्द्रिय है। अर्थात् द्रव्येन्द्रिय कारण है और भावेन्द्रिय कार्य है। यहां पर द्रव्येन्द्रियका ही अधिकार १८ द्वार करके लिखेंगे।

[१] नामद्वार—श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय।

[२] संस्थानद्वार—श्रोतेन्द्रियका संस्थान कदम्ब वृक्ष के पुष्पाकार, चक्षुइन्द्रियका चन्द्र या मसूरकी दालके आकार, घ्राणेन्द्रिय लोहारकी धमणाकार, रसेन्द्रिय छूरपलाके आकार और स्पर्शेन्द्रिय नानाकार।

[३] जाडपना द्वार—एकेक इन्द्रिय जघन्य और उत्कृष्ट अंगुलके असंख्य भाग जाडी है। यहां पर इतना अवश्य समझना चाहिये कि इन्द्रिय और इन्द्रियके उपगरण जैसे श्रोतेन्द्रिय अंगुलके असंख्यातमें भाग है और कान शरीर प्रमाण होते है। कानको उपगरण इन्द्रिय कहते है और जो पुद्गल ग्रहण किया जाता है वह इन्द्रिय द्वार उसीका यहां जाडपना बतलाता है।

[४] लम्बापनाद्वार—रसेन्द्रिय ज० अंगुलके असंख्या-

तमें भाग उ० प्रत्येक अंगुलकी है। शेष चारोन्द्रिय ज० उ० अंगुल के असंख्यातमें भाग है भावना तीजे द्वारकी माफक समझना।

[५] अवगाह्याद्वार—एकेकेन्द्रिय असंख्याते २ आकाश प्रदेश अवगाहा है। जिसकी तरतमता दिखानेके लिये अल्पाबहुत्व कहते हैं।

[१] सर्वस्तोक चक्षु इन्द्रिय अवगाहा [२] श्रोतेन्द्रिय अ० संख्यातगुणा। [३] घ्राणेन्द्रिय अ० सं० गुणा। [४] रसेन्द्रिय अ० असं० गुणा। [५] स्पर्शेन्द्रिय अ० सं० गुणा।

[६] पुद्गल लागाद्वार—एकेकेन्द्रियके अनन्ते अनन्ते पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] चक्षु इन्द्रिय लागा, सबसे स्तोक [२] श्रोतेन्द्रिय लागा सं० गुणा। [३] घ्राणेन्द्रिय लागा सं० गु० [४] रसेन्द्रिय लागा असं० गु० [५] स्पर्शेन्द्रिय लागा सं० गु०

[७] अवगाह्या लागाकी—सामल अल्पाबहुत्व-[१] चक्षु इन्द्रिय अवगाहा सबसे स्तोक [२] श्रोतेन्द्रिय अ० सं० गु० [३] घ्राणेन्द्रिय अ० सं० गु० [४] रसेन्द्रिय अ० असं० गु० [५] स्पर्शेन्द्रिय अ० सं० गु० [६] चक्षु इन्द्रिय लागा० अनं० गु० [७] श्रोतेन्द्रिय लागा सं० गु० [८] घ्राणेन्द्रिय लागा सं० गु० [९] रसेन्द्रिय लागा असं० गु० [१०] स्पर्शेन्द्रिय लागा सं० गु०

[८] कक्खडा [कर्कश] गुरुवा [भारी] द्वार—एकेकेन्द्रियके अनन्ते अनन्ते पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] सबसे स्तोक लागा चक्षु इन्द्रियके [२] श्रोतेन्द्रियके अनन्त गु० [३] घ्राणेन्द्रियके अनन्त गु० [४] रसेन्द्रियके अनन्त गु० [५] स्पर्शेन्द्रियके अनन्त गु०

[९] लहुया [हलका] महुया [कोमल] द्वार—एके-

केन्द्रियके अनन्ते २ पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] सबसे स्तोक स्पर्शेन्द्रियके लागा [२] रसेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [३] घ्राणेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [४] श्रोतेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [५] चक्षुइन्द्रियके लागा अनन्त गुणा।

[१०] आठवा नौवा बोलकी सामील अल्पाबहुत्व--

[१] सबसे स्तोक चक्षु इन्द्रियके कक्खडा गुरुवा पुद्गलों लागा.
(२) श्रोतेन्द्रियके कक्खडा गुरुवा लागा अनन्त गु०
(३) घ्राणेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(४) रसेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(५) स्पर्शेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(६) ,, लहुया महुया लागा ,,
(७) रसेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(८) घ्राणेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(९) श्रोतेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(१०) चक्षुन्द्रियके ,, ,, ,, ,,

(११) जघन्य उपयोगका कालद्वार—

(१) सबसे स्तोक चक्षु इन्द्रियका ज० उप० काल
(२) श्रोतेन्द्रियका ज० उप० काल विशेषाधिक
(३) घ्राणेन्द्रियका ज० उप० काल ,,
(४) रसेन्द्रियका ,, ,, ,, ,,
(५) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, ,,

(१२) उत्कृष्टा उपयोगकि अल्पा० जघन्यवत्

(१३) जघन्य उत्कृष्टा उपयोग कालद्वार अल्पा०

(१) चक्षु इन्द्रियका जघन्य उपयोग काल स्तोक
(२) श्रोतेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०

(३) घ्राणेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(४) रसेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(५) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(६) चक्षुन्द्रियका उत्कृष्ट ,, ,, वि०
(७) श्रोतेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(८) घ्राणेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(९) रसेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(१०) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०

(१४) विषयद्वार यन्त्र ।

मार्गणा	स्पर्शेन्द्रिय	रसेन्द्रिय	घ्राणेन्द्रिय	चक्षुन्द्रिय	श्रोतेंद्रिय
एकेन्द्रिय	४००ध०	०	०	०	०
बेरिन्द्रिय	८००ध०	६४ध०	०	०	०
तेरिन्द्रिय	१६००ध०	१२८ध०	१००ध०	०	०
चौरिन्द्रिय	३२००ध०	२५६ध०	२००ध०	२९५४ध०	०
असन्नी पं०	६४००ध०	५१२ध०	४००ध०	५९०८ध०	१ योजन
सन्नीपचेंद्रि	९ योजन	९ योजन	९ योजन	लक्षयो० साधि	१२योजन

(१५) अल्पा बहुत्व द्वार

(१) श्रोतेन्द्रिय सबसे स्तोक
(२) चक्षुन्द्रिय विशेषाधिक
(३) घ्राणेन्द्रिय विशेषाधिक
(४) रसेन्द्रिय विशेषाधिक
(५) स्पर्शेन्द्रिय अनंतगु०

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं. १२०

सूत्र श्री पन्नवणा पद २० तथा नन्दी सूत्र
(सिद्ध द्वार)

कौनसे २ स्थानसे आये हुए एक समयमें कितने २ जीव सिद्ध होते हैं वह इस थोकडे द्वारा कहेंगे। सर्व स्थान पर उत्कृष्ट पद समझना और जघन्य पद एक समय एक भी सिद्ध होता है।

संख्या	मार्गणा			संख्या	मार्गणा		
१	नरक गतिके निकले हुए एक समयमें १० सिद्ध होते हैं।			१५	वैमानिक	,,	१०८
२	तिर्यंच	,,	१०	१६	देवी	,,	२०
३	मनुष्य	,,	२०	१७	पृथ्वीकाय	,,	४
४	देवगति	,,	१०८	१८	अप्पकाय	,,	४
५	पहिली नरक	,,	१०	१९	वनस्पतिकाय	,,	६
६	दूसरी	,,	१०	२०	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	,,	१०
७	तीसरी	,,	१०	२१	तिर्यञ्चणी	,,	१०
८	चौथी	,,	४	२२	मनुष्य	,,	१०
९	भवनपति	,,	१०	२३	मनुष्यणी	,,	२०
१०	देवी	,,	५	२४	पुरुष मर पुरुष हो		१०८
११	वाण व्यंतर	,,	१०	२५	पुरुष मर स्त्री हो		१०
१२	देवी	,,	५	२६	पुरुष मर नपुंसक हो		१०
१३	ज्योतिषी	,,	१०	२७	स्त्री मर पुरुष हो	,,	१०
१४	देवी	,,	२०	२८	स्त्री मर स्त्री हो	,,	१०
				२९	स्त्री मर नपुंसक हो		१०

३०	नपुंसक मर पुरुष हो	१०
३१	नपुंसक मर स्त्री हो	१०
३२	नपुंसक मर नपुंसक हो	१०
३३	तीर्थमें ,,	१०८
३४	अतीर्थमें ,,	१०
३५	तिर्थंकर ,,	४
३६	अतिर्थंकर ,,	१०८
३७	स्वयंबुद्ध ,,	१०
३८	प्रत्येक बुद्ध ,,	४
३९	बुद्ध बोधिता ,,	१०८
४०	पुरुषलिङ्ग ,,	१०८
४१	स्त्रीलिङ्ग ,,	२०
४२	नपुंसकलिंग ,,	१०
४३	स्वलिङ्गी ,,	१०८
४४	अन्यलिङ्गी ,,	१०
४५	गृहलिङ्गी ,,	४
४६	एक समयमें ,,	१
४७	एक समयमें ,,	१०८
४८	उतरतो काल १-२ आरो	१०
४९	,, ३-४ आरो	१०८
५०	,, ५-६ आरो	१०
५१	चढतो काल १ २ आरो	१०
५२	,, ३-४ आरो	१०८
५३	,, ५ आरो	२०
५४	,, ६ आरो	१०
५५	जघन्य अवगाहना ,,	४
५६	मध्यम ,,	१०८
५७	उत्कृष्ट ,,	२
५८	नीचे लोक ,,	२०
५९	ऊंचे लोक ,,	४
६०	तिर्छालोक ,,	१०८
६१	समुद्रमें ,,	२
६२	शेष जलमें ,,	३
६३	विजयमें ,,	२०
६४	भद्रसालवन ,,	४
६५	नन्दनवन ,,	४
६६	सुदर्शनवन ,,	४
६७	पाण्डुकवन ,,	२
६८	भरतक्षेत्र ,,	१०८
६९	ऐरवत क्षेत्र ,,	१०८
७०	पूर्व पश्चिम विदेह ,,	१०८
७१	कर्म्मभूमि ,,	१०८
७२	अकर्मभूमि ,,	१०
७३	सामायिक चारित्र ,,	१०८
६४	छेदोपस्थानीय ,,	१०
७५	परिहार विशुद्धि ,,	१०
७६	सूक्ष्म संपराय ,,	१०८
७७	यथाख्यात ,,	१०८

७८ सा० छे० य०	”	१०८
७९ सा० सू० य०	”	१०८
८० सा० प० य० सू०	”	१०८
८१ सा० छे० सू० य०	”	१०
८२ मति श्रुत	”	४
८३ मति, श्रुति, अवधि	”	१०
८४ मति, श्रुति, मनः पर्यव	”	१०
८५ मति, श्रुति, अवधि, मनः	”	१०८
८६ अनन्तकाल पडिवाई	”	१०८
८७ असंख्या कालके पडिवाई	”	१०
८८ संख्याते कालके पडिवाई	”	१०
८९ अपडिवाई	”	४
९० उपशम श्रेणिसे आये हुवे	”	५४
९१ क्षपक श्रेणिसे आये हुवे	”	१०८
९२ असोचा केवली	”	१०
९३ एक समयसे आठ समय तक	”	३२
९४ एक समयसे सात समय तक	”	४८
९५ एक समयसे छे समय तक	”	६०
९६ एक समयसे पांच समय तक	”	७२
९७ एक समयसे चार समय तक	”	८४
९८ एक समयसे तीन समय तक	”	९६
९९ एक समयसे दो समय तक	”	१०
१०० एक समय निरंतर	”	१०८
१०१ सान्तर	”	१०८

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं १२१

वहु सूत्र।

(कालका अल्पा बहुत्व)

१	स्तोक एक समयका काल			
२	वैक्रिय शरीरके सर्व बन्धका उत्कृष्ट काल संख्यात गुणा			
३	सयोगी केवली अनाहारिक काल विशेषा०			
४	स्थावर जीवोंकी विग्रह गतीका काल विशेषा			
५	केवली समुद्घ आहारिकका		,,	,,
६	केवली समुद्घत मध्य काल		,,	,,
७	छद्मस्थ संयतीके अवस्थित		,,	,,
८	केवली समुद्घातका		,,	,,
९	परमाणु पुद्गल कम्पमानका		,,	असंख्यात गुणा
१०	आवलिकाका		,,	,,
११	जघन्य आयु बन्धका		,,	संख्यात गुणा
१२	उत्कृष्ट आयु बन्धका		,,	,,
१३	एकेन्द्रिय अपर्याप्ता के जघन्य बन्धका		,,	,,
१४	,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
१५	,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
१६	निगोदका जघन्य	,,	,,	,,
१७	तसकायका विरह	,,	,,	संख्या
१८	बेइन्द्रियको अपर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,,
१९	,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	वि०
२०	बेइन्द्रियके पर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,,
२१	तेइन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,,

२२ ,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
२३ ,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
२४ चौरेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,,
२५ ,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
२६ ,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
२७ पंचेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,,
२८ ,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
२९ ,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
३० उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तका		,,	,,
३१ मुहूर्त्तका		,,	,,
३२ चारों गतिका विरह		,,	संख्यातगुणा
३३ उत्कृष्ट दिनमानका		,,	वि०
३४ असन्नी मनुष्यका विरह		,,	,,
३५ अहोरात्रिका		,,	,,
३६ तेऊकायका भवस्थितिका		,,	संख्यातगुणा
३७ दूसरी नारकीका विरह		,,	,,
३८ तीसरे देवलोकका विरह		,,	वि०
३९ चौथे ,, ,,		,,	,,
४० तीसरी नारकीका विरह		,,	,,
४१ पांचमें देवलोकका ,,		,,	,,
४२ नक्षत्र मासका		,,	,,
४३ चौथी नारकीका विरह		,,	,,
४४ छठ्ठे देवलोकका ,,		,,	,,
४५ असन्नि मनुष्यका अवस्थित		,,	,,
४६ तेइन्द्रियकी भवस्थितिका		,,	,,
४७ ऋतुका		,,	,,
४८ हरिवंश क्षेत्र युगल संरक्षण		,,	,,

४९ हेमवय क्षेत्र युगल ,, ,, ,,
५० सातमें देवलोकका विरह ,, ,,
५१ छट्ठे देवलोकका अवस्थित ,, ,,
५२ छट्ठी नारकीका विरह ,, ,,
५३ सातमें देवलोकका अवस्थित ,, ,,
५४ अयनका ,, ,,
५५ छट्ठी नारकीका अवस्थित ,, ,,
५६ संवत्सरका
५७ युगका ,, ,,
५८ तिर्यंचनीका उ० गर्भस्थिति ,, ,,
५९ बेइन्द्रिकी भवस्थिति० उ० ,, ,,
६० तिर्थंकरोंकी जघन्य स्थिति ,, ,,
६१ वायुकायकी उ० भवस्थिति ,, सं०
६२ अप्पकायकी ,, ,, ,, ,,
६३ वनस्पतिकी ,, ,, ,, वि०
६४ पृथ्वीकायकी ,, ,, ,, संख्या०
६५ भुजपरिसर्पकी ,, ,, ,, विशे०
६६ उरपरिसर्पकी ,, ,, ,, वि०
६७ खेचरकी ,, ,, ,, ,,
६८ खलचरकी ,, ,, ,, ,,
६९ पूर्वका ,, ,, ,, ,,
७० तिर्थंकरोंकी उ० स्थिति ,, ,,
७१ संयतीकी ,, ,, ,, ,,
७२ जलचरकी ,, ,, ,, ,,
७३ छप्पन अन्तरद्वीपोंकी स्थिति ,, संख्या
७४ उद्धार पल्योपमके संख्यातमे भागका ,, असं०
७५ उद्धार पल्योपमका ,, ,,

७६ उद्धार सागरोपमका	,,	,,
७७ जघन्य अर्द्धा पल्योपमके असंख्यातमे भागका		अ०
७८ उत्कृष्ट अर्द्धा पल्योपमके ,,	,,	,,
७९ अर्द्धा पल्योपमका		,,
८० मनुष्य तिर्यंचकी स्थिति	काल	सं०
८१ अर्द्धा सागरोपमका	,,	अ०
८२ देवता नारकीकी स्थिति	,,	स०
८३ कालचक्रका	,,	,,
८४ क्षेत्र पल्योपमका	,,	,,
८५ क्षेत्र सागरोपमका	,,	,,
८६ तेऊकायकी कायस्थितिका	,,	अ०
८७ वायुकायकी कायस्थितिका	,,	वि०
८८ अप्पकायकी कायस्थितिका	,,	,,
८९ पृथिवीकायकी कायस्थितिका	,,	,,
९० कार्मण पुद्गल परावर्तका	,,	अ० गुणा
९१ तेजस ,,	,,	,,
९२ औदारिक ,,	,,	,,
९३ श्वासोश्वास ,,	,,	,,
९४ मन ,,	,,	,,
९५ वचन ,,	,,	,,
९६ वैक्रिय ,,	,,	,,
९७ वनस्पतिकायकी कायस्थितिका	,,	,,
९८ अतीतकालका	,,	,,
९९ अनागत कालका	,,	वि०
१०० सर्वकालका	,,	,,

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १२२

सूत्र श्री अनुयोग द्वार।

(छै भाव)

भाव ६ प्रकारका है यथा (१) उदय भाव (२) उपशम भाव (३) क्षायक भाव (४) क्षयोपशम भाव (५) परिणामिक भाव (६) सन्निपातिक भाव।

(१) उदयभावके दो भेद हैं उदय (२) उदय निष्पन्न जिसमें उदय तो आठ कर्म्मोंका और उदय निष्पन्नके २ भेद हैं (१) जीव उदय निष्पन्न (२) अजीव उदय निष्पन्न, जिसमें जीव उदय निष्पन्नके ३३ बोल हैं-गति ४ नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य देवता। काय ६ पृथिवीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ, लेश्या ६ कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, शुक्ल, वेद ३ स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, मिथ्यात्वी, अव्रति, अज्ञानी, असन्नि, आहारिक, संसारिक, छद्मस्थ, सयोगी, अकेवली, असिद्ध, एवम् ३३ * (२) अजीव उदय निष्पन्नके ३० बोल पांच शरीर औदारिक, वैक्रिय आहारिक, तेजस, कार्मण और पांच शरीरोंमें प्रणमे हुए पुद्गल एवम् १० और वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ सर्व मिलकर तीस बोल हुए।

* जीव उदय निष्पन्नके ३३ बोल हैं, जिसमें अज्ञान, छद्मस्थ, अकेवली, असिद्ध, यह ४ बोल ज्ञानावरणीय कर्मके उदय हैं। आहारिक वेदनी कर्मका उदय है। तीन वेद, चार कषाय, अव्रत, मिथ्यात्व, यह नव बोल मोहिनी कर्मके उदय है। शेष १९ बोल नाम कर्मके उदय है।

(२) उपशम भावके दो भेद हैं (१) उपशम (२) उपशम निष्पन्न जिसमें उपशम तो मोहिनी कर्मका और उपशम निष्पन्नके अनेक भेद हैं, उपशम क्रोध, उ० मान, उ० माया, उ० लोभ, उ० राग, उ० द्वेष, उ० चारित्र मोहिनी, उ० दर्शन मोहिनी, उ० सम्यक्त्व लब्धी, उ० चारित्र लब्धी, छद्मस्थ कषाय, वीतराग इत्यादि।

(३) क्षायक भाव—क्षायक भावके दो भेद हैं (१) क्षायक (२) क्षायक निष्पन्न जिसमें क्षायक तो आठ कर्म्मोंका क्षय और क्षायक निष्पन्नके ३१ भेद हैं यथा।

(१) ज्ञानावर्णीकी पांच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल ज्ञानकी प्राप्ति होती है। (२) दर्शनावर्णीकी नौ प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल दर्शनकी प्राप्ति होती है। (३) वेदनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अव्याबाध गुणकी प्राप्ति होती है। (४) मोहनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त क्षायिक समकित गुणकी प्राप्ति होती है। (५) आयुष्यकी चार प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अवगाहना गुणकी प्राप्ति होती है। (६) नामकर्मकी दो प्रकृति होनेसे अनन्त अमूर्त्ति गुण प्राप्त होता है। (७) गोत्रकर्मकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अगुरु लघु गुणकी प्राप्ति होती है। (८) अंतरायकी पांच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त वीर्य गुणकी प्राप्ति होती है। ५। ९। २। २। ४। २। २। ५। एवं ३१।

(४) क्षयोपशम भावके दो भेद है,—क्षयोपशम और क्षयोपशम निष्पन्न। क्षयोपशम तो चार कर्मोंका (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहिनीय, अंतराय) और क्षयोपशम निष्पन्नके ३२ भेद हैं. यथा ज्ञानावरणीय कर्म्मका क्षयोपशम होनेसे मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, और आगमका पठन, पाठन तथा मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान, विभंग ज्ञान, एवं आठ बोलकी

प्राप्ति होती है। दर्शनावरणीय कर्मके क्षयोपशमसे श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय, चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, एवम् आठ बोलकी प्राप्ति होती है। मोहनीय कर्मके क्षयोपशमसे पांच चारित्र और तीन दृष्टि एवम् आठ बोलकी प्राप्ति होती है। अंतराय कर्मके क्षयोपशमसे दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि और वीर्यलब्धि, बाललब्धि, पंडितलब्धि और बालपंडित लब्धि एवम् आठ बोलोंकी प्राप्ति होती है एवम् चार कर्मोंके ३२ बोल हुए।

(५) परिणामिक भावके दो भेद हैं (१) सादि परिणामिक (२) अनादि परिणामिक। सादि परिणामिकके अनेक भेद हैं. यथा पुराणा गुड, पुराणा मदिरा, अक्षत घृतादि तथा पुराणा गाम, नगर, पुर, पाटण, यावत् राजधानी इत्यादि जिस वस्तुकी आदि है कि अमुक दिनसे इस रूपपणे बनी है और जिसका अंत भी है. (२) अनादि परिणामिकके दश भेद। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय और काल द्रव्य तथा लोक, अलोक, भव्य, अभव्य, एवम् दस बोल।

(६) सन्निपातिक भाव—जो कि उपर पांच भाव कह आये हैं जिसके भांगे २६ नीचे यंत्रमें लिखते हैं—

द्विक संयोगी भांगा १०

१ उदय-उपशम	६ उपशम-क्षयोपशम
२ उदय-क्षायिक	७ उपशम-परिणामिक
३ उदय-क्षयोपशम	८ क्षायिक-क्षयोपशम
४ उदय-परिणामिक	९ क्षायिक-परिणामिक
५ उपशम-क्षायिक	१० क्षयोपशम-परिणामिक

त्रिक संयोगी भांगा १०

१ उदय-उपशम क्षायिक	६ उदय-क्षयोपशम-परिणामिक
२ उदय-उपशम-क्षयोपशम	७ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम
३ उदय-उपशम-परिणामिक	८ उपशम-क्षायिक-परिणामिक
४ उदय-क्षायिक-क्षयोपशम	९ उपशम-क्षयोपशम-परिणामिक
५ उदय-क्षायिक-परिणामिक	१० क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक

चतुष्क संयोगी भांगा ५

१ उदय-उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम
२ उदय-उपशम-क्षायिक-परिणामिक
३ उदय-उपशम-क्षयोपशम-परिणामिक
४ उदय-क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक
५ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक

पञ्च संयोगी भांगा १

(१) उदय, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, परिणामिक, एवम् भांगा २६ है जिसमें भांगा बीस तो सून्य केवल प्ररूपणा मात्र है शेष भांगा ६ के स्वामी नीचे लिखते हैं—

(१) द्वीक संयोगी भांगो नवमो सिद्धोंमें मिले क्षायिक परिणामिक, कारण परिणामिक जीव और क्षायिक समकित।

(२) त्रिक संयोगी भांगो पांचमो " उदय क्षायिक परिणामिक " मनुष्य केवलीमें उदय मनुष्य गतिको क्षायिक समकित परिणामिक जीव।

(३) त्रिक संयोगी भांगो छट्टो " उदय क्षयोपशम परिणामिक " उदय गतिको क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव चारों गतिमें पावे।

(४) चतुष्क संयोगी भांगो तीजो "उदय उपशम क्षोपोशम. परिणामिक" उदय गतिका उपशम मोहका क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव चारों गतिमें तथा इग्यारहमें गुणस्थानमें पावे।

(५) चतुष्क संयोगी भांगो चोथो "उदय क्षायिक क्षयोपशम परिणामिक" उदय गतिका क्षायिक मोहका क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव चारों गतिमें तथा बारमे गुणस्थानमें पावे।

(६) पञ्च संयोगी एक भांगो क्षायिक समकितवाले जीव उपशम श्रेणी चढते हुएमें उदय गतिका उपशम मोहका क्षायिक समकित क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव इति।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० १२३

सूत्र श्री भगवती शतक २० उद्देशो १०

(१) हे भगवान जीव [1]सोपक्रम आयुष्यवाला है या निरुपक्रम आयुष्यवाला है? या दोनों प्रकारके आयुष्यवाले जीव हैं।

नारकी आदि २४ दंडकके जीवोंकी पृच्छा? नारकी, देवता, युगल मनुष्य, तिर्थंकर, चक्रवर्त्ति, वासुदेव, बलदेव, प्रतिवासुदेव, इनोंका आयुष्य निरुपक्रमी होते हैं शेष सर्व जीवोंका आयुष्य सोपक्रमी निरुपक्रमी दोनों प्रकार होता है।

१ सात कारणोंसे आयुष्य तुटता है उसे सोपक्रमी आयुष्य कहते है। यथा— जल, अग्नि, विष, शस्त्र, अति हर्ष, शोक, भय, ज्यादा चलना, ज्यादा भोजन करना, मैथुनादि अध्यवसायके खरच होनेसे।

(२) नारकी स्व उपक्रमसे उत्पन्न होते हैं ? पर उपक्रमसे ? विगर उपक्रमसे ? नारकी स्व उपक्रम (स्वहस्तसे शस्त्रादि) से भी और पर उपक्रमसे भी तथा निरुपक्रमसे भी उत्पन्न होता है। भावार्थ—मनुष्य तिर्यंचमें रहे हुवे जीव नरकका आयुष्य बान्धा हैं मरती वखत स्वहस्तसे या पर हस्तसे मरे तथा विगर उपक्रम याने पूर्ण आयुष्यसे मरे। एवम् यावत् २४ दंडक समझना।

(३) नारकी नरकसे निकलते है वह क्या स्व उपक्रम, पर उपक्रम और विगर उपक्रमसे निकलते है ? स्व पर उपक्रमसे नहि किन्तु विगर उपक्रमसे निकलते है कारण वैक्रिय शरीर मारा हुवा नहीं मरते है एवं १३ दंडक देवतावोंका भी समझना। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, तीर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य एवं १० दंडक तीनों प्रकारके उपक्रमसे निकलते है।

(४) नारकी क्या स्वात्म ऋद्धि (नरकायुष्यादि) से उत्पन्न होते है या पर ऋद्धिसे उत्पन्न होते है ? नारकी स्वऋद्धिसे उत्पन्न होते है परसे नहीं. एवं यावत् २३ दंडक समझना। इसी माफीक स्व स्व दंडकसे निकलना भी स्वऋद्धिसे होता है कारण जीव अपने किये हुवे शुभाशुभ कृत्यसे ही दंडकमें दंडाता है।

(५) नारकी क्या स्व प्रयोगसे उत्पन्न होता है कि पर प्रयोगसे ? स्व प्रयोग (मन वचन कायाके प्रयोगोंसे) किन्तु पर प्रयोगसे नहीं एवं २४ दंडक समझना इसी माफिक निकलना भी समझना।

(६) नारकी स्वकर्मोंसे उत्पन्न होता है कि पर कर्मोंसे ? स्व कर्मोंसे किन्तु पर कर्मोंसे नहीं. एवं २४ दंडक तथा निकलना भी समझना। इतना विशेष है कि निकलनेमें जोतीषी विमानीके निकलनेके बदले चवना कहना इति।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० १२४

सूत्र श्री भगवती श० २० उ० १० ।

(क्रत संचय)

(१) क्रत संचय—जो एक समयमें दो जीवोंसे संख्याते जीव उत्पन्न होते हैं ।

(२) अक्रत संचय—जो एक समयमें असंख्याते अनन्ते जीवों उत्पन्न होते है ।

(३) अवक्तव्य संचय—एकसमयमें एकजीव उत्पन्न होते है।

हे भगवान्! नारकीके नेरिये क्या क्रतसंचय है, अक्रत संचय है, अवक्तव्य संचय है ? नारकी तीनों प्रकारके हैं । इसी माफिक १० भुवनपति ३ विकलेन्द्रिय, तीर्यंच पांचेन्द्रिय १ मनुष्य १ व्यान्तर १ ज्योतीषी १ विमानीक एवं १९ दंडक॥ पृथ्वीकायकी पृच्छा? क्रत संचय नहीं है। अक्रत संचय है। अवक्तव्य संचय नहीं है कारण समय समय असंख्याते जीवों उत्पन्न होते हैं। अगर कोइ स्थान पर १-२-३ भी कहा है वह पर कायापेक्षा है एवं अप्काय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय भी समझना ।

सिद्धोंकी पृच्छा ? क्रत संचय है, अवक्तव्य संचय है परन्तु अक्रत संचय नहीं है। अल्पाबहुत्व-नारकीमें सर्व स्तोक अवक्तव्य संचय उन्होंसे क्रत संचय संख्यात गुणा। अक्रत संचय असंख्यात गुणा एवं १९ दंडक समझना। ५ स्थावरमें अल्पा० नहीं है। सिद्धोंमें स्तोक क्रत संचय उन्होंसे अवक्तव्य संचय संख्यात गुणा।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० १२५

सूत्र श्री भगवती श० १२ उ० ९

(पांचदेव द्वार ९)

नामद्वार १ लक्षणद्वार २ स्थितिद्वार ३ संचिट्ठणद्वार ४ अन्तरद्वार ५ अवगाहनाद्वार ६ गत्यागतिद्वार ७ वैक्रियद्वार ८ अल्पाबहुत्वद्वार ९।

[१] नामद्वार—भावि द्रव्यदेव १ नरदेव २ धर्मदेव ३ देवादिदेव ४ भावदेव ५।

[२] लक्षणद्वार—भावि द्रव्यदेव-मनुष्य तीर्यचके अन्दर रहा हुवा जीव देवका आयुष्य बांधकर बैठा है। भविष्यमें देवतोंमें जानेवाला हो उसे भावि द्रव्यदेव कहते हैं। १ नरदेव चक्रवरतकी ऋद्धि संयुक्त हो उसे नरदेव कहते हैं। २ धर्मदेव साधुके गुणयुक्त होता हैं। ३ देवादिदेव तीर्थंकर केवलज्ञान केवल दर्शनादि अतिशय संयुक्त होता हैं। ४ भावदेव, भुवनपति, बाणमित्र, जोतीषी, विमानीक यह चार प्रकारके देवताओंको भावदेव कहलाते हैं।

[३] स्थितिद्वार—भावि द्रव्यदेव जघन्य अन्तरमुहूर्त उ० ३ पल्योपम। नरदेव ज० ७०० वर्ष उ० ८४ लक्ष पूर्व। धर्मदेव ज० अन्तरमुहूर्त उ० देशोणोक्रोड पूर्व। देवादिदेव ज० ७२ वर्ष उ० ८४ लक्ष पूर्व। भावदेव ज० १००० वर्ष उ० ३३ सागरोपम।

[४] संचिट्ठणद्वार—स्थिति माफिक है परन्तु धर्मदेवका संचिट्ठण जघन्य एक समय समझना।

[५] अन्तरद्वार—भावि द्रव्यदेवको अन्तर ज० १०००० वर्ष उ० अनन्तकाल (वनस्पतिकाल)। नरदेव-ज० १ सागरोपम जाझेरो और धर्मदेवको ज० प्रत्येक पल्योपम उ० नरदेव धर्मदेव दोनोंको देशोणो अर्द्ध पुद्गल प्र०। देवाधि देवको अन्तर नहीं है। भावदेवको ज० अन्तरमुहूर्त उ० अनन्तो काल।

[६] अवगाहनाद्वार—भावि द्रव्यदेवकी ज० आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० हजार जोजन। नरदेव ज० ७ धनुष्य। धर्मदेव ज० एक हस्त उणी। देवादिदेव ज० ७ हस्त उ० तीनुकी ५०० धनुष्य। भावदेव ज० आंगु० असं० भाग उ० ७ हस्तप्रमाण।

[७] गत्यागतिद्वार—यंत्रसे।

मार्गणा.	समु.	न.	ती.	म.	देव.
१ भाविभव्य द्रव्यदेवकी आगति	२८४	७	४८	१३१	९८
" गति	१९८	०	०	०	१९८
२ नर देवकी आगति	८२	१	०	०	८१
" गति	१४	१४	०	०	०
३ धर्म देवकी आगति	२७५	५	४०	१३१	९९
" गति	७०	०	०	०	७०
४ देवादिदेवकी आगति	३८	३	०	०	३५
" गति	मोक्ष	०	०	०	०
५ भाव देवकी आगति	१११	०	१०	१०१	०
" गति	४६	०	१६	३०	०

[८] वैक्रयद्वार—भावि द्रव्यदेव वैक्रय करे तो १-२-३ उ० संख्याते रूप करे और असंख्याताकी शक्ति है एवं नरदेव-धर्मदेव भी। देवादिदेवमें अनन्त शक्ति है परन्तु करे नहीं। भावदेव १-२-३ उ० सं० असंख्याते रूप करे।

[९] अल्पाबहुत्वद्वार—स्तोक (१) नरदेव (२) देवादिदेव संख्यात गुणा (३) धर्मदेव संख्यात गुणा (४) भावि द्रव्यदेव असंख्यात गुणा (५) भावदेव असंख्यात गुणा इति।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

इति श्री शीघ्रबोध भाग ६ वां समाप्तम्

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नम्बर ४२

॥ श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग १० वां

थोकडा नं. १२६

(चौवीस स्थानक)

चौवीस द्वारके २१९ बोलोंको २१९ बोलोंपर उतारा जावेगा इस संबन्धको गहरी दृष्टिसे पढनेसे प्रश्नशक्ति, तर्कशक्ति, और अध्यात्मज्ञानशक्ति बढ जाति है वास्ते आद्योपान्त पढके लाभ अवश्य उठाना चाहिये।

१	गतिद्वार नरकादि	४	१३	सम्यक्त्वद्वार	७
२	जातिद्वार एकेन्द्रियादि	५	१४	आहारीकद्वार	२
३	कायाद्वार पृथ्व्यादि	६	१५	गुणस्थानद्वार	१४
४	योगद्वार मनादि	१५	१६	जीवभेदद्वार	१४
५	वेदद्वार स्त्रियादि	३	१७	पर्याप्तिद्वार	६
६	कषायद्वार क्रोधादि	२५	१८	प्राणद्वार	१०
७	ज्ञानद्वार मत्यादि	८	१९	संज्ञाद्वार	४
८	संयमद्वार सामायिकादि	७	२०	उपयोगद्वार	२
९	दर्शनद्वार चक्षुषादि	४	२१	दृष्टिद्वार	३
१०	लेश्याद्वार कृष्णादि	६	२२	कर्मद्वार	८
११	भव्यद्वार भव्यादि	२	२३	शरीरद्वार	५
१२	संज्ञीद्वार संज्ञी	२	२४	हेतुद्वार	५७

[गतिद्वार १]

नंबर.	नामद्वार.	नरकगति.	तिर्यंच गति.	मनुष्य गति.	देव गतिमें.	
१	गतिद्वार ४	१	१	१	१	अपनी अ-
२	इन्द्रिय ५	पंचेन्द्रिय	पचों०	१ पंचे०	१ पंचे०	पनी गती
३	काय ६	१ त्रसकाय	छ काया	१ त्रस०	१ त्रस०	पावे.
४	योग १५	११	१३	१५	११	
५	वेद ३	१ नपुंसक	३	३	२ स्त्री.पु.	
६	कषाय २५	२३	२५	२५	२४	
७	ज्ञान ८	६	६	८	६	
८	संयम ७	१	२	७	१	
९	दर्शन ४	३	३	४	३	
१०	लेश्या ६	३	६	६	६	नारकी दे-
११	भव्य २	२	२	२	२	वतामें जाण
१२	सन्नी २	१	२	२	१	आश्री अस-
१३	सम्यक्त्व ७	७	७	७	७	न्नी भी मि-
१४	आहारिक २	२	२	२	२	लते है.
१५	गुणस्था. १४	४	५	१४	४	
१६	जीवभेद १४	३	१४	३	३	
१७	पर्याप्ति ६	५	६	६	५	
१८	प्राण १०	१०	१०	१०	१०	देवता, ना-
१९	संज्ञा ४	४	४	४	४	रकी मन
२०	उपयोग २	२	२	२	२	और भाषा
२१	दृष्टि ३	३	३	३	३	एकसाथबां-
२२	कर्म ८	८	८	८	८	धे इसवास्ते
२३	शरीर ५	३	४	५	३	५ कही है.
२४	हेतु ५७	५१	५५	५७	५२	.

[इन्द्रियद्वार २]

नं०	द्वार		एकेंद्रि	बेरिंद्रि	तेरिंद्रि	चौरिंद्रि	पंचेंद्रि	
१	गती	४	१	१	१	१	४	अपने अपनी
२	इन्द्रि	५	१	१	१	१	१	
३	काय	६	५	१	१	१	१	
४	योग	१५	५	४	४	४	१५	
५	वेद	३	१	१	१	१	३	
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३	२५	
७	ज्ञान	८	२	४	४	४	८	
८	संयम	७	१	१	१	१	७	
९	दर्शन	४	१	१	१	२	४	
१०	लेश्या	६	४	३	३	३	६	
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	२	
१३	सम्यक्त्व	७	१	२	२	२	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्था.	१४	१	२	२	२	१२	१३-१४ गु.
१६	जीवभेद	१४	४	२	२	२	१४	अनेन्द्रीया.
१७	पर्याप्ति	६	४	५	५	५	६	
१८	प्राण	१०	४	६	७	८	१०	
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	
२१	द्रष्टि	३	१	२	२	२	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	३	३	३	५	
२४	हेतु	५७	४१	४०	४०	४०	५७	

[कायद्वार २]

नं०	द्वार.		पृथ्वी.	अप्प.	तेउ.	वाउ.	वनस्पति	त्रस.
१	गती	४	१	१	१	१	१	४
२	इन्द्रि	५	१	१	१	१	१	५
३	काय	६	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	३	३	३	५	३	१५
५	वेद	३	१	१	१	१	१	३
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३	२३	२५
७	ज्ञान	८	२	२	२	२	२	८
८	संयम	७	१	१	१	१	१	७
९	दर्शन	४	१	१	१	१	१	४
१०	लेश्या	६	४	४	३	३	४	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१	१	१	१	१	१४
१६	जीवभेद	१४	४	४	४	४	६	१०
१७	पर्याप्ति	६	४	४	४	४	४	६
१८	प्राण	१०	४	४	४	४	४	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	१	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	४	३	५
२४	हेतु	५७	३९	३९	३९	४१	३९	५७

[योगद्वार ४]

नं०	द्वार.		मनका ३	व्यवहार म. १	वचनका ३	व्यवहार व. १
१	गती	४	४	४	४	४
२	इन्द्रि	५	१ पंचेन्द्रि	१	१	४
३	काय	६	१	१	१	१
४	योग	१५	अपना	अपना	अपना	अपना
५	वेद	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	७।८	८	७।८	८
८	संयम	७	७	७	७	७
९	दर्शन	४	३।४	४	३।४	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१३।१२	१३	१३।१२	१३
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	५
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५६	५६	५६	५६

[कायका योग ७ द्वार ४]

नं०	द्वार.		औ० २	वे० २	आ० २	कार्म०
१	गती	४	२	४	१	४
२	इन्द्रि	५	५	२	१	५
३	काय	६	६	२	१	६
४	योग	१५	अपना	अपना	अपना	अपना
५	वेद	३	३	३	१	३
६	कषाय	२५	२५	२५	११	२५
७	ज्ञान	८	८	७	४	८
८	संयम	७	७।५	४	२	२
९	दर्शन	४	४	३	३	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	१	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	४	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१३।६	७।५	२	४
१६	जीवभेद	१४	१४।९	४	१	८
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०।५
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	२।३	२।३	१	२
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	३
२४	हेतु	५७	५१	५१	२१	४३

[वेदद्वार ५]

नं०	द्वार.		स्त्री.	पुरुष.	नपुंसक.
१	गती	४	३	३	३
२	इन्द्रि	५	१ पंचेन्द्रि	१ पंचेंद्रि	५
३	काय	६	१ त्रस	१ त्रस	६
४	योग	१५	१३	१५	१५
५	वेद	३	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	७	७	७
८	संयम	७	४	५	५
९	दर्शन	४	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	२
१३	सम्यकत्व	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	९	९	९
१६	जीवभेद	१४	२	२	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८
२३	शरीर	५	४	५	५
२४	हेतु	५७	५३	५५	५५

[काषयद्वार ६]

नं०	द्वार.		अनुता-न० ४	अप्रत्या ४	प्रत्या० ४	सज्व० ४	हासादि ६	वेद ३
१	गती	४	४	४	४	४	४	पहेले ५ के कारमें लिखा है
२	इन्द्रिय	५	५	५	५	५	५	
३	काय	६	६	६	६	६	६	
४	योग	१५	१३	१३	१३	१५	१५	
५	वेद	३	३	३	३	३	३	
६	कषाय	२५	अपनि	अपनि	पवं	पवं	पवं	
७	ज्ञान	८	३	६	६	७	७	
८	संयम	७	१	१	२	६	५	
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	सन्नी	२	२	२	२	२	२	
१३	सम्यक्त्व	७	२	७	७	७	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्थान	१४	२	४	५	३ ९ / १ १०	८	
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	१४	१४	१४	
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	
२१	द्रष्टि	३	२	३	३	३	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	४	४	५	५	
२४	हेतु	५७	५५	५५	५५	५७	५७	

[ज्ञानद्वार ७]

नं०	द्वार		म० श्रु०	अ०	म०	के०	म० श्रु० अज्ञान	वि० अ०
१	गती	४	४	४	१	१	४	४
२	इन्द्रिय	५	४	१	१	०	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	६	१
४	योग	१५	१५	१५	१४	५।७	१३	१३
५	वेद	३	३	३	३	०	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	१३	०	२५	२५
७	ज्ञान	८	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना
८	संयम	७	७	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	१	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	२	२
१२	सन्नी	२	२	१	१	०	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	५	५	४	१	२	२
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	२	२
१५	गुणस्था.	१४	१०	१०	७	२	२	२
१६	जीवभेद	१४	६	२	१	१	१४	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	२	२
२२	कर्म	८	८	८	८	४	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	३	४	४
२४	हेतु	५७	५२	५२	२७	५।७	५५	५५

[संयमद्वार ८]

नं०	द्वार.		सा० छं०	प०	सु०	यथा०	संयमा संयम	असंयम
१	गति	४	१	१	१	१	२	४
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	५
३	काय	६	१	१	१	१	१	६
४	योग	१५	१४	९	९	११	१२	१३
५	वेद	३	३	२	०	०	३	३
६	कषाय	२५	१३	१२	१	०	१७	२५
७	ज्ञान	८	४	४	४	५	३	६
८	संयम	७	अपना	अपना	अपना	अपना	एवं	एवं
९	दर्शन	४	३	३	३	४	३	३
१०	लेश्या	६	६	३	१	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	४	४	२	२	४	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	२	१	२
१५	गुणस्था.	१४	४	२	१	४	१	४
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	०	०	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८।४	८।	८
२३	शरीर	५	५	५	३	३	४	४
२४	हेतु	५७	२७	२२	१०	११	४०	५५

[दर्शनद्वार ६]

नं०	द्वार.		चक्षु द०	अचक्षु द०	अवधी द०	केवल द०
१	गती	४	४	४	४	१
२	इन्द्रिय	५	२	५	१	अ०
३	काय	६	त्रस	६	त्रस	त्रस
४	योग	१५	१४	१५	१५	५–७
५	वेद	३	३	३	३	अ०
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	अ०
७	ज्ञान	८	७	७	७	१
८	संयम	७	७	७	७	१
९	दर्शन	४	अपना २	पर्व	पर्व	पर्व
१०	लेश्या	६	६	६	६	१
११	भव्य	२	२	२	२	१
१२	सन्नी	२	२	२	१	नो
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	१
१४	आहारिक	२	१	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१२	१२	१२	२
१६	जीव भेद	१४	३।६	१४	२	१
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	३	३	१
२२	कर्म	८	८	८	८	४
२३	शरीर	५	५	५	५	३
२४	हेतु	५७	५६	५७	५७	५+७

[लेश्याद्वार १०]

नं०	द्वार		कृष्ण, नील, कापोत	तेजु	पद्म	शुक्ल
१	गती	४	४	३	३	३
२	इन्द्रिय	५	५	२	१	१
३	काय	६	६	४	१	१
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५
५	वेद	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	७	७	७	८
८	संयम	७	४	५	५	७
९	दर्शन	४	३	३	३	४
१०	लेश्या	६	अपनी अपनी	एवं	एवं	एवं
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	६	७	७	१३
१६	जीव भेद	१४	१४	३	२	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	५७	५७	५७

[भव्य और सन्नीद्वार ११–१२]

नं०	द्वार		भव्य	अभव्य	सन्नी	असन्नी
१	गती	४	४	४	४	४
२	इन्द्रिय	५	५	५	१	५
३	काय	६	६	६	१	६
४	योग	१५	१५	१३	१५	६
५	वेद	३	३	३	३	१
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२३
७	ज्ञान	८	८	३	७	४
८	संयम	७	७	१	७	१
९	दर्शन	४	४	३	३	२
१०	लेश्या	६	६	६	६	४
११	भव्य	२	अपना	अपना	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	अपना	अपना
१३	सम्यक्त्व	७	७	१	७	२
१४	आहारिक	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१४	१	१२	२
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	२	१२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	५
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	९
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	१	३	२
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	४	५	४
२४	हेतु	५७	५७	५५	५७	४६

(सम्यक्त्व द्वार १३)

नं०	द्वार.		क्षा०	क्ष्यो०	उ०	वे०	सास्वा०	मिथ्या-त्व०	मिश्र.
१	गति	४	४	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	४	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	१	५	१
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१०
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	२१	२१	२१	२५	२५.
७	ज्ञान	८	५	४	४	४	३	३	३
८	संयम	७	७	५	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	४	३	३	३	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	२	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	२	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	अपनि	एवं,	एवं,	एवं,	एवं,	एवं,	एवं,
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	२	१
१५	गुणस्थान	१४	११	४	८	४	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	२	२	२	२	६	१४	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टी	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५	४	४	४
२४	हेतु	५७	४८	४८	४८	४८	४६	५५	४३

(आहारिक द्वार १४ प्राण द्वार १८)

नं०	द्वार.		अहा०	अना०	इंद्रि० ४	स्प०का० स्था०	म०व०	आयु०
१	गतीद्वार	४	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रीय	५	५	५	ओ$_{1}$च$_{2}$ध्र$_{3}$ा$_{4}$र·	५	१।४	५
३	काय	६	६	६	१	६	१	६
४	योग	१५	१४	१	१५	१५	१४	१५
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	८	७	७	७।८	८	८
८	संयम	७	७	२	७	७	७	७
९	दर्शन	४	४	३	३	३।४	४	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	२	२	१।२	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	६	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२
१५	गुणस्था	१४	१३	५	१२	१२ कृ$_{14}$ १३	१३	१४
१६	जीव भेद	१४	१४	८	ओ$_{4}$च$_{6}$घ्रा$_{8}$र$_{1}$:	१४	१।२	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	अपना	अपना	अपना	
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	२	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	३	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	४३	५६	५७।५६	५६	५७

[गुणस्थानद्वार १५]

नं०	द्वार.		मिथ्या०	सा०	मि०	अव०	देस०	प्र०	अप्र०
१	गती	४	४	४	४	४	२	१	१
२	इन्द्रिय	५	५	४	१	१	१	१	१
३	काय	६	६	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	१३	१३	१०	१३	१२	१४	११
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२१	२१	१७	१३	१३
७	ज्ञान	८	३	३	३	३	३	४	४
८	संयम	७	१	१	१	१	१	३	३
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६	३
११	भव्य	२	२	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	२	२	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	४	४	४	४
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१४	६	१	२	१	१	१
१७	पर्याप्त	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	४	४	४	४	४	५	५
२४	हेतु	५७	५५	५०	४३	४६	४०	२७	२४

[गुण स्थानक द्वार १५]

नं०	द्वार		नि०	अनि०	सु०	उप०	क्षी०	स०	अ०
१	गती	४	१	१	१	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	०	०
३	काय	६	१	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	९	९	९	९	९	५।७	०
५	वेद	३	३	३	०	०	०	०	०
६	कषाय	२५	१३	७	१	०	०	०	०
७	ज्ञान	८	४	४	४	४	४	१	१
८	संयम	७	२	२	१	१	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	१	१
१०	लेश्या	६	१	१	१	१	१	१	०
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	१	१
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२	१
१५	गुणस्था.	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५	२
१९	संज्ञा	४	०	०	०	०	०	०	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	७	७	४	४
२३	शरीर	५	३	३	३	३	३	३	३
२४	हेतु	५७	२२	१६	१०	९	९	५।७	०

[जीव भेद द्वार १६]

नं०	द्वार		सु० २	बा० २	बे० २	ते० २
१	गती	४	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	२	३
३	काय	६	५	५	१	१
४	योग	१५	३।१	३।४	२।३	२।३
५	वेद	३	१	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	२	२	४।२	४।२
८	संयम	७	१	१	१	१
९	दर्शन	४	१	१	१	१
१०	लेश्या	६	३	४।३	३	३
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	२।१	२।१
१४	आहारिक	२	२।१	२।१	२।१	२।१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	२।१	२।१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	३।४	३।४	४।५	४।५
१८	प्राण	१०	३।४	३।४	५।६	६।७
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	१	१	२।१	२।१
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३।४	३	३
२४	हेतु	५७	३९	३७।४०	३८।३९	३८।३९

[जीव भेद]

नं०	द्वार.		चौ० २	अ०पं०अ	अ०प्र०प	स०पं०अ	स०पं०प्र०
१	गति	४	१	१	१	४	४
२	इन्द्रिय	५	४	५	५	५	५
३	काय	६	१	१	१	१	१
४	योग	१५	२।३	३	२	५	१५
५	वेद	३	१	१	१	३	३
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२५	२५
७	ज्ञान	८	४।२	४	२	६	८
८	संयम	७	१	१	१	१	७
९	दर्शन	४	२	२	२	३	४
१०	लेश्या	६	३	३	३	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	२।१	२	१	६	७
१४	आहारिक	२	२।१	२	१	२	२
१५	गुणस्था.	१४	२।१	२	१	३	१४
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	४।५	४	५	५	६
१८	प्राण	१०	७।८	८	९	९	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	२।१	२	१	२	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	४	५
२४	हेतु	५७	३९।३८	३९	३८	४७	५७

[पर्याप्ति द्वार १७-१९-२०]

नं०	द्वार.		पर्या० ४	भाषा०	मन०	संज्ञा०	उपयोग.
१	गती	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रि	५	५	४	१	५	५
३	काय	६	६	१	१	६	६
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५	१५
५	वेद	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	८	८	८	७	८
८	संयम	७	७	७	७	४	७
९	दर्शन	४	४	४	४	३	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	२	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१४	१४	१४	६	१४
१६	जीवभेद	१४	१४	१०	१	१४	१४
१७	पर्याप्ति	६	अपनी	अपनी	अपनी	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	अपनी २	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	अपनी २
२१	द्रष्टि	३	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	५७	५७	५७	५७

[दृष्टी–कर्म–शरीर द्वार २१–२२–२३]

नं०	द्वार	स०	मि०	मिश्र	कर्मन	औ० ते. का.	वै०	अहा०
१	गती	४	४	४	४	२–४	४	१
२	इन्द्रिय	४	५	१	५	५	२	१
३	काय	१	६	१	६	६	२	१
४	योग	१५	१३	१०	१५	१५	१०	१०
५	वेद	३	३	३	३	३	३	२
६	कषाय	२१	२५	२१	२५	२५	२५	१३
७	ज्ञान	५	३	३	४/७ ४/८	८	७	४
८	संयम	७	१	१	७	७	४	२
९	दर्शन	४	३	३	४/४ ४/३	४	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	१	२	१	२	२	२	१
१२	सन्नी	२	२	१	२	२	२	१
१३	सम्यक्त्व	५	१	१	७	७	७	४
१४	आहारिक	२	२	१	२	२	२	१
१५	गुण	१२	१	१	४/१२ ४/१४	१४	७	२
१६	जीव	६	१४	१	१४	१४	४	१
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	अ०	अ०	अ०	३	३	३	१
२२	कर्म	८	८	८	अ० २	८	८	८
२३	शरीर	५	४	४	५	अपना	अपना	अपना
२४	हेतु	४६	५५	४३	५७	५७	५२	२१

[हेतु द्वार २४]

नं०	द्वार.		मिथ्या०५	अव्रत १२	कषाय २५	योग १५
१	गती	४	४	४		
२	इन्द्रिय	५	[illegible]	५		
३	काय	६	[illegible]	६		
४	योग	५	[illegible]	१३		
५	वेद	१३	[illegible]	३		
६	कषाय	२५	[illegible]	२५		
७	ज्ञान	८	[illegible]	६		
८	संयम	७	१	१/१ १/२		
९	दर्शन	४	४/२ १/३	३		
१०	लेश्या	६	६	६	कषाय द्वार में	योग द्वार में
११	भव्य	२	२	२		
१२	सन्नी	२	४/१ १/२	२		
१३	सम्यक्त्व	७	१	७		
१४	आहारिक	२	२	२		
१५	गुणस्थान	१४	१	१/४ ११/५		
१६	जीव भेद	१४	४/२ १/१४	१४		
१७	पर्याप्ति	६	६	६		
१८	प्राण	१०	१०	१०		
१९	संज्ञा	४	४	४		
२०	उपयोग	२	२	२		
२१	दृष्टी	३	१	३		
२२	कर्म	८	८	८		
२३	शरीर	५	४	४		
२४	हेतु	५७	५५	५५		

बहुश्रुत—प्रश्न बाशटीयो. थो. १२७

नं०	मार्गणा	जीव.	गुण०	योग.	उप०	लेश्या
१	वासुदेवकि आगति में	१	४	१०	९	४
२	हास्यादि समदृष्टि	६	६	१५	७	६
३	अव्रती मन योगी में	१	३	१२	९	६
४	एकान्त संज्ञी समदृष्टि अव्रती	२	२	१३	६	६
५	अप्रमत हास्यादि	१	२	११	७	३
६	तेजुलेशी एकेन्द्री	१	१	३	३	१
७	अमर गुणस्थान में	१	३	१२	१२	६
८	अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	६
९	अमर गु० चर्मान्त	१	२	१२	८	६
१०	यथाख्यात चा० संयोगी	१	३	११	९	१
११	गुणस्थान के चर्मन्ति में	१४	२	१३	९	६
१२	संयोगी गु० ,,	१४	२	१३	८	६
१३	छद्मस्थ गु० ,,	१४	२	१३	१०	६
१४	सकषाय गु० ,,	१४	२	१३	१०	६
१५	सवेदी गु० ,,	१४	२	१३	१०	६
१६	व्रती छद्मस्थ गु०	१	७	१४	७	६
१७	अप्रमत्त छद्मस्थ०	१	६	११	७	३
१८	हास्यादि संयति ,,	१	३	१४	७	६
१९	हास्यादि अप्रमत्त ,,	१	२	११	७	३
२०	व्रती सकषाय ,,	१	५	१४	७	६
२१	व्रती सवेदी ,,	१	४	१४	७	६
२२	व्रती छद्मस्थ ,,	१	७	१४	७	६
२३	समदृष्टि सवेदी ,,	६	७	१५	७	६
२४	समदृष्टिसकषाय ,,	६	८	१५	७	६
२५	वाट वहे ता जीव में	७	३	१	१०	६

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नं. १२८

जीवोंके १४ भेदके प्रश्नोत्तर।

प्रश्न				उत्तर
१ जीवका एक भेद कहां पावे ?				केवलीमें
२	,,	दोय ,,	,,	बेइन्द्रियमें
३	,,	तीन ,,	,,	मनुष्यमें
४	,,	चार ,,	,,	एकेन्द्रियमें
५	,,	पांच ,,	,,	भाषकमें
६	,,	छे ,,	,,	सम्यग्दृष्टीमें
७	,,	सात ,,	,,	अपर्याप्तामें
८	,,	आठ ,,	,,	अनाहारीकमें
९	,,	नव ,,	,,	एकान्त सरागी त्रसमें
१०	,,	दश ,,	,,	त्रस कायमें
११	,,	एग्यारे ,,	,,	एकान्त बादर सरागीमें
१२	,,	बारह ,,	,,	बादरमें
१३	,,	तेरह ,,	?	एकान्त छद्मस्तमें
१४	,,	चौदा ,,	?	सर्व संसारी जीवोंमें

१४ गुणस्थानके प्रश्नोत्तर.

प्रश्न			उत्तर
१५ एक गुणस्थान कहां पावे ?			मिथ्यात्वी जीवमें
१६ दोय	,,	१—२	बेइन्द्रियमें
१७ तीन	,,	१-१३-१३	अमरमें
१८ चार	,,	१-२-३-४	नारकी देवतावोंमें

१९ पांच	क्रमःसर		तीर्यंच पांचेन्द्रियमें
२० छे	क्रमःसर		प्रमादी जीवोंमें
२१ सात	,,	,,	तेजो लेश्यामें
२२ आठ	,,	,,	हास्यादिकमें
२३ नव	,,	,,	सवेदी जीवोंमें
२४ दश	,,	,,	सरागी जीवोंमें
२५ इग्यारे	,,	,,	मोह कर्मकी सतामें
२६ बारह	,,	,,	छद्मस्त जीवोंमें
२७ तेरह	,,	,,	संयोगी जीवोंमें
२८ चौदा	,,	,,	सर्व संसारी जीवोंमें

२९ वाटे वहे तों मे गु० तीन। १। २। ४।

३० अनाहारीक गु० पांच। १। २। ४। १३। १४।

३१ सास्वता गु० पांच। १। ४। ५। ६। १३।

३२ एकान्त संज्ञी गु० दश। तीजासे बारहतक।

३३ असंज्ञी गु० दोय। १। २

३४ नोसंज्ञी नोअसंज्ञी गु० दोय। १३। १४।

३५ सम्यग्द्रष्टीमें गु० बारह। पहिलो तीजो वर्जके।

३६ साधुमें गु० नव-छठासे चौदमा तक।

३७ श्रावकमें गु० एक पांचमो

३८ अप्रमादिमें गु० आठ सातमा से चौदमा।

३९ वीतरागमें गु० चार। ११। १२। १३। १४

थोकडा नं. १२९

१५ योगोंका प्रश्नोत्तर.

प्रश्न	उत्तर
१ एक योग कीसमे पावे ?	वाटे वेहता जीवमें–कार्माण
२ दोय योग ,, ?	बेंद्रियका पर्याप्तामें
३ तीन योग ,, ?	पृथ्वीकायमें
४ चार योग ,, ?	चौरिंद्रियमें
५ पांच योग ,, ?	वायुकायमें
६ छे योग ,, ?	असंज्ञी जीवोंमें
७ सात योग ,, ?	केवली तेरहवें गु॰ में
८ आठ योग ,, ?	पांचेन्द्रिय अपर्याप्ता अनाहारीकके [अलद्धियामें
९ नव योग ,, ?	नव गुणस्थानमें।
१० दश योग ,, ?	तीजा मिश्र गुण स्थानमें
११ इग्यारे योग ,, ?	देवतावोंमें
१२ बारह ,, ,, ?	पांचमें गु॰ श्रावकमें
१३ तेरह ,, ,, ?	तीर्यंचपांचेन्द्रिमें
१४ चौदह ,, ,, ?	आहारीक जीवोंमें
१५ पन्दरा ,, ,, ?	सर्व संसारी जीवोंमें

१२ उपयोगका प्रश्नोत्तर.

१६ एक उपयोग ?	साकार उपयोगमें सिद्ध होते समय
१७ दो ,, ?	केवली भगवान्‌में
१८ तीन ,, ?	एकेन्द्रिय जीवोमें
१९ चार ,, ?	असंज्ञी मनुष्यमें
२० पांच ,, ?	तेइन्द्रि जीवोंमें

२१	छे	,,	? मिथ्यात्वो जीवोंमें
२२	सात	,,	? छद्मस्त जीवोंमें
२३	आठ	,,	? अचरम जीवोंमें
२४	नव	,,	? देवतावोंमें
२५	दश	,,	? छद्मस्तजीवोंमें
२६	इग्यारा	,,	? नोभेंजमें
२७	बारह	,,	? सर्व जीवोंमें

थोकडा नं. १३० .

छे लेश्याका प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न		उत्तर
१	एक लेश्या	? अनुत्तर वैमानका देवतावोंमें
२	दोय लेश्या	? तीजी नरकमें
३	तीन लेश्या	? बेइन्द्रिय जीवोंमें
४	चार लेश्या	? युगल मनुष्योंमें
५	पांच लेश्या	? तीर्थंकरों कि आगतिमें
६	छे लेश्या	? समुचय जीवोंमें
७	एकली कृष्ण	? सातमी नारकीमें
८	,, निल०	? चोथी नरकमें
९	,, कापोत०	? पहिली ,,
१०	,, तेजस०	? ज्योतीषी देवोंमें
११	,, पद्म०	? पांचमा देवलोकके देवोंमें
१२	,, शुक्ल०	? सर्वार्थसिद्धके देवोंमें
१३	,, कृष्ण० निल०	? पांचमी नरकमें

१४ ,, कृष्ण० कापोत० ? नारकीके चरमान्तमे
१५ कृष्ण० तेजस० ? लक्ष वर्षका देवतावोंमें
१६ ,, पद्म० ? परिव्राजक कि गतिका चरमान्तमें
१७ ,, शुक्ल० ? उत्कष्ट स्थितिमें
१८ निल० कापोत० ? तीजी नारकीमें
१९ ,, तेजस० ? पल्योपमके असंख्यात भाग कि स्थितिका देवताओंमें
२० ,, पद्म० ? दश सागरोपमकि स्थितिमें।
२१ ,, शुक्ल० ? दश सागरोपम और पल्योपमके असंख्यातमें भाग अधिक स्थितिवालामें
२२ कापोत० तेजस० ? दोय सागरोपमकि स्थितिमें
२३ ,, पद्म ? तीन सागरोपमकि स्थितिमें
२४ ,, शुक्ल ? वासुदेवकि आगतिका चरमान्तमें
२५ तेजस० पद्म ? वैमानिक देवोकी प्रत्येक सागरोपमकि स्थितिमें
२६ तेजस० शुक्ल० ? वैमानिक देवोंका चरमान्तमें
२७ पद्म० ,, ? वैमानिकके एक वेदवालोंमें
२८ निल० कापोत० तेजस० पद्म० ? प्रत्येक सागरोपम स्थितिमें
२९ कृष्ण० निल० कापोत, तेजस, पद्म० ? पांचवा देवलोकमें
३० कापोत० तेजस० पद्म० शुक्ल० ? वासुदेवकि आगतिमें
३१ कृष्ण० निल० कापोत० तेजस० शुक्ल० ? सर्वार्थ सिद्ध वैमानमें

थोकडा नम्बर १३१

(तीर्यंचके ४८ भेदोंका प्रश्नोत्तर.)

तीर्यंचका एक भेद चार शरीरी एकेन्द्रियमें पावे।

तीर्यंचके दो भेद ? बेन्द्रिय जीवोंमे पावे ।
,, तीन भेद ? तेजुलेशी एकेन्द्रियमे पावे ।
,, चार भेद ? पृथ्वीकायके जीवोंमे पावे ।
,, पांच भेद ? चार शरीरी तीर्यंच पांचेन्द्रियमे ।
,, छे भेद ? पर्याप्ता मिश्र योगि तीर्यंचमे ।
,, सात भेद ? बादर सत्व तीन शरीरी जीवोंमे ।
,, आठ भेद ? तेजुलेशी अपर्याप्ता तीर्यंचमे ।
,, नौ भेद ? बादर एकेन्द्रिय तीन लेशीमें ।
,, दश भेद ? सुक्षम जीवोंमें पावे ।
,, ११ भेद एकेन्द्रियके अपर्याप्ता जीवोमें ।
,, १२ भेद ? घ्राणेन्द्रिके पर्याप्ता जीवोमें ।
,, १३ भेद ? सम्यग्दष्टि अपर्याप्ता तीर्यंचमे ।
,, १४ भेद ? मनुष्यकी अभ्गतिके एकेन्द्रियमें ।
,, १५ भेद ? तीर्यंच पांचेन्द्रिय मिश्रयोगमें ।
,, १६ भेद ? सम्यक्दष्टि चक्षुइन्द्रिय तीर्यंचमें
,, १७ भेद ? सम्यक्दष्टि घ्रणेन्द्रिय तीर्यंचमें ।
,, १८ भेद ? सम्यक्दष्टि तीर्यंचमें ।
,, १९ भेद ? तीन लेशी एकेन्द्रिय जीवोमें ।
,, २० भेद ? तीर्यंच पांचेन्द्रियमें ।
,, २१ भेद ? तीन शरीरी एकेन्द्रियमें ।
,, २२ भेद ? एकेन्द्रिय जीवोमें ।
,, २३ भेद ? उर्ध्व लोकके अपर्याप्ता तीर्यंचमें ।
,, २४ भेद ? तीर्यंचके अपर्याप्तामें ।
,, २५ भेद ? पांचेन्द्रियके अलब्धिया तीन लेशीमें ।
,, २६ भेद ? तीर्यंच त्रस जीवोमें ।
,, २७ भेद ? पांचेन्द्रियके अलब्धियेतींनशरीरी ती०
,, २८ भेद ? पांचेन्द्रियके अलब्धियातीर्यंचमें ।

,, २९ भेद ? तीर्यंच एकान्तमिथ्यात्वी तीनशरीरी ।
,, ३० भेद ? तीर्यंच एकान्त मिथ्यात्वीमें ।
,, ३१ भेद ? सम्यक्‌दृष्टि घ्राणेन्द्रियके अलद्धियेतीर्यं०
,, ३२ भेद ? बादर तीन शरीरीतीर्यंच जीवोमें ।
,, ३३ भेद ? सम्य० ती० पांचेन्द्रिय अलद्धिय तीर्यंचमें ।
,, ३४ भेद ? प्रत्येक शरीरी एक संस्थानी तीर्यंचमें ।
,, ३५ भेद ? सम्य० अपर्या० के अलद्धियातीर्यंचमें ।
,, ३६ भेद ? उर्ध्वलोक एक संस्थानी तीर्यंचमें ।
,, ३७ भेद ? एकेन्द्रिय पर्याप्ताका अलद्धिया ती०
,, ३८ भेद ? एक संस्थानी तीर्यंचमें ।
,, ३९ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धिया तीन शरीरी ती०
,, ४० भेद ? मनुष्यकी आगतिके तीर्यंचमें ।
,, ४१ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धि० प्रत्येक शरीरी ती०
,, ४२ भेद ? उर्ध्वलोकके प्रत्येक शरीरी तीर्यंचमें ।
,, ४३ भेद ? चार शरीरी पंचेन्द्रिके अलद्धिया तीर्यंचमें ।
,, ४४ भेद ? प्रत्येक शरीरी तीर्यंचमें ।
,, ४५ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धिया तीर्यंचमें ।
,, ४६ भेद ? उर्ध्वलोकके तीर्यंचमें ।
,, ४७ भेद ? चार शरीरी एकेन्द्रि० अलद्धि० तीर्यंचमें ।
,, ४८ भेद ? समुच्चय तीर्यंचमें ।

थोकडा नम्बर १३१

(गुणस्थानोंके प्रश्नोत्तर)

पहला गुणस्थान पावे अभव्य जीवोंमें ।
पहला दूसरा गु० पावे असंज्ञी जीवोंमें ।

पहलासे तीसरा गु० अज्ञानवादी समोसरणमें ।
,, चोथो ,, नारकी देवतोंमें पावे ।
,, पांचवो ,, तीर्यंच जीवोमें पावे ।
,, छट्ठो ,, प्रमादी जीवोंमे पावे ।
,, सातवां ,, पावे तेजोलेशी जीवोमें ।
,, आठवां ,, ,, छेहास्यादीमे पावे ।
,, नौवां ,, ,, सवेदी जीवोंमें ।
,, दशवां ,, ,, सकषायि जीवोंमें ।
,, इग्यारवां ,, ,, मोहकर्मकी सत्तामें ।
,, बारवां ,, ,, छद्‌मस्थ जीवोंमें ।
,, तेरहवां ,, ,, संयोगी जीवोमें ।
,, चौदहवां ,, ,, सर्व संसारी जीवोंमें ।
पहला और चौदहवां गु० पावे गुणस्थानोंके चरमान्तमें ।
,, ,, तेरहवां गु० । संयोगी गु० के चरमान्तमे ।
,, ,, बारहवो ,, छद्‌मस्थ गु० के चरमान्तमें ।
,, ,, इग्यारवां ,, मोहकर्मकी सात गु० के चमान्तमें ।
,, ,, दशवो ,, सकषायि गु० के ,,
,, ,, नौवा ,, सवेदी ,, ,, ,,
,, ,, आठवो ,, छेहास्यादि ,, ,, ,,
,, ,, सातवो ,, तेजोलेशी ,, ,, ,,
,, ,, छट्ठो ,, प्रमादी ,, ,, ,,
,, ,, पांचवो ,, तीर्यंचके ,, ,, ,,
,, ,, चोथो ,, देवगुणस्थानके गु० के ,,
,, ,, तीसरो ,, मिथ्यात्वकी क्रियावालोमें ।
दूसरो और तीसरो गु० ? एकान्त भव्य क्रियावादी समो० में ।
,, ,, चौथो ,, ,, ,, अव्रती सम्यक् दृष्टिमें ।
,, ,, पांचवो ,, ,, ,, तीर्यंच गु० चरमान्तमें ।
,, ,, छट्ठो ,, ,, ,, प्रमादि गु० ,,

,,	,,	सातवो	,,	,,	,,	तेजुलेशी गु० के	,,
,,	,,	आठवो	,,	,,	,,	हास्यादि गु० के	,,
,,	,,	नौवा	,,	,,	,,	सवेदी गु० के	,,
,,	,,	दशवो	,,	,,	,,	सकषायि गु० के	,,
,,	,,	इग्यारवा	,,	,,	,,	मोहकर्मकी सत्ताके	,,
,,	,,	बारहवा	,,	,,	,,	छद्मस्थ गु० के	,,
,,	,,	तेरहवा	,,	,,	,,	संयोगी गु० के	,,
,,	,,	चौदहवा	,,	,,	,,	सर्वजीवोंके	,,
तीसरा	और	चोथा	,,	एकान्त संज्ञी		अव्रती जीवोंमें।	
,,	,,	पांचवा	,,	,,	,,	तीर्यंच गु० के चरमान्त	
,,	,,	छठ्ठा	,,	,,	,,	प्रमादि गु० के	,,
,,	,,	सातवा	,,	,,	,,	तेजोलेशी गु० के	,,
,,	,,	आठवा	,,	,,	,,	हास्यादि गु० के	,,
,,	,,	नौवा गु०	,,	,,		सवेदी गु० के	,,
,,	,,	दशवा ,,	,,	,,		सकषायि ,, के	,,
,,	,,	इग्यारवा०	,,	,,		मोहसत्ता ,, के	,,
,,	,,	बारहवा गु०	,,	,,		छद्मस्थ० ,, के	,,
,,	,,	तेरहवा ,,	,,	,,		संयोगी० ,, के	,,
,,	,,	चौदहवा०	,,	,,		समुच्चय गु० के	,,
चोथो	और	पंचवा गु०		क्षायक सम्य० वाले तीर्यंच में			
चोथो	और	छट्ठो गु०	,,	,,		प्रमादि गु० के चरमान्तमें	
,,	,,	सातवा गु०	,,	,,		तेजोलेशी ,,	,,
,,	,,	आठवा	,,	,,	,,	हास्यादि ,,	,,
,,	,,	नौवा	,,	,,	,,	सवेदी ,,	,,
,,	,,	दशवा	,,	,,	,,	सकषायि ,,	,,
,,	,,	इग्यारवा	,,	,,	,,	मोहकर्म सत्ता ,,	,,
,,	,,	बारहवा	,,	,,	,,	छद्मस्थ ,,	,,
,,	,,	तेरहवा	,,	,,	,,	संयोगी ,,	,,

,, ,, चौदह ,, ,, ,, समुच्चय ,, ,,

पांचवो और छठ्ठो गु० व्रती प्रमादी गु० में पावे

,, ,, सातवा ,, ,, तेजोलेशा के चरमान्तमें

,, ,, आठवो ,, ,, हास्यादि के चरमान्तमें

,, ,, नौवो ,, ,, सवेदी गु० के ,,

,, ,, दशवो ,, ,, सकषायि ,, ,,

,, ,, इग्यारवो ,, ,, मोहसत्ता ,, ,,

,, ,, बारहवो ,, ,, छद्मस्थ ,, ,,

,, ,, तेरहवा ,, ,, संयोगी ,, ,,

,, ,, चौदहवा ,, ,, समुच्चय ,, ,,

छठ्ठो और सातवा गु० तेजोलेशी साधु में पावें

,, ,, आठवो ,, हास्यादि ,, के चरमान्तमें

,, ,, नौवो ,, सवेदी ,, के ,,

,, ,, दशवा ,, सकषायि ,, के ,,

,, ,, इग्यारवो ,, मोहसत्ता ,, के ,,

,, ,, बारहवो ,, छद्मस्थ ,, के ,,

,, ,, तेरहवो ,, सयोगी ,, के ,,

,, ,, चौदहवा ,, समुच्चय ,, के ,,

सातवां और आठवा० अप्रमादि हास्यादि गु० मे

,, ,, नौवा गु० ,, सवेदी के चरमान्त में

,, ,, दशवा० ,, सकषायि ,,

,, ,, इग्यारवा ,, मोहसत्ता के ,,

,, ,, बारहवा ,, छद्मस्थमेके ,,

,, ,, तेरहवा० ? ,, सयोगी के ,,

,, ,, चौदहवा ? ,, समुचय गु. के ,,

आठवां और नौवां गु० ? शुक्ल ध्यान सवेदी गु० में

,, ,, दशवा ? ,, सकषायि के चरमान्तमें

,, ,, इग्यारवा ? ,, मोहसत्ता के ,,
,, ,, बारहवा ? ,, छद्मस्थ के ,,
,, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के ,,
,, ,, चौदवा ? ,, समुचय गु० के ,,
नौवा और दशवा गु० ? अवेदी सकषायि गु० मे पावे
,, ,, इग्यारवा ? ,, मोहसत्ता के चरमान्तमें
,, ,, बारहवा ? ,, छद्मस्थ गु० के ,,
,, ,, तेरहवा ? ,, संयोगी ,, के ,,
,, ,, चोदहवा० ? ,, समुचय ,, के ,,
दशवा और इग्यारवा० ? मोह अबन्ध मोहसत्ता गु० मे पावे
,, ,, बारहवा ? ,, छद्मस्थ गु० चरमान्तमें
,, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के ,,
,, ,, चौदवा ? ,, समुचय गु० के ,,
इग्यारवा और बारहवा ? वीतराग छद्मस्थ गु० ते पावे
,, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के चरमान्त में
,, ,, चोदहवा ? ,, समुचय गु० के चरमान्त में
बारहवा और तेरहवा ? क्षीण मोह संयोगी में पावे
,, ,, चौदहवा० ? ,, समुचय गु० के चरमान्तमें
तेरहवा और चोदहवा गु० ? केवली भगवान् में पावे

× नौवे गु० के शेष दो समय रहते हुवे अवेदी हो जाते हैं

थोकडा नम्बर १३२

(त्रिक संयोगादि गुणस्थान-प्रश्नोत्तर)

दूजो तीजो चोथो गु० ?	एकान्त	भव्य	अव्रती में पावे।
दूजा से पांचवे तक ?	,,	,,	तीर्यंच में पावे।
,, छटा तक ?	,,	,,	प्रमादी जीवों में पावे।
,, सातवा तक ?	,,	,,	तेजोलेशी में पावे।
,, आठवा तक ?	,,	,,	हास्यादि में पावे।
,, नौवा तक ?	,,	,,	सवेदी में पावे।
,, दशवा तक ?	,,	,,	सकषायि में पावे।
,, इग्यारवा तक ?	,,	,,	मोहसत्ता में पावे।
,, बारहवा तक ?	,,	,,	छद्मस्थ में पावे।
,, तेरहवा तक ?	,,	,,	सयोगी में पावे।
,, चौदहवा तक ?	,,	,,	समुच्चय गु० में पावे।
तीजो चोथो पांचवो गु० ?	एकान्त	संज्ञी	तीर्यंच में पावे।
तीजा से छटा तक ?	,,	,,	प्रमादी में पावे।
,, सातवा तक ?	,,	,,	तेजोलेशी में पावे।
,, आठवा तक ?	,,	,,	हास्यादि मे पावे।
,, नौवा तक ?	,,	,,	सवेदी में पावे।
,, दशवा तक ?	,,	,,	सकषायि में पावे।
,, इग्यारवा तक ?	,,	,,	मोहसत्ता में पावे।
,, बारहवा तक ?	,,	,,	छद्मस्थ में पावे।
,, तेरहवा तक ?	,,	,,	सयोगी में पावे
,, चौदवा तक ?	,,	,,	समुचय में पावे।

चोथो पांचवो छट्ठो गु० ? क्षायक सम्यक्त्व प्रमादी में पावे।
चोथासे सातवा तक ? " " तेजोलेशी में पावे।
" आठवा तक ? " " हास्यादि में "
" नौवा तक ? " " सवेदी में "
" दशवा तक ? " " सकषायि में "
" इग्यारवा तक ? " " मोहसता में "
" बारहवा तक ? " " छद्मस्थो में "
" तेरहवा तक ? " " संयोगी में "
" चौदहवा तक ? " " समुचय गु० "
पांचवा छट्ठो सातवो ? व्रती अप्रमादीमें पावे।
पांचवासे आठवातक ? " हास्यादि में पावे।
" नौवातक ? " सवेदीमे "
" दशवातक ? " सकषायि में "
" इग्यारवातक ? " मोहसता में "
" बारहवातक ? " छद्मस्थ में "
" तेरवातक ? " सयोगी में "
" चौदहवातक ? " समुचय में "
छटो सातवो आठवो ? मुनि हास्यादि में "
छटासे नौवातक ? मुनि सवेदी में "
" दशवातक ? " सकषायि में "
" इग्यारवातक ? " मोहसत्ता में "
" बारहवातक ? " छद्मस्थो में "
" तेरहवातक ? " संयोगी में "
" चौदवातक ? " समुचय में "
सातवा आठवा नौवा गु० ? अप्रमत्त सवेदीमें पावे।
सातवासे दशवातक ? अप्रमत्त सकषायिमें पावे।
" इग्यारवातक ? " मोहसत्तामें "
" बारहवातक ? " छद्मस्थोंमें "

” तेरहवातक ?	”	सयोगीमें	”
” चौदहवातक ?	”	समुचयमें	”
आठवा नौवा दशवा ?	शुक्लध्यान	सकषायिमें	पावे ।
आठवासे इग्यारवा ?	”	मोहसत्तामें	”
” बारहवातक ?	”	छद्मस्थोंमें	”
” तेरहवातक ?	”	सयोगीमें	”
” चौदवातक ?	”	समुचयमें	”
नौवा दशवा इग्यारवा ?	अवेदी	मोहसत्तामें	पावे ।
नौवासे बारहवातक ?	”	छद्मस्थोंमें	”
” तेरहवातक ?	”	सयोगीमें	”
” चौदवातक ?	”	समुचयमें	”
दशवा इग्यारवा बारहवा ?	अकषायि	छद्मस्थोंमें ।	
दशवासे तेरहवातक ?	”	सयोगीमें	
” चौदहवातक ?	”	समुचयमें	पावे ।
इग्यारवा बारहवा तेरहवा ?	वीतराग	सयोगीमें	पावे ।
इग्यारवासे चौदहवातक ?	”	समुचयमें	पावे ।
बारहवा तेरहवा चौदहवा ?	क्षीण	वीतरागीमें	पावे ।

इनके सिवाय भी गुणस्थानोंके विकलप हो सकते है लेकीन जो उपर लिखे विकलप कण्ठस्थ कर लेगा वह स्वयंही हजारो विकलप कर सकेगा वास्ते यहां इतनाही लिखा है इति ।

॥ इति शीघ्रबोध भाग १० वां समाप्त ॥

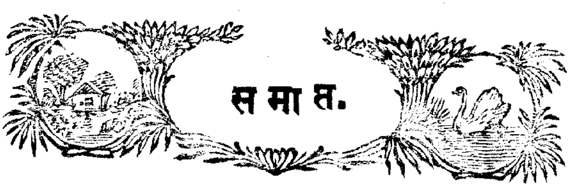

वन्दे वीरम्.

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय मुनिश्री श्री १००८ श्री श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब का सं. १९८० का चतुर्मास लोहावट ग्राम में हुवा जिसके जरिये धर्मोन्नति.

मारवाड स्टेट जोधपुर कस्बे फलोदी से आठ कोशके फासले पर लोहावट नाम का ग्राम है जिस्के दो वास. एक जाटावास जिसमें एक जिनमन्दिर एक धर्मशाला एक उपासरा १२५ घर जैनों के अच्छे धनाढ्य धर्मपर श्रद्धा रखनेवाले हैं दूसरा विसनोइवास जिसमें एक जिनमन्दिर एक धर्मशाला ४० घर जैनो के ४० घर स्थानकवासी भाइयों के हैं मुनि श्रीका चातुर्मास जाटावास में हुवा था आपश्री की विद्वता और मधुर व्याख्यान द्वारा जिन शासन कि अच्छी उन्नति हुई वह हमारे वाचक वर्ग के अनुमोदन के लिये यहां पर संक्षिप्तसे उल्लेख कर पूज्यवर मुनि महाराजों से मरूस्थल मे विहार करने कि सविनय विनति करते हैं।

(१) तीन वर्षों से प्रार्थना—विनति करते हुवे हमारे सद्भाग्य से

फागण वद २ के रोज फलोदी से आपश्री का पधारणा लोहावट हुवा श्री संघ की तरफ से नगर प्रेवश का महोत्सव वाजा गाजा के साथ कर वडी खुशी और आनन्द मनाया गया था।

(२) श्री संघ के अत्याग्रह से चैत वद ६ के रोज व्याख्यान में श्री भगवतीसूत्र प्रारंभ हुवा जिसका वरघोडा रात्री जागरण स्वामी वात्सल्य शाह रतनचंदजी छोगमलजी पारख की तर्फ से हुवा श्री संघ की तरफ से ज्ञानपूजा की गई थी जिसमें अठारा सुवर्ण मुद्रिकायें मिला के रु १०००) की आमदनी हुइ इस सुअवसर पर फलोदी से श्रावक समुदाय तथा श्री जैन नवयुवक प्रेम मण्डल के सेक्रेटरी—मेम्बरादिने पधार कर वरघोडादि में भक्तिका अच्छा लाभ लिया था।

(३) जीवदयामें रस—अज्ञान के प्रभाव से हमारे ग्राम में अति घृणित रूढी थी कि तलाव में मास दोय मास का पाणी शेष रह जाता तब ग्रामवाले उस पाणी को अपने घरों मे भरती कर लेते थे जिससे अनेक जलचर जानवरों की हानि होती थी वह आपश्री के उपदेश द्वारा बन्ध हो गया, स्यात् पाणी रखे तो सात दिनों से ज्यादा भरती न करें हमारे लिये यह महान् उपकार हुवा है।

(४) महान् प्रभावीक सूत्र श्री भगवतीजी के वाचनासमयमें हमारे यहां श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभा की स्थापना हुई जिसका खास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्ट द्वारा यानि सुखसागर के अमृतजल का बिन्दुवों

द्वारा जनता को अमृतपान करानेका है, तदनुसार स्वल्प समय में २०००० ट्रेक्ट छपवा के जनता की सेवा में भेज दिये गये हैं।

(५) जमाना हाल के मुताबिक आपश्री के उपदेश से चैत वद ९ के रोज यहांपर श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डल की स्थापना हुई जिसमें अच्छे अच्छे मातबर लोक शरीक है प्रेसिडन्ट सेक्रेटरी मेम्बरादि के ६९ नाम दर्ज है मण्डल का उद्देश समाज सेवा और ज्ञान प्रचार करने का है इस मण्डल के जरिये और बुजर्गों की सहायता से हमारी न्याति जाति में बहुत ही सुधारा हुवा है जैसे ओसवाल और इतर जाति एक ही पटे में जीमते थे वह अलग अलग करवा दिये गये--पाणी के वरतनो पर मेम्बर को मुकरर कर दिये गये वह पाणी छान के पीलाया करें जीमणवार में भूठा इतना पडता था कि घरधणी को वडीभारी नुकशान और असंख्य जीवों की हानि होती थी वह कुरीवाज भी निर्मूल हो गया, इतना ही नहीं किन्तु फजूल खरचे पर भी अंकुश रखने से हजारो रूपैया का फायदा दरसाल में होने लग गया जिससे हमारी आर्थीक स्थिति में भी बहुत सुधारा हुवा और हो रहा है।

(६) मित्र मण्डल के जरिये धार्मीक ज्ञान का भी प्रचार बहुत हुवा जो कि थोकडे जीवविचार नवतत्त्व दंडक प्रकरणादि बहुत से लोग कण्ठस्थ कर तत्त्वज्ञान में प्रवेश हुवे और होने के उम्मेदवार हो रहे है करीबन् ४० मेम्बर थोकडे कण्ठस्थ करते हैं जिस्मे ५--६ जणे तों अच्छे श्रोता बन गये है और ज्ञानमें रूचि भी अधिक हो रही है।

(७) आपश्री के विराजने से जिन आगमों का नाम तक हम नही जानते थे और उन आगमो का श्रवण करना तो हमारे लिये मरूस्थल में कल्पवृक्ष की माफिक मुश्किल था परन्तु आपश्री की कृपा से निम्न लिखित आगमों की वाचना हमारे यहां हुई थी।

१ श्रीमद् भगवतीजी सूत्र शतक ४१–१३८

५ श्री निरियावलीकाजी सूत्र अध्ययन ५२

१ श्री दशवैकालिकजी सूत्र अध्ययन १०

१ श्री आचारांगजी सूत्र अध्ययन २५

१ श्री उतराध्ययनजी सूत्र अध्ययन ३६

१ श्री जम्बुद्विपपन्नति सूत्र.

१ श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६

१ श्री उपासकदशांग सूत्र अध्ययन १०

कूल १२ सूत्र और ८ प्रकरण की वाचना हुई।

आपश्रीकी व्याख्यान शैली–स्याद्वादमय और युक्ति दृष्टान्तादिसे समजानेकी शक्ति इतनी प्रबलथी कि सामान्य बुद्धिवाले के भी समजमे आ जावे. आपके व्याख्यानमें जैनोंके सिवाय स्थानकवासी भाई तथा सरकारी कर्मचारी वर्ग स्टेशन बाबुजी, पोष्ट बाबुजी, मास्टरजी पुलीस थाणादारजी आदि भी आया करते थे हमारे ग्राममे साधु साध्वियों सदेव आया करती है चतुर्मास भी हुवा करते है किन्तु इतने आगम इस खुलासाके साथ आपश्रीके मुखाविंदसे ही सुने है।

(८) सभाओ, कमेटीओ, मिटींगो पब्लिक भाषणोद्वारा जमानेकी खबर जनताको दी गइ थी रेसम या बिदेशी, हिंसामय, पदार्थोंका त्याग भी कितनेही भाई बहिनोने किया था और समाजमें जागृतिभी अच्छी हुइ थी और श्री वीरजयन्ति श्री रत्नप्रभसूरी जयन्ति. दादाजीकी जयन्ति के समय पब्लिक सभावों द्वारा जैनधर्मकी महत्वता पर बडेही जोशीले भाषण हुवे थे.

(९) पुस्तकोंका प्रचारभी हमारा ग्राम और समय के मुकाबले कुच्छ कम नहीं हुवा, निम्न लिखित पुस्तके हमारे यहांसे प्रकाशित हुई है.

१००० श्री स्तवन संग्रह भाग चोथा.
१००० श्री भावप्रकरण सावचूरी.
५००० श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका.
५००० श्री शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ पांचो भागकि हजार हजार नकल एकही कपडेकि जिल्दमे बन्धाइगइ है.
१००० श्री गुणानुराग कूलक भाषान्तर.
१००० श्री महासती सुरसुन्दरी रसीक कथा.
१००० श्री मुनि नाममाला जिस्मे ७५० मुनीयोंको वन्दन.
५००० श्री पंचप्रतिक्रमण सूत्र विधि सहित. (कूल २००००)

(१०) पुस्तके छपानेमें मदद भी अच्छी मिलीथी.

१०००) श्री भगवतीसूत्र प्रारंभमे पूजाका.
२००) श्री भगवती सूत्र समाप्त मे पूजाका.

२५०) शाह् हजारीमल कुंवरलाल पारख.

२००) शाहा लूणकरण धूलमल पारख.

६५) शाहा आइदांन अगरचंद पारख.

७५) शाहा जमनालाल इन्दरचंद पारख.

७५) शाहा फोजमल गैनमल पारख.

५१) शाहा मोतीलाल हीरालाल पारख.

५०) शाहा इन्दरचंद संपतलाल पारख.

५०) शाह माणकलाल चोपडा.

२५) शाहा लीखमीचंद मूलचंद पारख.

१२६) परचुन तथा बाहारकी आमदानी.

८००) पर्युषणोंमे स्वप्नोंकी आमदानी कुल ३०००)

पंचप्रतिक्रमण ५००० नकलो की छपाइ एक गुप्त दानेश्वरी की तरफसे मदद मिलीथी.

(११) ज्ञान पंचमिपर एक धर्म जलसा किया गया था वह मानो समौसरणकि रचनाहीका स्वरुप था १५ दिन तक महोत्सव रहा प्रतिदिन नइ नइ पूजा भणाइ गई थी करीबन् एक हजार रुपैयोंका खरच हुवा था.

(१२) स्वामिवात्सल्य—स्वधर्मीभाइयों मे वात्सल्य वृद्धिके लिये स्वामिवात्सल्य (१) श्री भगवतीसूत्रके प्रारंभ में फलोदीवाले आये थे उन्होंको स्वामिवात्सल्य शाह छोगमलजी पारखकी तरफसे हुवाथा, और

प्रभावनाभी हुइथी (२) श्रावण वद ३ कों फलोदीसे श्री संघश्रावक गुलेच्छा कोचर वेद लोंकड ललवाणी लोढा लुणावत लुणीया छाजेड चोपडा मालु वोरा मीनी बुबकीया वरडीया छलाणी सराफ कानुंगा मडीया नेमाणी भन्साली कोठारी डाकलीया सेठीया नावटा नाहार कवाड चोरडीया संखलेचा वछावत पारख ढढा आदि करीबन् २५० आदमी और बाइयां मुनिश्री के दर्शनार्थी आये थे उन फलोदीवालोंकी तरफसे दोनों वासोके जैनोंको स्वामीवात्सल्य दिया गया था तथा शाहा धनराजजी आशकरणजी गुलेच्छाकी तर्फसे पूजा भणाइ गइ थी और चांदीकी ध्वजा और खोपरे रू १०१) के श्रीमन्दिरजीमें चढाये गये थे प्रभावना भी दी गइथी (३) श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डलकी तरफसे स्वामिवात्सल्य फलोदीवालोंको दिया गया था (४) शाह शेरचंदजी पारखकी तरफसे (५) शाहा अगरचंदजी पारखकी तरफसे (६) श्री भगवतीजी समाप्त पर फलोदीवाले करीबन् २५० आदमी और ओरतों आइ थी जिसको शाह छोगमलजी कोचरकी तरफसे स्वामिवात्सल्य दिया गया था इस सुअवसरपर फलोदीवाले मुत्ताजी सीवदानमलजीकी तरफसे नालीयरों की प्रभावना हुईथी वेद ढंढोकी तरफसे तथा श्रावकोंकी तरफसे तथा कोचरोंकी तरफसे एवं च्यार प्रभावनाओ भी वडी उदारतासे हुइथी. अन्तमे जेठ वद ७ को मुनिश्रीके विहार समय करीबन २५–३० भाइयों पली तक पहुचाने को गये वहां पलीमे शाह छोगमलजी कोचर की तरफसे स्वामिवात्सल्य हुवा था पली के न्याितिभाइयों को भी आमन्त्रण किया था यानि, धर्म की अच्छी उन्नति हुई ।

(१३) भगवान कि भक्तिके लिये वरघोडे भी वडी धामधूमसे

चढाये गयेथे जिसमें जोधपुरसे अंग्रेजी वाजे भी मंगवाये गये थे।

(१) श्री भगवती सूत्र प्रारंभमें शाहा छोगमलजी पारखकी तरफसे.

(२) फलोदीवालोकी तरफसे श्रावण वद ४ को

(३) पर्युषणोमे चैत्यपरिपाटीका वरघोडा

(४) श्री भगवतीजीसूत्र समाप्त का श्री संघकी तरफसे

(१४) मुनिश्री के विराजनेसे फलोदीवाले करीबन् २००० श्रावक श्राविकाओं आपश्रीके दर्शनार्थी पधारे थे जिनोंकी स्वागत यथा-शक्ति अच्छी हुइथी।

(१५) इनके सिवाय चांदीका मेरू, जोकि मेरू बहुतसे ग्रामोमें होते है किन्तु यह खास शास्त्रानुसार मेरू बनाया गया है तथा पूजा प्रभावना तपश्चर्या कण्ठस्थ ज्ञानध्यान समयानुसार हमारे ग्रामके मुकाबले बहुत अच्छा हुवा हमारे ग्राममे ऐसी धर्म उन्नति पहले स्यात् ही हुइ होगी हमने तो हमारे जीवनमें नही देखीथी और भी नवयुवक लोगोंमे भी अच्छी जागृती हुई वह लोग अपने कर्त्तव्यपर विचार करने लग गये है हम आपश्री से पुनः पुनः प्रार्थना करते है कि आपके लगाये हुवे कल्पवृक्षको जल्दी जल्दीसे अमृत सींचन करते रहे यानि ऐसे थली के क्षेत्रोमें विहार कर हम लोगोंपर उपकार करते रहे यह ही हमारी अन्तिम प्रार्थना है इसे स्वीकार करावे।

भवदीय

माणकलाल पारख,

सेक्रेटरी श्री जैन नवयुवक मित्रमंडळ—लोहावट.

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

नम्बर.　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ता.

श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल.

मुः लोहावट-जाटावास (मारवाड.)

वीर सं. २४४६　　　　　　　　　　विक्रम सं. १९७६

पूज्य मुनि श्री हरिसागरजी तथा मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब के सदूउपदेशसे सं १९७६ का चैत वद ९ शनिश्चरवार को इस मंडलकी शुभ स्थापना हुई है। मित्र मंडलका खास उद्देश समाजसेवा और ज्ञानप्रचार करनेका है। पहले यह मंडल नवयुवकोंसे ही स्थापित हुवा था परन्तु मंडलका कार्य्यक्रम अच्छा होनेसे अधिक उम्मरवाले सज्जनोंने भी मंडलमें सामिल हो कर मंडलके उत्साहमें अभिवृद्धि की है।

नम्बर.	मुबारिक नामावली.	ग्राम.	पिताका नाम.	वार्षीक चन्दा
१	श्रीमान् प्रेसिडेन्ट जोगमलजी कोचर	लोहावट.	चतर्भुजजी	११)
२	,, वाइस प्रेसीडेन्ट इन्द्रचन्द्रजी पारेख	,,	रावलमलजी	११)
३	,, नायब प्रेसिडेन्ट खेतमलजी कोचर	,,	वीरदानजी	५)
४	,, चीफ सेक्रेटरी रेखचंदजी पारख	,,	हजारीमलजी	११)
५	,, जोइन्ट सेक्रेटरी पुनमचंदजी लुणीया	,,	रत्नालालजी	७)
६	,, ,, ,, इन्द्रचंदजी पारख	,,	चोनणमलजी	७)
७	,, सेक्रेटरी माणकलालजी पारख	,,	हीरालालजी	५)
८	,, आसीस्टेन्ट से. रीखवमलजी संघी		कुचेरावाला	५)
९	श्रीयुक्त मेम्बर अगरचन्दजी पारख	लोहावट.	आइदानजी	३)

१०	श्रीयुक्त मेम्बर पृथ्वीराजजी चोपडा	लोहावट.	खुबचन्दजी	२)
११	,, ,, जीतमलजी भन्साली	,,	तुलसीदासजी	२)
१२	,, ,, हस्तीमलजी पारख	,,	रावलमलजी	३)
१३	,, ,, मेरूलालजी चोपडा	,,	रेखचंदजी	२)
१४	,, ,, जुगराजजी पारख	,,	रावलमलजी	३)
१५	,, ,, मनसुखदासजी पारख	,,	हजारीमलजी	३)
१६	,, ,, कुंनणमलजी पारख	,,	हीरालालजी	३)
१७	,, ,, कुंनणमलजी कोचर	,,	हीरालालजी	२)
१८	,, ,, भभूतमलजी पारख	,,	श्रीचंदजी	३)
१९	,, ,, हीरालालजी चोपडा	,,	मोतीलालजी	२)
२०	,, ,, जमनालालजी पारख	,,	रावलमलजी	३)
२१	,, ,, रेखचंदजी पारख	,,	मोतीलालजी	२)
२२	,, ,, भभूतमलजी पारख	,,	करणीदानजी	३)
२३	,, ,, सुखलालजी चोपडा	,,	हीरालालजी	२)
२४	,, ,, फूलचन्दजी पारख	,,	केवलचन्दजी	३)
२५	,, ,, घेवरचंदजी गडीया	मथाणीया.	जुहारमलजी	२)
२६	,, ,, जेठमलजी डाकलीया	लो०	प्रतापचंदजी	२)
२७	,, ,, कुंनणमलजी पारख	,,	सहजरामजी	२)
२८	,, ,, जमनालालजी बोथरा	,,	अलसीदासजी	३)
२९	,, ,, नेमिचन्दजी चोपडा	,,	पुनमचंदजी	३)
३०	,, ,, कुंनणमलजी चोपडा	,,	मालचन्दजी	२)
३१	,, ,, पुखराजजी चोपडा	,,	ताराचन्दजी	२)
३२	,, ,, कुंवरलालजी पारख	,,	सेरचन्दजी	३)
३३	,, ,, चुनिलालजी पारख	,,	सीवलालजी	३)

३४	श्रीयुक्त मेम्बर सुखलालजी पारख	लोहावट.	मोतीलालजी	३)
३५	,, ,, सौमरथमलजी चोपडा	,,	हीरालालजी	१)
३६	,, ,, अलसीदासजी कोचर	,,	पूनमचंदजी	३)
३७	,, ,, इन्द्रचंदजी वैद	रातगढ	सीवलालजी	३)
३८	,, ,, ठाकुरलालजी चोपडा	लो०	रेखचंदजी	२)
३९	,, ,, घेवरचन्दजी बोथरा	,,	रावलमलजी	२)
४०	,, ,, कन्यालालजी पारख	,,	जमनालालजी	२)
४१	,, ,, संपतलालजी पारख	,,	इन्दरचंदजी	३)
४२	,, ,, नेमिचंदजी पारख	,,	हीरालालजी	३)
४३	,, ,, हेमराजजी पारख	,,	चांनणमलजी	२)
४४	,, ,, भभूतमलजी कोचर	,,	हस्तिमलजी	२)
४५	,, ,, भीखमचंदजी कोचर	,,	मेघराजजी	२)
४६	,, ,, गोदुलालजी सेठीया	,,	छोगमलजी	३)
४७	,, ,, जोरावरमलजी वैद	फलोदी	वदनमलजी	३)
४८	,, ,, खेतमलजी पारख	लो०	हजारीमलजी	३)
४९	,, ,, गणेशमलजी पारख	,,	मनसुखदासजी	२)
५०	,, ,, संपतलालजी पारख	,,	हीरालालजी	२)
५१	,, ,, सहसमलजी पारख	,,	छोगमलजी	२)
५२	,, ,, तनसुखदासजी कोचर	,,	जेठमलजी	२)
५३	,, ,, भीखमचंदजी पारख	,,	मुलचंदजी	३)
५४	,, ,, सुगनमलजी पारख	,,	चुनिलालजी	२)
५५	,, ,, जुगरामजी पारख	,,	रतनलालजी	२)
५६	,, ,, जमनालालजी पारख	,,	मुलचंदजी	३)
५७	,, ,, खेतमलजी कोचर	,,	प्रभुदानजी	२)

५८	श्रीयुक्त मेम्बर माणकलालजी कोचर	लो०	दलीचंदजी	२)
५९	,, ,, मीसरीलालजी कोचर	,,	खेतमलजी	२)
६०	,, ,, घेवरचंदजी कोचर	,,	ज्ञानमलजी	२)
६१	,, ,, नथमलजी पारख	,,	हंसराजजी	१)
६२	,, ,, नेमिचंदजी पारख	,,	मनमुखदासजी	२)
६३	,, ,, विजेलालजी पारख	,,	छगनमलजी	२)
६४	,, ,, केशरीचंदजी पारख	,,	धनराजजी	२)
६५	,, ,, बंसीलालजी पारख	,,	हस्तीमलजी	२)

श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभाकि तर्फसे प्रसिद्ध हुइ पुस्तके.

५००० श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका

१००० श्री भाव प्रकरण सावचूरी

५००० श्री शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ प्रत्येक कि हजार हजार नकल

१००० श्री गुणानुरागकूलक

३००० श्री शीघ्रबोध भाग ६–७–८ प्रत्येक की हजार हजार नकल तथा स्तवन संग्रह भाग चोथा १००० महा सती सुरसुन्दरी १००० मुनि नाममाला १००० पंच प्रतिक्रमण ५००० पुस्तकें श्री रत्न-प्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला में भी हमारी तरफसे छपी हुई हैं

पत्ता—**श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभा**

मु० लोहावट—मारवाड.

पुष्प नं. ७४. ॥ ॐ ॥ ता. २१-६-२४

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला ऑफीस फलोदीसे आजतक पुस्तकें प्रसिद्ध हुइ जिस्का.

सूचीपत्र.

इस संस्थाका जन्म-पूज्यपाद परम योगिराज मुनिश्री रत्नविजयजी महाराज तथा मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजके सदुपदेशसे हुवा है. संस्थाका खास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्ट द्वारा समाजमें ज्ञानप्रचार बढानेका है. इस संस्था द्वारा ज्ञानप्रचार बढानेको प्रथम सहायता फलोदी श्री संघकी तर्फसे मिली है, वास्ते यह संस्था फलोदी श्री संघका सहर्ष उपकार मानती है।

संख्या.	पुस्तकोंके नाम.	विषय.	कुल प्रति.	कीमत.
१	श्री प्रतिमा छत्तीसी	३२ सूत्रोंमें मूर्त्ति है	२०००८	)०॥
२	गयवर विलास	३२ सूत्रोंका मूल पाठ	२०००	।)
३	दान छत्तीसी	तेरापन्थी दयादानका नि-	४०००	)०॥
४	अनुकम्पा छत्तीसी	षेध करते है जिस्का उतर	४०००	)०॥
५	प्रश्नमाला प्रश्न १००	३२ सूत्रोंके मूल पाठसे प्रश्न	३०००	-)
६	स्तवन संग्रह भाग १ लो	जिन स्तुति	५०००	=)
७	पैंतीस बोलोंका थोकडा.	द्रव्यानुयोगके बोल	१०००	=)
८	दादा साहिबकी पूजा	गुरुपद पूजा	२०००	=)
९	+चर्चाकी पब्लिक नोटीस	ढुंढकोंको चर्चाका आमंत्रण	१०००	भेट

१०	देवगुरु वन्दनमाला	विधि सहित	६०००	-)
११	स्तवन संग्रह भाग २ जो	प्रभु स्तुति	३०००	=)
१२	लिंगनिर्णय बहुत्तरी	जैन मुनियोंके तथा ढुंढकोंकि	३०००	-)
१३	स्तवन संग्रह भाग ३ जो	भगवानके भजन	४०००	-)
१४	सिद्धप्रतिमा मुक्तावली	प्रश्नोत्तरसे मूर्त्ति सिद्ध	१०००	॥)
१५	+बत्तीस सूत्र दर्पण	बत्तीस सूत्रोंका सार	५००	≋)
१६	जैन नियमावली	मार्गानुसारी बारहा व्रत	२०००	भेट
१७	चौरासी आशातना	जिन मन्दिरोंकी आशातना	२०००	भेट
१८	+डंकेपर चोट	ढुंढकोंका उत्तर	५००	भेट
१९	आगमनिर्णय प्रथमांक	आगमोंके सारकी बातें	१०००	=)
२०	चैत्यवन्दनादि	चैत्यवन्दन स्तुति स्तवन	२०००	भेट
२१	जिन स्तुति	संस्कृत श्लोक	२०००	भेट
२२	सुबोध नियमावली	चौदा नियमादि	६०००	भेट
२३	जैन दीक्षा प्रथमांक	दीक्षाके लीये योगायोग	२०००	भेट
२४	प्रभु पूजा.	पूजाकी विधि या आशातना	३०००	भेट
२५	+व्याख्याविलास प्र० भा०	विविध विषय	१०००	≠)
२६	+शीघ्रबोध भाग १ ला	द्रव्यानुयोग थोकडा १७	३०००	।)
२७	शीघ्रबोध भाग २ जा	नवतत्त्व पच्चवीस क्रिया	२०००	।)
२८	शीघ्रबोध भाग ३ जा	नयनिक्षेपादि षट् द्रव्य	२०००	।)
२९	शीघ्रबोध भाग ४ था	मुनिमार्गके थोकडा	२०००	।)
३०	शीघ्रबोध भाग ५ वां	कर्म विषय थोकडा	२०००	।)
३१	+सुखविपाक सूत्र	दानमहात्म्य दश जीवोंका	५००	।)
३२	+शीघ्रबोध भाग ६ ठा	पांच ज्ञान नन्दीसूत्र	२०००	=)
३३	+दशवैकालिक मूल सूत्र	मुनिमार्ग	१०००	=)

३४	शीघ्रबोध भाग ७ वां	विविध प्रश्नोत्तर	२०००	≈)
३५	मेम्बरनामो गु० हि०	वर्तमान धमालका दर्शन	४५००	॥)
३६	तीन निर्नामा लेखोंके उत्तर	सत्यताकी कसोटी	२०००	भेट
३७	ओशीया ज्ञान लीस्ट	पुस्तकोंके नाम नम्बर	१०००	भेट
३८	शीघ्रबोध भाग ८ वां	भगवतीसूत्रका सूक्ष्म वि०	२०००	।)
३९	शीघ्रबोध भाग ९ वां	गुणस्थानादि विविध वि०	२०००	।)
४०	नन्दीसूत्र मूलपाठ	पांच ज्ञान	१०००	≈)
४१	तीर्थयात्रा स्तवन	यात्रा दरम्यान तिर्थ	३०००	भेट
४२	शीघ्रबोध भाग १० वां	चौवीस ठाणा द्रव्यानु०	२०००	भेट
४३	अमे साधु शामाटे थया	साधुवोंका कर्त्तव्य	१०००	भेट
४४	विनतिशतक	वर्तमान वर्तारो	२०००	भेट
४५	द्रव्यानुयोग प्र० प्रवेशिका	द्रव्यानुयोग विषय	६०००	भेट
४६	शीघ्रबोध भाग ११ वां	प्रज्ञापना सूत्रका सार	१०००	।)
४७	शीघ्रबोध भाग १२ वां	प्रज्ञापना सूत्रका सार	१०००	।)
४८	शीघ्रबोध भाग १३ वां	गणितानुयोग	१०००	।)
४९	शीघ्रबोध भाग १४ वां	नारकी देवलोकादि क्षेत्र	१०००	।)
५०	+आनंदघन चौवीसी	चौवीस भगवानके स्तवन	१०००	भेट
५१	शीघ्रबोध भाग १५ वां	आगमोंके प्रश्नोत्तर	१०००	।)
५२	शीघ्रबोध भाग १६ वां	आगमोंके प्रश्नोत्तर	१०००	।)
५३	कक्का बत्तीसी	चैतन्यके सुमति कुमति	१०००	ज्ञानवि.
५४	व्याख्याविलास भाग २ जा	संस्कृत श्लोक	१०००	"
५५	व्याख्याविलास भाग ३ जा	प्राकृत श्लोक	१०००	"
५६	व्याख्याविलास भाग ४ था	भाषाकी कविता	१०००	"
५७	स्वाध्याय गहुंली संग्रह	विविध विषय	१०००	"

५८	राइदेवसि प्रतिक्रमण	आवश्यक सूत्र	१०००	”
५९	शीघ्रबोध भाग १७ वां	उपासकदशांगादि तीन सूत्र	१०००	
६०	शीघ्रबोध भाग १८ वां	निरियावलीका पांच सूत्र	१०००	
६१	शीघ्रबोध भाग १९ वां	बृहत्कल्प सूत्र	१०००	
६२	शीघ्रबोध भाग २० वां	दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र	१०००	बारहा सूत्रोंका भाषांतर रु. ४.
६३	शीघ्रबोध भाग २१ वां	व्यवहार सूत्र	१०००	
६४	शीघ्रबोध भाग २२ वां	निशिथ सूत्र	१०००	
६५	उपकेश गच्छ लघु पट्टावली	उपकेश गच्छाचार्यके नाम	१०००	भेट
६६	वर्णमाला	बालावबोध अक्षरके नाम	१०००	”
६७	शीघ्रबोध भाग २३ वां	भगवती सूत्रका सूक्ष्मज्ञा-	१०००	।)
६८	शीघ्रबोध भाग २४ वां	नकों थोकडेरुपसे लिखा	१०००	।)
६९	शीघ्रबोध भाग २५ वां	हुवा ज्ञान	१०००	।)
७०	तीन चातुर्मासका दिग्दर्शन	फलोदीके तीन चौमासा	१०००	भेट
७१	तेरहा प्रश्नोंका उत्तर	हितशिक्षा	१०००	”
७२	स्तवन संग्रह भाग ४ था	ज्ञान चौवीसे	१०००	”
७३	विवाहचूलिकाकी समालोचना	बावीस टोले ढुंढकोकि	१०००	”
७४	पुस्तकोंका सूचीपत्र	पुस्तकोंका नाम किंमत	१०००	”
७५	सुर सुन्दरी कथा	कर्मफल	१०००	≶)
७६	पंच प्रतिक्रमण विधि सहित	आवश्यक	५०००	भेट
७७	मुनि नाममाला	वन्दन पाठ	१०००	भेट

नोटः—ज्ञानविलासमें उपरके २५ पुस्तकें है किंमत रु. १॥

+ ऐसे चिन्हवाली पुस्तकें खलास हो चुकी हैं ।

मिलनेका पत्ता—**श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला.**

मु० फलोधी (मारवाड)